साहित्य अमृत
मासिक

वर्ष-२५ अंक-२ ❖ पृष्ठ ८४ | श्रावण-अश्विन, संवत्-२०७६ | सितंबर २०१९

संस्थापक संपादक
स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र

पूर्व संपादक
स्व. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

संपादक
त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

प्रबंध संपादक
श्यामसुंदर

संयुक्त संपादक
डॉ. हेमंत कुकरेती

कार्यालय
४/१९, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : २३२८९७७७ • फैक्स : २३२५३२३३
इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क
एक अंक —₹ ३०
वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००
वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००
विदेश में
एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)
वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्यामसुंदर द्वारा
४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२
से प्रकाशित एवं ग्राफिक वर्ल्ड, १६८६,
कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२ द्वारा मुद्रित।

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

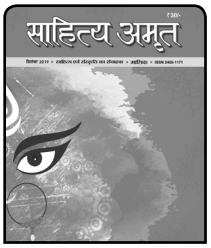

इस अंक में

संपादकीय
अनुच्छेद ३७० निरस्त : एक ऐतिहासिक निर्णय ४

प्रतिस्मृति
काऊ बेल्ट की उपकथा/ *धर्मवीर भारती* १०

कहानी
आवारा हूँ/ *मदन मोहन वर्मा* १९
बंदिशें/ *तुलसी देवी तिवारी* २६
पाँच तारीख/ *रंजन कुमार सिंह* ३४
गिरगिटी चेहरे/ *मंजुश्री* ५२
कॉलेज की क्यूरी/ *सुशीला गुप्ता* ५८

लघुकथा
लाडो की विदाई/ *सविता इंद्र गुप्ता* २९

आलेख
जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद ३७० का उदय और अस्त/ *कुलदीप चंद अग्निहोत्री* १४
अमेरिका में हिंदी की दशा और दिशा/ आस्था नवल २२
भारत में विदेशी हिंदी रेडियो प्रसारण/ *बद्री प्रसाद वर्मा अनजान* ३०
असम प्रदेश में हिंदी/ *अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी* ३६
भारतीय भाषायी जनगणना—२०११/ *राजेश्वर उनियाल* ४६

कविता
गर्भ में बिटिया की पुकार/ *बी.एस. जौहरी* ४१
गीले दोहे/ *शरद नारायण खरे* ५७
थोड़ा लिखा, थोड़ा पढ़ाया/ *नवनीत गांधी* ७४

संस्मरण
मेरे उत्प्रेरक मास्साब/ *प्रेमपाल शर्मा* ४२

राम झरोखे बैठ के
खामोशी के खयाल/ *गोपाल चतुर्वेदी* ३९

साहित्य का भारतीय परिपार्श्व
आलसी सूरज/ *राजगोपालाचारी* ४९

ललित-निबंध
कोई बात तो है/ *श्रीराम परिहार* ५०

साहित्य का विश्व परिपार्श्व
ईश्वर सत्य को देखता है/ *लियो टालस्टॉय* ६४

व्यंग्य
अनुमान-ही-अनुमान
कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' ५६

लोक-साहित्य
सेवड़ाफुली की काँवरें/ *श्रीकांत उपाध्याय* ६८

यात्रा-वृत्तांत
सरहद को प्रणाम-यात्रा/ *प्रमोद कुमार* ७०

बाल-संसार
मोटा हाथी, मोटा हाथी/ *शिवानंद सिंह 'सहयोगी'* ७५

वर्ग-पहेली ७६
पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ७७
साहित्यिक गतिविधियाँ ७९

संपादकीय

अनुच्छेद ३७० निरस्त : एक ऐतिहासिक निर्णय

नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा संविधान के ३७० अनुच्छेद को निरस्त करने के निर्णय के उपरांत देश में काफी विवाद प्रारंभ हो गया। इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक निर्णय के दूरगामी प्रभावों एवं किन परिस्थितियों में ३७० अनुच्छेद संविधान में शामिल किया गया था, का उचित आकलन इस विवाद के वातावरण में नहीं हो पा रहा है। समाचार-पत्रों में पक्ष और विपक्ष में नित्यप्रति लेख प्रकाशित हो रहे हैं। यद्यपि कहने के लिए विरोध करनेवालों के द्वारा कानूनी तर्क दिए जा रहे हैं, किंतु उनपर वोटबैंक की राजनीति एवं विरोधी दलों की अपनी-अपनी असफलताओं की छाया स्पष्ट दिखाई देती है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि विरोधी दलों में बहुजन समाज पार्टी ने सरकार के निर्णय का स्वागत किया, किंतु समाजवादी पार्टी, डी.एम.के., तृणमूल कांग्रेस ने विरोध किया। बीजू जनता दल, जो एन.डी.ए. में शामिल नहीं है, ने भी इसका समर्थन किया। आश्चर्य की बात है कि केजरीवाल और उनकी पार्टी ने भी अनुच्छेद ३७० तथा ३५ए के निरस्त करने में सहमति प्रकट की और संसद् में भी समर्थन किया। प्राय: सभी विरोधी पार्टियों में काफी लोग ३७० हटाने के निर्णय का स्वागत कर रहे हैं। एन.पी. सी. के अध्यक्ष स्वयं शरद पवार ने इसकी आलोचना की, वहीं उनके भतीजे और दो नंबर के नेता अजित पवार ने निर्णय का समर्थन किया। कांग्रेस में सबसे अधिक तिलमिलाहट थी। कांग्रेस के बहुत से नए व युवा तथा पुराने नेताओं ने अपने-अपने ढंग से मोदी सरकार के निर्णय का स्वागत किया।

इस पूरे मामले से प्रारंभ से जुड़े रहे, जम्मू-कशमीर के सदरे रियासत रहे और बाद में राज्यपाल रहे डॉ. कर्ण सिंह ने इस निर्णय का स्वागत किया। कांग्रेस पार्टी के लोकसभा में नेता अधीर चौधरी ने तो जम्मू-कश्मीर के मामले को अंतरराष्ट्रीय विवादास्पद मामला कहकर सोनिया गांधी को भी भौंचक्का कर दिया, क्योंकि कांग्रेस का स्टैंड भी शिमला समझौते के बाद से रहा ही है कि यह विवाद भारत और पाकिस्तान के बीच का है और इसे आपसी बातचीत द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। किसी तीसरे देश के हस्तक्षेप की कोई गुंजाइश नहीं है। बाद में अधीर चौधरी अपनी सफाई देते रहे कि उनको गलत समझा गया। उनका मंतव्य दूसरा था। मजे की बात यह है कि एन.डी.ए. का राज्यसभा में बहुमत न होते हुए भी यह बिल आसानी से और अच्छे मतों से पारित हो गया। कांग्रेस के अधिकतर और अन्य सांसद भी चाहते थे कि अनुच्छेद ३७० निरस्त हो जाए। वे भी जानते थे कि देश की जनता वास्तव में क्या चाहती है। देश के मूड़ का आकलन करनेवाले टी.वी. चैनलों पर आ रहे नतीजों से यह स्पष्ट हो जाता है।

देश की जनता भली-भाँति जानती है कि देश की अखंडता, एकता और समता की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है। अनुच्छेद ३७० के माध्यम से एक विशेष दर्जा या स्पेशल स्टेटस की बात करके केवल अलगाववाद की मानसिकता को ही बल मिलता रहा है। जम्मू-कश्मीर भारत के अभिन्न भाग हैं। इस भावना का प्रतिरोध ही हो रहा था। अनुच्छेद ३७० के समाप्त हो जाने के कारण पूरे भारत के नागरिक एक हैं, उनके अधिकार एक से हैं, दायित्व एक से हैं, यह भावना मजबूती और शीघ्रता से पनपने लगेगी। गृहमंत्री अमित शाह ने इस संबंध में दोनों सदनों में इस बात को बहुत अच्छी तरह रखा भी। ३५ए का निरस्त होना भी लाजिमी था। यह एक विचित्र प्रावधान था, जिसके अंतर्गत जम्मू-कश्मीर का निवासी यदि गैर-कश्मीरी के साथ शादी करता तो उसकी जायदाद उसी की बनी रहती और उसकी संतान भी हकदार होती, किंतु यदि एक कश्मीरी लड़की किसी दूसरे राज्य के निवासी से विवाह करती तो उसको अपनी पैतृक जायदाद से वंचित होना पड़ेगा। जब भारत ब्रिटिश राज्य और देशी राज्यों में बँटा था, तब तरह की भेदभाव वाली व्यवस्था को कोई औचित्य रहा होगा। अब जब भारत का संविधान हर नागरिक को समान अधिकार देता है, तो इस प्रकार का भेदभाव कब तक बर्दाश्त किया जा सकता। यह कश्मीर की महिलाओं के प्रति सरासर अन्याय था। यही नहीं, जम्मू-कश्मीर का रहनेवाला अब सच्चे मायने में भारतीय नागरिक है, चाहे महिला हो, चाहे पुरुष हो। अब उसके वही अधिकार हैं, जो देश में कहीं भी रहनेवाले भारतीय नागरिक के हैं। बहुत से कानून जो नागरिकों के हित में हैं, जैसे शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, जो देश के अन्य भागों में नागरिकों को उपलब्ध हैं, वे जम्मू-कश्मीर में अभी तक वहाँ के नागरिकों को प्राप्त नहीं थे। अब वहाँ का नागरिक एक संकुचित दायरे से निकलकर बड़ी और खुली हवा के वातावरण में साँस ले सकता है।

पाकिस्तान के जम्मू-कश्मीर पर आक्रमण के बाद जब वहाँ के महाराज हरि सिंह ने भारत में शामिल होने के दस्तावेज पर दस्तखत कर दिए, तभी भारत की सेनाएँ संवैधानिक रूप से जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा के लिए भेजी जा सकीं, और बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए, अपनी जान की बाजी लगाकर भारतीय सैनिकों ने जम्मू-कश्मीर को सुरक्षा प्रदान की। क्या इस बलिदान की कोई कीमत हो सकती है? भारत ने उसके उपरांत करोड़ों नहीं, अरबों की संख्या

में धन जम्मू-कश्मीर के विकास के लिए उपलब्ध कराया तथा वहाँ का विकास हो, वहाँ के गरीब, वंचित और नि:सहाय निवासियों को राहत मिले, परंतु उस धन का लाभ गरीब जनता को तो थोड़ा-बहुत ही मिला, लेकिन वहाँ सत्ता पर काबिज महानुभाव मालामाल हो गए। यही नहीं, समय-समय पर जनता के असंतोष के नाम पर केंद्र सरकार से अधिक धनराशि की माँग करते रहे। जनता के लिए आए इस धन के दुरुपयोग पर न कोई रोक लगी और न किसी प्रकार की जिम्मेदारी तय करने के लिए प्रयत्न हुए। किस प्रकार दो-तीन परिवार सत्ता के बल पर मालामाल हो गए, जम्मू-कश्मीर में यह एक खुला रहस्य है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने राष्ट्र के नाम संदेश में अत्यंत सुविचारित एवं संतुलित ढंग से अनुच्छेद ३७० के हटने के बाद किस प्रकार, किस भाँति और कितने लाभ जम्मू-कश्मीर के निवासियों को होंगे, बताने की पूरी कोशिश की। उनका संदेश पूरे देश को था, ताकि हर कोई समझ सके कि ऐसे निर्णय की आवश्यकता क्यों थी, पर उससे अधिक उनका प्रयास था कि कश्मीर की जनता, जिसको कुछ नेता भुलावे में रख रहे हैं, गुमराह कर रहे हैं, उनको पता चल सके कि वह किस प्रकार लाभान्वित होगी। स्वार्थी तत्त्व तो विशेष दर्जे के नाम पर उनको भ्रम में रखना ही चाहते हैं, ताकि वे स्वयं गुलछर्रे उड़ाते रहें।

संविधान में अनुच्छेद ३७० को अस्थायी कहा गया है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' अथवा राज्यों के शामिल होने का जो दस्तावेज है, कश्मीर के लिए वह हूबहू उसी तरह का है, जैसा कि अन्य राज्यों का और जिस प्रकार महाराजा हरिसिंह ने हस्ताक्षर किए तथा स्वीकार किया। जब जम्मू-कशमीर हिंदुस्तान में शामिल हुआ, उस समय अनुच्छेद ३७० का वजूद नहीं था। जब शेख अब्दुल्ला संविधान सभा के सदस्य बने, उनकी जिद पर यह संविधान में उल्लखित हुआ। अतएव यह १९५२ में प्रभावी हुआ, जब संविधान लागू हुआ। अनुच्छेद ३७० के अंर्तगत जम्मू-कश्मीर राज्य को एक अलग संविधान सभा, एक अलग झंडा और शुरू में जम्मू-कश्मीर विधानसभा को अधिकार और बाद में विधानसभा को दिया गया वह अधिकार कि वे चाहें तभी भारतीय संसद् का कोई भी कानून वहाँ लागू हो सकेगा। महाराजा हरिसिंह ने भारत में सम्मिलित होने के जिस मजमून पर हस्ताक्षर किए थे, उसमें डिफेंस (सुरक्षा), विदेश संबंधी मामले तथा कम्यूनिकेशन ही भारत की संसद् के अधिकार में थे; किसी अन्य कानून को लागू करने के लिए वहाँ की विधानसभा की मंजूरी अनिवार्य थी। उस समय के कानून मंत्री डॉ. अंबेडकर इस प्रावधान के सख्त खिलाफ थे। कांग्रेस के संसदीय दल में भी इसका बड़ा विरोध था। कश्मीर मामलों के मंत्री गोपालस्वामी आयंगर ने प्रधानमंत्री नेहरूजी को, जो विदेश गए हुए, जब यह स्थिति बताई तो इस गुत्थी को सुलझाने के लिए उन्होंने सरदार पटेल के पास जाने को कहा। सरदार पटेल के सामने भी संसदीय दल में मुखर विरोध हुआ, पर सरदार पटेल ने सदस्यों को समझाया कि प्रधानमंत्री विदेश गए हुए हैं, उनके प्रस्ताव को ऐसे समय में स्वीकार न करना नेहरूजी की अवमानना होगी। इस प्रकार सरदार पटेल के प्रभाव के कारण ही संसदीय दल ने स्वीकृति दे दी थी।

नेहरू ने भी स्वयं संसद् में २७ नवंबर, १९६३ को इस बात को दोहराया कि यह एक अस्थाई प्रावधान है, स्थायी नहीं है और धीरे-धीरे समय रहते समाप्त हो जाएगा। ३७० को समाप्त करने की माँग समय-समय पर उठती रही। १९६४ में प्रकाशवीर शास्त्री ने एक गैर-सरकारी प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव को एक प्रकार से सर्वदलीय समर्थन प्राप्त था। जिन १२ सदस्यों ने इसका समर्थन किया, उनमें के. हनुमंथैया समेत कांग्रेस के सात सदस्य थे। इसके अतिरिक्त समर्थन में जम्मू-कश्मीर के प्रतिनिधि शाम लाल सराफ, एच.वी. कामत (सोशलिस्ट), भगवत झा आजाद (पूर्व मुख्यमंत्री बिहार) थे। डॉ. राम मनोहर लोहिया ने ३७० को निरस्त करने के पक्ष में बड़ा जोरदार भाषण दिया। इसके विरोध के कारण डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी का आत्मोत्सर्ग श्रीनगर में शेख अब्दुल्ला की जेल में हुआ। किन परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हुई, इसकी किसी प्रकार की जाँच कराने से शेख अब्दुल्ला साफ मुकर गए। प्रधानमंत्री नेहरू ने भी अपना पल्ला झाड़ लिया कि यह विषय राज्य सरकार से संबंधित है। जनसंघ और भाजपा की तो यह माँग निरंतर रही है। २०१९ के चुनावी घोषणा-पत्र में भी यह वादा था और उसको नरेंद्र मोदी सरकार ने अब पूरा किया। संपूर्ण देश में इसका हर्षोल्लास से स्वागत हुआ, क्योंकि इसके साथ भारत के एकीकरण की प्रक्रिया, जिसकी शुरुआत सरदार पटेल ने की थी, वह पूर्ण हुई। इतनी रियासतों में केवल जम्मू-कश्मीर के पूर्ण विलय का मामला अधर में लटक गया, क्योंकि प्रधानमंत्री नेहरू ने जम्मू-कश्मीर के मामले को अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया था, नहीं तो यह मामला उसी समय सुलझ गया था। यदि पं. नेहरू इसको सरदार पटेल की स्टेटस मिनिस्ट्री से अलग न करते तो कोई समस्या न होती।

कांग्रेस की तिलमिलाहट इस कारण है कि जो काम अपने लंबे शासनकाल में कांग्रेस की सरकारें नहीं कर सकीं, वह प्रधानमंत्री मोदी ने अपने दूसरे सत्ताकाल के शुरू में ही कर दिखाया। दूसरा कारण यह है कि कांग्रेस की अपने भविष्य के प्रति अनिश्चितता और धुँधलापन। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के इस्तीफे के बाद, जो उन्होंने कांग्रेस की २०१९ के चुनावों की असफलता के कारण दिया, कांग्रेस अपने अगले अध्यक्ष के बारे में कोई फैसला नहीं कर सकी। राहुल गांधी के बार-बार कहने के बाद कि उनका निर्णय अंतिम है और उसमें किसी परिवर्तन का सवाल ही नहीं है, फिर भी कांग्रेस उनकी चिरौरी करती रही। यह सब बड़ा दयनीय दीख पड़ता था। राहुल गांधी का कहना था कि अगला अध्यक्ष ऐसा हो, जिसका नेहरू-गांधी परिवार से संबंध न हो। फिर भी परिवार पर निर्भरता अथवा चाटुकारिता के कारण बहुत लोगों ने प्रियंका गांधी वाड्रा के नाम को अध्यक्ष पद के लिए उछालने की कोशिश की। उनमें वे इंदिरा गांधी की छवि देख सकते हैं, पर वह अनुभव कहाँ है। आश्चर्य था कि बहुत से समझदार कांग्रेस

के नेताओं ने उसका अनुमोदन किया, पर सब व्यर्थ रहा। इस बीच अनेक तथाकथित युवा नेताओं के नाम भी आए, पर सब अनिर्णीत रहा। कांग्रेस में नेतृत्व विहीनता के दिनों में हर प्रदेश में जो कांग्रेस में दरारें हैं, वे सब सामने आईं। बहुत से नेता और कार्यकर्ताओं ने भाजपा में शरण ली। खबरें आने लगीं कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री अपने एक अलग दल की शुरुआत करनेवाले हैं। भूपेंद्र हुड्डा ने अपनी रोहतक की रैली में कहा कि उनकी पार्टी (कांग्रेस) रास्ते से भटक गई है। उन्होंने ३७० को निष्प्रभावी बनाने के मोदी सरकार के निर्णय को उचित बताया और समर्थन किया। आपसी फूट और एक परिवार आश्रित रहने के कारण कांग्रेस में हर स्तर पर शिथिलता दिखाई देने लगी। पुरानी और नई पीढ़ी की प्रतिद्वंद्विता के समाचार भी आने लगे। दिशाहीन और समस्याओं से ग्रसित कांग्रेस ने सोनिया गांधी को अंतरिम अध्यक्ष चुना। इतने नाटक के बाद फिर गांधी परिवार का ही सहारा लिया। अंतरिम अध्यक्ष ही सही, पर यह तो साफ हो गया कि नेहरू-गांधी परिवार के बाहर जाने में कांग्रेस को कितनी कठिनाई है। नौ दिन चले अढ़ाई कोस। सोनिया गांधी ने पुत्र राहुल को अध्यक्षता सौंपी थी, पर दो वर्षों से कम समय ही उन्हें स्वयं पुन: अध्यक्षता गृहण करनी पड़ी। ६ महीने के बाद जब कांग्रेस के आंतरिक चुनाव पूरे हो जाएँ तो फिर कौन अध्यक्ष बनेगा, यह यक्ष प्रश्न कांग्रेस के सामने है ही। यह बात तो साफ है ही कि परिवार के इतर चाहे कोई अध्यक्ष चुना जाए, पर नकेल सोनिया गांधी या प्रियंका के हाथ रहेगी। उसी प्रकार, जैसे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह नियुक्त हो गए, किंतु सब सरकारी महत्त्वपूर्ण निर्णय सोनिया के स्वीकार करने के बाद ही कारगर होते थे। सोनिया गांधी की परामर्शदात्री परिषद् कैबिनेट के ऊपर थी। एक प्रकार से वह कैबिनेट के प्रस्तावों पर विचार-विमर्श करती थी और उसके बाद ही उनका अनुपालन संभव था।

इस माहौल में कांग्रेस ३७० के निरस्त करने के विषय में क्या ऑफिशियल प्रतिक्रिया अपनाती है, देश यह जानना चाहता था। पर जब चुनाव के बारे में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हो रही थी, तब जम्मू-कश्मीर की स्थिति के बारे में भ्रम फैलाने की कोशिश की गई। राहुल गांधी बाहर आए और कहा कि उन्हें जानकारी मिल रही है कि वहाँ बड़ी अशांति है, गोली चली है और लोग मारे गए हैं, आदि-आदि। जम्मू-कश्मीर के अधिकारियों और सैनिक अधिकारियों ने इस बयान को नकार दिया। अब कांग्रेस ने पैंतरा बदला कि उनको एतराज इस बात से है कि ३७० को निरस्त करने की प्रक्रिया उचित नहीं है। देश के जनमानस को देखते हुए यह कहने का साहस तो हुआ नहीं कि ३७० को निरस्त नहीं करना चाहिए। प्रियंका गांधी रट लगाए हैं कि जो कारवाई की गई, वह असंवैधानिक है, अलोकतांत्रिक है। शिकायत यह कि सब दलों से बातचीत नहीं की, जल्दबाजी की, जम्मू-कश्मीर की जनता को विश्वास में नहीं लिया, वहाँ के मुख्य दलों के नेताओं को हिरासत में लेकर रातोरात फैसला कर लिया। यह प्रक्रिया असंवैधानिक है, क्योंकि वहाँ की विधानसभा की राय नहीं ली गई। अमरनाथ यात्रा बीच में रद्द कर दी गई और वहाँ अर्ध सेना भेजी गई तथा बहुत बड़ी संख्या में सैनिकों को ताबड़तोड़ पूरे प्रदेश में नियुक्त कर दिया। पूरी कारवाई अलोकतांत्रिक है, संविधान की अवहेलना है।

यह पहली बार नहीं हुआ। आतंकवाद की आशंका से पहले भी ऐसा हो चुका है। सरकार ने बार-बार कहा है कि जो प्रभावित लोग हैं, दल हैं, उनसे संविधान के दायरे में बात हो सकती है। यह भारत का आंतरिक मामला है और उस बातचीत में पाकिस्तान को शामिल नहीं किया जा सकता है। कांग्रेस ने भी तीन वार्त्ताकारों को बात करने के लिए नियुक्त किया था, बातचीत हुई और नतीजा आखिर में कुछ नहीं निकला। घाटी के नेता पाकिस्तान हाई कमीशन के सदैव संपर्क में रहते हैं। वहाँ के कई दलों और व्यक्तियों को पाकिस्तान से पैसा मिलता है। ऐसे लोग समय-समय पर पाकिस्तान के इशारे पर वारदातें करते हैं, साधारण जनता को भड़काते हैं। शांति, कानून-व्यवस्था को भंग करने की कोशिश करते हैं। शिक्षालयों को जलाते हैं, बच्चों को पुलिस और सेना पर पथराव करने के लिए उत्तेजित करते हैं। आतंकवादियों को पनाह देते हैं। खबरें आतंकवादियों के घुसपैठ की आ रही थीं। सरकार को खुफिया जानकारी थी। सीमावर्ती प्रांत होने के कारण वहाँ तरह-तरह की संवेदनशील समस्याएँ थीं। अतएव सरकार को यकायक और शीघ्रता से सख्त कदम उठाने पड़े। इसलामिक स्टेट इराक और सीरिया में समाप्त हो गया है, पर भारत में उसके सुषुप्त गुर्गे हैं, जो इशारा पाते ही सक्रिय होंगे। इस्लाम स्टेट ने ऐलान किया है कि वह अपनी गतिविधियाँ भारत में बढ़ाते जा रहे हैं। तालिबान के भी संपर्क हैं। पाकिस्तानी फौज की खुफिया एजेंसी इन सबकी मदद करेगी। हर तरह से जम्मू-कश्मीर में तोड़-फोड़ को बढ़ावा देंगे और लोगों को भड़काने की कोशिश करेंगे। इमरान और पाकिस्तान के विदेश मंत्री तथा राजनेता तरह-तरह के गलत और उत्तेजित करनेवाले बयानों से चूक नहीं रहे हैं। वह देश के अन्य भागों में सांप्रदायिक दंगे कराने की कोशिश करेंगे। ऐसे अवसरों पर समय से कदम उठाना दूरदर्शिता का सूचक है। गृहमंत्री अमित शाह और प्रधानमंत्री ने कहा भी, जैसे-जैसे स्थिति सामान्य होगी, जो बंधन लगाए गए हैं, उनको कम किया जा सकेगा। आवश्यक है कि सब दल सरकार का सहयोग करें, ताकि जम्मू-कश्मीर की स्थिति सामान्य हो सके। सब्जबाग दिखानेवाले उन नेताओं से जनता निजात पा सके, जो अपने-अपने पापड़ बेलते रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर के विभाजन और उनके यूनियन टेरिटरी में परिवर्तित करने के कई कारण हैं। लद्दाख को एक यूनियन टेरिटरी बनाने की पुरानी माँग थी, क्योंकि उनको विकास से वंचित रखा गया। शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएँ न के बराबर हैं। यूनियन टेरिटरी बनने के बाद इस पिछड़े क्षेत्र का विकास संभव होगा। देश की सुरक्षा की दृष्टि से केंद्र आवश्यकतानुसार आदेश दे सकेगा। वहाँ विधानसभा की आवश्यकता नहीं है। शायद उपराज्यपाल एक परामर्शदाता समिति

बना सकते हैं। जम्मू-कश्मीर नक्शे से हट गया है, यह कहना गलत है। जब यह डोगरा राज्य था तो भी वहाँ के कुछ नेता शिकायत किया करते थे कि ७५ लाख में अंग्रेजों ने उसे गुलाब सिंह के हाथों बेच दिया। जम्मू-कश्मीर का वजूद कायम है। उसकी अपनी पहचान है। शासन व्यवस्था में कुछ परिवर्तन किए गए हैं, पर वहाँ विधानसभा होगी और मंत्रिमंडल भी होगा, किंतु कुछ सीमित अधिकार होंगे, यह सब वहाँ की संवेदनशीलता को देखते हुए किया गया है। सही बात तो यह है कि जम्मू-कश्मीर की जनता की तरक्की, भलाई के लिए केंद्र ने और अधिक जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर ली हैं और वह संसद् के प्रति उत्तरदायी होगी। इसके बाद भी प्रधानमंत्री ने 'नए कश्मीर' की तसवीर उकेरते हुए यह भी आश्वासन दिया कि संपूर्ण परिस्थितियों में सुधार होने पर जम्मू-कश्मीर को पुन: राज्य का दर्जा मिल सकेगा, यूनियन टेरिटरी का फैसला कोई अंतिम निर्णय नहीं है। वह आज की आवश्यकता ही नहीं, अनिवार्यता है।

जम्मू-कश्मीर के विषय में जम्हूरियत, इनसानियत और काश्मीरियत की बात को उठाया गया है। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि इस मानसिकता से जम्मू-कश्मीर की समस्या को सुलझाना चाहते हैं, ताकि कोई भ्रांति न रहे। वैसे स्थानीय बाध्यताओं को ध्यान में रखते हुए राजधर्म का तकाजा है कि मानवीय एवं लोकतांत्रिक व्यवहार शासन के हर क्षेत्र के नागरिकों के प्रति अपेक्षित है। प्रारंभ से ही दिल्ली सरकारों का यही प्रयास रहा है। किंतु ३७० एक अवरोधक रहा, क्योंकि वह अलगाववाद को सुदृढ़ करता है, भाईचारे को नहीं। जरूरत है कि काश्मीरियत के जो सकारात्मक तत्त्व हैं, उनको बल मिले। जब कश्मीरी पंडितों को घाटी से बलपूर्वक खदेड़ दिया गया और मंदिर तोड़े गए तो क्या यह इनसानियत, जम्हूरियत और काश्मीरियत से प्रेरित था? इस देश की तथाकथित लिबरल बिग्रेड उस समय क्यों मौन बनी रही? अब जो जे.एन.यू. के कुछ प्रोफेसर तथा एक्टिविस्ट और कुछ वामपंथी दलों के लोग, जो आज ज्वॉइंट एक्शन प्लान बनाने की कोशिश कर रहे हैं, वे उस समय क्यों हाथ पर हाथ रखे निष्क्रिय रहे? किस काश्मीरियत की आज दुहाई दी जा रही है? जो अराजकता और आतंकवाद को संरक्षण देती है, बढ़ावा देती है। इस अभियान में कुछ सेवानिवृत्त विभिन्न सेवाओं के अधिकारी भी शामिल हो जाते हैं, ताकि वे भी सुर्खियों में रहें। तीसमार खाँ बनने का यह सबसे आसान तरीका है। ३७० अनुच्छेद को तो बहुतों ने सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी ही है। अतएव उनका भी कर्तव्य बनता है कि सामान्य स्थिति बनाने में सहयोग करें और शीर्ष न्यायालय के फैसले की प्रतीक्षा करें। उन्हें एहसास होना चाहिए कि यह समय चिनगारी में फूँक देने का नहीं है। चाहे नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार के प्रति उनकी कितनी भी नाराजगी हो। सबसे खेदजनक और निंदनीय बात यह है कि कांग्रेस के एक कड़े नेता और पूर्व मंत्री ने ३७० को निरस्त करने के फैसले का सांप्रदायिकीकरण करने की कोशिश की। उन्होंने यहाँ तक कहा कि जम्मू-कश्मीर को दो भागों में विभाजित किया गया, क्योंकि वह मुसलिम बहुसंख्यक राज्य है। इस तरह के भाषण केवल भड़काने का ही काम कर सकते हैं। कथनी और करनी में साम्य होना चाहिए।

इसके पीछे एक अंतरराष्ट्रीय पहलू है, शायद उसने भी केंद्र सरकार को शीघ्र निर्णय लेने को विवश किया। अमेरिकन राष्ट्रपति ने पहले कहा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनसे कश्मीर की समस्या को सुलझाने में मदद माँगी। भारत ने इसका तुरंत खंडन किया। भारत का सदैव से यह मानना रहा है कि यह मामला दो पड़ोसी देशों का है और इसमें किसी तीसरे के हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। हमारे विदेश मंत्री श्रीनिवासन ने संसद् में और बाहर भी इस बात को जोर-शोर से कहा। अमेरिकी राजनयिकों और चीनी राजनयिकों से भी यह कहा। हाल ही में अमेरिका के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट से भी उन्होंने साफ कहा कि यह द्विपक्षीय विषय है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने शब्दों में बदलाव कर कहा कि यदि दोनों देश चाहें तो वे प्रयास करेंगे। भारत ने फिर दोहराया कि किसी तीसरे देश की मध्यस्थता मंजूर नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति कह चुके हैं कि वे अमेरिकी सैनिकों को अफगानिस्तान से वापस बुलाने को कटिबद्ध हैं। अफगानिस्तान के तालिबान को पाकिस्तान का समर्थन और संरक्षण प्राप्त है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान जब वॉशिंगटन में ट्रंप से मिले तो अपना रोना रोया। अमेरिका ने तालिबान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच एक समझौते की प्रक्रिया शुरू की। भारत के अफगानिस्तान से सदियों पुराने संबंध हैं। अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए भारत ने करोड़ों रुपयों की सहायता की। उनकी एसेंबली की नई इमारत भारत की देन है। पाकिस्तान अमेरिका पर कश्मीर के मामले में हस्तक्षेप करने के लिए दबाव डाल रहा है। अमेरिका का स्वार्थ है कि किसी प्रकार पाकिस्तान तालिबान से समझौता करा दे, ताकि अमेरिका अपने सैनिकों को वापस बुलाना शुरू कर दे, अमेरिका के राष्ट्रपति के अगले चुनाव से पहले।

अफगानिस्तान की सरकार तालिबान और पाकिस्तान की नीयत से आश्वस्त नहीं है। तालिबान आतंकवाद की जड़ है। भारत सतर्क है, क्योंकि उसमें अपनी सुरक्षा का भी प्रश्न जुड़ा है। भारत किसी दबाव में नहीं आएगा। चीन तो पाकिस्तान का हर हालात का दोस्त है। पाकिस्तान ३७० के विषय को लेकर पूरी कोशिश कर रहा है कि यह मामला किसी तरह इंटरनेशलाइज हो, यानी राष्ट्र मंडल हस्तक्षेप करें। चीन का अपना स्वार्थ भी है, क्योंकि पाकिस्तान द्वारा कब्जा किए गए हिस्से को वापस करने की हम माँग करते हैं। चीन की वेल्ट रोड इनाशियव वाली योजना इस हिस्से से गुजरती है। पाकिस्तान के कहने पर चीन ने कश्मीर के विषय को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में उठाया। बंद कमरे में सुरक्षा परिषद् ने कोई बयान जारी नहीं किया। आंतरिक विचार-विमर्श हुआ। स्पष्ट है कि पाकिस्तान की अपनी मनोच्छा पूरी नहीं हो सकी। बाद को एक प्रेसवार्त्ता में पाकिस्तान और चीन के राजदूत ने मानवाधिकार का प्रश्न उठाया। यू.एन. (राष्ट्रमंडल) में भारत के

राजदूत अकबरुद्दीन ने मुँहतोड़ उत्तर दिए, जो विश्व भर के लोगों ने टी.वी. पर देखे और सुने। पिछले दिनों हाँगकाँग में जो हो रहा है और चीन के अपने सिकियांग प्रदेश में लाखों मुसलमानों का उत्पीड़न हो रहा है, उनको जेल में बंद कर दिया गया है, उनके धार्मिक रीति-रिवाजों पर प्रतिबंध है, वह चीन मानव अधिकारों की बात करे, यह अजूबा ही है। भारत के राजदूत ने न केवल भारत का दृष्टिकोण स्पष्टता से प्रस्तुत किया, वरन् उठाए गए सवालों के ऐसे उत्तर दिए कि प्रश्नकर्ताओं की बोलती बंद हो गई। पाकिस्तान को अधिकतर देशों ने यही परामर्श दिया है कि इस विषय पर भारत से बातचीत करे। भारत का कथन है कि आतंकवाद को बंद करने के बाद ही बातचीत हो सकती है। हमारे राजदूत ने प्रेस में स्पष्ट कर दिया कि चीन की अपनी राय का वैश्विक मत नहीं है। पिछले दिनों समाचार आ रहे हैं कि जम्मू-कश्मीर में बहुत से प्रतिबंध हटाए गए हैं, टेलीफोन इत्यादि सामान्यत: कार्य करने लगे हैं। फिर भी पिछले सात दशकों में जो हालात बने हैं, वे धीरे-धीरे ही सामान्य होंगे। भारत सावधानी बरत रहा है। इमरान और पाकिस्तान की आई.एस.आई. (सैन्य खुफिया एजेंसी) तथा वहाँ के अन्य सैनिक अधिकारियों की बंदर घुड़कियों को देखते हुए चौकस है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने यह भी खुले तौर पर कह दिया है कि भारत अपने आणविक सिद्धांत से सदैव बँधा नहीं रह सकता कि हम पहले आक्रमण नहीं करेंगे। राजनाथ सिंह ने यह भी कहा है कि पाकिस्तान से केवल एक मुद्दे पर ही बात होनी बाकी है और वह है पी.ओ.के., यानी जम्मू-कश्मीर का जो हिस्सा कबीलों और पाकिस्तानी सेना ने अपने कब्जे में कर रखा है। किंतु कोई भी बातचीत तब होगी, जब पाकिस्तान आतंकवादी गतिविधियों को समाप्त करे। परिस्थितियाँ संवेदनशील हैं और देश को इस समय एकता से उनका सामना करना है। राजनीतिक दलों को याद रखना होगा कि देश पहले है, राजनीतिक दल बाद में।

लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री का उद्‌बोधन

लालकिले से १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस की प्रात: देशवासियों को प्रधानमंत्री के उद्‌बोधन की प्रतीक्षा रहती है। स्वतंत्रता संग्राम में आहुति देने वाले शहीदों, सैनिक और असैनिक दल, जो देश की सीमाओं की रक्षा में तैनात हैं, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के उपरांत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के सामने जो समस्याएँ हैं, उनपर अपने विचार प्रस्तुत किए। केरल, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, ओड़िशा, बिहार तथा देश के अन्य इलाके जो अति वर्षा और बाढ़ से पीड़ित हैं, उनके प्रति सहानुभूति और संवेदना प्रकट करने के साथ-साथ केंद्र द्वारा हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया। प्रधानमंत्री ने अनेक महत्त्वपूर्ण मुद्दों की ओर देश का ध्यान खींचा। वे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक हैं। सब मुद्दों का विवेचन स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। बजट ने एक आर्थिक तसवीर देश के सामने रखी थी और उससे संबंधी समस्याओं और शंकाओं के बारे में समय-समय पर विचार-विमर्श करने की बात कही। इस समय प्रधानमंत्री ने अपने उद्‌बोधन में जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण सवाल उठाए और जिनका दीर्घगामी प्रभाव होगा, उनकी संक्षेप में चर्चा करना चाहेंगे। उनमें से एक है पानी का संकट और दूसरा है प्लास्टिक के इस्तेमाल, विशेषतया जो एक बार ही प्रयोग में आता है, उसको बंद करने का आह्वान। जलशक्ति मंत्रालय के दायित्वों और उद्‌देश्यों के विषय में ध्यान दिलाया। जलशक्ति मंत्रालय से बहुत आशाएँ हैं। उनके द्वारा पानी से संबंधित अनेक एजेंसियों में सामंजस्य स्थापित हो सकेगा। प्लास्टिक कितना हानिकारक है, इस विषय में तो देश बहुत समय से चिंतित है। अब इस विषय में काररवाई होगी और कार्यक्रम बनेंगे। प्रधानमंत्री ने आह्वान किया कि गांधी जयंती से 'प्लास्टिक हटाओ' अभियान प्रारंभ होना चाहिए। एक और मुद्दा जनसंख्या नियंत्रण का है। दुनिया की एक छठी आबादी भारत में है। जो भी विकास होता है, वह बढ़ती जनसंख्या खा जाती है। २०२४ तक यह चीन की जनसंख्या से अधिक हो सकती है। ऐसा एक यू.एन. की रिपोर्ट में कहा गया है। छोटे परिवार का सम्मान होना चाहिए। जनता और राज्य सरकारों से सहयोग की अपील की गई है। पहली बार आपातकाल के बाद इस गंभीर किंतु संवेदनशील समस्या के बारे में किसी प्रधानमंत्री ने बात की है। ओवैसी इसको भी मुसलिम विरोधी करार देते हैं। जनसंख्या विस्फोट को सही दृष्टि से देखने की जरूरत है। उसका संप्रदायीकरण बिल्कुल अनुचित है। यह राष्ट्र निर्माण का प्रश्न है। प्रधानमंत्री ने २०१९ के बाद के समय को जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने का कालखंड कहा है। अपनी सरकार की उपलब्धियों और योजनाओं पर भी उन्होंने प्रकाश डाला।

अनुच्छेद ३७० और जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे को निरस्त करने के विषय में उन्होंने कहा कि यह 'एक राष्ट्र और एक संविधान' की ओर कदम है। उन्होंने पुन: कहा कि अनुच्छेद ३७० परिवारवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार और अलगाववाद का जनक रहा है। अब जनता अपने सच्चे नेतृत्व का चुनाव कर सकती है। जनता पार्टी के समय हुए चुनाव के अलावा सब चुनाव 'रिक्ड' रहे हैं, उनसे खिलवाड़ हुआ है। इसी कारण जम्मू-कश्मीर में जनता और प्रशासन के बीच अविश्वास की एक गहरी खाई पैदा हो गई। अपनी सरकार की कार्यप्रणाली का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी सरकार समस्याओं को न आगे के लिए छोड़ती है और न उनको बढ़ने देती है। तुरंत निर्णय लेना उनकी सरकार का स्वभाव है। जो सत्तर साल में न हो सका, उनकी सरकार ने ७० दिन में करके दिखा दिया। उन्होंने जनता से अपील की, जो धनोपार्जन के साधन पैदा करते हैं, उन्हें संदेह की दृष्टि से नहीं, आदर की दृष्टि से देखना चाहिए।

एक बहुत ही खास निर्णय की उन्होंने घोषणा की, जो बहुत समय से विलंबित था और उसकी चर्चा होती रही है। कारगिल के युद्ध के उपरांत जो सुब्रमण्यम कमेटी बैठी थी, उसने सिफारिश की थी कि सुरक्षा प्रणाली में आवश्यक समन्वय-सामंजस्य और सहयोग लाने के लिए तीनों सैन्य बलों के प्रमुखों के अतिरिक्त एक चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सी.डी.एफ.) की नियुक्ति होनी चाहिए। आडवानीजी

की अध्यक्षता वाली मंत्रियों की कमेटी ने भी इसकी सिफारिस की, समर्थन किया, पर निर्णय न हो सका। सैन्य बलों में भी सी.डी.एस. के विषय में अलग-अलग राय रही, रक्षा मंत्रालय में भी मतभेद रहा। प्रधानमंत्री ने निर्णय कर लिया कि अब सी.डी.एस. के पद का सृजन होगा। यह ओहदा सैन्य दलों के प्रमुखों के ऊपर होगा। प्रधानमंत्री के आदेश से रक्षा मंत्रालय में एक कमेटी भी बना दी गई है, जो नवंबर तक अपनी रिपोर्ट दे देगी कि इस नई व्यवस्था का रंग-रूप किस प्रकार का होगा। देश की सुरक्षा की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण निर्णय है, जो बहुत समय से अपेक्षित था और बीस साल के बाद अब संभव होगा।

'इंडिया टुडे' मैगजीन ने २६ अगस्त के अपने अंक का शीर्षक 'मोदिस्तान' दिया है और अपने एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण, नेशनल पोल के आधार पर कहा है कि राष्ट्र मोदी से मोहित है, उनकी पकड़ में है। भारतीयों का विश्वास है कि इस समय मोदी के पास हर समस्या का उत्तर है, समाधान है। सर्वेक्षण विचारणीय है। देश अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है, मंदी का जोर है, पर जनता का मोदी की सोच और कार्यप्रणाली में अगाध विश्वास है। जनता का मूड ऐसा है कि 'मोदी है तो मुमकिन है।' ७३वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनता को आशा और भरोसा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश बहुआयामी प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

श्रीमती सुषमा स्वराज को श्रद्धासुमन

श्रीमती सुषमा स्वराज के अल्पायु में अचानक निधन के समाचार से देश को एक बड़ा धक्का लगा। देश के हर भाग से और प्रत्येक वर्ग से संवेदना और शोक के समाचार प्राप्त हुए। ये उनकी लोकप्रियता के ही परिचायक हैं। उनमें कोई औपचारिकता नहीं थी। वे हृदय के उद्‌गार थे। सुषमा स्वराज ने २०१९ के चुनाव में भाग लेने के लिए अपनी पार्टी से असमर्थता प्रकट की थी, क्योंकि कुछ समय पहले उनका गुरदे का ट्रासप्लांटेशन हो चुका था। पर आशा थी कि उनकी सेवाएँ अन्य महत्त्वपूर्ण पदों पर उपलब्ध होंगी। उनके असामयिक निधन ने उन आशाएँ पर पानी फेर दिया। जनता पार्टी के दिनों में हरियाणा में देवीलाल के विरोध के बावजूद वे २५ वर्ष की उम्र में मंत्री बनाई गई थीं। हम उनको तभी से जानते थे, चूँकि उनका सरकारी बँगला चीफ कमिश्नर के निवास के सामने ही था। चंडीगढ़ में उनकी ख्याति एक अत्यंत योग्य और ईमानदार मंत्री की थी, जो जनता के अभियोग और अभाव को बहुत सहानुभूति से सुनतीं। उनके दरवाजे बिना भेदभाव के सबके लिए खुले थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हुई थी। उन्होंने कानून की डिग्री हासिल की थी। आपातकाल में उन्होंने जार्ज फर्नांडीस के मुकदमे में पैरवी की और चुनाव के समय जब वे जेल में बंद थे, प्रचार किया। जनता पार्टी के विघटन के बाद वे भाजपा में आ गईं। वे प्रखर वक्ता थीं, किंतु उनके शब्द चुने हुए और संतुलित होते थे। वे दल और संसद् दोनों में अत्यंत सक्रिय रहीं। सुषमाजी ने आडवाणीजी की रथयात्रा में सविनय भाग लिया। उत्तरपारा में जहाँ श्रीअरविंद ने जेल से छूटने पर अपना महत्त्वपूर्ण भाषण दिया था, आडवाणीजी को पहुँचने में बहुत रात हो गई थी। जनता प्रतीक्षा कर रही थी। हम भी कोलकाता से वहाँ पहुँच गए थे, सुषमाजी आडवाणीजी की देखभाल कर रही थीं। इस लंबी यात्रा में भी उनके चेहरे पर थकान नहीं, मुसकान थी। आधी रात हो गई थी, हमें देखकर उन्होंने कहा, अरे आप भी यहाँ आए हुए हैं और आधी रात तक रुके हुए हैं, बड़ी दिक्कत रही होगी। ऐसी थी उनको दूसरों की चिंता, अपने कष्ट के प्रति अनदेखी। संवेदनशीलता इसको कहते हैं। राज्यसभा के सदस्य होने के समय हमने देखा कि वे जब प्रतिपक्ष में थीं तो बड़े ढंग से प्रश्न करतीं, पूरक प्रश्न पूछतीं और संबंधित मंत्री के लिए उत्तर देना आसान नहीं होता था।

मंत्री के नाते उनकी भूमिका उतनी ही प्रभावी रही। वे कई मंत्रालयों की मंत्री रहीं। उन्हें साहित्य से बहुत प्रेम था। वे शे'रो-शायरी की भी शौकीन थीं। उनकी स्मरणशक्ति विलक्षण थी। शे'र और कविताओं का समीचीन उपयोग वे संसद् में करने में सक्षम थीं। वे मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत थीं। उनमें सचमुच माँ का हृदय था। कोई भी अपनी कठिनाई लेकर जाए, यथाशक्ति वे उसकी सहायता की चेष्टा करती थीं। विदेश मंत्री की हैसियत से उन्होंने भारत के पक्ष को, चाहे कोई सा फोरम रहा हो, सब जगह सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया। जो भारतीय नागरिक विदेशों में संकट में फँसे थे, उनको सुरक्षित भारत वापस लाने वाले उनके अनेक प्रयास स्तुत्य हैं। सुषमाजी के उन प्रयत्नों ने देश की सामान्य जनता का दिल जीत लिया। किंतु विनम्रता से सुषमाजी ने उसे अपने कर्तव्यपालन और दायित्व निर्वहन का ही भाग कहा। किसी प्रकार के श्रेय से अपने को महिमामंडित करने से सदैव दूर रहीं। उनका एक गुण था कि जब भी उनको हमने फोन किया और वे नहीं मिलीं, तो आने पर वे अवश्य संपर्क करतीं। जब वे सूचना मंत्री थीं, प्रशासन में मितव्यता के संदर्भ में प्रकाशन विभाग को समाप्त करने का सुझाव आया, वहाँ के कुछ कर्मचारी हमारे पास आए और अपना पक्ष रखा। हमने यह मामला पार्टी और राज्यसभा दोनों में उठाया। प्रधानमंत्री वाजपेयीजी से भी इस विषय में बातचीत की। एक पत्र लिखकर हमने उन्हें प्रकाशन विभाग के असली मंतव्य की ओर ध्यान दिलाया कि इस कारण से उसका साहित्य अकादमी या नेशनल बुक ट्रस्ट में विलय नहीं किया जा सकता है। पूरी तरह विचार कर सुषमाजी ने प्रकाशन विभाग को बंद करने के सुझाव को नकार दिया। वे एक अत्यंत कल्पनाशील, विचारशील, संवेदनशील मंत्री थीं, जो हर निर्णय समझ-बूझ से करती थीं। भारतीय संस्कृति की वे प्रेमी थीं, पर परंपरा के आधुनीकरण की कहाँ आवश्यकता है, उसे समय रहते वे भाँप लेती थीं। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व अत्यंत शालीन और गरिमामयी था। उनकी अनन्य सेवाओं को देश कभी भूल नहीं सकता। श्रीमती सुषमा स्वराज की स्मृति को आदरपूर्वक नमन!

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

(त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी)

काऊ बेल्ट की उपकथा

● धर्मवीर भारती

(२५-१२-१९२६—४-९-१९९७)

हिंदी-भाषी प्रदेश, यानी राजनीतिक भाषा में हिंदी पट्टी, यानी स्नाब अंग्रेजीपरस्त अफसरों और पत्रकारों की भाषा में 'काऊ बेल्ट', यानी अशिक्षा, निर्धनता, पिछड़ेपन, जातिवादी और संप्रदायवादी कट्टरता में निमग्न अंधकार भरी पट्टी देश की प्रगति और आधुनिकीकरण में सबसे बड़ा अवरोध; उपहास, उपेक्षा और अवमानना की पात्र। पर अजीब बात यह है कि इन तमाम लांछनों के बावजूद यही पट्टी है, जहाँ से एक के बाद एक प्रधानमंत्री निकलते चले जाते हैं, बड़े प्रशासक, योजना-विधायक, पक्ष और विपक्ष के बड़े-बड़े राजनेता, बड़े पत्रकार, बड़े शिक्षाशास्त्री, बड़े उद्योगपति और बड़े अभिनेता। मानो यह अँधियारी पट्टी रत्नों की खान है। विचित्र विडंबना यह है कि जो इस पट्टी को आलस्य, जड़ता, पिछड़ेपन और सांप्रदायिक कट्टरता का प्रतीक मानते हुए इसकी हँसी उड़ाते हैं, वे या तो इसी पट्टी से निकलकर आए हैं या अपने अस्तित्व के लिए इसी पट्टी के समर्थन पर पूरी तरह निर्भर होते हैं।

क्या सचमुच हिंदीभाषी लोगों की मानसिकता में बुनियादी तौर पर कुछ ऐसा है, जो उन्हें जाति और धर्म के स्तर पर कट्टर, असहिष्णु और पिछड़ा हुआ बनाता है? क्या वे मूलत: अकर्मण्य और आलसी हैं? आखिर उनका असली चेहरा क्या है? बाकी आरोपों पर फिर कभी बात करेंगे। आइए, इस बार उनकी असहिष्णुता और धार्मिक कट्टरपन की जाँच करें, जरा बारीकी से गहरे उतरकर।

'जिस चीज को हम बहुत नजदीक से देखते रहे हैं, अकसर उसके बारे में हमारा परिप्रेक्ष्य बहुत सीमित हो जाता है। फिर जरूरत होती है काफी दूर से जाकर उसे देखने की, ताकि उसे उसके समूचे परिवेश को विस्तृत संदर्भों में पहचाना जा सके। तभी न मौसम की सही जानकारी के लिए धरती से सैकड़ों मील ऊपर उड़ते हुए उपग्रह के कैमरे से देखना पड़ता है। इसलिए आइए, आपको हिंदी प्रदेश से हजारों मील दूर ले चलते हैं।

हिंदी प्रदेश से हजारों मील दूर थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक। इतने दिनों से देश के बाहर चक्कर काट रहा हूँ कि देश की ऋतुओं और तिथियों का कोई अंदाज ही नहीं रहा। हवाई अड्डे से होटल बहुत दूर है और होटल पहुँचने के पहले ही बीच में रुककर एक मेले में जाना है। मेला काहे का? कुश्ती का। मैं हक्का-बक्का हूँ कि यह कैसा होगा और कुश्ती से मेरा क्या ताल्लुक? तीन ओर मकानों से घिरे एक खुशनुमा मैदान में हजारों भारतीयों की भीड़। बीच-बीच में छह-सात अखाड़े खुदे हुए हैं। पहलवान अपनी मंडलियों के साथ 'बजरंगबली की जय' बोलते चले जा रहे हैं। मेजबान मुझको आश्चर्यचकित देखकर मुसकराते हैं और फिर आहिस्ते से समझाते हैं, आप बंबई में रहते हैं न, भूल गए होंगे कि आज नाग पंचमी है। हम लोग सौ साल से यहाँ हैं, पर अपने त्योहार नहीं भूले। नाग पंचमी को हम लोगों ने युवा-दिवस बना लिया है। उसी तरह अखाड़े खुदते हैं, जैसे यू.पी., बिहार में। आज की कुश्ती के चैंपियन को पुरस्कार आपके हाथ से दिलाएँगे। 'नाग पंचमी' की पुरस्कार विजेता थीं लछमन अखाड़े की युवा जोड़ी इसाक गफूर और राघव मिसरा।

ये थे 'काऊ बेल्ट' से जाकर बैंकॉक में बसे हुए प्रवासी भारतीय। इनमें साधारण दरबान और चौकीदार से लेकर लखपति, करोड़पति लोग थे। मालूम हुआ कि बैंकॉक का सारा लकड़ी का व्यापार, इमारती सामान की तिजारत, मकान बनाने का उद्योग, मशीनों और फैक्टरियों को संचालित करने का उद्यम, कपड़े की आढ़तें, सब भारतीयों के हाथ में हैं और इन सभी भारतीयों में नब्बे प्रतिशत यू.पी., बिहार के लोग हैं, पिछड़ी हुई हिंदी पट्टी के। अशिक्षाग्रस्त काऊ बेल्ट के।

शाम को डिनर रखा गया था अब्दुल रज्जाक साहब के घर पर। वे बैंकॉक में इमारती लकड़ी के सबसे बड़े व्यापारी हैं। थाईलैंड के मिनिस्टरों और सेनापतियों के हमप्याला, हमनेवाला। हज कमेटी के सर्वेसर्वा, मलेशिया और थाईलैंड के इस्लामिक कल्चर फेडरेशन के चेयरमैन, पर आज भी दिल उनका यू.पी. में रमा हुआ है। यू.पी. से कोई मेहमान आए, पहली शाम का डिनर उन्हीं के यहाँ होना जरूरी है। पता नहीं कैसे, उन्हें मालूम हो गया था कि मैं आया बंबई से हूँ, पर हूँ मूलत: यू.पी. का।

रज्जाक साहब तपाक से गले मिले। बैंकॉक के भारतीयों की समस्याएँ बतलाते रहे। भारत का हालचाल पूछते रहे। फिर बोले, खाना मेज पर लगा है। पर दो मिनट ठहर जाइए। मेरा एक दोस्त आपसे मिलने आया है खास तौर से। हाथ-मुँह धोने गया है। कौन है यह दोस्त?

दो-तीन मिनट बाद बाथरूम का दरवाजा खुला और उसमें से जो लंबे से अधेड़ साहब निकले, उनका हुलिया साक्षात् 'काऊ बेल्टी' था। धोती का फेंटा कसते हुए, भीगे जनेऊ से पानी सूँघते हुए, लंबी चोटी

को फटकारकर गाँठ बाँधते हुए उन्होंने नम्रता से नमस्कार किया। मालूम हुआ, ये हैं रामभरोसे पंडित। बैंकॉक के हिंदू सेवा-दल के अध्यक्ष। भारत प्रवासी ट्रस्ट के प्रमुख ट्रस्टी, विश्व हिंदू परिषद् के स्थानीय महामंत्री। शिखा बाँधकर, बदन पर एक फतुही डालकर जब वे खाने की मेज पर बैठे तो पता चला कि रज्जाक और रामभरोसे की जिगरी दोस्ती पूरे देश में मशहूर है। आँधी हो, पानी हो, हफ्ते में कम-से-कम दो दिन दोनों साथ डिनर लेते हैं, कभी रज्जाक साहब के यहाँ, कभी रामभरोसे पंडित के यहाँ।

रज्जाक साहब प्रेम से रामभरोसे की टाँग खिंचाई कर रहे थे, 'साहब, यह हिंदू सभा का नेता है, पर महीनों तक जनेऊ नहीं बदलता। बार-बार मुझे याद दिलानी पड़ती है। परले सिरे का कंजूस है।' रामभरोसे कहाँ पीछे रहनेवाले, बोले, 'साहब, इसकी बातों में न आइएगा। इसका कोई दीन-ईमान है! मसजिद के मकतबे में जंगली लकड़ी की शहतीर लगवा रहा था। मैं आकर बिगड़ा तो इसने साखू की लकड़ी लगवाई। अरे, धरम के काम से तो मुनाफा न कमा।'

बहर-बहाल खाना शुरू होता है तो यह भेद खुलता है कि हफ्ते में दोनों दो बार साथ खाना खाते हैं, वह इसलिए कि अपनी-अपनी संस्थाओं की समस्याओं के बारे में एक-दूसरे की सलाह जरूरी होती है। रज्जाक साहब हिसाब-किताब कानून-आईन में पक्के हैं और रामभरोसे पंडित को संस्था संचालन···लोकप्रियता के हथकंडे और तिकड़में खूब आती हैं। रामभरोसे के हिंदू सेवा दल वगैरह का हिसाब-किताब रज्जाक साहब के जाँचे बिना पूरा नहीं होता और रज्जाक साहब की संस्थाओं में कोई झगड़ा-झंझट उठ खड़ा होता है तो रामभरोसे की सूझबूझ काम में आती है। पिछले साल हज जानेवाले यात्रियों से मलायी और चीनी कुलियों से कुछ झंझट हो गया और मामला जरा तूल पकड़ने लगा। रज्जाक साहब ने संदेशा भेजा। रामभरोसे दौड़े हुए आए और डाँट-फटकार, मान-मनुहार कर आधे घंटे में मामला रफा-दफा कर दिया। एक बार बैंकॉक के कलेक्टर ने जमीन का कोई पुराना कानून लागू कर नाग पंचमी के मेले पर बंदिश लगा दी और पिछले दस साल का हर्जाना लाखों में माँग लिया। रज्जाक साहब पहुँच गए दो वकील लेकर। कानून पर बहस की, हर्जाने की रकम कम कराई और नाग पंचमी के मेले की लिखित अनुमति लेकर डेढ़ घंटे में पहुँच गए। अखाड़े चालू करवा दिए।

ये किस्से सुनकर जब-जब मैंने रज्जाक साहब से कहा कि 'खूब है आप लोगों की दोस्ती!' तो रामभरोसे बोले, 'काहे की दोस्ती डाक्टर भारती साहेब, असल में हम आजमगढ़ के हैं, इहौ सारू आजमगढ़ का है। एक माई का दुई बेटवा समझौ। ई बात जुदा है कि हम लायक बेटवा हैं, ई जरा नालायक निकल गवा। मुला धन-दौलत एही कमाता है। बात ई है कि लक्ष्मी मैया तो उल्लुऐ पर बैठती है न···और रज्जाक साहब का एक घूसा रामभरोसे की पीठ पर पड़ा, अबे देवी-देवताओं की तो इज्जत रख हँसी-मजाक में उन्हें भी घसीटता है। जाने इसे हिंदू सभा का सेक्रेटरी किसने बना दिया?

अपने-अपने धर्म पर अखंड आस्था। दूसरे धर्म के प्रति गहरा निश्छल आदर और जात-पाँत-संप्रदाय से ऊपर उठकर पूरी भारतीय जाति को अपना समझनेवाले ये रज्जाक और रामभरोसे के चेहरे मेरे जहन में गहरे दर्ज हैं, क्योंकि हिंदी पट्टी का, हम हिंदीभाषियों का यही असली चेहरा है।

आज जब मुरादाबाद, मेरठ, इलाहाबाद या बिहार में कहीं भी सांप्रदायिक तनाव की खबर पढ़ता हूँ तो बड़ी शिद्दत से याद आते हैं ये दोनों चेहरे। उदास होकर सोचता हूँ कि कहाँ खोता जा रहा है हमारा असली चेहरा? ये नफरत के मुखौटे किसने लगा दिए हैं हमारे चेहरों पर? किसने हमारे होंठों पर चिपका दिए हैं ये ललकार भरे नारे? नहीं दोस्तो, यह जहर हमारी हिंदी पट्टी का नहीं, यह तो कोई साजिश कर रहा है चुपचाप। हमारा तो असली चेहरा वही है, जिसका मजहब कोई हो, जिसका असली धर्म प्यार है, निश्छल प्यार, उदारता, दिली भाईचारा।

और यह चेहरा आज का नहीं है। इसके पीछे हिंदी पट्टी का पिछले चार सौ बरसों का शानदार इतिहास है। इन चेहरों के पीछे अवध के कला-रसिक वीर नवाब वाजिद अली शाह का चेहरा है, जिसने वृंदावन में भगवान् कृष्ण के वसंत शृंगार के लिए लाखों की न्योछावर भेजी थी और आज तक जिसके नाम से वसंती कमरा मंदिर में सुरक्षित है। इसके पीछे नवाब के विश्वस्त हिंदू खजांची ललित किशोर शाह का चेहरा है, जो करोड़ों का खजाना त्यागकर वृंदावन में फकीर होकर रहे, पर अंग्रेज की अदालत में जाकर नवाब के खिलाफ गवाही देना कबूल नहीं किया। इस चेहरे के पीछे अब्दुर्रहीम खानखाना का चेहरा है, जो दिल्ली दरबार से प्रताड़ित होकर जब चित्रकूट पहुँचे, तब राम वनवास को याद करके उन्होंने लिखा—चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेस/ जापर विपदा परत है सो आवत यहि देस। इसके पीछे मालवा की महारानी अहल्याबाई का चेहरा है, जो पेशवाओं के उत्पीड़न से बचाने के लिए हजारों मुसलिम जुलाहों के परिवारों को माहेश्वर लाईं, उनके लिए मसजिदें बनवाईं, उनकी बुनी साड़ियों के लिए बाजार खुलवाए, उनकी बेटियों की शादियाँ करवाईं।

इसके पीछे बुंदेलखंड की महारानी लक्ष्मीबाई का चेहरा है, जिन्होंने अपने तोपची पठान गौस खाँ को अपने बेटे से बढ़कर माना। इस तथाकथित धर्मांध काऊ बेल्ट में धर्म-निरपेक्ष न्याय की ऐसी परंपरा थी कि हनुमानगढ़ी पर जब काजियों और मुल्लाओं ने जबर्दस्ती कब्जा कर लिया, तब अवध के मुसलिम नवाब ने अपनी सेनाएँ भेजीं कि हनुमानगढ़ी को मुल्लाओं से मुक्त कराकर हिंदू बैरागियों को सौंप दिया जाए। इस परंपरा के पीछे इस प्रदेश के महाकवियों की वाणी है। रामायण के अमर गायक तुलसीदास, जिन्होंने काशी के कुछ कट्टर पंडितों की निंदा-आलोचना से क्षुब्ध होकर लिखा था, 'धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहो जुलहा कहौ कऊ, माँग के खाइबौ, मसीत को सोइबौ, लैबै को एक न देबै की दोऊ।' (मुझे कोई कुछ भी कहे, मुझे क्या करना, माँगकर खाऊँगा, मसजिद में जाकर सो रहूँगा, न किसी के लेने में न किसी के देने में।) मसजिद परायी नहीं थी तुलसीदास के लिए। और न मुसलिम होने की बिना पर अलाउद्दीन अपना था मलिक मुहम्मद

जायसी के लिए। अपनी 'पद्मावत' में चित्तौड़ पर हमला करनेवाले मुस्लिम सुल्तान अलाउद्दीन को जायसी ने 'अलादीन सैतानू' घोषित किया, उसे शैतान की संज्ञा दी। इस प्रदेश के सूफियों, संतों और फकीरों ने बार-बार कहा कि राम और रहीम के बंदों में कोई फर्क नहीं, वे मन-प्राण से एक हैं और संतों, सूफियों के साथ गुरुओं ने यही उपदेश दिया। गुरु गोविंदसिंह ने स्पष्ट कहा, 'मानुस की जात सबै एकै पहिचानिबो।'

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि सदियों की इस अध्यात्म समृद्ध मानवप्रेमी परंपरा ने विरासत में हिंदी प्रदेश को एक गहरी उदारवादी मानसिकता दी, जो सत्य के प्रति एकनिष्ठ थी, जाति और धर्म के नाम पर पनपनेवाली क्षुद्र संकीर्णताओं से मुक्त होने की कोशिश करती थी व्यावहारिक जीवन में। रैदास, कबीर, दादू की बानी से सुपरिचित छोटी-से-छोटी जाति के लोग तथा गरीब-से-गरीब किसान, दस्तकार और जुलाहे भी सब में एक आत्मा को पहचानने और मानवीय मर्यादाओं का कथनी तथा करनी में पालन करने की क्षमता रखते थे। यदि शिक्षा का काम संस्कार देना है तो मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि इन चार सौ वर्षों की परंपरा ने उन्हें सच्चे अर्थों में सुशिक्षित (चाहे उन्हें अक्षर ज्ञान हो या नहीं) और संस्कारवान बनाया था। हिंदीभाषी प्रदेश के चरित्र का यह आयाम अपने में अनूठा और सारे भारत में अद्वितीय था। अंग्रेजी शिक्षा और संस्कारों से समाज की जो ऊपरी सतह प्रभावित होकर पश्चिम के छद्म तर्कवाद और कॅरियर-परस्ती की ओर दौड़ पड़ी थी, वह चाहे विपथगामी होने लगी हो, पर जन-सामान्य में यह गहरी मूल्य चेतना, मर्यादा बुद्धि और सर्व-धर्म समभाव तथा मानव-प्रेम की परंपरा अक्षुण्ण थी।

हिंदी प्रदेश इस मामले में विलक्षण था, देश के अन्य भागों से कहीं अधिक गहरे संस्कारवाला था, मेरी इस बात को आप शायद मेरा मोह समझें, शायद आप यह समझें कि अपने हिंदी भाषी प्रदेश की यह अतिरंजित प्रशंसा कर प्रकारांतर से मैं आत्मप्रशंसा कर रहा हूँ। पर अपने इस कथन (कि हिंदी प्रदेश में गहरी विलक्षण अध्यात्म चेतना और एकात्मपरक मानववादी संस्कार रहा है) की गवाही में बतौर सबूत मैं पेश करता हूँ अहिंदी प्रदेश के एक महान् विश्वविख्यात चिंतक की वाणी। कहते हैं वे कि 'देश के अनेक भागों में जहाँ अंग्रेजी के माध्यम से आई विचारधारा का प्रभाव है, वहाँ लोग भटक गए हैं। उनकी प्रवृत्ति भोग की ओर है। वे आध्यात्मिक विषयों में गहरी अंतर्दृष्टि कैसे प्राप्त कर सकते हैं?'''दूसरी ओर देखो तो हिंदीभाषी संसार में बड़े प्रभावशाली प्रतिभावान त्यागी उपदेशकों की परंपरा ने द्वार-द्वार तक वेदांत के सिद्धांतों को पहुँचा दिया है। विशेषकर पंजाब केसरी रणजीत सिंह के शासनकाल में त्यागियों को जो प्रोत्साहन दिया गया, उसके कारण नीचातिनीचों को भी वेदांत दर्शन के उच्चतम उपदेशों को ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हो गया। सात्त्विक अभिमान के साथ पंजाब की कृषकपुत्री कहती है कि मेरा सूत कातने का चरखा भी सोहम पुकार रहा है। और मैंने मेहतर त्यागियों को भी ऋषिकेश के अरण्यों में संन्यासी का वेश धारण किए हुए वेदांत का अध्ययन करते हुए देखा है।'''इसी प्रकार पंजाब और उत्तर प्रदेश में धार्मिक शिक्षा बंगाल, बंबई या मद्रास की अपेक्षा अधिक है। वहाँ भिन्न संप्रदायों के सदाकाल प्रवास करनेवाले त्यागी (साधु)-दशनामी, बैरागी, पंथी (नानकपंथी, कबीरपंथी, दादूपंथी, रैदासपंथी आदि) लोग प्रत्येक द्वार पर धर्म का उपदेश दिया करते हैं।

कौन नहीं जानता कि अत्याचार के मुकाबले में बाहरी अस्त्र-शस्त्र चाहे हार जाएँ, लेकिन आंतरिक अध्यात्म की चिनगारी अत्याचार पीड़ित को एक ऐसा दृढ़ मानसिक संकल्प देती है कि वह बार-बार हारकर भी नहीं हारता। यही आंतरिक आध्यात्मिक ओज था, जिसके कारण 'फूट डालो और राज करो' वाली उपनिवेशवादी अंग्रेज शक्ति के आगे हिंदी प्रदेश के जनसामान्य की चेतना बार-बार विद्रोह करती रही। बार-बार हारी, पर झुकी नहीं।

हिंदी प्रदेश की पारंपरिक मानसिकता के गहरे आध्यात्मिक सर्वधर्म समभावी मानव-प्रेमी आधार की यह भूरि-भूरि प्रशंसा किसने की है, आप जानते हैं। यह अमृतमय प्रमाणपत्र हिंदीभाषी प्रदेश को दिया है प्रात:स्मरणीय, महामनीषी स्वामी विवेकानंद ने। (देखें : हिंदू धर्म के पक्ष में)

कौन नहीं जानता कि अत्याचार के मुकाबले में बाहरी अस्त्र-शस्त्र चाहे हार जाएँ, लेकिन आंतरिक अध्यात्म की चिनगारी अत्याचार पीड़ित को एक ऐसा दृढ़ मानसिक संकल्प देती है कि वह बार-बार हारकर भी नहीं हारता। यही आंतरिक आध्यात्मिक ओज था, जिसके कारण 'फूट डालो और राज करो' वाली उपनिवेशवादी अंग्रेज शक्ति के आगे हिंदी प्रदेश के जनसामान्य की चेतना बार-बार विद्रोह करती रही। बार-बार हारी, पर झुकी नहीं। जब से पलासी में सिराजुद्दौला हारे, तब से हिंदी प्रदेश में और उसके आसपास के प्रदेशों में विद्रोह शुरू हो गए। कभी बैरागियों के, कभी किसानों के, कभी आदिवासियों के और १८५७ में जब अनेक उच्चपदस्थ सामंत तथा देशी राजे-रजवाड़े हिचक रहे थे, तब यह जनसामान्य एक प्राण होकर उठ खड़ा हुआ था अंग्रेजों के खिलाफ। आखिर बागी भारतीय फौजों में कौन थे? वही किसानों के बेटे, जो पेट भरने की खातिर हल के बजाय अंग्रेजों की दी बंदूकें उठाकर चल रहे थे। उन हिंदीभाषी रेजिमेंटों को 'हिंदोस्तानी' की संज्ञा दी गई। क्योंकि हिंदी प्रदेश के ये सपूत ही हिंदोस्तान के सच्चे प्रतीक थे। और ये रोटी और कमल के युद्ध-चिह्नों को धारण करनेवाले 'हिंदोस्तानी' हिंदीभाषी सिपाही ही देशभर की छावनियों में विद्रोह के ज्वलंत नायक थे। उस स्वाधीनता के अदम्य उद्घोष में कहाँ था जाति-पाँति और हिंदू-मुसलिम का भेदभाव? आजाद हुए क्षेत्रों में मुसलिम शासकों ने गो-हत्या बंद करवा दी थी और जब अवध के नवाब को अन्यायपूर्वक अपदस्थ कर अंग्रेज ले जाने लगे और लखनऊ की मुसलिम आबादी को आतंकित कर निष्क्रिय कर दिया गया तो बैसवाड़े के हजारों हिंदू किसान बल्लम-भाले, गँड़ासे, तलवार और लाठियाँ लेकर उठ खड़े हुए थे अपने नवाब को बचाने के लिए। १८५७ से १९४२ तक हिंदू-मुसलिम भेदभाव भुलाकर यह हिंदीभाषी प्रदेश जमकर लोहा लेता रहा अंग्रेजों से, बार-

बार आहत हुआ, गिरा और फिर उठ खड़ा हुआ।

मगर अफसोस, 'काऊ बेल्ट' की निंदा में रस लेनेवाले संस्कारविहीन अंग्रेजीपरस्त राजनेता, भूरी चमड़ी के अंग्रेजी-पूजक अफसर और अंग्रेजी तक सीमित पत्रकार बेचारे यह सब कहाँ जानते हैं। इतिहास का उनका ज्ञान सतही है, संतों की वाणी उनकी समझ में नहीं आती। जायसी और तुलसी, रसखान, कबीर और रहीम के शायद उन्होंने नाम सुने हों तो सुने हों, वरना इन सबसे उनका क्या ताल्लुक?

पर कहानी यहीं खत्म नहीं होती। चतुर अंग्रेज यह समझ गया था कि भारत की आंतरिक ऊर्जा का मूल आधार हिंदी प्रदेश है। तटवर्ती प्रदेशों पर उसका वर्चस्व स्थापित हो गया हो, पर जब तक विद्रोही हिंदी प्रदेश सशक्त और प्राणवान है, तब तक सल्तनते बर्तानिया के खिलाफ विद्रोह जारी रहेगा। इसलिए अंग्रेजों ने दोहरी नीति अपनाई हमें तोड़ने को। उसने जागीरदारों और जमींदारों का एक वर्ग बनाया, जो जमीन के घपले कर विद्रोही किसान को चूसकर उसकी शक्ति को नष्ट करे और खुद ब्रिटिश राज के फर्माबरदार बने रहें। दूसरी ओर उसने कानून, शिक्षा, भाषा हर क्षेत्र में वे नीतियाँ अपनानी शुरू कीं, जिनसे हिंदू-मुसलमान में भेदभाव बढ़े, आपसी वैमनस्य पैदा हो। सुदूर कच्छ से आए हुए स्वामी दयानंद के सामाजिक सुधार और महात्मा गांधी के राष्ट्रीय संग्राम-आह्वान को सबसे प्रबल समर्थन दिया था, इसी हिंदी प्रदेश की अग्रगामी जनता ने। अत: ज्यों-ज्यों राष्ट्रीय संग्राम इधर जोर पकड़ता गया त्यों-त्यों अंग्रेजों ने अपनी चालें कुटिलता से तेज करनी शुरू कीं। गुरुद्वारों, मसजिदों और मंदिरों के झगड़े पैदा करवाए, मुहर्रम और दशहरे पर दंगे करवाए, भाषायी और मजहबी संकीर्णताओं को खूब पनपाया और अफसोस कि हमारे नेताओं की गलती से अंत में वे इस देश के दो टुकड़े करने में सफल हो गए। यह धर्मांधता का जहर हिंदीभाषी प्रदेश की प्रकृति में नहीं था, इसे अंग्रेजों ने चंद अंग्रेजीपरस्तों का सहारा लेकर बोया। यह इतिहास का सत्य है कि पाकिस्तान की घोषणा हिंदी प्रदेश में नहीं हुई, वह एक अंग्रेज-परस्त जागीरदार ने इंग्लैंड में की और विभाजन के आंदोलन की अगुआई हिंदी प्रदेश के नहीं बल्कि उसके बाहर के एक अंग्रेजी-परस्त बैरिस्टर ने की, जिनका नाम था मुहम्मद अली जिन्ना।

बदकिस्मती से आजादी के बाद स्वदेशी चेतना, स्वदेशी इतिहास और स्वदेशी भाषा तथा स्वदेशी परंपरा को अंग्रेजी-परस्त व्यवस्था ने बिल्कुल हेय करार दिया और तेजी से अंग्रेजी-परस्ती हम पर लादी जाने लगी। 'फूट डालो और राज करो' की अंग्रेजी नीति हमारे राजनेताओं ने प्रकारांतर से अपना ली और अब वोट बैंक बाँटे जाने लगे। ठाकुर वोट, बनिया वोट, ब्राह्मण वोट, हरिजन वोट और जरा बड़े स्तर पर हिंदू वोट और मुसलिम वोट। शिक्षा में अंग्रेजी-परस्त का ऐसा जोर बढ़ा कि हम अपने इतिहास, अपनी सांस्कृतिक परंपरा, अपने संतों, सूफियों, भक्तों और गुरुओं की दी हुई आध्यात्मिक ऊर्जा तथा मानव-प्रेमी परंपरा से कटने लगे। हम धीरे-धीरे अपना वह प्यार भरा असली चेहरा भूलने लगे, जो रज्जाक और रामभरोसे ने देश के बाहर हजारों मील दूर सुरक्षित रखा। इसी अंग्रेजी-परस्ती ने राजनीति, समाज, शिक्षा, सरकार के क्षेत्र में हमारे असली चेहरे पर नफरत, संकीर्णता, सांप्रदायिकता, मनोमालिन्य के मुखौटे चढ़ाने शुरू कर दिए और जब वे सफल हो गए तो अब इन्हीं मुखौटों को दिखाकर अंग्रेजी-परस्त लोग मुसकराकर हिंदी प्रदेश को 'काऊ बेल्ट', 'पिछड़ा प्रदेश' के खिताब देने लगे। सच बात तो यह है कि तथाकथित काऊ बेल्ट के खिलाफ अंग्रेजी में मचाई जानेवाली ज्यादातर काँव-काँव इसलिए है, ताकि इन अंग्रेजी-परस्तों और इनके अंग्रेज आकाओं के असली पापों का पर्दाफाश न होने पाए।

पर सवाल यह है कि अब हिंदी प्रदेश क्या करे? क्या चुपचाप इन झूठी लांछनाओं को सहता जाए! नहीं, कदापि नहीं। लेकिन इनको जवाब देने के पहले हम अपने दामन में भी झाँककर देख लें कि हम अपना असली चेहरा क्यों भूल गए। हम इतिहास की मृगछलना में कहाँ भटक गए। किस हीनग्रंथि के तहत हम अपनी परंपरा, अपनी विरासत और अपनी भाषा को भूलने लगे? क्यों हम अपने बच्चों के मुँह से 'जैक एंड जिल' सुनकर फूले नहीं समाते और हम क्यों भूल जाते हैं कि इन्हीं बच्चों को बचपन से 'जाति-पाँति पूछे नहि कोय, हरि को भजै सो हरि का होय' का पाठ भी पढ़ाया जा सकता है। जो हमारी भाषा को तिरस्कृत करता है, जो हिंदी प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा और हमारी अस्मिता का उपहास करता है, जो जाति-पाँति, हिंदू-मुसलमान, सिख-ईसाई के नाम पर हमें बाँटने और खंडित करने की कोशिश करता है (चाहे वह पक्ष का हो या विपक्ष का) उसे हम वोट क्यों देते हैं? इतना याद रखिए कि यह हिंदी समूचे राष्ट्र का हृदय प्रदेश है। यह जब तक स्वस्थ, समृद्ध और ऊर्जावान नहीं होता, समूचा राष्ट्र सशक्त नहीं हो सकता। और हिंदी प्रदेश के 'हिंदोस्तानी' पर इतिहास ने यह गहन दायित्व सौंपा है कि वह राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा में अगली पंक्ति में बहादुरी से बढ़े। हिंदी प्रदेश जिस दिन फिर अपनी विरासत को, अपने इतिहास को, अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी को निभाने में कृत-संकल्प हो जाएगा, स्वदेशी भाषा और स्वदेशी मानसिकता के द्वारा जिस दिन वह अपना सर्वधर्म समभावी मानव-प्रेमी असली चेहरा इन आरोपित मुखौटों से मुक्त कर लेगा, उसी दिन इस देश का इतिहास बदलना शुरू हो जाएगा।

फिर हमें 'काऊ बेल्ट' कहकर उपहास करनेवाले इन अंग्रेजी-परस्तों का क्या होगा? आखिर उनके लिए भी तो हमें कोई रास्ता सोचना ही पड़ेगा। कबीर कह गए हैं, 'निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय', पर्यावरण रक्षा की दृष्टि से जगह-जगह अभयारण्य (सैंक्चुरीज) बनवाए गए हैं, जहाँ मिटती हुए नस्लों—तेंदुओं, चीतों, लकड़बग्घों को सुरक्षित रखने की कोशिश की जा रही है। अंग्रेजी-परस्त मानसिकता की मिटती हुई इस नस्ल को बचाने के लिए भी एक अभयारण्य बनाना चाहिए, जहाँ जो चाहे बिना असलियत समझे, बिना इतिहास जाने 'काऊ बेल्ट' के खिलाफ शौक से काँव-काँव कर सबका मनोरंजन करता रहे। उस अभयारण्य का सुलभ, सबके समझ में आनेवाला नाम रखा जा सकता है—'काँव-काँव बेल्ट'।

जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद ३७० का उदय और अस्त

● कुलदीप चंद अग्निहोत्री

जम्मू-कश्मीर में पिछले दिनों इतिहास का एक नया अध्याय लिखा गया। संघीय संविधान में से विवादास्पद अनुच्छेद ३७० को प्रभावहीन बना दिया गया है। यह अनुच्छेद संघीय संविधान और जम्मू-कश्मीर के बीच दीवार बनकर खड़ा था। संविधान देश के नागरिकों को जो अधिकार देता है, वे जम्मू-कश्मीर में इस अनुच्छेद के कारण नहीं पहुँच पाते थे। इस अनुच्छेद का लाभ उठाकर राज्य की सत्ता पर गिनती के शेखों, सैयदों, पीरजादों, मुफ्तियों, मौलवियों और मीरवायजों ने कब्जा जमा लिया था और सत्ता का उपयोग लोकहित के लिए नहीं बल्कि अपने इस लघु समुदाय के हितों के लिए इस्तेमाल कर रहे थे। राज्य में आनेवाले बजट का बड़ा हिस्सा इन चंद परिवारों और उनके सगे-संबंधियों की जेब में चला जाता था। यह बहुत ही शातिराना तरीके से प्रदेश की सत्ता-व्यवस्था का अपहरण कहा जा सकता है। यह नए प्रकार की तानाशाही थी, जिसमें आम कश्मीरियों को लूटा जा रहा था और उन्हें अनुच्छेद ३७० का ड्रग एडिक्ट बनाकर पता भी नहीं चलने दिया जा रहा था। यह लघु समुदाय जानता था कि यदि आम कश्मीरी ३७० के नशे से बाहर आ गया तो वह इस गिरोह की करतूतों से वाकिफ हो जाएगा और सत्ता इनके हाथ से छीन लेगा। इन शेखों और सैयदों ने आम कश्मीरी के हाथ में ३७० का झुनझुना दे रखा था, जिसे वे बजाते रहते थे और पिछवाड़े में बैठे ये शेख, सैयद और पीरजादे एक ओर लूट-खसूट करते रहते थे तो दूसरी ओर अलगाववादियों की भाषा बोलकर केंद्र सरकार को डराते रहते थे।

अनुच्छेद ३७० था तो अस्थायी, लेकिन कांग्रेस सरकार ने अपने व्यवहार से इसको स्थायी बनाने की कोशिश बराबर जारी रखी थी। यह ध्यान रखना चाहिए कि जम्मू-कश्मीर में सोनिया कांग्रेस और नेशनल कांग्रेस एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पंडित नेहरू तो नेशनल कॉन्फ्रेंस को जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस की शाखा ही बताते थे, इसलिए बहुत साल तक प्रदेश में कांग्रेस की शाखा खोली ही नहीं गई थी। बाद में एक बार नेशनल कॉन्फ्रेंस का कांग्रेस में विलय भी हो गया था। इसलिए अनुच्छेद ३७० को बनाए रखने में कांग्रेस के भी वही स्वार्थ थे, जो शेखों-सैयदों के इस समूह के थे। इस पूरे परिदृश्य में शेखों और सैयदों को छोड़कर बाकी सभी राज्य निवासी पिस रहे थे। राज्य में बारह जनजातियाँ हैं,

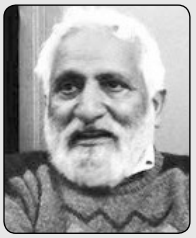

सुपरिचित लेखक। हि.प्र. विश्वविद्यालय के धर्मशाला क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक और भीमराव आंबेडकर पीठ के अध्यक्ष रहे। हि.प्र. में दीनदयाल उपाध्याय महाविद्यालय की स्थापना की। लगभग दो दर्जन से अधिक देशों की यात्रा, पंद्रह से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित। संप्रति भारत-तिब्बत सहयोग मंच के अखिल भारतीय कार्यकारी राष्ट्रीय संरक्षक और दिल्ली में 'हिंदुस्थान समाचार' के निदेशक।

जिनको इन शेखों और सैयदों ने कोई अधिकार नहीं दिए हैं। जबकि देश के अन्य राज्यों में इन जनजातियों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ मिलता है। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में इन जनजातियों के लिए कोई सीट सुरक्षित नहीं है, जबकि शेष राज्यों की विधानसभाओं में जनजातियों के लिए उनकी जनसंख्या के हिसाब से सीटें आरक्षित हैं। यही स्थिति अनुसूचित जातियों की है। उनकी हालत तो अमानवीय है। दलितों को, जो राज्य निवासी प्रमाण-पत्र जारी किया हुआ है, उसमें अंकित है कि ये केवल सफाई-सेवक का काम कर सकते हैं। दलितों के अधिकारों के लिए बाबासाहेब आंबेडकर जीवन भर संघर्ष करते रहे और संविधान में उनको सभी प्रकार के अधिकार मुहैया करवाए, लेकिन जम्मू-कश्मीर की सरकार दलितों को ये अधिकार देने के लिए तैयार नहीं थी। इतना ही नहीं, वह जन्म के आधार पर काम की एक नई वर्ण-व्यवस्था तैयार कर रही थी, जिसका शिकार वहाँ का दलित समाज हो रहा था।

१९४७ में विभाजन के समय लाखों लोग पश्चिमी पंजाब से पूर्वी पंजाब, दिल्ली और अन्य प्रदेशों में गए। उन्हें भारत सरकार और राज्यों की सरकारों ने सभी प्रकार की सहायता प्रदान की। पाकिस्तान में रह गई संपत्ति का मुआवजा भी उन्हें दिया। पश्चिमी पंजाब के दो जिले स्यालकोट और रावलपिंडि जम्मू-कश्मीर के नजदीक थे। वहाँ से लाखों पंजाबी जम्मू-कश्मीर में आ गए। लेकिन आज ७० साल बाद भी उनको वहाँ का स्थायी निवासी नहीं माना जा रहा। वे जो संपत्ति वहाँ छोड़ आए थे, उसका मुआवजा देने की बात तो दूर, उनके बच्चों को प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों में प्रवेश नहीं दिया जा

रहा। वे राज्य में नौकरी नहीं कर सकते। विधानसभा व पंचायतों में चुनाव लड़ने की बात तो दूर, वहाँ वोट तक नहीं दे सकते। अनुच्छेद ३७० ने शेखों और सैयदों के कुछ परिवारों, मुल्ला-मौलवियों, मीरवायजों और पीरजादों को छोड़कर शेष निवासियों के लिए राज्य को एक बड़ा यातना शिविर बना रखा था। लद्दाख के लोग तो ३७० की व्यवस्था से इतने दु:खी थे कि उन्होंने १९४८ में ही यह प्रस्ताव पारित किया था कि लद्दाख को पूर्वी पंजाब में शामिल कर दिया जाए, लेकिन वे कश्मीर के साथ मिलने को तैयार नहीं हैं।

छह अगस्त को राष्ट्रपति ने राज्यसभा की अनुशंसा को स्वीकार करते हुए छह अगस्त को अनुच्छेद ३७० के सभी हिस्सों को निरस्त करते हुए इस अनुच्छेद को नया रूप दिया। इस नए रूप में अनुच्छेद ३७० में प्रावधान है कि पूरा संघीय संविधान जम्मू-कश्मीर में भी लागू होगा। इस प्रकार जम्मू कश्मीर के निवासियों के साथ पिछले सत्तर साल से हो रहे अन्याय का अंत हो गया। राजनीति शास्त्र के विद्वान् प्रदेश के लोगों के साथ हो रहे इसी अन्याय को ही राज्य का स्पेशल दर्जा कहकर प्रचारित कर रहे थे।

अनुच्छेद ३७० संघीय संविधान में चोर दरवाजे से ही डाला गया था। बाबासाहेब आंबेडकर ने तो इसे हाथ लगाने से भी इनकार कर दिया था, तब इसे नेहरू ने अपने मित्र गोपालस्वामी आयंगर से संविधान सभा में पेश करवाया था। दरअसल यह अनुच्छेद पंडित नेहरू और उनके मित्र शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के षड्यंत्र का परिणाम था। शेख अब्दुल्ला नेहरू को ब्लैकमेल कर रहे थे और भारतीय संविधान की आड़ में जम्मू-कश्मीर को अपनी जागीर की तरह इस्तेमाल करना चाहते थे। अनुच्छेद ३७० उसमें शेख की सहायता कर रहा था। यह आज तक रहस्य बना हुआ है कि नेहरूजी शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के सामने किसलिए झुके रहते थे? यदि थोड़ा और पीछे जाएँ तो कहा जा सकता है कि जम्मू-कश्मीर का यह षड्यंत्र नेहरू, माउंटबेटन दंपती और शेख अब्दुल्ला द्वारा अलग-अलग चरणों में अभिनीत किया गया था।

अनुच्छेद ३७० में ही व्यवस्था है कि इसका अंत किस प्रकार होगा। उसमें कहा गया है कि गणराज्य के राष्ट्रपति अधिसूचना जारी कर इस अनुच्छेद को समाप्त कर सकते हैं, शर्त केवल इतनी है कि उसकी अनुशंसा राज्य की संविधान सभा करे। लेकिन १९५७ में राज्य की विधानसभा की आयु समाप्त हो गई और वह समाप्त हो गई। इसलिए कुछ हाईपर एक्टिव किस्म के बुद्धिजीवियों ने कहना शुरू कर दिया कि संविधान सभा तो अपनी उम्र भोगकर मर गई है, इसलिए जब तक सूर्य-चंद्रमा कायम रहेंगे, तब तक इस अनुच्छेद को हाथ नहीं लगाया जा सकता। अब यह अनुच्छेद अमर हो गया है। लेकिन उनके दुर्भाग्य से जब बाबासाहेब आंबेडकर ने यह संविधान बनाया था तो उन्होंने शेष सभी व्यवस्थाएँ इसमें शामिल कर दी थीं, लेकिन किसी हिस्से या अनुच्छेद को अमर बनाने का तांत्रिक सूत्र इसमें नहीं डाला था। आंबेडकर संविधान को एक जीवंत व्यवस्था मानते थे, न कि विभिन्न अनुच्छेदों को अमर बनाने का लेख लगाकर तैयार किया गया कोई भुतहा अजायबघर। राष्ट्रपति ने महज इतना ही किया कि अनुच्छेद ३७० में ही निहित उपधाराओं का उपयोग करते हुए राज्य की संविधान सभा के स्थान पर राज्य की विधानसभा कर दिया। इतना तो जम्मू-कश्मीर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रह चुके हसनैन (जो आजकल नेशनल कॉन्फ्रेंस के सांसद हैं) जानते ही होंगे कम जब जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति शासन होता है तो सरकार की ओर से संस्तुतियाँ राज्यपाल ही करते हैं। राष्ट्रपति ने अनुच्छेद ३७०(३) का प्रयोग करते हुए इस अनुच्छेद की कालबाह्य हो चुकी अधिकांश व्यवस्थाओं को समाप्त कर दिया।

वैसे भी कभी-न-कभी तो जम्मू-कश्मीर को इस षड्यंत्र से मुक्ति मिलनी ही थी। लेकिन इसके लिए जिस साहस की जरूरत थी, वह अब तक की सरकारों में से किसी ने नहीं दिखाया। नरेंद्र मोदी बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने इस षड्यंत्र का अंत कर दिया, जिसकी शुरुआत नेहरू, माउंटबेटन दंपती और शेख मोहम्मद अब्दुल्ला ने ७० साल पहले की थी। इसके लिए निश्चय ही मोदी बधाई के पात्र हैं।

लेकिन जबसे राष्ट्रपति ने संघीय संविधान के अनुच्छेद ३७० द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जम्मू-कश्मीर राज्य में संविधान को लागू कर दिया और संसद् ने गृहमंत्री अमित शाह द्वारा तद् विषयक प्रस्ताव को भारी बहुमत से पारित कर दिया, तब से सोनिया कांग्रेस और पाकिस्तान में खलबली मची हुई है। अनुच्छेद ३७० में राष्ट्रपति को यह अधिकार प्राप्त है कि वे संघीय संविधान को आंशिक रूप से या फिर उसकी संपूर्णता में लागू कर सकते हैं। यदि वे चाहें तो इस अनुच्छेद को समाप्त भी कर सकते हैं। लेकिन इन दोनों कामों के लिए उन्हें जम्मू-कश्मीर सरकार की अनुशंसा चाहिए। इस अनुच्छेद ने संसद् द्वारा पारित अधिनियमों को जम्मू कश्मीर राज्य में जाने से रोका हुआ था। संसद् के वही अधिनियम राज्य में लागू हो सकते थे, जिनके लिए जम्मू कश्मीर की सरकार सहमत हो। जम्मू-कश्मीर सरकार से क्या अभिप्रेत है, इसकी व्याख्या भी इस अनुच्छेद में है। इसके अनुसार सरकार से अभिप्राय सदरे रियासत अर्थात् राज्यपाल से है। राज्यपाल को अपने मंत्रिमंडल की अनुशंसा पर चलना होता है। अनुच्छेद ३७०(३) में यह भी प्रावधान है कि यदि राष्ट्रपति चाहें तो वे यह पूरा अनुच्छेद निरस्त कर सकते हैं या फिर इसे संशोधित रूप में लागू कर सकते हैं। शर्त केवल इतनी है कि राष्ट्रपति को इसके लिए राज्य की संविधान सभा की सिफारिश चाहिए। अनुच्छेद ३७० राष्ट्रपति को उपरोक्त सभी विषयों से संबंधित अधिसूचना जारी करने का अधिकार देती है।

छह अगस्त को राष्ट्रपति ने राज्यसभा की अनुशंसा को स्वीकार करते हुए छह अगस्त को अनुच्छेद ३७० के सभी हिस्सों को निरस्त करते हुए इस अनुच्छेद को नया रूप दिया। इस नए रूप में अनुच्छेद

३७० में प्रावधान है कि पूरा संघीय संविधान जम्मू-कश्मीर में भी लागू होगा। इस प्रकार जम्मू कश्मीर के निवासियों के साथ पिछले सत्तर साल से हो रहे अन्याय का अंत हो गया। राजनीति शास्त्र के विद्वान् प्रदेश के लोगों के साथ हो रहे इसी अन्याय को ही राज्य का स्पेशल दर्जा कहकर प्रचारित कर रहे थे। यदि इस व्यवस्था को राज्य का विशेष दर्जा मान लिया जाए तो इसका लाभ प्रदेश के एक हिस्से कश्मीर घाटी में शेखों, सैयदों, मुफ्तियों, मीरवायजों, मौलवियों और पीरजादों को मिल रहा था। इन सभी ने मिलकर प्रदेश की राजनीति, व्यवसाय और मसजिदों पर कब्जा कर रखा था। प्रदेश में अलगाववाद और आतंकवाद का संचालन कर रहे गिरोहों पर भी एक प्रकार से इन्हीं का कब्जा है। वे आतंकवाद के नाम पर विदेशों से पैसा एकत्र करते थे; उससे संपत्ति भी अर्जित करते थे और अपने शरीफजादों को विदेशों के महँगे विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए भी भेजते थे। इन समुदायों को अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए अनुच्छेद ३७० की बैसाखियों की सख्त जरूरत थी। इसीलिए ये सभी इस अनुच्छेद को कश्मीर की पहचान के साथ जोड़कर आम कश्मीरी का भावात्मक शोषण कर रहे थे।

उधर पाकिस्तान को इस अनुच्छेद की सर्वाधिक आवश्यकता थी। वह इस अनुच्छेद की व्याख्या जम्मू-कश्मीर को भारत और पाकिस्तान के बीच विवादित क्षेत्र सिद्ध करता था। अब यदि यह प्रदेश देश के बाकी प्रदेशों या केंद्रशासित क्षेत्रों की तरह हो जाता है तो पाकिस्तान के बीच विवाद का विषय तो इतना ही बचता है कि १९४७ में जब पाकिस्तान ने भारत पर सैनिक हमला करके जम्मू-कश्मीर के जिस एक-तिहाई हिस्से पर कब्जा कर लिया था, उस पर दोनों देश आपस में बातचीत करें। अभी तक पाकिस्तान अनुच्छेद ३७० की व्याख्या यह कहकर करता था कि भारत स्वयं भी जम्मू-कश्मीर को अपना स्थायी हिस्सा नहीं मानता, इसीलिए उसने अपने संविधान में इस राज्य की व्यवस्था के लिए यह विशेष अनुच्छेद बनाया हुआ है और नहीं भारत का संघीय संविधान प्रदेश पर पूरी तरह लागू होता है। अभी तक जम्मू-कश्मीर के लिए यह व्यवस्था थी कि वहाँ के भूगोल में संसद् दखलंदाजी नहीं कर सकती। शेष सभी प्रांतों का पुनर्गठन हो सकता था और होता भी रहा है, लेकिन जम्मू-कश्मीर के भूगोल को छेड़ा तक नहीं जा सकता था। लेकिन अनुच्छेद ३७० के प्रावधान बदल जाने के कारण संसद् ने जम्मू-कश्मीर राज्य पुनर्गठन अधिनियम पारित कर उसे दो केंद्र शासित क्षेत्रों में तब्दील कर दिया है। अब लद्दाख, चंडीगढ़, दिल्ली और पुदुच्चेरी की तरह अलग केंद्र शासित प्रदेश होगा।

अब पूर्व अनुच्छेद ३७० का स्वरूप बदल जाने और राज्य का भाषा के आधार पर पुनर्गठन हो जाने से जम्मू-कश्मीर को लेकर पाकिस्तान की सारी व्याख्याएँ केवल अप्रासंगिक ही नहीं हुईं बल्कि इतिहास का हिस्सा बन गई हैं। पाकिस्तान का अपना हित इसी में था कि जम्मू-कश्मीर विवादित हिस्सा रहे। यह स्थिति वहाँ के कुछ राजनैतिक दलों को अनुकूल पड़ती थी और वहाँ की सेना को भी अनुकूल थी। दरअसल जम्मू-कश्मीर का विवादित बने रहना पाकिस्तान के राष्ट्रीय हितों और सामरिक हितों के लिए लाभदायक था। लेकिन भारत के लिए यह स्थिति धीरे-धीरे आत्मघाती बनती जा रही थी। यह आश्चर्य का विषय है कि भारत में भी कुछ राजनैतिक दल जम्मू-कश्मीर को इसी दृष्टि से देखते थे।

जाहिर था पाकिस्तान अनुच्छेद ३७० को समाप्त करने के प्रश्न को लेकर दुनिया भर में शोर मचाता और उसने मचाया भी। उसे आशा रही होगी कि अमेरिका और ब्रिटेन, जो अब तक पाकिस्तान का उपयोग भारत के खिलाफ अपने हितों की पूर्ति के लिए करते आए हैं, अब भी इस नए मामले में उसका समर्थन करेंगे। पाकिस्तान को आशा रही होगी कि अमेरिका आजकल अफगानिस्तान में फँसी अपनी पूँछ छुड़ाने के लिए तालिबान के साथ बातचीत कर रहा है। पूँछ छुड़ाने में उसे पाकिस्तान की सहायता की जरूरत पड़ेगी। इसलिए पाकिस्तान अमेरिका पर दबाव बना लेगा। लेकिन अमेरिका, दोनों देशों को बातचीत करनी चाहिए, इससे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा। इंग्लैंड भी शिमला समझौता या द्विपक्षीय रणनीति पर अटक गया। यूएई ने तो स्पष्ट ही कहा कि यह भारत का आंतरिक मामला है। रूस ने भी यही दोहराया। चीन लद्दाख के मुद्दे पर जरूर कुछ खाँसता रहा, लेकिन कुल मिलाकर वह द्विपक्षीय बातचीत के गिर्द घूमने लगा। यहाँ तक कि एक भी अरब देश ने इस मामले पर पाकिस्तान का समर्थन करना उचित नहीं समझा। पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र संघ में मामला ले जाने की बात कहने जरूर लगा है, लेकिन जमीनी हालात को देखते हुए कहा जा सकता है, वह वहाँ अकेला ही रिरियाते हुए पकड़ा जाएगा। मोटे तौर पर वर्तमान अंतरराष्ट्रीय राजनीति की विवशताएँ या यथार्थ के चलते पाकिस्तान इस मामले में अकेला रह गया है। कोई भी देश आखिर यह कैसे कह सकता है कि भारतीय संसद् अपने संविधान में वैधानिक ढंग से हस्तक्षेप नहीं कर सकती। इसी प्रकार के तर्क लेकर एक सज्जन अनुच्छेद ३७० की घरवापसी के लिए उच्चतम न्यायालय तक जा पहुँचे। वे न्यायालय से गुहार लगा रहे थे कि उनकी याचिका को आपातकालीन मानकर तुरंत सुनवाई की जाए। उनको डर था कि तब तक पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र संघ पहुँच जाएगा। तब न्यायाधीश ने पूछा कि संयुक्त राष्ट्र क्या भारतीय संसद् द्वारा पारित किए गए पर स्थगन आदेश जारी कर देगा? स्पष्ट है कि संयुक्त राष्ट्र भारत के आंतरिक संसदीय मामलों में तो दखलंदाजी नहीं कर सकता। वैसे भी अब वे दिन हवा हो गए हैं, जब भारत 'कमजोर की जोरू सब की भाभी' हुआ करती थी। अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में पाकिस्तान अकेला पड़ गया था कि तभी उसे एक ऐसे इलाके से सहायता मिली, जिसकी उसने कल्पना भी न की होगी।

पाकिस्तान को सहायता या कुमुद पहुँचाने वाला यह समूह सोनिया कांग्रेस का पाकिस्तान सैल कहा जा सकता है। अपनी भाषा में पार्टी शायद उसे अपना अंतरराष्ट्रीय सैल ही कहती होगी। लेकिन लगता है उसकी पूरी रणनीति इस संकट काल में किसी भी तरह पाकिस्तान को अनुच्छेद ३७० के मुद्दे पर निरंतर सहायता पहुँचाते रहना है, ताकि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कहीं पाकिस्तान निराश होकर अनुच्छेद ३७० का

मुद्दा छोड़ न दे।

इस अभियान की शुरुआत स्वयं राहुल गांधी ने की। उन्हें इसके लिए सहायता बी.बी.सी. इत्यादि ने मुहैया करवाई। बी.बी.सी. इस समय पूरी निष्ठा से ये अफवाहें फैलाने में लगा हुआ है। न्यूयॉर्क टाइम्स यही काम अपने संपादकीय लेखों के माध्यम से कर रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि कश्मीर घाटी में लोग प्रदर्शन कर रहे हैं और लोग विद्रोह पर उतर आए हैं। सरकार वहाँ लोगों का दमन कर रही है। चिदंबरम ने इस मामले को और आगे बढ़ाया, उसने कहा कि जम्मू-कश्मीर यदि हिंदू बहुल होता तो मोदी सरकार उस ओर देखती भी नहीं। जम्मू-कश्मीर को इसलिए निशाना बनाया जा रहा है कि वहाँ मुसलमान रहते हैं। उनके अनुसार कश्मीर में तानाशाही है और लोकतंत्र का गला लगभग दबा ही दिया गया है। दिग्विजय उससे भी आगे गए। उनका भारतीय मीडिया पर विश्वास नहीं है। उनके अनुसार यह बिका हुआ है। कश्मीर का सच जानना है तो एक बार ब्रिटेन की शरण में ही जाना होगा। कश्मीर की असली हालत वहीं से जानी जा सकती है। वहाँ बीबीसी डॉट काम कश्मीर के बारे में बता रहा है। दिग्विजय के अनुसार वहाँ से पता चल रहा है कि कश्मीर को किस प्रकार एक बड़ी जेल में बदल दिया गया है। फिर अंत में शशि थरूर नमूदार हुए। उनका कहना था कि मोदी सरकार ने कश्मीर को फिलस्तीन में बदल लिया है और भारत से कश्मीर छिन जाएगा।

पाकिस्तान को सहायता या कुमुद पहुँचाने वाला यह समूह सोनिया कांग्रेस का पाकिस्तान सैल कहा जा सकता है। अपनी भाषा में पार्टी शायद उसे अपना अंतरराष्ट्रीय सैल ही कहती होगी। लेकिन लगता है उसकी पूरी रणनीति इस संकट काल में किसी भी तरह पाकिस्तान को अनुच्छेद ३७० के मुद्दे पर निरंतर सहायता पहुँचाते रहना है, ताकि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कहीं पाकिस्तान निराश होकर अनुच्छेद ३७० का मुद्दा छोड़ न दे।

पाकिस्तान जिस सहायता के लिए दुनिया भर में गुहार लगा रहा था और वह उसे मिल नहीं रही थी, वही सहायता उसे भारत के ही सबसे पुराने राजनैतिक दल से प्राप्त हुई। अंधा क्या माँगे दो आँखें! आज पाकिस्तान की सरकार और उसका मीडिया सोनिया कांग्रेस के इन्हीं नेताओं के बयानों का ढोल पीट रहा है। यह स्थिति तब है जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान कह रहे हैं कि अनुच्छेद ३७० के मामले पर उनका देश किसी भी हद तक जा सकता है। उसने कहा है कि अब फिर से पुलवामा जैसे आतंकी आक्रमण हो सकते हैं। पाकिस्तान ने सीमा पर युद्धास्त्र लाने शुरू कर दिए हैं। आतंकियों को वह भारत में घुसाने की फिराक में है। समझौता एक्सप्रेस और स्ती की बस वापस आ गई हैं। इस्लामाबाद ने १३ भारतीय राजनयिकों को वापस भेज दिया है और भारत से राजनयिक संबंधों का दर्जा कम कर दिया है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि पाकिस्तान को जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद ३७० बना रहने से कितना राजनैतिक, कूटनीति और सामरिक लाभ मिलता होगा, जिसके छिन जाने से वह इतना बौखलाया हुआ है।

दरअसल अनुच्छेद ३७० उस जमीन में से पैदा हुआ था, जिसकी जुताई पंडित जवाहर लाल नहरू और माउंटबेटन दंपती के संयुक्त षड्यंत्र ने की थी। माउंटबेटन दंपती पूरा जम्मू-कश्मीर पाकिस्तान को देने के लिए प्रयासरत थे। उनके लिए यह प्रश्न ब्रिटेन के भविष्य की रणनीति और पाकिस्तान के भविष्य से जुड़ा हुआ था। लेकिन इसके रास्ते में उस समय के जम्मू-कश्मीर नरेश महाराजा हरि सिंह चट्टान बनकर खड़े थे। अब माउंटबेटन दंपती के पास एक ही रास्ता बचा था, पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर पर हमला कर उसे हथिया ले और भारत उसका विरोध न करे। यह आसान रास्ता था, क्योंकि उस समय भारत की सेना के प्रमुख और पाकिस्तान की सेना के प्रमुख अंग्रेज ही थे और दोनों ब्रिटेन के हितों के संरक्षण हेतु निष्ठावान थे। उन दिनों ब्रिटेन का हित पाकिस्तान को लाभ पहुँचाने और भारत के स्थल मार्ग को शेष विश्व, खासकर मध्य एशिया से काटने में ही था। यह तभी संभव था, यदि जम्मू-कश्मीर पाकिस्तान में चला जाता। इसके लिए पाकिस्तान ने कबायलियों की आड़ में जम्मू-कश्मीर पर हमला कर दिया, यहाँ तक तो सब ठीक चला, लेकिन भला नेहरू इसका विरोध न करें, यह कैसे संभव हो सकता था?

माउंटबेटन दंपती जानते थे कि नेहरू तब तक जम्मू-कश्मीर में सेना नहीं भेजेंगे, जब तक महाराजा हरि सिंह नेहरू के मित्र शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को सत्ता नहीं सौंप देंगे। नेहरू सचमुच इस बात पर अड़ गए। उस समय माउंटबेटन दंपती की खुशी का अंदाजा लगाया जा सकता है। लेकिन महाराजा हरि सिंह को राज्य का प्रशासक बनाकर माउंटबेटन दंपती का यह तुरुप का पत्ता भी छीन लिया। देश की सेना जम्मू-कश्मीर में गई और उसने विपरीत परिस्थितियों में भी आक्रांताओं को पीछे खदेड़ना शुरू कर दिया। अब माउंटबेटन दंपती की सारी योजना धरी-धराई रह गई। परंतु माउंटबेटन दंपती नेहरू के साथ इतने लंबे अंतरंग संसर्ग से एक बात समझ गए थे कि उनकी दो कमजोरियाँ हैं। पहली अंतरराष्ट्रवाद और दूसरा हिंदू-मुसलिम के नाम का सैक्युलिरिज्म। नेहरू मामूली से घरेलू प्रश्न को भी अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाकर बच्चों की तरह उससे खेलते थे। उस पर नृत्य करते थे। ने चाहते थे कि देश के लोग उन्हें अंतरराष्ट्रीय धुनों पर थिरकते देखें। माउंटबेटन दंपती ने उनकी इसी कमजोरी का लाभ उठाकर उन्हें समझाया कि वे जम्मू-कश्मीर के प्रश्न को सुरक्षा परिषद् में ले जाएँ और परिषद् को बताएँ कि जम्मू-कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच विवादास्पद प्रश्न है, दरअसल सुरक्षा परिषद् इसका निर्णय करे।

माउंटबेटन दंपती ने कमजोरी के इन क्षणों में नेहरू को विश्वास दिला दिया कि भारत का पक्ष इस मामले में मजबूत है, इसलिए सुरक्षा परिषद् में भारत जीत जाएगा और नेहरू की अंतरराष्ट्रीय छवि को चार

चाँद लग जाएँगे। नेहरू माउंटबेटन दंपती के इस धोखे में आ गए और सरदार पटेल के विरोध के बावजूद मामला सुरक्षा परिषद् में ले गए। सुरक्षा परिषद् में ब्रिटेन की साम्राज्यवादी ताकतों के लिए सबसे अहम प्रश्न था कि किसी तरह भारतीय सेना आगे बढ़ने से रुक जाए, ताकि जम्मू-कश्मीर का सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पाकिस्तान के कब्जे में ही रहने दिया जाए। यह ब्रिटेन की भविष्य की रणनीति का हिस्सा था। लेकिन इसके लिए नेहरू को तैयार करना तो शायद माउंटबेटन दंपती के लिए भी मुश्किल था। इस मोड़ पर माउंटबेटन दंपती ने नेहरू को खेलने के लिए उनकी मनपसंद का दूसरा खिलौना दिया। हिंदू-मुसलिम यानी सैक्युलिरिज्म का खिलौना। माउंटबेटन दंपती ने नेहरू को समझाया कि जम्मू-कश्मीर राज्य मुसलिम बहुल प्रदेश है। यदि मुसलमान स्वयं आकर उन्हें कहें कि वे भारत में ही रहना चाहते हैं तो नेहरू की कितनी बड़ी जीत होगी। यह जिन्ना के मुँह पर तमाचा होगा और नेहरू की अंतरराष्ट्रीय छवि आकाश को भी चीरकर पंख देगी। इस मरहले पर शेख मोहम्मद अब्दुल्ला पेश किए गए।

शेख मोहम्मद अब्दुल्ला कह रहे हैं कि हम दो राष्ट्र सिद्धांत के खिलाफ हैं और भारत के साथ रहना चाहते हैं। नेहरू प्रसन्न हुए, किरपा आनी शुरू हुई और उन्होंने युद्ध विराम की घोषणा कर दी। सामरिक लिहाज से सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में ही रहा। अपना काम निपटाकर और नेहरू के हाथ में दो खिलौने पकड़ाकर माउंटबेटन दंपती अपने वतन वापस चले गए। जम्मू-कश्मीर को लेकर मोटा-मोटा काम उन्होंने निपटा दिया था। लेकिन अभी भी एक पेंच फँसा हुआ था। संघीय संविधान सारे देश पर लागू होनेवाला था। यदि वह जम्मू-कश्मीर पर भी लागू हो गया तो माउंटबेटन दंपती की सारी मेहनत बेकार चली जाती। रणनीति तो किसी तरह जम्मू-कश्मीर को भारत और पाकिस्तान के बीच विवादास्पद क्षेत्र दिखाना था, ताकि निर्णय का अधिकार सुरक्षा परिषद् के हाथ रहे और वह समय-असमय भारत की बाँह इसी बहाने मरोड़ता रहे। इस मरहले पर शेख मोहम्मद अब्दुल्ला सक्रिय हुए। अनुच्छेद ३७० की कल्पना की गई। तर्क भी यही दिया गया कि जम्मू-कश्मीर में अभी विवाद चला हुआ है। मामला सुरक्षा परिषद् में लंबित है। इसलिए अभी संघीय संविधान वहाँ लागू नहीं किया जाना चाहिए, नहीं तो अंतरराष्ट्रीय जगत् में भारत की छवि खराब होगी।

स्पष्ट था, माउंटबेटन दंपती जो खिलौना नेहरू को दे गए थे, वे उसे कुशलता से बजा रहे थे। लेकिन सुरक्षा परिषद् में निश्चय ही भारत जीतेगा और तब पूरा संविधान जम्मू-कश्मीर में भी लागू हो जाएगा। इसलिए अनुच्छेद ३७० अस्थायी है। लेकिन शेख मोहम्मद अब्दुल्ला ने पूरे प्रश्न को हिंदू-मुसलिम शब्दावली में ही गाया। नेहरू ने भी अपनी प्रकृति और स्वभाव के अनुसार इसे हिंदू-मुसलिम का प्रश्न बनाकर तथाकथित सैक्युलरिजम की धुनों से जोड़ दिया, जबकि इस प्रश्न के और अनेक पहलू हो सकते हैं, लेकिन हिंदू-मुसलिम की अवधारणा से इसका कुछ लेना-देना नहीं है। इंदिरा गांधी समझ गई थीं कि उनके पिता जम्मू-कश्मीर के मामले में माउंटबेटन दंपती के षड्यंत्र का शिकार हो गए थे। बेटी को अपने बाप के इस पाप को किसी भी तरह धोना था। इंदिरा गांधी को जैसे ही इसका पहला अवसर मिला, उन्होंने शिमला समझौता में जम्मू-कश्मीर पर से अंतरराष्ट्रीयता का मुलम्मा उतार दिया और पाँच अगस्त को अनुच्छेद ३७० को निरस्त कर मोदी सरकार ने माउंटबेटन दंपती और शेख मोहम्मद अब्दुल्ला द्वारा शुरू किए गए इस राष्ट्रघाती प्रकरण को सदा के लिए समाप्त कर दिया। चाहिए तो यह था कि इंदिरा गांधी की विरासत को आगे बढ़ाते हुए कांग्रेस इसका समर्थन करती।

लेकिन आश्चर्य की बात है कि सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस इंदिरा गांधी की विरासत को छोड़कर आज भी उसी षड्यंत्र को स्थायी रखने के प्रयास में अडिग दिखाई दे रही है, जिसके बीज माउंटबेटन दंपती ने बोए थे। पाकिस्तान को आज जिस समर्थन व तर्कों की सबसे ज्यादा जरूरत थी, वे सभी उसे सोनिया कांग्रेस भारत में ही बैठकर मुहैया करवा रही है। दरअसल सोनिया कांग्रेस ने इसकी शुरुआत छह अगस्त को राज्यसभा में ही कर दी थी, जब गृहमंत्री अमित शाह ने अनुच्छेद ३७० को लेकर संकल्प प्रस्तुत किया था। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद और अधीर रंजन चौधरी ने संसद् में इस विषय को लेकर जो भाषण दिया था, यदि उसके भाषणकर्ता के नाम की घोषणा न की जाए तो उसे कोई भी किसी पाकिस्तानी प्रतिनिधि का भाषण कह सकता है।

यह स्थिति १९४८ में सुरक्षा परिषद् में भी पैदा हुई थी, जब भारत के प्रतिनिधि गोपालस्वामी आयंगर परिषद् में भारत का पक्ष रख रहे थे। तब किसी ने टिप्पणी की थी कि यदि श्रोता को यह न पता हो कि बोलनेवाला भारत का प्रतिनिधि है, तो वह इनके भाषण को सुनकर सही कहेगा कि पाकिस्तान का प्रतिनिधि बोल रहा है। आज ७९ साल बाद भी कांग्रेस वहीं कि वहीं खड़ी है, जबकि देश बहुत आगे निकल गया है। ऐसे समय में सारे देश को एक साथ होना चाहिए था। लेकिन सोनिया कांग्रेस इस समय भी पाकिस्तान के साथ जा खड़ी हुई है और उसके सभी वरिष्ठ नेता वही भाषा बोल रहे हैं, जो पाकिस्तान बोल रहा है।

कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-१७६२१५ (हि.प्र.)
दूरभाष : ९४१८१७७७८

भूल-सुधार

साहित्य अमृत के अगस्त माह के शौर्य विशेषांक में पृष्ठ २१५ पर गीत सं. दस दोबारा छप गया है। इसका हमें खेद है। इसके गीतकार श्री प्रदीप ही हैं।

आवारा हूँ

● मदन मोहन वर्मा

रामपथ जब शहर से लौटा तो उसके मुखमंडल पर ऐसी वितृष्णा थी, जैसे उसने अपना सबकुछ दाँव पर लगा दिया हो, फिर भी उसे निराशा ही हाथ लगी हो और उसे अपनी मन:स्थिति पर काबू पाने की भरपूर चेष्टा करने के बावजूद उसे लग रहा था कि उसे अपनी किसी भी कर्मगति पर पूरा भरोसा नहीं रह गया है तथा हो सकता है कि गाँव पहुँचते-पहुँचते वह ऐसे निराशावादी घोर अँधेरे में डूब जाए, जहाँ से कहीं भी, किसी ओर भी उजाला न दिखे और तब वह इसी अँधेरे में इस तरह खो जाए कि जीने की जो एक ललक होती है, वह ललक ही न लुप्त हो जाए! तब क्या होगा उसकी बीमार माँ का, उसके गाँव के अधिकांश बुजुर्गों का, युवाओं तथा बहनों का, जिनकी मैं ही एकमात्र आशा था और हूँ भी।

इसी ऊहापोह में वह चलते-चलते अपने गाँव की कर्मनाशा नदी के बरसाती बहाव को एकटक निहारने लगा। उसका मन हुआ कि यहीं गोता लगा लूँ और इस संसार से विदा ले लूँ। परंतु तुरंत ही इस क्षणभर के त्वरित मन के झटके को तिलांजलि देकर सोचने लगा—आगे की कर्मराह के दाँव-पेच के बारे में। आशा और निराशा के बीच एक बार फिर द्वंद्व छिड़ गया और उसने पाया कि उसे अभी 'रामपथ' नहीं होना चाहिए, वरन् 'पथगामी' होने की ओर कदम बढ़ाना चहिए। इस सोच ने एक बार फिर उसे आशा की डगर पर चलने की प्रेरणा दी।

परंतु थोड़ी देर में पुन: वह आशा-निराशा के दलदल में फँसता सा लगने लगा। पुन: इस विचार को झटक दिया उसने और गाँव की ओर बढ़ने लगा। देहली पर पहुँचते ही—

''माई!''

''बचवा, आ गइला। हाथ-मुँह धो ला, खाय ला।''

''माई, पूछबू ना कि शहरिया माँ का भइल?''

''ना बचवा, ना, जानिला उहवाँ भी तोहार दाल नाही गलल।''

''जाए दा बचवा, घबराये के नाही चाही, कभी-न-कभी त कुल ठीक होइबे करी! आवा चला, खाय ला।''

और खाना खाकर रामपथ ओसारे में आकर लेट गया निखरही चारपाई पर। नींद आनी न थी, सो न आई। वह विचारमग्न हो गया—

'माई ने सबकुछ किया अकेले दम पर। पढ़ाई में वह सदैव अव्वल रहा। हाई स्कूल में जिले में प्रथम, इंटरमीडिएट में प्रदेश में फर्स्ट, बी.ए. में प्रथम श्रेणी और एम.ए., अर्थशास्त्र में टॉप। साथ-ही-साथ नेट में भी सातवें स्थान पर, किंतु काम इल्ले-इल्ले। जहाँ भी बुलाया गया, प्रश्नोत्तर संतोषपूर्ण एवं प्रभावी; परंतु कायस्थ घर में जन्म लेने, कायस्थान इलाके और गाँव-गुरबे की छाप हमें कहीं भी चुनने योग्य नहीं मानती। आज तो हद हो गई—'चेयरमैन ने कहा कि रामपथ, तुम्हें चुनने में कॉलेज गौरवान्वित होता, शिक्षार्थियों को भी एक सुधी, सुगढ़, ज्ञानवर्धक शिक्षक मिलता, परंतु तुम्हें हम चुन नहीं सकते। एक ही पद है और कल संध्या को अचानक इसे आरक्षित घोषित कर दिया गया। जिसके आगे नतमस्तक हैं हम। पुत्र रामपथ, फंडिंग का सवाल है। खुश रहो!'

आशीष तो मिला। पर न्याय नहीं। आज केवल जातिगत प्रमाण-पत्र चाहिए आरक्षण के बंद जलविहीन कुएँ को और पालन-पोषण चाहिए कूपमंडूकता को।

एक बार फिर उसे निराशा ने घेरना चाहा, किंतु कुछ क्षण में ही झटक दिया उसने। धीरे-धीरे उसकी मन:स्थिति सामान्य होने लगी। इसी बीच उसे नींद आ गई। जब माई ने शाम को जगाया तो वह गाँव के सीवान में अमराई के बीच बैठा सोचने लगा, 'क्या करूँ?'

इसी बीच झिनकू ने हाँक लगाई, ''माई बुला रही है, भैया।'' घर पहुँचा वह और सरपंचजी को बैठा पाया। उनके साथ एक टाईधारी सज्जन भी विराजमान थे। भरसेन के सरपंचजी ने बोलना शुरू किया।

''बचवा, यह हैं कुकरेजा साहब। हसनपुर में एक कॉलेज खोल रहे हैं। इन्हें एक अध्यापक की जरूरत है अगले माह से। दो-तीन हजार से ज्यादा दे नहीं पाएँगे। चाहो तो हाँ कर दो, बचवा। पुन्न का काम है!''

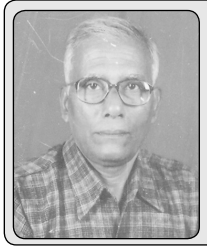

सुपरिचित साहित्यकार। अंग्रेजी में सात पुस्तकें तथा हिंदी में लघुकथा-संग्रह, कविता-संग्रह, तीन कहानी-संग्रह, 'गांधी अर्थ दर्शन' दो संस्करण, लगभग १,५०० आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। संप्रति पठन-पाठन, सामाजिक कार्यों में रत।

इसी बीच माई आ गई वहाँ। ''जाईं, सरपंचजी जाईं! बचवा पढ़ाई इनके स्कूल में। निसाखातिर रहा, निसाखातिर!''

माई के 'हाँ' के बाद बचा क्या था। ''मैं आऊँगा काका, काम तो है। दो-तीन हजार तो अर्थहीन है, काम के आगे।''

इस सोच ने उसे उत्साहित किया और वह बुलावे की प्रतीक्षा करने लगा, परंतु नहीं आया। कुकरेजा साहब को एक-डेढ़ हजार का शिक्षक मिल गया। माई इसे बरदाश्त नहीं कर सकी और बीमार रहने लगी तथा एक रात सोई तो उस रात की सुबह उसके लिए नहीं हुई। हाँ, सभी अंतिम संस्कार विधिवत् तेरह दिन तक संपन्न हो गए, पूरे गाँव की साझेदारी और भरपूर सहयोग के साथ।

हाँ, इतना जरूर हुआ कि मैं बुझा नहीं। रात के दीया की तरह घर-दुआरे में उजियारा करता रहा।

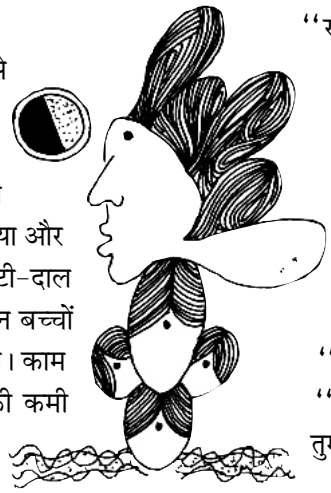

पाँच बीघा खेत, तीन विस्वा में घर-दुआरा, जिसे बेचकर मैंने शहर के पूरब की ओर एक घर खरीद लिया। बिजली-पानी तो थी ही। रोशनी भरपूर थी। तीन ओर से खुला घर था। मैंने बाहर के कमरे में कोचिंग कराने का मन बना लिया था। दो बच्चों के साथ शुरू किया और हाई स्कूल के चार-चार बच्चों के तीन ग्रुप बन गए। रोटी-दाल ठीक-ठाक चलने लगी। कालांतर में इंटरमीडिएट के तीन बच्चों का एक ग्रुप और तीन बच्चियों का एक ग्रुप भी बन गया। काम चलने लगा। आमदनी भी ठीक-ठाक होने लगी। माँ की कमी तो खलती थी, परंतु मैं क्या कर सकता था। नियति ने अपना काम किया और मैं अपना कर रहा हूँ।

इंटरमीडिएट की बच्चियों के ग्रुप में दो ममेरी-फुफेरी बहनें और एक उनकी सहेली थीं। बहनें तो शांत थीं, सुशील थीं, गंभीर थीं और अध्ययन के अतिरिक्त उनके दिल-दिमाग में अन्य कुछ कौंधता नहीं था। पर इनकी सहेली, जिसके प्रति मैं सावधानी नहीं बरत सका। वह इतना लंबा खेल खेलेगी, यह मैं कभी सोच नहीं पाया। एक दिन गोधूली वेला में—

''मास्टर कहाँ है?'' की चीख से मैं उठा और कुंडी खोल दी।

''अरे, हराम की औलाद! तूने मेरी बहन का बलात्कार किया घर में पढ़ाने के बहाने?'' और दो चाँटे मेरे दोनों गालों पर रसीद कर दिए। मैं चिल्लाया, पर दो थप्पड़ और पड़े। मैं अपने बचाव में कुछ कह पाता कि···''तू चुप रह मास्टर, बोलना नहीं, नहीं तो धो दूँगा, हड्डी-पसली एक कर दूँगा और तेरे फरिश्तों को भी नहीं पता लगेगा कि तेरी लाश को किन-किन चील-कौओं ने खा लिया। बोल, शादी करेगा या शुरू करूँ?''

''मैंने कुछ नहीं किया मेरे भाई! यह आपकी बहन की कोई साजिश मालूम होती है!''

''चुप रह मास्टर, चुप रह, बोल, शादी करेगा या बिछाऊँ तेरी लाश?''

इतना कहते-कहते उसने पिस्तौल तान ली। मैं असमंजस में, हताश, निराश, भौचक! मरता क्या न करता। हामी भर दी मैंने और उसी रात शादी हो गई। सारी तैयारी पहले से ही थी। यह तो मुझे डराना, धमकाना, मारपीट के साथ बाँधना था, बँध गया। न कोई पूर्वाभास, न चैतन्यता, न क्षमता, न सामंजस्य, न कोई सामाजिक परिपाटी थी इस बंधन में, केवल तीन फेरे के अतिरिक्त।

सुयश आ गई उसी रात इस घर में। न मैं कुछ बोला, न वह। वह तो सो गई, पर मैं रातभर जागता रहा। नित्य-क्रिया से निवृत्त तथा स्नानादि से निबट घर से निकला कभी न लौटने का संकल्प लेकर।

भटकता रहा इधर-से-उधर, कस्बा-कस्बा, नगर-नगर, द्वारे-द्वारे भूखा-प्यासा। तीसरे दिन एक हमउम्र से भेंट हुई—

''क्या नमा है तुम्हारा?''

''रामपथ।''

''कहाँ रहते हो?''

''जहाँ सहारा मिल जाए।''

''कोई नाते-रिश्तेदार?''

''नहीं, कोई नहीं।''

''मेरे साथ चलोगे?''

''कहाँ?''

''मेरे घर।''

''वहाँ क्या है मेरा?''

''काम है, जिंदगी है, आनंद है और है ऐसा मोड़, जिसे तुम भुना सकते हो।''

''किस रूप में?''

''यह तो चलने पर ही पता लगेगा।''

कुछ देर चुप रहा मैं। अचानक बोला, ''चलूँगा!''

और उसकी गाड़ी में बैठकर चल पड़ा उस डगर पर, जिसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। उसके घर पहुँचकर खना खाया और सो गया। गोधूलि वेला में उठा तो वह बोला, ''भाई, जो भी नाम हो तुम्हारा, जो भी तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा हो, जो भी तुम हो, इससे मुझे कोई सरोकार नहीं। मैं ड्रग के नशे का धंधा करता हूँ और तुम्हें भी यही करना है, अर्थात् सप्लाई का काम तथा दाम वसूलने का काम। इस धंधे में बेईमानी नहीं, खरा है। पर हाँ, खतरा भी है, तुम्हें नहीं के बराबर अगर बचते रहे, परंतु मुझे ज्यादा, बहुत ज्यादा!''

घर तो लौटना नहीं था, अत: स्वीकार कर लिया, यह जानते हुए कि मात्र चौबीस वर्ष की आयु में मेरी बरबादी के दिन शुरू होनेवाले हैं। किसे दोष दूँ? बलात् पत्नी बनी को, अपने देश को, अपने राजनीतिक सिस्टम को अथवा सामाजिक संरचना को या स्वयं को? क्या अपने संस्कारों को? नहीं, अपनी पेट की अग्नि को? हाँ, और एक दिन पकड़ा जाना था, पकड़ा गया। गैर-कानूनी काम तो कर ही रहा था मैं। नवयुवकों को नशेड़ी, ड्रग लोलुप बनाकर देश और समाज को चुनौती दे रहा था मैं। कोर्ट में पेश किया गया। वकील ने पूछा—

''तुम्हारा नाम क्या है?''

''.....''

जज साहब रोष में चिल्लाए, ''नाम बताओ!''

''नाम! क्या नाम बताऊँ जज साहब?''

''हाँ।''

''आवारा।''

''क्या मतलब?''

''आवारा। आवारा हूँ, आवारा नाम है मेरा।''

''बाप का नाम?''

''राम भरोसे, नहीं, आज का समाज, आज की वोट में फँसी राजनीति, दलदल में फँसी नागरिकों की जिंदगी, गर्त में जाता शासन-प्रशासन।''

''क्या बक रहे हो?''

''वही जो सत्य है।''

''देशद्रोही हो तुम।''

''देशद्रोही तो वे हैं, जो शासन चला रहे हैं, केवल अपने लिए बिना किसी जिम्मेवारी के, बिना किसी लक्ष्य के, बिना किसी भावना के, बिना देश की जरूरतों को समझे हुए।''

''क्या?''

''हाँ, ये रहे मेरे कागजात।'' प्रमाण-पत्र, डिग्रियाँ, साक्षात्कार के पत्रादि वकील को सौंपे और तभी कोर्ट ने एक सूखी, शुष्क आवाज में,

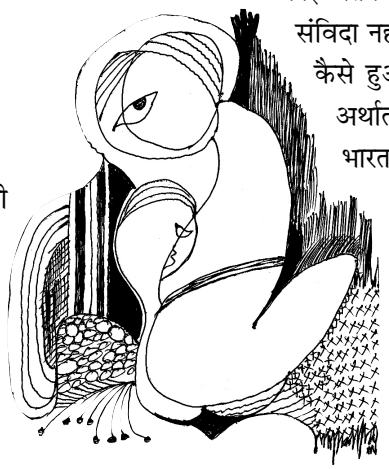

''हाँ, तो तुम नेट भी क्लियर कर चुके हो और ड्रग का धंधा भी करते हो!''

''नहीं, मैं तो केवल आज्ञापालक हूँ, बिना किसी तनख्वाह के। कोई वेतन नहीं, कोई विकल्प नहीं, कोई कमीशन नहीं, कोई संविदा नहीं, कोई भविष्य नहीं, कोई वर्तमान नहीं तो यह धंधा कैसे हुआ मान्यवर। यह धंधा नहीं, केवल साँस लेने योग्य अर्थात् जिंदा रहने का एक विकल्प मात्र है। जिस आजाद भारत में प्रतिभा, कर्तव्यनिष्ठा और अन्य परंपरा-संस्कार जनित मूल्यों का अर्थ या महत्त्व नहीं है, ऐसे में मेरी तरह मर्यादाहीन लोग ही आएँगे घरों में, समाज में, सड़कों पर, संसद् में, विधानसभाओं में। ऐसे ही लोग जिंदगी को आईना दिखाएँगे और हम सब जूझते रहेंगे तथा मौत को गले लगाते रहेंगे।''

और वह कोर्ट से ऐसे भागा, जैसे विषैले साँपों ने उसे घेर लिया हो। सड़क पर पहुँचते ही आती हुई बस के सामने कूद पड़ा रामपथ, जिसका न कोई 'पथ' था और न कोई 'राम'।

एस.बी. ९७, शास्त्री नगर
गाजियाबाद-२०१००२
दूरभाष : ०९८६८६४६०२१

पाठकों से निवेदन

- जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, कृपया वे सदस्यता का नवीनीकरण समय से करवा लें। साथ ही अपने मित्रों, संबंधियों को भी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित करने की कृपा करें।
- सदस्यता के नवीनीकरण अथवा पत्राचार के समय कृपया अपने सदस्यता क्रमांक का उल्लेख अवश्य करें।
- सदस्यता शुल्क यदि मनीऑर्डर द्वारा भेजें तो कृपया इसकी सूचना अलग से पत्र द्वारा अपनी सदस्यता संख्या का उल्लेख करते हुए दें।
- चैक **साहित्य अमृत** के नाम से भेजे जा सकते हैं।
- ऑन लाइन बैंकिंग के माध्यम से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के एकाउंट नं. 1110734393 IFSC-CBIN 0280297 में **साहित्य अमृत** के नाम से शुल्क जमा कर फोन अथवा पत्र द्वारा सूचित अवश्य करें।
- आपको अगर **साहित्य अमृत** का अंक प्राप्त न हो रहा हो तो कृपया अपने पोस्ट ऑफिस में पोस्टमैन या पोस्टमास्टर से लिखित निवेदन करें। ऐसा करने पर कई पाठकों को पत्रिका समय पर प्राप्त होने लगी है।
- सदस्यता संबंधी किसी भी शिकायत के लिए कृपया फोन नं. ०११-२३२५७५५५, २३२७६३१६ अथवा sahityaamritindia@gmail.com पर इ-मेल करें।

अमेरिका में हिंदी की दशा और दिशा

● आस्था नवल

मैं दिल्ली शहर में बड़ी हुई इसलिए हिंदी बोलना स्वाभाविक है, लेकिन हिंदी भाषा के प्रति प्रेम विरासत में मिला। परिवार में हिंदी साहित्य से जुड़े नामों की कमी नहीं थी। प्रोफेसर विजयेंद्र स्नातक को नाना के रूप में पाना मेरा सौभाग्य था। बचपन से उनके निजी पुस्तकालय में छोटी-बड़ी असंख्य किताबों को देखा। माता-पिता दोनों हिंदी के अध्यापक थे, इसलिए कबीर, सूर, रहीम, महादेवी, प्रसाद जैसे नामों की चर्चा भी आए दिन सुनी। सौभाग्यवश हिंदी साहित्य के कई दिग्गजों को घर में आते-जाते भी देखा। यही सब देखकर बचपन से हिंदी पढ़ाने का सपना देखा, जो २००५ में पूरा भी हो गया। दिल्ली के इंद्रप्रस्थ महाविद्यालय में जब हिंदी साहित्य का इतिहास पढ़ाने का अवसर मिला तो हर्ष से फूली नहीं समाई। अप्रैल २००६ में जब मिरांडा हाऊस महाविद्यालय में नौकरी लगी, तब हिंदी कहानी और अनुवाद की कक्षाएँ पढ़ाने में बहुत आनंद आया।

लेकिन उसी बीच जब शादी की बात हुई और शादी के बाद मेरा अमरीका आना तय हुआ तो एक बार को तो लगा कि हिंदी का लगाव छोड़ना पड़ेगा। कई लोगों ने कई प्रकार के कोर्स करने का प्रस्ताव दिया। कई सहकर्मियों ने, सहपाठियों ने मजाक भी उड़ाया कि अमरीका में हिंदी का क्या करूँगी! कुछ शुभचिंतकों ने चिंता जताई।

मैंने २००४ में अमरीका में हिंदी का वर्चस्व देखा था। एक अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में संस्कृत नाटकों की प्रासंगिकता पर परचा पढ़ा था, तब हिंदी प्रेमियों की झलकी मिली थी। श्री हरि बिंदलजी ने तब अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति की जानकारी दी थी और साथ ही दो हिंदी कवि सम्मलेनों का आयोजन भी किया था। दोनों ही कवि सम्मेलनों में अमरीका की राजधानी और उसके आसपास रहनेवाले कवि आए थे। भाषा की समझ रखनेवालों की और साहित्य को सराहनेवालों की कमी नहीं है, यह समझ आ गया था। तब मुझे ज्ञात न था कि एक दिन मैं इस हिंदी समिति की सदस्य बनूँगी, पर आज मैं अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति से जुड़ी हुई हूँ और इसके कई कार्यक्रमों में भाग लेती रहती हूँ। इसी समिति द्वारा 'विश्वा' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन होता है।

प्राध्यापिका एवं लेखिका। उन्नीस वर्ष की आयु में प्रथम पुस्तक 'आस्था की डायरी' का लोकार्पण बलगेरिया के सोफिया विश्वविद्यालय में हुआ। दूसरी पुस्तक है 'लड़की आज भी' (काव्य-संकलन)। पत्र-पत्रिकाओं में कविता और लेख निरंतर प्रकाशित। संप्रति मोंटगोमरी कॉलेज, मैरीलैंड, अमेरिका में हिंदी पढ़ाती हैं, साथ ही हिंदी से जुड़े कार्यों में विशेष योगदान देती हैं।

२००६ में न्यूजर्सी में स्थित 'हिंदी यू.एस.ए.' की संस्थापक दंपती श्रीमती रचिता सिंह और श्री देवेंद्र सिंहजी से मिलना हुआ, उन्होंने पाँचवें हिंदी महोत्सव में मुझे कवयित्री के रूप में बुलाया। हिंदी का वर्चस्व और उसके प्रति प्रवासी भारतीयों का लगाव देखते ही बनता था। हजारों की संख्या में छोटे-छोटे भारतीय मूल के अमरीकी बच्चे हिंदी बोल रहे थे। मंच पर हर उम्र के बच्चे नाटक, कविता, संगीत, नृत्य आदि हिंदी में ही प्रस्तुत कर रहे थे। मैं मन-ही-मन सोच रही थी कि सरल हिंदीवाली कविता सुनानी होगी या कुछ शब्दों का अनुवाद करना होगा, पर खचाखच भरे भवन में सभी ने भावुक और गहरी कविताओं का स्वागत किया। उसी दिन मैं आश्वस्त हो गई थी कि मुझे हिंदी को त्यागना नहीं होगा बल्कि हिंदी नए देश में मेरा सहारा बनेगी।

इससे पहले मैं अपनी बात करूँ, पाठकों को बता दूँ कि हिंदी-यू.एस.ए. नोन प्रोफिट संस्था है, जिसके बीस से अधिक हिंदी पढ़ानेवाले स्कूल हैं। न्यू जर्सी के स्कूलों में हिंदी को मान्यता दिलाने में इस संस्था का बड़ा योगदान है।

२००७ में शादी के बाद पति के साथ हिंदी का हाथ थामे मैं अमरीका बसने आ गई। हिंदी ने मुझे एक पल को भी अकेला नहीं होने दिया। प्रवासी भारतीयों के लिए मानो बहुत सारी इ-पत्र-पत्रिकाओं ने अपनी बाँहें खोल रखी हैं। विदेश में आने के बाद मैंने भी इ-पत्रिकाओं में अपनी कविताएँ भेजनी आरंभ कीं। सबसे पहले प्रोत्साहन दिया कनाडा की इ-पत्रिका 'साहित्य कुंज' ने। उसके बाद विश्वा, प्रवासी दुनिया आदि में मेरी कविताएँ छपने लगीं। उसी वर्ष न्यूजर्सी के षष्ठम

हिंदी महोत्सव में भाग लेने का फिर से अवसर मिला। संयोगवश आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन न्यूयॉर्क में हुआ। विश्व भर से जो हिंदी सेवी आए सो आए, उस सम्मेलन में मेरा मिलना हुआ अमेरिका के कोने-कोने में बसे हिंदी प्रेमियों से। वहीं मिलना हुआ प्रसिद्ध साहित्यकार व गीतकार पंडित नरेंद्र शर्माजी की सुपुत्री लावाण्या शाहजी से, जो स्वयं भी साहित्य से जुड़ी हैं, सुषम बेदीजी से, सुनीता जैनजी से, गुलाब खंडेलवालजी के परिवार से, रेणु राजवंशी से, अनूप भार्गव व उनकी पत्नी रजनी भार्गवजी से। मैं नवविवाहिता, नए शहर में ही नहीं, नए देश में भी थी; इसीलिए मिली तो ऐसे कई प्रवासियों से थी, जो हिंदी सेवा में मग्न हैं, लेकिन सभी के नाम आदि याद न रख सकी। कई नामों का बार-बार उल्लेख सुना, जैसे विजय गंभीर और सुरेंद्र गंभीर, लेकिन मिलना न हो पाया।

हिंदी को न जाने क्यों कई लोग शक की नजर से देखते हैं। पर मैं अनुभव के साथ कह सकती हूँ कि अमरीका में हिंदी का ज्ञान हमें मनोरंजन और साहित्य की दुनिया के साथ-साथ आजीविका भी दे सकता है। सप्ताह के पाँच दिन मैं वाशिंगटन डी.सी. जाती रही और सप्ताहांत में लगभग छह साल तक एक भारतीय स्कूल में पढ़ाया, जिसका नाम है 'इंडिया इंटरनैशनल स्कूल'। जब हम अपने देश से दूर होते हैं तो अपने साथ-साथ अपने बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ना चाहते हैं। ऐसे में मैंने अनुभव किया कि अलग-अलग प्रांत से आए हुए भारतीयों को जोड़ती है हिंदी भाषा।

इन सभी हिंदी सेवियों का हिंदी प्रेम इतना अधिक था कि इन्होंने मुझे भी बिना जाने-पहचाने अपना लिया और हिंदी के प्रति मेरे लगाव को और गहरा किया। उसी सम्मेलन में पता चला कि अमरीका के हर बड़े शहर में जहाँ भारतीय हैं, वहाँ हिंदी भी है। उन्होंने जानकारी दी कि प्रति वर्ष अमरीका में हिंदी से जुड़े कई सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, जिनमें से कवि सम्मेलन सर्वाधिक पसंद किए जानेवाला कार्यक्रम है। अमरीका में रहनेवाले हिंदी कवियों के दिन त्योहारों पर तो कवि सम्मेलन होते ही हैं, लेकिन इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष भारत से कवियों को बुलाया जाता है, कविगण पूरे अमरीका में घूमते हैं, जिनका भरपूर स्वागत किया जाता है।

इस जानकारी से तय हो गया कि हिंदी की कविता अमरीका में जीवित है। धीरे-धीरे मैं भी कवि सम्मेलनों का हिस्सा होने लगी। जो समाज कविता को समझ सकता है, वह भाषा को अवश्य ही प्यार करेगा। इसी से आप अमरीका में हिंदी भाषा के स्थान का अनुमान लगा सकते हैं। कविता, कहानी सुनना-सुनाना कला का हिस्सा है, पर फिर भी आम जिंदगी में ये सब आय का साधन नहीं बन सकते। जब गृहस्थी नई हो तो धनार्जन की चिंता भी काफी होती है। एक बार फिर अमेरिका में हिंदी प्रेम को छोड़ने की सलाह मुझे थोक में मिली। चाहे परिवार के लोग हों या पड़ोस के। बूढ़े हों या हमउम्र, सभी ने हिंदी में कविता की तो सराहना की, लेकिन हिंदी को नए घर की बागडोर सँभालने लायक न समझा। हिंदी प्रेम डगमगाने ही वाला था कि वॉइस ऑफ अमेरिका में कार्यरत सुमन गुप्ताजी से मिलना हुआ। पता चला कि हिंदी का रेडियो है, जो केवल शौकिया नहीं, आय का साधन भी हो सकता है। सुमनजी ने मुझे हिंदी को आजीविका का साधन कैसे बनाएँ, इस मूल्यवान जानकारी से अवगत कराया।

मुझे तो लगता था कि हिंदी कवि सम्मेलनों, भारतीय खाद्य पदार्थों और हिंदी सिनेमा तक ही सीमित होगी। लेकिन हिंदी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में अपना बलशाली प्रभाव और स्थान रखती है। हिंदी भाषा प्रवासी भारतीयों के कारण तो अमरीका में फैली हुई है, पर इसके साथ-साथ हिंदी भाषा का पठन-पाठन अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में अमरीका के कई भाषा संस्थानों में किया जाता है। हिंदी के मानक रूप का ज्ञान, बोलचाल की हिंदी का ज्ञान, सभी कुछ तन्मयता से सीखा व सिखाया जाता है। इस बात की जानकारी बहुत कम प्रवासी भारतीयों और स्वदेश में बसे भारतीयों को होती है। अफसोस की बात है, जिस भाषा को विश्व में इतना सम्मान मिलता है, उस भाषा के मूल भाषी ही उसका सम्मान नहीं करते। कई बार जब मैं यह सब जानकारी हिंदी भाषियों को देती हूँ, उन्हें गर्व के स्थान पर न जाने क्यों केवल संदेह या आश्चर्य होता है।

जहाँ तक मेरा प्रश्न है; मैं तो साल दर साल अमरीका में हिंदी की दशा और दिशा से प्रभावित ही होती रही। अभी मुझे अमरीका में रहते केवल दो साल ही हुए थे कि मेरी नौकरी ऐसे संस्थान में लगी, जहाँ चार हिंदी भाषियों ने मिलकर अमरीकी सेना के लिए हिंदी का इ-कोर्स बनाना था। पाठकों को जानकर शायद आश्चर्य हो कि अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के कई इ-कोर्स यानि ऑनलाइन पढ़ाए जानेवाले कोर्स उपलब्ध हैं। अब तो स्मार्ट फोन पर हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदी अभिवादन, हिंदी के प्रसिद्ध शब्दों के लिए एपलिकेशन भी हैं।

डिफेंस लैंगुएज इंस्टीट्यूट जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, एक ऐसा संस्थान है, जो अमरीकी जल, थल और नौसेना के अफसरों को अलग-अलग भाषाएँ सिखाता है। अमरीका में इस संस्थान के लिए कई छोटे-बड़े संस्थान कार्य करते हैं। ऐसे ही एक वाशिंगटन डी.सी. के इंटरनेशनल सेंटर फॉर लैंग्वेज स्डीज मैं मैंने चार साल लगातार कार्य किया और प्राथमिक से उच्च स्तरीय हिंदी के ऑनलाइन पाठ बनाए। हिंदी के ज्ञान के कारण ही मैं अपने नवजीवन में बराबर का साथ निभा सकी। पति की नौकरी के साथ-साथ मेरी नौकरी ने हमें अपना घर और गाड़ी खरीदने का साहस दिया।

मुझे हिंदी पर संदेह कभी नहीं था, लेकिन आस-पड़ोस के लोगों को बहुत संदेह था। हिंदी को न जाने क्यों कई लोग शक की नजर से देखते हैं। पर मैं अनुभव के साथ कह सकती हूँ कि अमरीका में हिंदी का ज्ञान

हमें मनोरंजन और साहित्य की दुनिया के साथ-साथ आजीविका भी दे सकता है। सप्ताह के पाँच दिन मैं वाशिंगटन डी.सी. जाती रही और सप्ताहांत में लगभग छह साल तक एक भारतीय स्कूल में पढ़ाया, जिसका नाम है 'इंडिया इंटरनैशनल स्कूल'। जब हम अपने देश से दूर होते हैं तो अपने साथ-साथ अपने बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ना चाहते हैं। ऐसे में मैंने अनुभव किया कि अलग-अलग प्रांत से आए हुए भारतीयों को जोड़ती है हिंदी भाषा। भारत से गुजराती, तेलुगु, कन्नड, मराठी, बंगाली आदि भाषा बोलनेवाले माता-पिता अपने बच्चों को हिंदी सिखाना चाहते हैं। पूरे अमरीका में जहाँ-जहाँ भारतीय बसे हैं, वहाँ-वहाँ भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देनेवाली छोटी-बड़ी पाठशालाएँ हैं। इनमें भारतीय संगीत, नृत्य, योग आदि के साथ-साथ हिंदी अवश्य सिखाई जाती है। मैंने जिस पाठशाला में कई वर्ष पढ़ाया वहाँ के संस्थापकों में लेखक व योगाचार्य धनंजय कुमार हैं। प्रमुख अध्यापिकाओं में वाशिंगटन डी.सी. की प्रख्यात कवयित्री मधु माहेश्वरी, प्रख्यात रंगकर्मी पुष्पा अग्निहोत्री कई वर्षों से वहाँ अध्यापन कार्य में रत हैं।

योग और पर्यटन भी हिंदी भाषा को यहाँ बढ़ावा दे रहे हैं। भारत हमेशा से ही पर्यटकों के लिए आकर्षक स्थल रहा है। कई अमरीकी भारत आने से पहले हिंदी सीखना चाहते हैं। २०११ में मुझे वाशिंगटन स्थित अमरीकी सरकार के कॉमर्स विभाग में हिंदी पढ़ाने का सुअवसर मिला। यह कक्षा उन वयसकों के लिए थी, जो लगातार भारत के साथ व्यापार आदि करते हैं। इन लोगों को हिंदी लिपि की नहीं, पर भारतीय त्योहारों और खान-पान की हिंदी में जानकारी चाहिए थी। सभी छात्र बड़े-बड़े पदों पर थे और हिंदी में नमस्कार से लेकर धन्यवाद बोलने में बहुत आनंद लेते थे।

देश से बाहर आकर हम भारतीय अपने पड़ोसी देशवासियों के करीब हो जाते हैं। देश का बँटवारा, लाइन ऑफ कंट्रोल की सीमाएँ यहाँ अमरीका में मायने नहीं रखतीं। भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों का खान-पान, पहनावा, रिवाज आदि सभी मिलते-जुलते हैं, जिनके कारण हम सब विदेश में एक हो जाते हैं। इसमें भी हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। चाहे भाषाविद् मानें या न मानें; हिंदी के प्रति लोगों के प्रेम का श्रेय हिंदी सिनेमा को दिए बिना हम नहीं रह सकते। भारतीय हिंदी फिल्मों का प्रचार अमरीका में बहुत अधिक है। पाकिस्तानी, नेपाली, बँगलादेशी और श्रीलंकाई मूल के लोगों के विवाह में साठ प्रतिशत हिंदी के गाने ही चलते हैं। केवल फिल्में ही नहीं, हिंदी के केबल चैनल पर प्रसारित होनेवाले हिंदी कार्यक्रम भी यहाँ लोकप्रिय हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के साथ-साथ रूसी, यूरोपीय, अफ्रीकी लोगों में भी भारतीय फिल्में प्रसिद्ध हैं। मेरी एक रूसी सहेली ने बाताया कि उसकी मनपसंद फिल्म 'सीता गीता' है। वह राजकपूर और मिथुन की फिल्मों की बात अकसर किया करती है। उसे एश्वर्या रॉय खासी पसंद है।

वर्ष २००९ में मैंने एक अनोखी वर्कशॉप (स्टारटॉक वर्कशॉप) में भाग लिया। अनोखी इसलिए, क्योंकि इसमें हमें सिखाया गया कि हिंदी को एक विदेशी भाषा के रूप में कैसे पढ़ाया जा सकता है। जब भाषा की बारीकियों के बारे में जाना और भाषा के सामान्य प्रयोग से जुड़े सवालों से जूझना पड़ा तो साहित्य पढ़ाना प्राथमिक हिंदी पढ़ाने से सरल लगा। यह वर्कशॉप न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी में हुई। तभी पता चला कि मिडल ईस्टर्न ऐंड इस्लामिक स्टडीज विभाग के तहत न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में हिंदी और उर्दू पढ़ाई जाती हैं। इस विभाग की मुख्य प्रोफेसर गेब्रीएला निक मूलत: बल्गैरियन महिला हैं, जो हिंदीसेवी हैं। गेब्रिएलाजी को २०१७ में श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा हिंदी सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया था। इन्हीं के संपर्क में आकर पता चला कि हिंदी को आधुनिक तरीकों से कैसे पढ़ाना चाहिए।

कई वर्षों से अमरीका में हूँ, इसलिए भारत में हिंदी पढ़ाने के तरीकों के विषय में अधिक जानकारी नहीं रखती। लेकिन अमरीका के सबसे बड़े शहर में स्थित विश्वविद्यालय ने मेरे जैसे कई हिंदी अध्यापकों को तकनीक के साथ आधुनिक सोच के साथ हिंदी पढ़ाने के तरीके सिखाए। इसी वर्कशॉप द्वारा पता लगा कि केवल न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि अमरीका के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। कुछ विश्वविद्यालयों के प्राधयापकों से मेरा मिलना निजी तौर पर हुआ। टेक्सास विश्वविद्यालय के जिश्नू शंकरजी (टेक्सास विश्वविद्यालय ने हिंदी उर्दू फ्लैगशिप कार्यक्रम चलाया है, जो यहाँ भाषा सीखनेवालों में प्रसिद्ध है।) कोलंबिया विश्वविद्यालय की सुषम बेदी (सुषम बेदीजी को साहित्य से जुड़े जन तो जानते ही हैं, साथ ही वे हिंदी टेस्टिंग की भी ट्रैनिंग देती हैं।) कॉरनेल विश्वविद्यालय की सुजाता सिंहजी, जिनके साथ २०११ में मुझे रहने और सीखने का अवसर मिला। येल विश्वविद्यालय की सीमा खुराना और स्वप्नाजी। न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय की बिंदेश्वरी अग्रवाल और रजनी भार्गवजी से भी बहुत कुछ सीखने को मिला।

इसके अतिरिक्त कुछ और विश्वविद्यालयों में हिंदी की चहलकदमी के किस्से भी सुने। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, पैनसिलवेनिया विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय, प्रिंसटन विश्वविद्यालय और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। सभी विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक हिंदीसेवा में लीन हैं और उसे संस्कृति से जोड़ते हुए आधुनिक रूप प्रदान कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त कई अमरीकी महाविद्यालयों में भाषा विभाग के अंतर्गत हिंदी अध्यापन भी होता है। जिनमें से मैं मोंटगोमरी महाविद्यालय में आजकल हिंदी पढ़ा रही हूँ।

कोई भी भाषा सीखना सरल नहीं है, फिर भी हिंदी को विदेशी भाषा की तरह बहुत से लोग सीखना चाहते हैं; यही हिंदी के वर्चस्व का बखान करता है। आप ये न समझें कि अमरीका में हिंदी पढ़ने-

पढ़ानेवाले केवल अध्यापक गण हैं। मेरी तरह भारत में हिंदी शिक्षक रहे बहुत कम लोग हैं। यहाँ हिंदी का आकर्षण कुछ ऐसा है कि पेशे से वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए. आदि सभी हिंदी को बढ़ावा देने के लिए एकजुट हैं।

मैंने यहाँ रहकर कुछ ऐसे भी लोगों को जाना, जिन्होंने अपनी लगी लगाई नौकरी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए छोड़ दी। २०११ में जब मैंने पुनः स्टारटॉक वर्कशॉप की, तब मेरा मिलना हुआ कैलीफोर्निया स्थित अंशु जैनजी से। वे पेशे से इंजीनियर हैं, लेकिन अमेरिका में रहकर अपने बच्चों को हिंदी सिखाते हुए उन्हें अपना दायित्व लगा कि वह नई सोच से हिंदी सिखाने का कार्य करें। उन्होंने तकनीक की जानकारी का सहारा लिया हिंदी पढ़ाने में, आज कैलीफोर्निया में 'इंडस हैरीटेज सेंटर' की कई शाखाएँ हैं, जो मुख्यतः बच्चों को हिंदी सिखाती हैं। साथ ही अमरीका और अन्य देशों में भी ऑनलाइन अंशुजी और उनके द्वारा नियुक्त अन्य हिंदी अध्यापक वयस्कों और बच्चों को हिंदी सिखाते हैं।

योग और पर्यटन भी हिंदी भाषा को यहाँ बढ़ावा दे रहे हैं। भारत हमेशा से ही पर्यटकों के लिए आकर्षक स्थल रहा है। कई अमरीकी भारत आने से पहले हिंदी सीखना चाहते हैं। २०११ में मुझे वाशिंगटन स्थित अमरीकी सरकार के कॉमर्स विभाग में हिंदी पढ़ाने का सुअवसर मिला। यह कक्षा उन वयसकों के लिए थी, जो लगातार भारत के साथ व्यापार आदि करते हैं। इन लोगों को हिंदी लिपि की नहीं, पर भारतीय त्योहारों और खान-पान की हिंदी में जानकारी चाहिए थी। सभी छात्र बड़े-बड़े पदों पर थे और हिंदी में नमस्कार से लेकर धन्यवाद बोलने में बहुत आनंद लेते थे।

२०१३ में मैंने वाशिंगटन डी.सी. स्थित मिडल ईस्टर्न साउथ एशियन लैंग्यूज इंस्टीट्यूट में सायंकाल कक्षा में पढ़ाया, जहाँ सभी विद्यार्थी अपनी नौकरी के बाद पढ़ने आते थे। अधिकांश छात्र २५ से ३५ उम्र के बीच के थे। उनसे पता चला कि हिंदी सीखने का कारण प्रेम भी हो सकता है। कई भारतीय मूल के लोगों की तीसरी, चौथी, पाँचवीं पीढ़ी यहीं बड़ी हो रही है। तीसरी-चौथी पीढ़ी के लोगों में प्रेम-विवाह सामान्य बात है। इसीलिए इस कक्षा में मुझे अधिकांश छात्र ऐसे मिले, जो अपने साथी के परिवार को खुश करने के लिए हिंदी सीखना चाहते थे।

हिंदी का वर्चस्व इतना बढ़ रहा है कि आए दिन हिंदी भाषा जाननेवालों के लिए नौकरियाँ बन रही हैं। बहुत से सरकारी दफ्तरों में हिंदी का एक इम्तिहान पास करने पर पदोन्नति मिलती है। अस्पतालों में, कचहरियों में, हवाई अड्डों पर, यहाँ तक कि कई मेक डॉनल्ड जैसे रेस्टोरेंट में भी हिंदी जाननेवालों की माँग है।

मुझे बचपन से बताया गया है कि सोच को सकारात्मक रखना चाहिए, इसीलिए मैंने हिंदी के उज्ज्वल पहलुओं की बात पहले की है। ऐसा नहीं है कि हर जगह गुलाब-ही-गुलाब खिले हैं। हिंदी के भविष्य को लेकर कई प्रकार की चिंताएँ भी हैं। सबसे बड़ी चिंता है लिपि की। नए बच्चे हिंदी लिखने से कतराते हैं। बोलना, सुनना और पढ़ना सभी को ठीक लगता है। मेरे अधिकांश छात्र हिंदी बखूबी पढ़ लेते हैं, पर लिखने में उनकी हिचक स्पष्ट नजर आती है। स्मार्ट फोन में हिंदी लिपि आने से इस हिचक में बदलाव आना आरंभ हुआ है। हिंदीवालों को आवश्यकता है तकनीक से जुड़ने की। हिंदी अपने आप में सशक्त है, आवश्यकता है इस पर भरोसा करने की। हिंदी भाषा में तो कोई कमी मुझे नहीं दिखाई देती, लेकिन हिंदीभाषियों में बहुत बड़ी कमी है। हिंदी भाषी चाहे अमरीका में हों या स्वदेश में, अपनी भाषा का सम्मान नहीं करते। दूसरी भाषाएँ सीखना अच्छी बात है, पर अपनी भाषा का निरादर करना ठीक नहीं है।

प्रवासी भारतीयों में कई ऐसे लोग हैं, जो स्वयं हिंदी का पठन-पाठन करते हैं, दुनिया में हिंदी का परचम फैलाने की घोषणा भी बार-बार करते हैं, लेकिन अपने परिवार में, अपने बच्चों को हिंदी नहीं सिखा पाते। मेरे कई शिष्यों के माता-पिता बच्चों को हिंदी सिखाना चाहते हैं, पर घर पर हिंदी में बात नहीं करते। वैसा ही वातावरण मैं जब-जब दिल्ली जाती हूँ तो देखती हूँ। बच्चे घर में, स्कूल में केवल अंग्रेजी में बोलते हैं। अपनी भाषा को छोड़ दूसरी भाषा के पीछे भागना यह बताता है कि आज भी हम मन से पराधीन हैं अंग्रेजों के।

मैं फिर भी आशावान हूँ कि मेरी हिंदी, हम सबकी हिंदी का भविष्य उज्ज्वल ही है। मैंने इसका वर्चस्व अमरीका में देखा है। प्रतिवर्ष मैं ५-६ हिंदी काव्य-गोष्ठियों में भाग लेती हूँ। कम-से-कम दो या तीन हिंदी के नाटक देखती हूँ, जिनमें एक भी सीट खाली नहीं रहती। ४-५ हिंदी फिल्में सिनेमाघर में देखती हूँ, जो खचाखच भरे होते हैं। अमेरिका से निकलनेवाली हिंदी की कई इ-पत्रिकाएँ पढ़ती हूँ और उनमें योगदान भी देती हूँ।

जिन्होंने मुझे हिंदी प्रेम त्यागने की सलाह कई बार दी थी, उन सभी को बताना चाहती हूँ कि विदेश में हिंदी मेरी सखी की तरह है, जिसने मेरा हाथ कस के थामे रखा। मैं आशावान हूँ और आप सभी से आग्रह करती हूँ कि हिंदी के लिए शंकित न हों। अपने बच्चों को हिंदी के प्रति उदासीन न होने दें। हिंदी में पत्रकारिता, अभिनय, हिंदी की जानकारी के साथ सीक्रेट सर्विस आदि हर जगह लाभ होता है।

हर भाषा में इतिहास छिपा होता है। हिंदी हमारी संस्कृति का हिस्सा है। जितना विदेश में सहेजने की आवश्यकता है, उतना ही देश में सँवारने की भी आवश्यकता है। अन्य भाषाएँ सीखिए, लेकिन हिंदी से मुँह न फेरिए। कभी अमेरिका आएँ तो 'नमस्ते' की ताकत को स्वयं अनुभव कीजिए। मैं तो पिछले ११ वर्षों से अनुभव कर रही हूँ और इसी अनुभव से कह सकती हूँ कि हिंदी की दशा और दिशा अमरीका में आशावान है।

23042 Weybridge Sq
Ashburn, VA 20148
USA
E-Mail : asthanaval@gmail.com

बंदिशें

• तुलसी देवी तिवारी

'ताहिरा बेगम वल्द सर्फराज खान बीवी जुनैद खान हाजिर हो···ऽ···ऽ···!'

अपने नाम की पुकार सुनते ही उसने अपने बुर्के का नकाब सिर की ओर फैंका। उसका गोरा चेहरा दमक उठा। उसने सालभर की बच्ची को अपनी अम्मी की गोद में डाला और मीडिएशन रूम का भारी सा परदा हटाकर अंदर घुस गई। सामने ही शानदार कुरसी पर काला कोट पहने मैडम बैठी थीं। वे मध्यम ऊँचाई की गोरी सी महिला थीं। ताहिरा उनके सामने सहमकर खड़ी रह गई।

''आओ ताहिरा बेगम, बैठो!'' उन्होंने बड़े अपनेपन से सामने पड़ी कुरसी पर बिठाया।

वह चुपचाप बैठ गई। उसकी निगाहें मैडम की ओर उठी हुई थीं।

''तुम्हारे वालिद का नाम सर्फराज ही है नऽ?'' उन्होंने उसे सहज करने के लिए ही शायद सहज प्रश्न पूछा था। उसने हाँ में सिर हिलाया।

''खाविंद का नाम जुनैद खान?'' उसने फिर हाँ में सिर हिला दिया।

''आपने अपनी ससुराल वालों पर दहेज प्रतारणा, शारीरिक, मानसिक हिंसा, घर से निकालने की कोशिश, जान से मारने की धमकी आदि के विरुद्ध फूलपुर थाने में एफ.आई.आर. दर्ज कराई है?''

''जी हाँ!'' पहली बार उसने मुँह खोला।

''परिवार न्यायालय से अब यह मामला हमारे पास मिडिएशन सेंटर आ गया है। आप मुझे अपने परिवार का हिस्सा समझकर बिना संकोच के सबकुछ बताइए, ताकि हम आपकी समस्या समझकर उसका हल निकालें और आप फिर से प्यार मोहब्बत से एक साथ रह सकें। हमारे यहाँ तो लोग सिर फोड़वाकर आते हैं और यहाँ से हाथ में हाथ डाले हँसते हुए वापस जाते हैं। आप लोगों के मामले में तो कुछ भी नहीं है। वही है नऽ तुम्हारा मियाँ?'' दरवाजे से अंदर प्रविष्ट होते एक लंबे छरहरे सुंदर से युवक की ओर संकेत करते हुए उन्होंने उत्साहित स्वर में कहा।

''जी मोहतरमा! क्या सचमुच आप मेरे जुनैद से मुझे मिला देंगी?'' ताहिरा की आँखों में आशा के अनेक दीप जल उठे। जुनैद निगाहें झुकाए मीडिएटर शाहिद खान की ओर बढ़ गया। उसे एक नजर देखने के बाद ताहिरा के चेहरे पर पुनः उदासी छा गई। ''वह नहीं मानेगा मैडम!'' उसने इतने धीरे से कहा कि पांडे मैडम बड़ी मुश्किल से समझ पाईं।

सुपरिचित कथाकार। अब तक सात कहानी-संग्रह, दो यात्रा-संस्मरण, एक वृहद उपन्यास, दस बालोपयोगी पुस्तकें, 'पुकार जगन्नाथ की' (यात्रा-संस्मरण) प्रकाशित।छत्तीसगढ़ी राजभाषा सम्मान, न्यू कबीर सम्मान, राज्यपाल शिक्षक सम्मान, छत्तीसगढ़ रत्न, राष्ट्रपति पुरस्कार एवं साहित्य मंडल, नाथद्वारा से मानद उपाधि।

''तुम उधर देखकर उदास मत हो, ताहिरा, हम तुम्हारे साथ हैं। बताओ जरा, तुम्हारा निकाह कब हुआ?'' वे अपने मकसद पर आ गईं।

''पाँच साल हो गए मैडम! हमने एक-दूसरे को पसंद किया था, जुनैद दुबई में काम करता है, हमारे दूर के रिश्ते में भी है, इसलिए हमारे वालिदान ने कोई एतराज नहीं किया।''

''जब तुमने सबकुछ देख-भालकर किया था तो फिर ऐसा संगीन आरोप क्यों लगाया? स्थगन आदेश न मिलता तो पूरा परिवार जेल में होता। बताओ ताहिरा, तुमने ऐसी गलती क्यों की?''

वह जवाब में हिलक-हिलककर रोने लगी।

''रोने से कुछ नहीं बनेगा ताहिरा, बोलो! तुमने अपने परिवार के साथ ऐसा क्यों किया?''

''इसने···इसने···मुझे अपने घर से निकल जाने को कहा, मैडम। नन्हीं सी बच्ची लेकर कहाँ जाती? घर के लोग मुझे परेशान करने लगे, घर से निकलने लिए। जरा से भात के लिए मैं सुबह से शाम तक घर का सारा काम करती थी, मुरगियों का दड़बा साफ करती थी, एक-एक मुरगी की आँख में दवा डालती थी, परंतु अम्मी-अब्बू मुझे घर से निकालकर खाना खाते थे। यह तो दुबई में पड़ा था, कमा-कमाकर भेज रहा था। थक-हारकर मायके गई, मेरे अब्बू घड़ीसाज हैं, किसी तरह दाल-रोटी चला लेते हैं, मेरी दुर्गति देखकर सदमे में आ गए। पहले तो मेरी ससुराल जाकर बहुत हाथ-पैर जोड़े उन्होंने, जब किसी ने घास न डाली तब वकील के पास गए। वकील ने ही मुकदमा बनाया, ताकि कोर्ट के सम्मन पर यह देश वापस आ सके।'' उसके आँसू की धार टूटती नहीं थी।

''जब सबकुछ ठीक-ठाक चल रहा था तो अचानक सब गड़बड़ क्यों हो गया ताहिरा?''

''मैं भी कुछ समझ नहीं पाई मैडम, अम्मी-अब्बू कहने लगे थे, 'कहाँ फँस गए? हमारा बेटा दुबई में कमाता है और यह कहाँ एक घड़ीसाज की बेटी है, इसे लेकर कहीं नहीं जा सकता, अँगरेजी तो जानती नहीं। जरा अच्छे घर में किए होते तो समाज में इज्जत बढ़ती।'

''मैंने एक दिन कह दिया कि उस समय तो दोनों परिवार बराबर के ही थे, आपकी मुरगियों के दड़बे में मुश्किल से दस मुरगियाँ थीं। जुनैद के दुबई जाने के लिए जिससे कर्ज लिया गया था, वह हर सप्ताह आकर माँ-बहन करके जाता था। उस समय तक तो जुनैद को दुबई में ठीक-ठाक काम भी नहीं मिला था। जो कुछ आज दिख रहा है, मेरे ही नसीब से, मेरे ही मियाँ की कमाई से दिख रहा है। इस बात पर वे बेतरह खफा हो गए। भद्दी-भद्दी गालियाँ दीं और दूसरे दिन से घर से निकल जाने के लिए कहने लगे।''

''तुम क्या चाहती हो?''

''मैं पहले की तरह अपने शौहर के साथ रहना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि जुनैद मुझे अपने साथ दुबई ले जाए। घरवालों पर मुझे भरोसा नहीं रह गया।''

''बस न ऽ···या और कुछ? बाकी मामले तुम उठा लोगी नऽ··· ?''

''जी हाँ!''

''अब जुनैद से पूछ लेते हैं!'' पांडे मैडम ने अपनी रिवॉल्विंग चेयर जुनैद की ओर घुमा ली।

''बताओ जुनैद! इसे घर से क्यों निकाला जा रहा है? तुमने अपने वालिदैन को मना क्यों नहीं किया? क्या तुम इसे पसंद नहीं करते?''

''नहीं मैडम, ऐसी बात नहीं है, मैं तो इसे बहुत चाहता हूँ। हमने अपनी पसंद से निकाह किया था।''

''और तुम ताहिरा, क्या तुम भी जुनैद को बहुत पसंद करती हो?''

''जी मैडम, मैं जुनैद को बहुत पसंद करती हूँ, मैंने पहले भी कहा है।''

''बस तो फिर केस खत्म करने के लिए आवेदन-पत्र लगा देते हैं। जुनैद, तुम अपनी बीवी को अपने साथ रखो।'' पांडे मैडम ने आराम से कह दिया।

''नहीं···ऽ···ऽ···ऐसा नहीं हो सकता, मैं इसे फोन पर तीन बार तलाक-तलाक-तलाक कह चुका हूँ, इसीलिए मेरे वालिद इसे घर से निकाल रहे थे। हम सच्चे मुसलमान हैं अल्लाह से डरनेवाले।''

दोनों मीडिएटर जरा भी नहीं चौंके, जैसे माजरा पहले ही उनकी समझ में आ चुका हो।

''तो यहाँ भी वही बात है तीन तलाकवाली! सरकार के द्वारा इतनी कोशिशें की जा रही हैं, फिर भी घटनाएँ होती ही जा रही हैं।'' पांडे मैडम ने जैसे स्वयं से कहा था।

''नहीं मैंडम! यह झूठ बोल रहा है, इसने मुझे एक बार भी तलाक नहीं कहा। अपने घरवालों के कहने में आकर ऐसा कह रहा है।'' ताहिरा चीखनेवाले अंदाज में बोल पड़ी।

''मैंने एक माह पहले ही जुम्मे के दिन इसे फोन पर तलाक दे दिया था, यह झूठ बोले जा रही है कि मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा।'' जुनैद परेशान हुआ जा रहा था।

''ठीक है, तुमने कहा होगा परंतु मैंने नहीं सुना। मैं आज भी तुम्हारी बीवी हूँ।'' उसने कातर दृष्टि से उसे देखा। आँखों से ढलकने वाले आँसू उसने यों ही बहने दिए।

''यह तो गुनाह है।''

''जब इसने नहीं सुना तो तुम भी भूल जाओ उस बात को! गुस्से में कह दिया होगा, किसी और ने तो नहीं सुना, तुम अपनी बीवी और बच्ची को फिर से अपना लो।'' पांडे मैडम ने मित्र की तरह समझाया।

''यह तो हलाला के बाद ही संभव होगा, मैडम!''

''नहीं···ऽ···ऽ नहीं···ऽ···ऽ···! हलाला मुझे कुबूल नहीं! जुनैद के अलावा कोई मुझे नहीं छू सकता।'' ताहिरा कानों पर हाथ रखकर चिल्ला पड़ी थी।

''बड़े जाहिल हो! अपनी पाकीजा बीवी को नापाक करना चाहते हो!'' मैडम के स्वर में अफसोस परिलक्षित हो रहा था।

''मैं धर्म के खिलाफ नहीं जा सकता, हम दोनों ने जो गलतियाँ की हैं उसकी सजा है हलाला।

''क्या गलती की इस नेक दिल ताहिरा ने?''

''इसने हमारे अब्बू-अम्मी का दिल दुखाया, इसे तो पता भी नहीं कि उन्होंने किस मुश्किल से हमें पाला, मुझे खिलाकर खुद भूख मिटाने के लिए मुरगे की हड्डियाँ भूनकर चबा लेते थे। अब्बू कसाईखाने में सफाई करते थे। अम्मी मुरगियों की देख-भाल करती थीं। उन्होंने मुझे पढ़ाया-लिखाया, दुबई भेजने के लिए ब्याज पर कर्ज लिया, अब यदि उसे मैंने चुका दिया तो कौन सा एहसान कर दिया? यह उनसे कहने लगी कि उसके शौहर की कमाई पर घर चल रहा है, इसके नसीब से घर में बरक्कत आई है। और मैंने गुस्से में आकर अपनी चहेती बीवी को तलाक दे दिया।'' अंतिम बात कहते-कहते उसका गला भर आया।

''मैं मुआफी माँग लूँगी अम्मी-अब्बू से।'' ताहिरा सिर झुकाए हुए बोली।

''वे हलाला के बाद ही मुआफ कर पाएँगे।''

''मैं हलाला नहीं करूँगी, बाकी चाहे जो कहो, कर लूँगी।''

''और मैं इस्लाम के खिलाफ नहीं जाऊँगा। ताहिरा मुझसे मोहब्बत करती होगी तो मुझे पाने के लिए मजहबी कायदों का पालन जरूर करेगी।''

''ताहिरा सिर्फ और सिर्फ तुम्हें चाहती है जुनैद, उसकी देह पर केवल तुम्हारा ही अधिकार है, वह न तलाक को मानती है न हलाला को।'' ताहिरा के शब्दों में दृढ़ता थी।

''जब दोनों में से कोई नहीं मानेगा, तब समझौता कैसे होगा? अब दो ही रास्ते हैं—एक, मामले को सुलझाने में असमर्थता दिखाकर इसे फैमिली कोर्ट में वापस कर दिया जाए या एक बार जो कुछ देना-लेना है,

दे-लेकर लिखित में एक-दूसरे से अलग हो जाओ। वन टाइम सेटलमेंट में ही दोनों की भलाई है।'' शाहिद खान ने गंभीर स्वर में कहा। मैडम चुप रह गईं।

''ठीक है सर! मैं अपने परिवार में बैठकर सलाह-मशविरा कर लेता हूँ, फिर अगली पेशी में बताता हूँ।''

''मुझे भी अम्मी-अब्बू से पूछना होगा।''

''ठीक है, आप लोग मोहर्रिर से अगली पेशी की डेट ले लीजिए।'' दोनों मीडिएटर उठकर अपने चेंबर से बाहर निकल गए।

बस उसके बाद दो पेशी और हुई थीं। ढंग से समझाया था मध्यस्थों ने—''बस किसी तरह छुटकारा ही अच्छा है तुम्हारे लिए। तुमने जो झूठे इल्जामात लगाए हैं ताहिरा बानो, वे सच भी हो सकते हैं। आप उस घर में कैसे रहेंगी, जिसके रहवासियों पर आपने इतने संगीन आरोप लगाए हैं? अब तो कोर्ट भी आपका विश्वास नहीं करेगी। अच्छा हो आप एक बार ही जितना हो सके, लेकर कोई काम-धंधा शुरू कर दें।

''इज्जत से अपना और अपनी बेटी का गुजर-बसर करें।'' पांडे मैडम ने उसे सुझाया था। कोई और रास्ता न देखकर उसने अपने को परिस्थिति के हवाले कर दिया था। तीन लाख मिले थे उसे सेटलमेंट के लिए। वह कुछ माह अपने मायके में रही। फिर अब्बू के लिए घड़ी की एक छोटी सी दुकान खुलवा दी। उसे लगा था कि पैसे खत्म होते अधिक वक्त नहीं लगेगा। अम्मी-अब्बू, भाई-बहनें सबकी अपेक्षाएँ बढ़ गई थीं। सबकी उम्मीदें उसी पर टिकी हुई थीं। इधर कई रिश्ते आए उसके लिए, वे उसे बेटी जरीना के साथ अपनाना चाहते थे। उसे निकाह की बात गाली जैसी लगने लगी थी। वह प्यार तो सिर्फ जुनैद से ही करती थी न···ऽ। जब उसने जुनैद को दुबारा पाने के लिए भी हलाला मंजूर नहीं किया तो निकाह में ही कौन सा सुख है? उससे ज्यादा कौन जानता है इस सुख को?

उसने जरीना का नाम स्कूल में लिखवाया था और एक मकान किराए पर लेकर अपने शहर की कुछ जरूरतमंद औरतों के साथ टेलरिंग शॉप खोली। आज जो रेडीमेड कपड़ों की इतनी बड़ी कंपनी खड़ी दिखाई दे रही है न, इसका जन्म ऐसे ही हुआ था।

उसने चादर बिछाई और शुकराने की नमाज अदा करने लगी। उसका सारा विगत उसकी आँखों के सामने नाच रहा था। वह सोच रही थी कि काश! भारत की लोकतंत्री सरकार ने तीन तलाक को पहले ही अपराध घोषित कर दिया होता तो उसका जुनैद उसके पास रहता। आज उसे बेपनाह खुशी महसूस हो रही थी। अल्लाह के करम से नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लोकसभा और राज्यसभा दोनों ने तीन तलाक बिल पास कर दिया। अब तीन तलाक की रबड़ी गटकनेवाला तीन साल के लिए जेल जाएगा।

थोड़ी ही देर में बेटी जरीना अपने कॉलेज से आ गई। कृषि महाविद्यालय में पढ़ रही है। सरकारी नौकरी में जाने का मन है उसका। ताहिरा ने उस पर कोई बंदिश नहीं लगाई, न ही किसी ऐसी रूढ़ी को जरीना पर हावी होने दिया, जिससे वह अतार्किक परंपराओं को अपने जीवन में स्थान देने के लिए मजबूर हो। उसने तो मजहबी कायदों को पत्थर की लकीर की तरह माना था, लेकिन क्या मिला उसे? हारा हुआ तन और टूटा हुआ मन।

''अम्मी! वो अम्मी! कहाँ हो? आज तो ऐसी खबर लाई हूँ कि सुनकर खुशी से उछल पड़ोगी।'' जरीना उसकी पीठ पर झूल गई।

''हाँ-हाँ! जानती हूँ तू क्या कहनेवाली है, तीन तलाक बिल पास हो गया, यही न···ऽ?''

''उससे भी बड़ी खुशी अम्मी! मुझे अब्बू का पता मिल गया। उनके जिगरी दोस्त, जो कुछ दिन पहले दुबई से आए हैं, हमारे कॉलेज में लैक्चर देने आए थे। स्टुडेंट्स की ओर से मेरा लैक्चर था। मेरे विचार उन्हें बहुत पसंद आए। बातों-बातों में परिचय बढ़ा और खाने की टेबल तक आते-आते मुझे पता चला कि वे मेरे अब्बू के फ्रेंड हैं।'' जरीना को इतना खुश उसने कभी नहीं देखा था। उसे अच्छा तो लगा, किंतु कहीं कुछ दरक सा गया। ऐसा क्या था जो उसने इसे नहीं दिया? लड़की अब्बू के नाम से इतनी उत्साहित हो रही है, जैसे इसके अब्बू इसके लिए मन माफिक तोहफा लेकर आए हों। इत्ती सी थी, जब उसने इसकी ओर से आँखें फेर ली थीं। पाँच साल के लिए उसे मिली थी जरीना, लेकिन सेटलमेंट के बाद से कभी उसने खबर ही नहीं ली इसकी। ताहिरा ने इसे ही अपना जीवन मान लिया। कहीं कोई गलती तो नहीं की न ऽ? उसके दिल में एक प्रश्न उठा।

''अम्मी! तुम्हें खुशी नहीं हुई अब्बू का समाचार पाकर? वे दुबई में ही सेटल हो गए हैं, इसी बहाने हम भी एक बार दुबई हो आएँगे, अंकल ने उनका फोन नंबर दिया है अम्मी, कहो तो फोन मिलाऊँ?''

''जल्दी मत कर जरीना, जरा सोचने दे मुझे! तू पढ़ रही है, हो सकता है, तेरा निकाह दुबईवाले से ही हो जाए, बस फिर चली जाना अपनी अम्मी को छोड़कर अपने मियाँ के साथ।''

''अम्मी बात को कहाँ से कहाँ ले गईं? तुम्हारी यही आदत मुझे अच्छी नहीं लगती। हर खुशी के मौके पर रोने का कारण तलाश लेती हो। खुश रहा करो यार! तुम्हारी इतनी बड़ी बेटी है, जहाँ जाती है, लोग पूछते हैं कि जरीना तुम्हारी वालिदा कौन हैं?'' वह ताहिरा को बहलाने लगी।

''जरीना! जब से तुमने होश सँभाला है, किसे पाया अपने आसपास?''

''रमजान अंकल को और किसे?''

''जानती हो न, ये कब से मेरे साथ हैं? जब मेरा तलाक हुआ था, कुछ सिलाई मशीनें लेकर मैंने कपड़े सिलने का काम शुरू किया था, तभी से हम साथ हैं। इनकी पहचान से मुझे काम मिलने लगा था, आज भी वे हमारे मार्केटिंग मैनेजर हैं। हमारे ताल्लुकात कितने गहरे हैं यह तुमसे छिपा तो नहीं होगा? वे एक निहायत शरीफ इनसान हैं। उनकी बीवी तीन बच्चियों का भार उनके ऊपर डालकर इन्हें छोड़ गई। मजहबी तालीम ने उसे गंडे-ताबीज और झाड़-फूँक से ज्यादा कुछ करने न दिया। मैंने उनकी बेटियों की स्कूली तालीम के इंतजामात किए और उन्होंने

हम माँ-बेटी को अपनी सरपरस्ती दी। आज उनकी बेटियाँ अपने समान खुले विचारों के लड़कों से शादी करके अपने-अपने घर सुखी हैं। हम तुम्हारे लिए भी यही ख्वाहिश रखते हैं बेटी, कि तुम्हें अपनी मंजिल हासिल हो! अब सोचो, अगर तुमने जुनैद से अपने संपर्क बढ़ाए तो तुम्हारे अंकल को कितना दु:ख होगा।'' ताहिरा की आवाज जैसे कहीं दूर से आ रही थी।

''अम्मी, ऐसा था तो तुमने अंकल से निकाह क्यों नहीं कर लिया और कौन सी बंदिश थी? तुम्हारा बाकायदा तलाक हुआ था।'' जरीना हिचकते हुए पूछ ही बैठी, जो बहुत दिनों से उसके मन में उमड़-घुमड़ रहा था।

''तुम क्या जानो मेरी बच्ची, तलाक का दर्द, एक बसी-बसाई गृहस्थी का केवल तीन लफ्जों में बिखर जाना, वो रुसवाई, वो दिल के होते टुकड़े, क्या इतनी आसानी से बटोरे जा सकते थे? मुझे अपने शौहर की मोहब्बत पर बेपनाह भरोसा था। साल के दस महीने उसकी याद में बिता देती थी, वह कहता था, 'ताहिरा, मैं तुम्हारी जिंदगी खुशियों से भरना चाहता हूँ। कुछ साल कमाकर हमेशा के लिए वापस आ जाऊँगा, फिर हम साथ-साथ अपनी जरीना को बड़ी करेंगे। उस दिन सास-ससुर से कहा-सुनी के बाद मैं बैठी सोच रही थी कि वह अपने घरवालों को समझाएगा कि मेरी ताहिरा के साथ ठीक तरह से पेश आओ। उसकी बदौलत ही चार पैसे बच रहे हैं। दुबई की कमाई में परिवार रखने पर तो कुछ भी बचाना मुश्किल ही होगा। उन्हें डाँटेगा कि ताहिरा के परिवार की निंदा न की जाए। मैंने पहले उसका फोन नहीं उठाया, तब छोटी ननद ने बड़ी गुजारिश की, कहने लगी, जुनैद परेशान हो रहा है, जो भी अच्छा-बुरा है, बताओ तो उसे। उसकी तड़प महसूस करके मैंने फोन उठाया था, गले तक मेरा दिल भरा हुआ था। अब रो पड़ूँ कि तब। उसने बिना कुछ पूछे-ताछे मेरे ऊपर जैसे पत्थर पटक दिया, 'तलाक-तलाक-तलाक!' उसने फोन रख दिया। मैंने जब अपनी स्थिति का एहसास किया, तब सर पटक-पटककर रो पड़ी। तू मेरे सीने से लगी टुकुर-टुकुर ताक रही थी, घर का कोई पूछने भी नहीं आया कि क्या हुआ तेरे साथ? और उलटा दूसरे दिन से मुझे घर से निकालने लगे। मैंने इसीलिए इतना बड़ा घर बनाया। आज मैं उन्हें अपने घर पनाह दे सकती हूँ खुदा के फजल से। मैंने रमजान के साथ निकाह इसलिए नहीं किया, ताकि वह कभी मुझे तलाक-तलाक-तलाक न कह सके।'' ताहिरा ने अपनी आँखें पोछीं, उसके चेहरे पर चट्टानी दृढ़ता नाच उठी।

बी-२८ हरसिंगार, राजकिशोर नगर
बिलासपुर (छ.ग.)
दूरभाष : ०९९०७१७६३६१

लाडो की विदाई

लघुकथा

• सविता इंद्र गुप्ता

शादी ठीक से निपट गई थी और अब विदाई हो रही थी। माँग में सिंदूर, माथे पर बिंदिया, पैरों में आलता, गहनों से लदी लाडो ने आईने में निहारा तो खुद पर मुग्ध हो गई, लेकिन घर की दहलीज से बाहर आते हुए रो पड़ी। एक-एक कदम आगे बढ़ाना उसे भारी लग रहा था। अभी तक सब रस्में वह हँसते-हँसते निभा रही थी, लेकिन इस पल अंदर से जैसे आवाज आई—'अब ससुराल ही उसका घर होगा। सबकुछ छूट रहा है—घर-अँगना, खिलौने, सखियाँ, बचपन की यादें।' पिता को जार-जार रोते हुए पहली बार देखा तो उसकी आँखें भी बरस पड़ीं।

बुआ ने कहा, ''लाडो, अपनी हथेलियों में ये चावल व गेहूँ ले तथा अपने ऊपर से पीछे की तरफ बिखेर दे और बोल, 'माँ, आज तक जो भी तुम्हारे यहाँ खाया-पहना, सब यहीं छोड़े जा रही हूँ।'''

बड़ी सी नथ को सँभालते हुए लाडो धीमे स्वर में बोली, ''बुआ, क्या कह रही हो; भला ऐसा कैसे हो सकता है? मैं यह नहीं कहूँगी।''

''लाडो, कहना माना करो। इसका बहुत गहरा मतलब होवे है। मैंने, तेरी माँ ने, दादी-नानी, सबने अपनी ससुराल को विदा होते हुए यही कहा था। यह रीत है। चल, जल्दी निभा, विदाई का मुहूर्त निकला जा रहा है।''

लाडो अपने को मुश्किल से सँभाल पा रही थी। भीगी आँखों और रुँधे गले से अटकते-अटकते हुए बोली, ''माँ! मैंने जो भी···तेरे यहाँ खाया-पिया···पहना-ओढ़ा है···''

फिर रुलाई फूट पड़ी। तनिक रुककर धीमी आवाज में बोली, ''उसका कर्ज जीवन भर नहीं उतार सकती।''

बुआ को रीत टूटने से एक बार गुस्सा तो आया, लेकिन फिर बड़े प्यार से लाड़ो के सिर को चूमते हुए भीगी आँखों से बोली, ''लाडो, बिल्कुल सच कहा तूने। मैं चाहकर भी ऐसा न कह सकी थी।''

बी-३१, ग्राउंड फ्लोर, साउथेंड फ्लोर्स
सेक्टर-४९, गुरुग्राम-१२२०१८ (हरियाणा)
दूरभाष : ८८००१०१७६९

भारत में विदेशी हिंदी रेडियो प्रसारण

● बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

भारत में आकाशवाणी की तरह कई देशों के विदेशी रेडियो प्रसारण भी हिंदी में प्रसारण करते हैं। जिनके लाखों श्रोता भारत में मौजूद हैं। विदेशी रेडियो प्रसारणों से हर दिन समाचार, समाचार समीक्षा तथा अच्छे-अच्छे साप्ताहिक प्रोग्राम और इनामी प्रतियोगिताएँ भी हर साल खूब होती रहती हैं। इनमें श्रोता भाग लेकर कीमती इनाम के साथ उस देश की मुफ्त यात्रा भी करते हैं। आइए, आपको लंदन से प्रसारित होनेवाली रेडियो स्टेशन बी.बी.सी. के बारे में बताएँ। बी.बी.सी. रेडियो का पूरा नाम ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन है। बी.बी.सी. रेडियो की स्थापना ११ मई, १०४० में हुई। तब से आज तक बी.बी.सी. का रेडियो प्रसारण जारी है। बी.बी.सी. में बहुत उतार-चढ़ाव और बदलाव आए। पहले बी.बी.सी. की चार हिंदी सभा हुआ करती थीं और आज भी चार सभा हो रही हैं। मई २०१० में बी.बी.सी. बंद हो जाने के कगार पर आ गया था। मगर श्रोताओं के भारी विरोध के कारण बी.बी.सी. का हिंदी प्रसारण बंद होने से बच गया। १३ मई, १९१० की इसी बात को लेकर गोरखपुर में बी.बी.सी. की ७०वीं सालगिरह पर एक शानदार श्रोता सभा आयोजित हुई, जिसमें बी.बी.सी. के जाने-माने संवाददाता रामदत त्रिपाठी उद्घोषक ऐश्वर्य कपूर, रेहान फजल, अमित बरुआ आए हुए थे। आज बी.बी.सी. का प्रसारण सुबह ६:३० से ७:०० तक ८:०० से ८:३० तक रात ७:३० से ८:०० तक तथा रात ९:३० से १० बजे तक सुना जा सकता है। इसे अपने रेडियो के १९.२५३१.४१ मीटर बैंड पर सुन सकते हैं। आज बी.बी.सी के संपादक नीती त्यागी हैं। बी.बी.सी. का भारत में पता है बीबीसी-हिंदी सेवा पोस्टबॉक्स न. ३०३५, नई दिल्ली-११०००३। आज बी.बी.सी. श्रोताओं को प्रोगाम गाइड नहीं भेजता है। पहले बी.बी.सी. प्रोग्राम गाइड कलेंडर, स्टीकर, पेन खड़ा और खोला टीसर्ट वेज सबकुछ भेजता था। बी.बी.सी. इंडिया बोल विवेचना सबसे फेमस प्रोग्राम है। बी.बी.सी. के प्रोग्राम एक बार सुन लेंगे तो बार-बार सुनने को मन करेगा। चीन से चाइना रेडियो इंटरनेशनल के नाम से हर दिन एक-एक घंटे की पाँच सभा का प्रसारण होता है। जिसे आप हर दिन सुबह ८:३० से ९:३० शाम ६:३० से ७:३० तक रात ८:३० से ९:३० तक ९:३० से १०:३० तक तथा रात १०:३० से ११:३० बजे तक प्रसारण रेडियो पर १९.२५.३१.४१ मीटर बैंड तथा मेडियाम वेब पर सुना जा सकता है। इंटरनेट पर भी प्रसारण सुन सकते हैं।

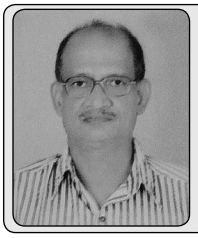

सुपरिचित बाल-साहित्यकार। देश और विदेश की बाल-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। विदेशी रेडियो के हिंदी प्रसारणों पर रचनाएँ प्रचारित। कई पुरस्कार प्राप्त।

चाइना रेडियो इंटरनेशनल से हिंदी प्रसारण की शुरुआत १५ मार्च, १९५४ से शुरू हुई। आज चाइना रेडियो इंटरनेशनल से ६१ विदेशी भाषा में प्रसारण होता है। आज चाइना रेडियो इंटरनेशनल विश्व का सबसे लोकप्रिय रेडियो प्रसारण है। इसके भारत में लाखों से ज्यादा श्रोता हैं। आज चाइना रेडियो इंटरनेशनल का प्रसारण मोबाइल इंटरनेट और एफ.एम. रेडियो पर भारतीय श्रोताओं के लिए प्रसारित हो रहा है। चाइना रेडियो इंटरनेशनल से हर दिन विश्व समाचार, समीक्षा और साप्ताहिक प्रोग्राम, दक्षिण एशिया फोकस, खेल-जगत् चीन का तिब्बत चीन की झलक, आपका पत्र मिला, टी. टाइम संडे की मस्ती, आज का लाइफ टाइम टाप पाई, पश्चिम की तीर्थ यात्रा, कथा सागर, चीन का भ्रमण, आइए चीनी भाषा सीखें आदि प्रमुख प्रोग्राम हैं? चाइना रेडियो का संक्षिप्त नाम सी.आर.आई. है। आपको यह भी बता दूँ कि चीनी उद्घोषक भाई-बहनों ने अपना नाम हिंदी में रख लिया। ऐसा सिर्फ चाइना रेडियो के उदघोषकों ने किया है। सी.आर.आई. से पहले मेसेंजर श्रोता वाटिका पत्रिका छपती थी, जिसे बंद करके अब 'सेतु संबंध' त्रैमासिक पत्रिका छप रही है। जो श्रोता क्लबों को मुफ्त भेजी जाती है। सी.आर.आई. से हर साल एक ज्ञान प्रतियोगिता होती है, जिसके प्रथम विजेता को चीन की दस दिवसीय यात्रा का मुफ्त चांस दिया जाता है तथा दूसरे-तीसरे विजेताओं को रेडियो, कैमरा, टी-शर्ट, झोला, कालिन इनाम में डाक से भेजे जाते हैं। साथ ही पोस्ट पेड जवाबी लिफाफा भी भेजा जाता है। तीन साल से सी.आर.आई. श्रोताओं को कुछ भी

सूचना सामग्री नहीं भेज रहा है। भारत में सी.आर.आई. के संवाददाता देव हैं इनका पूरा पता है—सी.आर.आई. ब्यूरो संवाददाता वेव-ए ६/४ बसंत बिहार, नई दिल्ली-११००५७ है। दूसरा पता पत्र भेजने का है सी.आर.आई. द्वारा चीनी राजदूत ५० डी. शांतिपथ, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-११००२१।

मनीला फिलिपींस से रेडियो बेरितास एशिया का प्रसारण होता है। यह प्रसारण वहाँ की क्रिश्चिन संख्या करती है। रेडियो बेरितास एशिया का हिंदी प्रसारण ३ जुलाई, १९८८ से शुरू हुआ। जो आज तक जारी है। रेडियो बेरितास एशिया का प्रसारण सुबह ६ से ६:२७ तक और रात को ७ से ७:३० तक १९ और २५ मीटर बैंड पर सुना जा सकता है। रेडियो वेरितास एशिया के प्रसारण में प्रभु बचन, बाइबल धारावाहिक, भक्ति गीत, कानूनी ज्ञान, आपका पत्र मिला, युवा और विकास, श्रोता सृजन, इस प्रोग्राम में श्रोताओं की कहानी, कविता, गीत, गजल, लघु कथा प्रसारित होती हैं तथा अच्छी रचना को इनाम दिया जाता है। नाटक, बाल जगत् प्रोग्राम के साथ हर दिन विश्व समाचार भी प्रसारित किया जाता है। रेडियो वेरितास एशिया हर साल एक विशाल श्रोता सम्मेलन भी करता है। जिसे पटना, वाराणसी, इंदौर आदि शहरों में बारी-बारी से आयाजित किया जाता है। रेडियो बेरितास एशिया का भारत में पता है : रेडियो वेरितास एशिया, पोस्ट बाक्स न. ५०७, जी.पी.ओ, भँवर कुआ, इंदौर, म.प्र.-४५२००१; फिलिपींस का पता है रेडियो वेरितास एशिया क्यूजोन सीटी मनीला फिलिपींस ११६६। रेडियो वेरितास एशिया हर साल कलेंडर पर छपा प्रोग्राम गाइड तथा वार्षिक पत्रिका 'सत्यस्वर' हर श्रोता क्लब को बड़ी संख्या में भेजी जाती है। ताकि ज्यादा-से-ज्यादा श्रोता प्राप्त कर सकें। भारत में रेडियो वेरितास एशिया पहले क्यू.एस.एल कार्ड, स्टीकर, बैच, झंडा, पोस्टर, टी-शर्ट, पेन, डायरी, झोला आदि भेजता था, मगर अब कुछ नहीं भेजता है।

वैटिकन सीटी रोम इटली से रेडियो वैटिकन नाम से हिंदी प्रसारण होता है। इस रेडियो केंद्र की स्थापना १२ फरवरी, १९३१ को हुई तथा हिंदी प्रसारण की शुरुआत सन् १९६४ से। यहाँ से हर दिन सुबह ६:१० से ६:३० तक तथा रात ८ बजे से ८:२० तक १६.१९.२५ मीटर बैंड पर सुन सकते हैं। बीस मीनट के प्रसारण में आराधना विधि चिंतन, युवा कार्यकम, रविवारीय देवदूत प्रार्थना, कली सियाई दस्तावेज, संत पापा का संदेश, श्रोताओं के पत्र, पवित्र धर्म ग्रंथ बाइबल का परिचय आदि। वाटिकन रेडियो विश्व के ४५ भाषाओं में प्रसारण करता है। यहाँ के हिंदी उद्घोषकों के नाम हैं जूलयट क्रिस्टफर, उषा तिर्की। वाटिकन रेडियो आज मोबाइल इंटरनेट और एफ.एम. रेडियो पर भी प्रसारण करता है। श्रोताओं को हर महीने 'वेटिकन भारती' पत्रिका भेजी जाती है। जो जानकारी और सूचनाप्रद होती है। वेटिकन रेडियो का भारत में पता है—वाटिकन रेडियो लोयोला कॉलेज सत्यभारती केंद्र पोस्ट बॉक्स नं. २ डॉ. कामिल बुल्के मार्ग, राँची-८३४००१ झारखंड। वाटिकन रेडियो से किसी तरह की कोई प्रतियोगिता नहीं होती है।

यों तो रेडियो जापान से हिंदी में प्रसारण १ जून, १९३५ से शुरू हुई थी, मगर दूसरे विश्व युद्ध के कारण प्रसारण बंद कर दिया गया। फिर रेडियो जापान से दोबारा प्रसारण १ फरवरी, १९५२ से शुरू हुआ, जो आज तक जारी है। रेडियो जापान को एन.एच.के. के नाम से भी जाना जाता है। आज रेडियो जापान विश्व की १८ भाषाओं में प्रसारण करता है। रेडियो जापान से प्रतिदिन दो हिंदी प्रसारण होते हैं। पहली सभा सुबह ६:३० से ७:०० बजे तक तथा दूसरी सभा रात ८:०० बजे से ८:४५ तक, जिसे १९ और २५ मीटर बैंड पर सुना जा सकता है।

टोक्यो जापान से रेडियो जापान नाम से हिंदी में रेडियो प्रसारण प्रतिदिन होता है। यों तो रेडियो जापान से हिंदी में प्रसारण १ जून, १९३५ से शुरू हुई थी, मगर दूसरे विश्व युद्ध के कारण प्रसारण बंद कर दिया गया। फिर रेडियो जापान से दोबारा प्रसारण १ फरवरी, १९५२ से शुरू हुआ, जो आज तक जारी है। रेडियो जापान को एन.एच.के. के नाम से भी जाना जाता है। आज रेडियो जापान विश्व की १८ भाषाओं में प्रसारण करता है। रेडियो जापान से प्रतिदिन दो हिंदी प्रसारण होते हैं। पहली सभा सुबह ६:३० से ७:०० बजे तक तथा दूसरी सभा रात ८:०० बजे से ८:४५ तक, जिसे १९ और २५ मीटर बैंड पर सुना जा सकता है। हर दिन रात की सभा में विश्व समाचार प्रसारित होता है तथा साप्ताहिक प्रोग्राम में सोमवार को सरल जापानी पाठ माला, सवालों में जापान, मंगलवार को प्रौद्योगिकी और कारोबार, बुधवार को जापान दर्पण, सामाजिक चर्चा, बृहस्पतिवार को सांस्कृतिक जीवन, शुकवार को आओ पकाएँ जापानी खाना तथा अद्भुत जापान। शनिवार को धुन धमाल गीतों की छाँव में 'साहित्य सरिता प्रोग्राम' में जापानी कहानी सुनाई जाती है तथा रविवार को 'चेरी के देश से' प्रोग्राम होता है, जिसमें श्रोताओं के भेजे पत्रों का जवाब दिया जाता है। इसके साथ गरमी में ग्रीष्म कालीन विशेष प्रोग्राम तथा सर्दी में शीतकालिन प्रोग्राम प्रसारित किया जाता है। रेडियो जापान ने २८ अक्तूबर, २०१२ से हैदराबाद और जयपुर से एफ.एम. रेडियो पर प्रसारण मोबाइल और इंटरनेट पर भी होता है। रेडियो जापान से महीने में एक बार सवाल-जवाब प्रतियोगिता होती है, जिसमें एक श्रोता को लड़ाई द्वारा विजेता चुनकर कीमती इनाम दिया जाता है। रेडियो जापान श्रोताओं को रिशेप्शन रिपोर्ट फार्म भेजता है। जिसे भरकर भेजने पर क्यू.एस.एल. और बियू फोटो कार्ड मिलता है। रेडियो जापान एक पन्ने का 'श्रोता मित्र पत्रिका' हर महीने अपने अभी श्रोताओं को भोजता

है, जिसमें जापानी शहरों की खान-पान की विविध जानकारी होती है। पहले जापान से कलेंडर, झंडा, पोस्टर, बैच, शर्ट, पेन, डायरी बैग, पंखा, रूमाल, रेडियो आदि सब मिलता था। अब कुछ भी नहीं मिलता है, सिवा प्रोग्राम गाइड के। हाँ, रेडियो जापान से जापानी सीखने की पुस्तक हर श्रोता को मुफ्त भेजी जाती है। रेडियो जापान का भारत में पता है—रेडियो जापान हिंदी सेवा, छठी मंजिल, मेरिडियन कॉमर्शियल ८ विंडसर प्लेस, जनपथ, नई दिल्ली-११०००१।

कोलंबो श्रीलंका से रेडियो सीलोन श्रीलंका नाम से प्रसारण प्रतिदिन सुबह ७ बजे से ९ बजे तक होती है। यहाँ से फिल्मी गाने तथा फरमाइश गाने, पुराने गाने खूब प्रसारित होते हैं। प्रसारण २५ मीटर बैंड पर प्रसारित होता है। यहीं की उद्घोषिका ज्योति परमार, पदमीनी परेश, ज्योति परेरा हैं। श्रोताओं को यहाँ से किसी तरह की सामग्री अथवा पत्र नहीं मिलता है। श्रोता डाक और एस.एम.एस. से गीतों की फरमाइश भेजते हैं। रेडियो सिलोन विविध भारती की तरह गाने सुनाता रहता है। पहले रेडियो सिलोन से सुबह दोपहर रात में तीन प्रसारण होते थे, जो बंद हो गया, अब एक ही सभा होती है।

ईरान की राजधानी तेहरान से रेडियो तेहरान नाम से रेडियो प्ररसाण होता है। रेडियो तेहरान से हिंदी प्रसारण १९७० से शुरू हुई। यहाँ से ३३ विदेशी भाषा में प्रसारण होते हैं। हिंदी सेवा के प्रतिदिन सुबह ७:३० से ८:३० तक तथा रात ६ से ९ बजे तक दो प्रोग्राम होते हैं, जिसे ३१ और २५ तथा २२ मीटर बैंड पर सुना जा सकता है। रेडियो तेहरान से प्रतिदिन दोनों सभा में समाचार, समाचार समीक्षा तथा साप्ताहिक प्रोग्राम, पत्र-संसार, सफल महिलाएँ, कुरान ईश्वरी चमत्कार, आज कल, विश्व दर्पण, आइए फारसी सीखें, सपनों का देश ईरान, मनोरम ईरानी कहानियाँ, साप्ताहिक प्रेस समीक्षा आदि प्रमुख हैं। रेडियो तेहरान भी इंटरनेट मोबाइल पर प्रसारण करता है। यहीं से साल में दो बार रेडियो तेहरान पत्रिका और एक बार कलेंडर प्राप्त होता है। भारत में पता है : रेडियो तेहरान, पोस्ट बाक्स नं. ४२२२, नई दिल्ली-११००४८; रेडियो तेहरान का प्रसारण भारत में साफ सुनाई देता है।

कुछ विदेशी रेडियो प्रसारण जो भारत में बेहद लोकप्रिय थे, मगर वे एक के बाद एक बंद हो गए। बस उनकी यादें शेष रह गई हैं। उनके बारे में विस्तार से जानकारी दे रहा हूँ। जर्मन एकीकरण के पहले जब जर्मनी पूर्वी और पश्चिमी भाग में बँटा हुआ था, एक देश का नाम बर्लिन था तो दूसरे का नाम बॉन जर्मनी था बर्लिन से रेडियो बर्लिन इंटरनेशनल नाम से दैनिक हिंदी प्ररसाण हुआ करता था। रेडियो बर्लिन इंटरनेशनल भारतीय श्रोताओं के लिए आधे-आधे घंटे की चार सभा करता था, सुबह से शाम तक रेडियो बर्लिन इंटरनेशनल का हिंदी प्रसारण सन् १९६० में शुरू हुई तथा २८ मार्च, १९९० को बंद हो गई रेडियो बर्लिन इंटरनेशनल बहुत ही प्यारा रेडियो स्टेशन था। भारत में इसके कई हजार श्रोता थे। तथा यहाँ से ढेरों इनाम भी मिलते थे। रूस के एक शहर ताशकंद से भी रेडियो ताशकंद के नाम से रेडियो प्रसारण हर दिन शाम छह बजे से ६:३० बजे तक तथा रात ६ बजे से ८:३० बजे तक २५.१९.३१.४१ मीटर बैंड पर प्रसारित होता था। रेडियो ताशकंद से भी ढेरों इनाम और सूचना सामग्री हर साल मिलती थी। यह रेडियो प्रसारण ताशकंद उज्बेकिस्तान प्रदेश के बारे में ढेर सारी जानकारियाँ देता था। तथा बराबर पत्र-पत्रिकाएँ, बैच, झंडा, कलेंडर, पेन, टी-शर्ट आदि भेजता था। अमेरिका से वॉईस ऑफ अमेरिका नाम से १ जुलाई, १९५४ से हिंदी प्रसारण की शुरुआत हुई थी। यहाँ से प्रतिदिन हिंदी में सुबह-शाम दो प्रसारण होते थे। पहली सभा सुबह ६:३० से ७ बजे तथा दूसरी सभा रात ९:३० से १०:३० बजे तक रोज हुआ करती थी। वॉइस ऑफ अमेरिका बी.बी.सी. के बाद दूसरे नंबर का विश्व का प्रसारण था। वॉइस ऑफ अमेरिका के श्रोताओं की संख्या कई हजार में थी। मगर जब बाजार में मोबाइल इंटरनेट टी. वी. चैनलों की बाढ़ आ गई तो वॉइस ऑफ अमेरिका के श्रोता घटने से वॉइस ऑफ अमेरिका ने २ नवंबर, २००४ को सुबह की सभा का प्रसारण बंद कर दिया। वॉइस ऑफ अमरिका का हिंदी प्रसारण बंद हो जाने से हिंदी रेडियो प्रसारण का चिराग हमेशा के लिए मुझ गया। मगर अमेरिका सरकार ने भारत के हिंदी श्रोताओं को नीचा दिखाने के लिए ऐसा किया। क्योंकि पाकिस्तान के श्रोताओं के लिए उर्दू प्रसारण को नहीं बंद किया बल्कि उर्दू में दिनभर प्रसारण करने लगा। हमें याद है ३० सितंबर, २००८ की वह रात, जब वॉईस ऑफ अमेरिका से अंतिम हिंदी प्रसारण सुना। हमने भी फोन पर अपनी अंतिम संवेदना व्यक्त की। अशोक सरीन, शोभा बेरी, विजय लक्ष्मी, शशि प्रकाश, निर्मला जोशी आदि सभी उद्घोषकों के स्वर से बार-बार ये शब्द सुनने को मिले कि हम सब हिंदी सेवा से अलविदा कहते हैं। वॉइस ऑफ अमेरिका का सबसे प्यारा प्रोग्राम हलो अमेरिका था। वॉइस ऑफ अमेरिका ने १ नवंबर, २००९ को इंटरनेट प्रसारण शुरू किया, जो एक साल बाद ३१ अक्तूबर, २०१० को बंद हो गया।

जर्मनी के शहर कलोन से डाइचो वैले डी.डब्ल्यू नाम से एक रेडियो प्रोग्राम हुआ करता था, जो शुरू में ५० मिनट का होता था, बाद में ४५ मिनट का हो गया। इसका प्रसारण भारत में हर दिन रात ८ से ८:४५ तक होती थी। पहली बार डाइचे वैले का रेडियो प्रसारण १५ अगस्त, १९६४ को शुरू हुई। जो भारतीय समय अनुसार रात ८:५० से रात ९:४० तक होता था, जो बाद में समय परिर्वतन के बाद रात ८ से ८:५० फिर ८:४५ तक हो गई डाइचे वैले पाँचों महाद्वापों के लिए हर दिन ३४ भाषा में प्रसारण करता था। जो रेडियो के ३१ तथा ४१ मीटर बैंड पर होता था। ४५ मीनट के प्रसारण में समाचार सामयिक चर्चा रिपोर्ट, भेंटवार्ता, मत अभिभत, भारत और जर्मनी, आपके प्रश्न, युवा पत्रिका, देश देशांतर, जर्मन झाँकी, ज्ञान-विज्ञान, आप की चिट्ठी मिली, मंथन मैच प्वॉइंट, हलो जिंदगी, खोज अतरा यूरोप के दिल से, आपकी बारी आपकी बात, जर्मन पाठमाला रग तरंग आदि प्रमुख थे, बाद में डाईचे वैले ने सुबह ७:०० से ७:३० तक तथा रात ८ से ८:३० तक नई प्रसारण समय की शुरुआत की। २८ मार्च, २०१० को सुबह का हिंदी

प्रसारण बंद हो गया वॉइस आफ जर्मनी ने दूसरी बार १४ नवंबर, २००९ को वाराणसी के बी.एच.यू. के कंसर्टहॉल में श्रोता सभा आयोजित हुई, जिसमें भारत के श्रोता आए हुए थे। वही पर डाइचे बैले ने ढेरों इनाम श्रोताओं में बाँटे, मगर यह किसी को पता नहीं था कि ३० अक्तूबर, २०१० को डाइचे वैले का हिंदी प्रसारण सारे श्रोताओं से अलविदा कह जाएगा। एक के बाद एक विदेशी रेडियो प्रसारण बंद होने से भारतीय श्रोताओं के चेहरे पर मायूसी छा गई। रेडियो श्रोताओं की दुनिया लुटने लगी। जर्मन सरकार ने इंटरनेट पर हिंदी प्रसारण शुरू किया, जो दो साल में बंद हो गया। जर्मन सरकार ने रेडियो प्रसारण को बजट न होने का षड्यंत्र रचकर हिंदी प्रसारण को बंद कर दिया। भारतीय श्रोताओं ने इसका कड़ा विरोध किया जर्मन सरकार को पत्र भेजकर, मगर जर्मन सरकार ने भारतीय श्रोताओं की माँग को ठुकराकर प्रसारण के मुँह पर ताला लटका दिया। जब कि उर्दू प्रसारण श्रोताओं के लिए आज भी हो रहा है।

अमेरिका से वॉईस ऑफ अमेरिका नाम से १ जुलाई, १९५४ से हिंदी प्रसारण की शुरुआत हुई थी। यहाँ से प्रतिदिन हिंदी में सुबह-शाम दो प्रसारण होते थे। पहली सभा सुबह ६:३० से ७ बजे तथा दूसरी सभा रात ९:३० से १०:३० बजे तक रोज हुआ करती थी। वॉइस ऑफ अमेरिका बी.बी.सी. के बाद दूसरे नंबर का विश्व का प्रसारण था। वॉइस ऑफ अमेरिका के श्रोताओं की संख्या कई हजार में थी। मगर जब बाजार में मोबाइल इंटरनेट टी.वी. चैनलों की बाढ़ आ गई तो वॉइस ऑफ अमेरिका के श्रोता घटने से वॉइस ऑफ अमेरिका ने २ नवंबर, २००४ को सुबह की सभा का प्रसारण बंद कर दिया।

हम भारतीय श्रोताओं के लिए सोवियत संघ की राजधानी मास्को से रेडियो पर हिंदी प्रसारण की शुरुआत ३० अक्तूबर, १९८२ से हुई। रेडियो रूस हर दिन एक-एक घंटे की चार हिंदी प्रसारण करता था। उस समय समाचार पाने का रेडियो ही एकमात्र साधन था। उस समय हर घर मैं रेडियो जरूर होता था। रेडियो ही मनोरंजन का एकमात्र साधन था। रेडियो रूस के भारत मै कई हजार श्रोता थे। रेडियो रूस से रूस की मुफ्त यात्रा की हर साल एक प्रतियोगिता होती थी, जिसमें भारत से किसी एक श्रोता को यह पुरस्कार दिया जाता था, मगर यह प्रतियागिता सोवियत संघ के सन् १९९८ के विघटन के बाद बंद हो गई। उस समय सोवियत रूस की हिंदी पत्रिकाएँ सोवियत संघ सोवियत रूस सोवियत नारी स्पुतनिक सोवियत उज्वेकिस्तान के भारत में गाँव-शहर हर जगह पाठक थे। सोवियत संघ के विघटन के बाद वहीं से निकलनेवाली हिंदी पत्रिकाएँ और पुस्तकों का छपना बंद हो गया। श्रोताओं को पत्रिकाएँ मिलना भी बंद हो गया। १९९८ के बाद रेडियो मास्को का नाम बदलकर 'रेडियो रूस' रखा गया। २९ अक्तूबर, १९९५ को रेडियो मास्को ने अपनी प्रसारण की स्थापना की ६५वीं सालगिरह मनाने के बाद रेडियो मास्को का नाम बदल दिया। रेडियो मास्को से हिंदी में तीन हिंदी प्रसारण होते थे। जो भारतीय समय शाम ४:३० से ५:३० तक ८:३० से ९:३० तक तथा रात ८:३० से ९:३० तक प्रसारण होता था। उस समय शीतयुद्ध का दौर चल रहा था। तथा रूस अमेरिका एक दूसरे देशों के समाचार बढ़ा-चढ़ाकर प्रसारित करते थे। जब शीत युद्ध का दौर समाप्त हो गया तो रूस अमेरिका दुश्मनी दोस्ती में बदल गई। उस समय रेडियो मास्को के दैनिक पाक्षिक साप्ताहिक प्रोग्राम थे। समाचार समीक्षा एशिया के समाचार हमारी डाक रूस देश की झाँकी, मित्रों का क्लब, मैत्री और सहयोग, पत्रों की समीक्षा, बिजनेस क्लब, विचार मंच, संगीत-गीत का प्रोग्राम, रूसी भाषा की पाठमाला, शुभ समाचार आदि। रेडियो रूस ने २००१ से नई प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता की शुरुआत की। रेडियो रूस २००१ से २०१३ तक नई दिल्ली में श्रोताओं को रूसी सांस्कृतिक केंद्र बुलाकर एक श्रोता सम्मेलन करता थी तथा पुरस्कार वितरण होता था। हर साल श्रोता सम्मेलन में सैकड़ों श्रोता इकट्ठा होते थे। साथ ही श्रोता जिनका नाम रेडियो पर सुनते थे, उन्हें उनसे मिलने का सौभाग्य भी प्राप्त हो जाता था। साथ ही रेडियो रूस की उद्घोषकों तथा उद्घोषिकाओं से मिलने तथा उनके साथ खड़े होकर फोटो खिंचवाने का मौका मिल जाता था। रेडियो रूस को सुननेवाले श्रोता रूस के बारे में ढेरों जानकारी घर बैठे पा जाते थे। जो छात्रों की जनरल नॉलेज बढ़ाते थे। रेडियो रूस पत्र द्वारा और रेडियो द्वारा हर श्रोता को नियमित जवाब देता था, साथ में रूस की डाक टिकटें भी डाक से मिल जाती थीं। रेडियो रूस ने एफ.एम. पर भी दिल्ली में प्रसारण शुरू किया तो दिल्ली और दिल्ली के आस-पास रहनेवाले श्रोता बहुत खुश हुए। मगर यह सारी खुशी हमसे हमेशा के लिए रेडियो रूस छीन लेगा, यह बात किसी श्रोता को पता नहीं थी। मगर वह दुखद घड़ी भी आ गई, जब ३१ दिसंबर, २०१३ को रेडियो रूस ने घोषणा की कि जनवरी २०१४ से रेडियो रूस के सारे हिंदी प्रसारण बंद हो जाएँगे। ३१ दिसंबर, २०१४ को रेडियो रूस का हिंदी प्रसारण बंद हुए एक साल पूरे हो गए। भारत में विदेशी रेडियो द्वारा हिंदी में प्रसारण करने का दु:खद अंत जारी है। देखना बाकी है और कितने विदेशी हिंदी रेडियो प्रसारण बंद होनेवाले हैं। वैसे रेडियो पाकिस्तान, रेडियो बँगलादेश, रेडियो नेपाल से हिंदी में प्रसारण होते हैं। मगर इनको सुननेवाले श्रोता बहुत कम हैं। इनका प्रसारण भी भारत में साफ सुनाई नहीं देता है।

गल्लामंडी, गोला बाजार
जनपद-गोरखपुर-२७३४०८ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९८३८९११८३६

पाँच तारीख

● रंजन कुमार सिंह

सुबह नाश्ते में उसके सामने पूड़ी और भुजिया के साथ सेवई की कटोरी रख दी गई तो उसने समझ लिया कि आज पाँच तारीख है। हर महीने की पाँच तारीख को अगर छुट्टी न हुई तो उसे बैंक जाना होता है। यह सिलसिला सालों से यों ही चल रहा है। बल्कि यह कहें कि जब से वह पेंशनयाफ्ता हुआ है, तब से ही।

अपने पोपले मुँह में पूड़ी को नरम करने के लिए उसे सेवई साथ-साथ खानी पड़ती है। और दिन चाहे जो भी होता हो, पर आज के दिन तो उसे दूसरी परसन भी मिलती है। गरमागरम पूड़ियों के साथ भुजिया और सेवई का आनंद कोई उससे पूछे। इस एक दिन वह छककर खा लेता है।

आज भी जब वह खा रहा था तो उसकी नजरें परसन पर ही लगी हुई थीं। छोटी बहू पूड़ियाँ तलने में लगी थी और मझली उसे एक-एक कर पूड़ियाँ परोसती जाती थी। पेट तो उसका भर गया, पर मन न अघाया था। उसे छोटी बहू की आवाज सुनाई पड़ी—'और कितना खाएँगे बाबूजी?'

मझली बोली, 'तले जाओ, पेट नहीं, घड़ा जो है।'

इन तानों का अब उसपर कोई असर नहीं होता था। पेट घड़ा हो, न हो, मन तो उलटा घड़ा जरूर हो गया था, चिकना घड़ा। पत्नी को गुजरे चार साल बीत चुके थे। उसके रहते वह अपनी मनमरजी चला भी लेता था, पर अब तो उसकी पसंदगी-नापसंदगी का खयाल रखनेवाला कोई नहीं था।

ऐसे में इस पाँच तारीख का उसकी जिंदगी में वही महत्त्व था, जो चातक के लिए स्वाति नक्षत्र का। पूड़ियों के छनने की आवाज थम गई तो उसने समझ लिया कि अब बस हो चला है। मन समझ ले तो समझ ले, पर यह चटोरी जीभ भला कहाँ मानती है। फिसल ही तो गई—'थोड़ा सेवई और मिलेगा बहू?'

'हाँ, हाँ! काहे नहीं! बेटा आपका आ ही रहा है नाश्ता करने, उसके साथ एक बार फिर और जिम लीजिएगा आप भी।' मझली ने ताना मारते हुए कहा।

इसके बाद वह वहाँ बैठा न रह सका। उठा, अपनी थाली उठाई और आँगन के किनारे लगे हैंडपंप पर लगा उसे धोने। उसे याद है, दीवाली पर मिले बोनस के पैसों से उसने यह हैंडपंप लगवाया था। इस बात को छह-सात सात तो जरूर हो गए। इसके बाद किसी ने उसका वाशर तक नहीं बदला।

लेखक व फिल्म निर्माता। हिंदी और अंग्रेजी पर समान अधिकार। 'अजनबी शहर अजनबी रास्ते' (यात्रा संस्मरण), 'बंद खिड़की से टकराती चीख' (कहानी-संग्रह) तथा 'सरहद जीरो मील' एवं अंग्रेजी में कई शोधपरक पुस्तकों का लेखन। देश-विदेश में भारतीय कला और संस्कृति पर व्याख्यान। संप्रति वेदांत पर गहराई से अध्ययनरत।

खड़खड़ाते हैंडपंप के चलने की आवाज के बीच उसे मोतिया का कुंकियाना सुनाई पड़ा। कोई और दिन होता तो वह अपनी थाली में बच रही चीकट रोटी को उसके सामने रख आता, पर आज पाँच तारीख को तो उसकी थाली बिना धोए ही शीशे के मानिंद दिखाई पड़ती है, एकदम चमाचम।

जूठी थाली धोकर उसने कोने में रख दी और फिर अपनी कोठरी की तरफ बढ़ गया। एक-एक कमरा जोड़कर उसने यह छोटा सा मकान पूरा किया था। किरानी की नौकरी में वेतन ठीक-ठाक मिल जाता था, फिर भी पासबुक में पैसे जमा नहीं रह पाते थे। वेतन का एक हिस्सा खान-पान और मकान भाड़े पर निकल जाता तो एक हिस्सा बच्चों की पढ़ाई पर। कभी-कभार कुछ बचता भी तो न जाने कैसे किसी-न-किसी बच्चे को कोई बीमारी दबोच लेती और बचे हुए पैसे उसमें निकल जाते थे। बीबी चाहती थी कि शहर में उनका अपना घर हो, पर बीबी को समझा-बुझाकर उसने गाँव में अपने हिस्से की जमीन पर नया मकान बना लिया।

अपने तीनों बेटों को उसने अपने हिसाब से अच्छा पढ़ाया था, शहर के इंगलिश स्कूल में। भले ही बेटी की पढ़ाई उसे बीच में ही छुड़वा देनी पड़ी थी। बेटी ने कभी शिकायत नहीं की, और बेटों ने कभी उपकार नहीं माना। बड़े बेटे को नौकरी दिलाने के लिए उसे अपना पी.एफ. निकालना पड़ा और नौकरी के लगते ही वह अपनी बीबी-बच्चों को लेकर अलग हो गया।

रिटायरमेंट पर मिली पी.एफ. की शेष राशि से उसने बेटी की शादी

कर दी, लेकिन भाइयों को यह नागवार गुजरा। इसे लेकर आज भी वे फब्तियाँ कसते हैं—'बेटी के हाथ पीले करने में आपने जो इतने पैसे खर्च डाले, उनसे हमें नौकरी नहीं दिला सकते थे क्या? कुछ और नहीं तो शहर में रुक ही जाते रिटायर होने के बाद। हम खुद से ही वहाँ कुछ नहीं कर लेते क्या?'

पहले तो वह उन्हें तर्क देकर चुप कराने की कोशिश भी करता था, पर अब खुद चुप रह जाता है। बेटों की देखा-देखी बहुएँ भी बोलने लगी हैं अब तो। गनीमत इतनी भर है कि बेटों की तरह वे सीधे-सीधे उसे संबोधित नहीं करतीं, बल्कि एक-दूसरे से ऐसे बोलती हैं कि सुनाई उसे ही पड़े। किस-किस के मुँह लगे वह।

कोई और दिन होता तो कोठरी में उसके जाते ही उसे भुला दिया जाता, पर आज मझला बेटा उसके लिए कोठरी के बाहर इंतजार कर रहा था—'बाबूजी, तैयार होने में औउर देर है का?'

बेटे की हाँक सुनकर जल्दी से उसने चप्पल डालनी चाही तो उसका फीता फाँस से निकल गया। काँपते हाथों से वह जब तक फीता कसता, बेटे की आवाज फिर से सुनाई पड़ी, 'माँ के पास थोड़े ही ना जा रहे हैं अभिए, जो लगे सजने-सँवरने। केतना देर औउर बाहर खड़ा कराएँगे हमको?'

बिना कुछ बोले वह बेटे के पीछे-पीछे घर से निकल गया। दरवाजे पर रिक्शावान खड़ा था, हरेक पाँच तारीख के जैसे। रिक्शा पर चढ़ते-चढ़ते उसको अपना पेट फूलता हुआ महसूस हुआ। बड़े ही झिझक के साथ उसने बेटे से कहा, 'थोड़ा रुक जाते तो हम मैदान हो लेते जरा।'

बेटे ने गुरेरकर उनकी तरफ देखा और गुर्राते स्वर में कहा, 'इतना जो भखिएगा तो यही होगा ना। पहले ही आप बड़ी देर कर चुके हैं। अब चलिए भी। देर हो गया तो लाइन लंबा लग जाएगा वहाँ पर। लौटकर चले जाइएगा दिसा-मैदान।'

पेट दबाकर वह रिक्शे पर चढ़ बैठा। दूसरी तरफ से बेटा आकर बैठ रहा। इसके साथ ही रिक्शा चल पड़ा। बताने की जरूरत उसे नहीं थी कि कहाँ जाना है। पाँच तारीख को पिछले कई सालों से यही सिलसिला जो चल रहा था। खुद ही रिक्शावान सुबह नौ बजे उनके घर के आगे रिक्शा लगा देता। उसे दस मिनट भी इंतजार नहीं करना पड़ता था और बाप-बेटे घर से बाहर निकलकर उसके रिक्शे पर बैठ रहते थे।

न बताने की जरूरत पड़ती थी और न ही पूछने की। स्टेट बैंक के सामने रिक्शा लगाते ही बाप-बेटा उतर जाते थे और फिर आध-पौन घंटे बाद वे बाहर निकलते तो बाप अकेला ही घर लौटता था। रास्ते में हलवाई की दुकान पर जरूर रुकता था। खुद भी जलेबी खाता और रिक्शावान को भी खिलाता था। फिर दोनों चाय पीते। बाप हलवाई की तरफ सौ का नोट सरका देता था और बाकी के रुपए लेकर फिर रिक्शे पर सवार हो जाता था। घर पर उतरने पर रिक्शावान के हाथ में वह बाकी के सारे रुपए थमा देता था। पूरे साठ रुपए होते थे वे। रिक्शावान कहता भी कि इतने पैसे थोड़े ही न हुए, पर वह यह कहकर उसे चुप करा देता था कि अब जबकि उसे घर से कहीं निकलना ही नहीं तो वह खुद इन पैसों का करेगा क्या?

आज भी स्टेट बैंक पर रुकते ही बेटा छलाँग मारकर रिक्शे से उतर पड़ा। हमेशा की तरह बाप को रिक्शावान ने सहारा देकर उतारा। उतरने में उसकी चप्पल का फीता फिर से निकल गया। उसने रुककर फीता लगा लेना चाहा तो बेटे ने कड़ककर कहा, 'अब चलिएगा भी कि यहीं समाधि लगाइएगा?'

यह सुनकर वह हाथ में चप्पल पकड़े हुए ही बेटे के पीछे लपक पड़ा। बेटे ने फिर डपटा, 'बुढ़ा गए, पर चप्पल पहनने का सऊर नहीं आया।'

चप्पल को अपने पैरों में किसी तरह फँसाकर वह घिसटते कदमों से फिर बढ़ चला। हमेशा की तरह आज भी बैंक में बड़ी भीड़ थी। जितने पेंशनभोगियों का खाता इस बैंक शाखा में था, उन सभी को आना पड़ता था अपने जीवित होने का प्रमाण बनकर। ज्यादातर के बेटे भी उनके साथ होते थे। बैंक को तो वे अपने जीवित होने का प्रमाण देते ही थे, अपने साथियों के जीवित होने की खबर भी उन्हें लग जाती थी। नहीं तो और किसी दिन उनका मिलना-जुलना कहाँ हो पाता था! वैसे बात तो आज के दिन भी कोई किसी से नहीं कर पाता था। बात करता भी तो करता क्या? सबकी एक सी जिंदगी थी और एक सा दर्द।

जीवित होने की पुष्टि के तौर पर उसके दस्तखत करते ही रुपए उसके हाथ में दे दिए गए, पर गिनती करने के लिए बेटे ने उनसे तुरंत ले भी लिये। दो हजार, चार हजार, छह हजार, आठ हजार, साढ़े आठ हजार और ये नौ हजार। दो-दो हजार के चार कड़कड़ाते नोट और पाँच-पाँच सौ के दो नए नोट। बेटे ने साधिकार वे रुपए अपनी जेब में डाल लिये। यह भी हमेशा की तरह ही। फिर अपनी ढोकली में से कुछ तुड़े-मुड़े नोट निकालकर पिता की हथेली में डाल दिए। चश्मे के टूटे शीशे को धोती की कोर से साफ करते हुए उसने देखा, एक नोट की जगह पर चार नोट थे आज। दस, बीस, तीस, पचास। उसने तुरंत फिर गिना। दस···बीस··· तीस···पचास। नहीं, उससे गिनने में कोई गलती नहीं हुई थी। दस-दस के तीन नोट और बीस का एक नोट, कुल इतने ही थे।

उसके पैसे गिनते-गिनते तक बेटा बैंक से निकल चुका था। इतने पैसों में जलेबी और चाय की सोचना भी फिजूल था। वैसे भी उसका पेट फिर से गुड़गुड़ाने लगा था। बाहर निकला तो रिक्शावान उसके इंतजार में खड़ा था। बिना कुछ कहे ही उसने रिक्शावान को सारे रुपए पकड़ा दिए और खुद पैदल चल पड़ा। रिक्शावान बिना कुछ समझे ही उसे उलटी दिशा में जाते हुए देखता रहा। शायद उसकी आँखों को धोखा हुआ हो, पर बाबूजी की मटमैली धोती पर उसे पीला बदबूदार रंग चढ़ता दिखाई दिया। वह अबूझ उन्हें यों ही जाते हुए देखता रहा।

इसके बाद पाँच तारीख को उनके घर में कभी पूड़ी-भुजिया और सेवई बनाने की जरूरत नहीं हुई और न ही रिक्शे की।

साअ

१४०२ त्रिशूल, कौशांबी, गाजियाबाद-२०१०१०
दूरभाष : ९२१२३७०७११

असम प्रदेश में हिंदी

● अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी

असम में हिंदी की बात का आरंभ वहाँ की लोकोत्तर विभूति श्रीमंत शंकरदेव (१४४९-१५६८) के पुण्य स्मरण के साथ किया जाना चाहिए। श्रीमंत शंकरदेव ने वर्ष १४८१ तथा वर्ष १५५० में दो लंबी तीर्थयात्राएँ कीं। उत्तर में वे बदरिकाश्रम और पूर्व में श्रीजगन्नाथपुरी तक गए, इसके प्रमाण मिलते हैं। इन यात्राओं के दौरान उन्हें उस युग के महान् आचार्यों से मिलने तथा देश में प्रचलित विभिन्न संप्रदायों को समझने का अवसर मिला। इन यात्राओं के अनुभव उन्हें अपने मत (एक शरणिया नामधर्म) तथा अपनी विशिष्ट साहित्यिक भाषा शैली (ब्रजावली) को समावेशी बनाने में सहायक हुए। विद्वान् मानते हैं कि तत्कालीन असमिया भाषा के साथ मैथिली, पुरानी हिंदी और अन्य सहजात भाषाओं के प्रयोगों को लेकर विकसित ब्रजावली ने असम प्रदेश में हिंदी के लिए संभावनाओं के द्वार खोले। वस्तुतः असम में हिंदी के लिए जो अनुकूलता पाई जाती है, उसका पुष्ट आधार अपनी समन्वय साधना से श्रीमंत शंकरदेव ने ही तैयार किया था।

शिल्पगत विशेषताओं के कारण 'अंकिया' (एकांकी) नाट, श्रीमंत शंकरदेव विरचित वैष्णव साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। ब्रजावली का प्रयोग इसकी खास बात है। यहाँ शंकरदेव के अंकिया नाट 'केलि गोपाल' से एक उद्धरण देकर बात स्पष्ट करने की चेष्टा की जा रही है कि कैसे ब्रजावली ने असम में हिंदी के लिए अनुकूल भूमि तैयार की।

'हे सखि सब, कामना, उत्पन्न गोकुले मिलिला। कि निमित्ते रजनी अबारी कहो वनमध्ये दूर अबला।

हरि विहसि बोला। हे सखि सब, हमत कमन प्रयोजन ठीक, सत्य कह ना साधो!'

इस उद्धरण में जो शब्द इस्तेमाल हुए हैं, वे हिंदी, भोजपुरी, असमिया तथा मैथिली में भी मिलते हैं। श्रीमंत शंकरदेव एवं श्री माधवदेव रचित भक्ति पदावली (बरगीत) की भाषा भी ब्रजावली ही है। बरगीत असम में वेद मंत्रों की तरह पवित्र माने जाते हैं। असमिया भाषा की तत्सम बहुल शब्दावली, महाकाव्यों-पुराणों का उपजीव्य साहित्य तथा ब्रजावली की विरासत ने मिलकर असम में हिंदी के प्रति एक स्वाभाविक उत्कंठा जगाई है। फलस्वरूप असम के नगरों-महानगरों से लेकर सुदूर अंचल तक में हिंदी के प्रति एक सहज सौहार्द पाया जाता है।

मध्यकालीन असम में संस्कृत को राजाश्रय प्राप्त था। अहोम राजाओं द्वारा प्रवर्तित सिक्कों पर देवनागरी लिपि में संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ। भारत में आकर अहोम शासकों ने भारतीय परंपरा को पूरी उदारता से अंगीकार किया। इस क्रम में उन्होंने तत्सम शब्दावली ग्रहण की, संस्कृत नाम और विरुद स्वीकार किए तथा सनातन धर्म की अभिवृद्धि में प्रभूत योगदान दिया। आधुनिक युग के सबसे बड़े असमिया संस्कृत आचार्य कृष्णकांत संदिकै अहोम जाति से ही थे। वे वेद के निष्णात विद्वान् हुए तथा संस्कृत अध्ययन तथा शोधकार्य में आजीवन लगे रहे। इसी क्रम में हम आनंदराम बरुआ का उल्लेख भी कर सकते हैं। वे एक लोकप्रिय आई.सी.एस. अधिकारी थे। उन्होंने संस्कृत नाटकों का विशेष अध्ययन किया था। उनका अंग्रेजी-संस्कृत शब्दकोश उनकी कीर्ति का उज्ज्वल स्मारक है। संस्कृत शिक्षा के माध्यम से असम में देवनागरी लिपि तथा तत्सम शब्दावली व्यवहार में आई और हिंदी के लिए एक परिवेश बना।

सुपरिचित लेखक। हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, जर्नलों में निबंध, शोध-आलेख प्रकाशित। संप्रति मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), यूको बैंक, कोलकाता।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने हिंदी प्रचार-प्रसार का राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया, इस अभियान को प्रबल समर्थन माजुली स्थित गड़मूर सत्र के सत्राधिकार (एकशरणिया नामधर्म परंपरा में स्थापित मठ की तरह के एक विशिष्ट संस्थान का प्रधान) पीतांबर देव गोस्वामी से मिला। पीतांबरदेव गोस्वामी आध्यात्मिक विभूति तो थे ही, एक समर्पित स्वाधीनता सेनानी भी थे। गांधीजी के आह्वान पर हिंदी प्रचार के लिए हर प्रकार का सहयोग देने को वे सहर्ष तैयार हुए। इसके लिए उन्होंने जोरहाट नगर में एक भूखंड भी उपलब्ध कराया। उस भूखंड पर असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का कार्यालय तथा हिंदी माध्यम का एक विद्यालय आज भी कार्यरत है। राष्ट्रीय आंदोलन में गोपीनाथ बरदलै ने असम का सक्रिय प्रतिनिधित्व किया। उनके अथक परिश्रम और लोकरंजन के प्रभाव से ही असम में राष्ट्रीय आंदोलन का स्वर्णिम अध्याय लिखा जा सका। उन्हें जनता ने लोकप्रिय की उपाधि दी तथा भारत सरकार ने मरणोपरांत 'भारत रत्न' सम्मान देकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै ने अपने पारिवारिक

जीवन में भी हिंदी अपनाई थी। उनकी धर्मपत्नी ने एक संस्मरण में लिखा है कि विवाह के बाद जब वे घर आईं तो बरदलैजी ने उन्हें हिंदी बोलना और मछली के व्यंजन बनाना सिखाया। लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै ने असम में हिंदी प्रचार को एक सांस्थानिक रूप दिया। सन् १९३८ में उनकी ही अध्यक्षता में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई।

स्व. गोपीनाथ बरदलै

समकालीन परिदृश्य में हिंदी को असम के विभिन्न भागों में प्रचारित करने में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर की पाठ्यचर्या का भी बड़ा योगदान है। अपनी स्थापना की स्वर्ण जयंती मनाने जा रहे गौहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के द्वारा असम के अकादमिक क्षेत्र में हिंदी को सुस्थापित किया। इस दिशा में केंद्रीय हिंदी संस्थान के गुवाहाटी केंद्र के प्रयासों की चर्चा भी की जानी चाहिए। यह केंद्र राज्य सरकार के हिंदी शिक्षकों के लिए तीन-तीन सप्ताह का नवीकरण कार्यक्रम चलाता है। इसमें अध्यापकों को हिंदी पढ़ाने की नई तकनीक तथा विषय पर नवीनतम जानकारी दी जाती है, जिससे विद्यालयों में हिंदी पाठचर्या को यथोचित पुष्टि मिलती है।

असम में हिंदी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने में यहाँ की हिंदी पत्रकारिता की सराहनीय भूमिका रही है। अभी गुवाहाटी से पाँच दैनिक समाचार-पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। इस दिशा में आज जो वातावरण बना है, उसमें हिंदी दैनिक पूर्वांचल प्रहरी के संस्थापक स्वर्गीय जी.एल. अग्रवाल की दूरदर्शिता की बड़ी भूमिका है। उन्होंने गुवाहाटी से एक दैनिक हिंदी समाचार-पत्र के प्रकाशन का स्वप्न देखा। वर्ष १९८९ में 'पूर्वांचल प्रहरी' नामक दैनिक समाचार-पत्र के प्रकाशन के साथ वह स्वप्न पूरा हुआ। तकनीकी दृष्टि से असम का पहला समाचार-पत्र डिब्रूगढ़ से प्रकाशित होनेवाला मासिक 'प्रकाश' था। यह समाचार-पत्र सन् १९१९ में शुरू हुआ था। असम के हिंदी समाचार-पत्रों ने वहाँ के हिंदी भाषा-भाषियों की भाषिक चेतना जगाने के साथ असमिया भाषा-भाषियों के लिए हिंदी का एक प्ररिप्रेक्ष्य भी तैयार किया है।

हिंदी प्रचार-प्रसार की भागीरथी को असम में लाने का श्रेय बाबा राघवदास को है। गांधीजी के आग्रह पर वे सन् १९३४ में असम आए और हिंदी के प्रचार में जुट गए। जिन तीन असमिया युवकों ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा से हिंदी का अध्ययन करके सन् १९३८ में असम में हिंदी प्रचार का शुभारंभ किया था, रजनीकांत चक्रवर्ती उनमें अग्रगण्य थे। अन्य दो थे हेमकांत भट्टाचार्य एवं नवीनचंद्र कलिता। रजनीकांत चक्रवर्ती ने असमिया माध्यम से हिंदी व्याकरण की एक पुस्तक लिखी। कमलनाराण देव की हिंदी सेवा को भी हम भुला नहीं सकते। कमलनारायण देव सन् १९३८ में बिहार से असम आए थे। असमिया समाज में हिंदी शिक्षण का काम करने के साथ-साथ उन्होंने असमिया भाषा सीखी और भाषाई आदान-प्रदान के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य किया। असमिया भाषा की बंद पड़ी मासिक पत्रिका 'जयंती' का पुनर्प्रकाशन शुरू कराने में उन्होंने विशेष योगदान दिया था।

हिंदी प्रचार का जो कार्य असम में शुरू हुआ, उसे नई सदी तक आगे बढ़ानेवालों में डॉ. परेशचंद्र देवशर्मा, चित्र महंत, बापचंद्र महंत, लोकनाथ भराली तथा नवारुण वर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन महानुभावों से लेखक का घनिष्ठ संपर्क रहा है। लेखक को एक बार दक्षिण गुवाहाटी स्थित हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्या से मिलने उनके कक्ष में जाने का अवसर मिला। उस कक्ष के एक कोने में एक रिवॉल्विंग कुरसी उलटी दिशा में रखी थी। लेखक के पूछने पर प्राचार्या ने बताया कि इस कुरसी पर यहाँ के पूर्व प्राचार्य परेशचंद्र देवशर्मा बैठा करते थे और क्योंकि उनकी महत्ता को छू पाना उनके लिए अभी बाकी है, अत: वे उस कुरसी पर नहीं बैठतीं। महाविद्यालय के प्राचार्य कक्ष में लेखक ने जयशंकर प्रसाद का एक भव्य तैलचित्र देखा। किसी हिंदीतर भाषा-भाषी प्रदेश में एक हिंदी कवि की ऐसी प्रतिष्ठा देखकर मन श्रद्धा से भर गया। लेखक अपने असम प्रवास के दौरान भावविगलित कर देनेवाली ऐसी अनेक घटनाओं का साक्षी रहा है।

असम में हिंदी प्रचार के सिलसिले में बात चले तो चित्र महंत का स्मरण होना स्वाभाविक है। तत्कालीन असम के पर्वतीय जिले लुशाई हिल्स (अब मिजोरम) में अलगावाद की ज्वाला के बीच महंतजी ने हिंदी प्रचार का बीड़ा उठाया था। उन्होंने पूरे जोश, संपूर्ण समर्पण एवं अनुकरणीय निष्ठा से हिंदी प्रचार का कार्य किया। वे हिंदी लेखन, संपादन तथा अनुवाद के काम में आजीवन लगे रहे। महंतजी लंबे समय तक असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी के साहित्य सचिव रहे तथा उसके मुखपत्र 'राष्ट्र सेवक' का संपादन किया। एक हिंदी प्राध्यापक के नाते डॉ. धर्मदेव तिवारी तथा डॉ. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' के अवदान को भुलाया नहीं जा सकता है। गौहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के इन विद्वान् अध्यापकों ने क्रमश: अंकिया नाट तथा श्री माधवदेव के साहित्य पर उल्लेखनीय शोधकार्य किए।

इन पंक्तियों के लेखक को असम में हिंदी के समकालीन प्रचारकों का प्रेरक सान्निध्य पाने का सौभाग्य मिला है। वह अनुभव करता है कि यहाँ के प्रचारकों तथा हिंदी प्रेमियों के मन में भारत के प्रति एक संस्कारजन्य अनुराग है। इसका कारण राजनैतिक कम, आध्यात्मिक ज्यादा है। असमिया समाज मूलत: एक बहुभाषा-भाषी समाज है। इसके गठन का श्रेय भारत की सनातन प्रज्ञा के उत्कर्ष श्रीमंत शंकरदेव की लोकोत्तर प्रतिभा को जाता है। श्रीमद्भागवत महापुराण में, जिसे भारतीय परंपरा में परमहंसों की संहिता कहा गया है, श्रीमंत शंकरदेव की अटूट आस्था थी। यह पुराण सांस्कृतिक भारत का परिप्रेक्ष्य रचता है। इस प्रभाव में जिस असमिया समाज का गठन हुआ, उसके चित्त में भारत के प्रति अनुराग का होना स्वाभाविक ही है।

असम के लोग सदियों से वृहत्तर भारतीय सांस्कृतिक चेतना से

अनुप्राणित होते रहे हैं। हर युग में इस चेतना का प्रकटीकरण होता रहा है। स्वाधीनता आंदोलन में इसका विस्मयकारी रूप देखा गया। असम के चाय उत्पादक मणिराम देवान का फाँसी के फंदे को चूमने का जज्बा हो, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान किशोरी कनकलता बरुवा का बलिदानी जोश हो या राष्ट्रभाषा कहकर हिंदी को अपनाने की उदारता, यह सब असमिया मानस की भारतदृष्टि का ही उन्मेष है। यह उन्मेष सदियों का फासला तय करता हुआ आज भी विद्यमान है। राष्ट्रभाषा प्रचार समितियों के विभिन्न कार्यक्रमों में जब समवेत कंठ से 'भारत जननी एक हृदय हो' यह गीत गाया जाता है तो सुननेवाले के लिए असम का हिंदी प्रेम तथा बरास्ता हिंदी प्रेम भारत भक्ति ही मूर्तिमती हो उठती है।

असम में हिंदी ही नहीं, इसकी लिपि देवनागरी को भी समुचित सम्मान मिला है। देवनागरी तथा असमिया लिपियों में समानता है। देवनागरी लिपि के संदर्भ में स्वर्गीय बिनेश्वर ब्रह्म की चर्चा यहाँ प्रासंगिक है। स्वर्गीय ब्रह्म बोडो साहित्य सभा के सभापति थे। बोडो भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल असम की एक प्रमुख भाषा है। बिनेश्वर ब्रह्म बोडो भाषा की लिपि के रूप में देवनागरी लिपि को स्वीकार किए जाने के प्रबल पक्षधर थे। उनकी इस पक्षधरता की काट किसी के पास न थी। उनके अथक प्रयासों से बोडो भाषा के लिए देवनागरी लिपि स्वीकार कर ली गई। परंतु एक समूह उनकी इस कामयाबी से असंतुष्ट था। कहते हैं, देवनागरी लिपि के प्रति अनन्य प्रेम के कारण उन्हें अपनी जान तक गँवानी पड़ी।

असम में हिंदी के प्रचार-प्रसार में असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जोरहाट तथा असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी अपने सांगठनिक तंत्र के माध्यम से सक्रिय हैं। उनके योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। इन समितियों ने असम के कोने-कोने में राष्ट्रभाषा विद्यालय और महाविद्यालय खोले हैं तथा उसकी पाठचर्या के लिए प्रचारकों की नियुक्ति की है। ये समितियाँ अपनी पत्रिकाएँ भी प्रकाशित करती हैं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से स्थानीय प्रतिभाएँ सामने आती हैं। इनके वार्षिक आयोजन हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करते हैं। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी की मासिक पत्रिका 'राष्ट्र सेवक' हिंदी तथा असमिया भाषाओं के बीच संवाद का एक सशक्त सेतु है। इसमें हिंदी पाठकों को हिंदी के साथ-साथ असमिया की तथा असमिया पाठकों को असमिया के साथ-साथ हिंदी में पठनीय सामग्री एक ही स्थान पर मिल जाती है। 'हिंदी प्रदीप' असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन १९५९ में डिब्रूगढ़ से श्री सूर्यवंशी चौधरी ने शुरू किया था। बाद में उन्होंने इसे असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को समर्पित कर दिया।

असम में हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी पुस्तकालयों तथा हिंदी माध्यम के विद्यालयों का अनन्य योगदान रहा है। उन्नीसवीं सदी के अंत तथा बीसवीं सदी के आरंभ में यहाँ अनेक पुस्तकालय तथा विद्यालय खुले। इनमें समर्पित महानुभावों ने सेवा की तथा हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण बनाया। उपलब्ध जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि असम का पहला हिंदी पुस्तकालय 'सरस्वती पुस्तकालय' था। यह पुस्तकालय सन् १९१९ में डिब्रूगढ़ में खुला। इसके बाद वहीं पर स्थापित हुआ 'शारदा पुस्तकालय'। 'श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय', गुवाहाटी असम के हिंदी पुस्तकालयों में सबसे विख्यात है। सन् १९२५ में इस पुस्तकालय की स्थापना श्री मारवाड़ी पुस्तकालय के नाम से हुई थी। सन् १९७८ से यह 'श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय' के नाम से जाना जाता है। असम के हिंदी पुस्तकालय असमिया—हिंदी आदान-प्रदान के तीर्थ हैं। इन पुस्तकालयों के विभिन्न प्रयासों से अंतर्भाषाई सद्भावना के बंध मजबूत हुए हैं।

आकाशवाणी के केंद्रों की स्थापना के साथ हिंदी प्रचार की एक नई सरणि प्रशस्त हुई। गुवाहाटी में आकाशवाणी का केंद्र सन् १९५० में खुला। इस केंद्र ने असमिया माध्यम से हिंदी शिक्षण का जो नियमित प्रसारण शुरू किया, वह आज तक जारी है। आकाशवाणी केंद्रों के वार्त्ता प्रभागों ने हिंदी माध्यम में असमिया भाषा-साहित्य तथा संस्कृति के संबंध में महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। हिंदी तथा हिंदीतर भाषा-भाषी इनमें उत्साह से भाग लेते हैं। इससे वैचारिक आदान-प्रदान के सुअवसर उत्पन्न होते हैं। इन पंक्तियों के लेखक को गुवाहाटी केंद्र समेत हिंदीतर भाषा-भाषी क्षेत्रों के अनेक आकाशवाणी केंद्रों के कार्यक्रमों के साथ जुड़ने के अवसर मिले हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि गुवाहाटी केंद्र में हिंदी के लिए जैसी उत्कंठा दिखलाई पड़ती है, वैसी अन्यत्र विरल है।

असम पूर्वोत्तर भारत का प्रवेशद्वार है। यहाँ के चलन, यहाँ की मान्यता तथा यहाँ के विश्वास का सकारात्मक प्रभाव इस अंचल के अन्य राज्यों पर भी पड़ता रहा है। इसी प्रकार असम में हिंदी प्रचार-प्रसार का असर अन्य राज्यों, यथा मेघालय, मणिपुर, नगालैंड तथा अरुणाचल प्रदेश पर भी पड़ा है। भाषाई दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत विविधता का एक वर्णपट है। यहाँ एक राज्य की भाषा दूसरे राज्य के लिए तो अबूझ रहती ही है, राज्यों की भाषाएँ भी पूरे राज्य में समझ ली जाएँ, बहुधा ऐसा नहीं होता। यहीं पर हिंदी की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। असम में हिंदी के प्रति जो भाव है, उसके बल पर हिंदी अपनी भूमिका का सफल निर्वहन कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। साअ

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय
१० बी.टी.एम. सरणी, कोलकाता-७००००१
दूरभाष : ९८७४४५९७६७

खामोशी के खयाल

• गोपाल चतुर्वेदी

कवि दृढ़ निश्चयी है। जबसे उसने सुना है कि उसके पूववर्ती कवि ने 'सन्नाटे के छंद' बुने थे, उसका भी संकल्प है कि वह 'खामोशी के खयाल' बुनेगा। उसने विश्व के सब कवियों को अंग्रेजी में अनुवाद के माध्यम से पढ़ा है। बस भारतीय कवियों, विशेषकर गीत-कविता से उसे चिढ़ है। कविता हो तो वैचारिक हो। यह क्या उल्टी-सीधी तुकें मिलाकर मंच से गाते रहते हैं? या ताली बजवाने को चुटकुले सुनाते हैं। जनता भी आनंद लेती है इन स्तरहीन रचनाओं का। कवि का प्रश्न है कि इनका क्या बौद्धिक या वैचारिक योगदान है? इन्होंने सस्ते मनोरंजन के अलावा देश की किस परंपरा को सुदृढ़ किया है? उसके साथी कवि और वह कभी 'शून्य में जीवन' खोजते हैं, कभी 'हिंसा में बुद्ध'। जबसे उसकी 'कोहरे में कोयल' की प्रशंसा हुई है, उसने जटिल विचारों को शब्द देने का इरादा किया है। उसे कौन समझाए कि कोहरा जाड़े में पड़ता है और तब कौआ भले काँव-काँव करे, कोयल की कूक बसंत तक नहीं सुनाई पड़ती है। उसके पास इसका स्पष्ट और सीधा उत्तर है, ''यही तो कविता की विशेषता है। जो है वह नहीं है, और जो नहीं है, वह है। तभी तो कवि कोहरे में कोयल की कल्पना कर रहा है। तभी तो जाड़े की ठिठुरती भोर में कवि के अंतर में कोयल की कूक का सुखदायी विचार उभर रहा है।''

यों उसे 'खामोशी के खयाल' से बहुत अपेक्षाएँ हैं। उसे विश्वास है कि यह कविता बहुआयामी होगी। 'खयाल' गायन की शैली भी है। वह इसके आरोह-अवरोह से प्रभावित है। खयाल का आशय मन की विचार-प्रक्रिया से भी है। वह दोनों को शब्दों के माध्यम से कागज पर उकेरेगा। पाठक और साथी कवि उसकी प्रतिभा से चमत्कृत होंगे। उसके खेमे के आलोचक यह सिद्ध करने में जुटेंगे कि कैसे 'खामोशी के खयाल' 'सन्नाटे के छंद' से अधिक गूढ़ अर्थवान और विस्तृत इंगित समेटे है। इसमें नया प्रयोग भी है और शास्त्रीय राग भी। कविता के भविष्य की अनंत और उज्ज्वल संभावनाएँ इसमें निहित हैं। यह रचना अपने आप में बौद्धिक कविता की कसौटी बनेगी। इसी मानक पर रचनाओं का परीक्षण होगा कि वह खरी है अथवा खोटी? कविता कहलाने योग्य भी है कि नहीं? वास्तव में जो कविता जितनी सामान्य पाठक की समझ के परे है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। यह विचार इस कविता की सृजन की प्राथमिक शर्त है। उसे वैचारिक कविता इसी आधार पर ही कहा जाता है। इसमें क्या विचार है, यह कहना कठिन है? जो इसके अदृश्य विचारों की सफल तलाश कर ले, वही एक श्रेष्ठ और गुणी पाठक है।

कुछ वैचारिक कविता के कवि शहर में गाँठ के पूरे और अक्ल के कोरे ऐसे धन-पशुओं की खोज में हैं, जिन्हें पटा-फँसाकर कुछ चंदे की जुगाड़ की जाए। इससे उनकी योजना 'शीर्ष कवि' और 'पाठक-श्रेष्ठ' के पुरस्कार घोषित करने और देने की है। इससे 'विचार' कविता लोकप्रिय होगी। इन पुरस्कारों में अनौपचारिक प्रावधान है कि पुरस्कार इसी लिखित अंडरटेकिंग पर दिया जाएगा कि उसकी पूरी राशि वह आयोजनकर्ताओं को समारोह के बाद वापस कर दे। वह शॉल, श्रीफल और फ्रेम में जड़ित पुरस्कार प्रमाण-पत्र अपने पास रखने को स्वतंत्र है। अभी कल के अखबारों में यह समाचार सुर्खियों में छपा है कि 'वैचारिक कविता' के संगठन 'विचार संघ' ने यह घोषणा की है कि वह आनेवाले वर्ष में होली के पावन अवसर पर उल्लेखनीय और महत्त्वपूर्ण वैचारिक कवि की शीर्ष कविता सम्मान से अलंकृत करेगा। इसे 'बदलूराम सम्मान' से जाना जाएगा। इसकी राशि एक लाख रुपए होगी। इसके अतिरिक्त संस्था वैचारिक कविता के पाठकों को भी प्रोत्साहित करने पाठक-श्रेष्ठ का भी सम्मान देगी, जिसकी राशि पचास हजार रुपए निश्चित की गई है। इच्छुक कवि और पाठक पुरस्कार के प्रकाशित आवेदन-पत्र क्रमशः पचास और पच्चीस रुपए में संस्था के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि पुरस्कार की ललक और लालच के रोग से हर भारतीय पीड़ित है। कुछ ही दिनों में सौ-दो सौ आवेदन समाप्त हो गए और इस बार कुल जमा पाँच सौ आवेदनों और 'अंडरटेकिंग' के प्रकाशन का आदेश जारी किया गया। इससे जुड़ी धनराशि इतनी प्रचुर थी कि इससे भविष्य के आयोजन का खर्चा ही नहीं, संगठन के सदस्यों के व्हिस्की-रम का प्रबंध भी हो गया।

देखने में आया है कि विचार कविता का सृजन अधिकतर कुछ पीकर ही होना संभव है। यह द्रव्य चाय के अलावा कुछ भी हो सकता है। अधिकतर ऐसे रचनाकारों की मान्यता है कि कैसी भी कविता की प्रेरणा के लिए चाय पूर्ण तरह से अनुपयुक्त है। कोई अन्य पेय या कन्या ही इस प्रेरणा को देने में समर्थ है। इनको पीकर या देखकर ही अदृश्य, ओज, अनबूझ विचारों का जन्म होता है। यही विचार कविता के इस

नए-नवेले सृजन के हेतु जिम्मेदार हैं। अन्य और इस विशेष कविता में एक ही समानता है। दोनों के प्रेरक-तत्त्व समान हैं। इसके इतर इनमें कोई भी समानता नहीं है। एक में विचारों का तथाकथित समुद्र है, दूसरे में तुकबंदी की पोखर। कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली नाम का ग्वाला। फिर उन्हें ध्यान आया कि कविता लिखने के पहले शोर से खामोशी को कहाँ खोजें? बिना उसे भोगे और अनुभव किए उसके खयाल कैसे बुनेंगे? महानगर का यह आलम है कि दिन और रात को शोर से कभी भी निजात नहीं है। जैसे हमारे घर में मक्खी-मच्छर से। उन्होंने गहन और गंभीर चिंतन किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि अर्धरात्रि के बाद शायद स्थिति दिन से बेहतर हो? बस फिर क्या था।

वह घर से फिर खामोशी खोजने चल पड़ा। कुत्ते फिर भौंके। बत्तियाँ फिर जलीं, पर चौकीदार ने रोशनी की ओर मुँह उठाकर उत्तर दिया, ''मोहल्ले का ही है।'' इस बार उसने राजपथ तक जाने का इरादा मुल्तवी कर घर के पास के चणक्यपुरी के पार्क में सन्नाटे को अनुभव करने का निश्चय किया था। उसने सोचा था कि वहीं किसी बेंच पर पसर लेगा और खामोशी के खयाल बुनेगा। अपने घर के दो कमरों के फ्लैट में रहकर उसे यह अनुमान तो अवश्य था कि वह किसी महत्त्वपूर्ण इलाके में रहता है, पर उसे यह अंदाज नहीं था कि पुलिस भी उसी अनुपात में यहाँ सक्रिय है।

उसने अपने गंजे सिर को पी कैप से ढका और साहस कर घर से निकल लिया। अपने मोहल्ले से सड़क तक पहुँचते-पहुँचते कुत्तों ने आसमान सिर पर उठा लिया। कई घरों में बत्ती जल गई और लोग कुछ असामान्य होने के डर से नीचे झाँकने लगे। कई ने तो 'कौन है' कहकर उसे चुनौती भी दी। इसी बीच मोहल्ले के चौकीदार का, गृहवासियों का स्वर सुनकर कर्तव्य-बोध अचानक जागा। उसने हाथ का डंडा बजाते हुए सवाल किया, 'कौन है बे?' कवि ने अपना नाम बताया। चौकीदार ने पता पूछा और फिर उस कवि को घर ले जाकर पत्नी से पुष्टि की कि यह वही है, जो होने का दावा कर रहा है। पत्नी यों तो पति से दु:खी और त्रस्त थी, पर इतनी भी नहीं कि उसके अस्तित्व को ही नकार दे। कम-से-कम इस महँगाई के माहौल में, कुछ मदद तो है, वरना सिर्फ पत्नी के वेतन से घर खर्च के स्कूटर का एक ही पहिया चल पाता। यों सब्जी भी आधी-अधूरी ही सही, ले तो आता है। पत्नी ने कुछ बुझे स्वर में कवि का अमन वर्मा होना माना। चौकीदार ने डंडा पीटकर जैसे उसे फिर से अपने गंतव्य की ओर जाने की अनुमति दी।

वह घर से फिर खामोशी खोजने चल पड़ा। कुत्ते फिर भौंके। बत्तियाँ फिर जलीं, पर चौकीदार ने रोशनी की ओर मुँह उठाकर उत्तर दिया, ''मोहल्ले का ही है।'' इस बार उसने राजपथ तक जाने का इरादा मुल्तवी कर घर के पास के चणक्यपुरी के पार्क में सन्नाटे को अनुभव करने का निश्चय किया था। उसने सोचा था कि वहीं किसी बेंच पर पसर लेगा और खामोशी के खयाल बुनेगा। अपने घर के दो कमरों के फ्लैट में रहकर उसे यह अनुमान तो अवश्य था कि वह किसी महत्त्वपूर्ण इलाके में रहता है, पर उसे यह अंदाज नहीं था कि पुलिस भी उसी अनुपात में यहाँ सक्रिय है। नहीं तो अन्य बस्तियों में तो खाकी हत्या, अपहरण या डकैती के बाद ही नजर आती है। रात को पार्क के पास अकेले भटकते देखकर एक सिपहिए ने उसे धर दबोचा। कवि की घिग्घी बँध गई। वह 'खामोशी, खामोशी' बुदबुदाता रहा और कानून-व्यवस्था का प्रतिनिधि उसकी माँ-बहन से रिश्ता जोड़ते हुए उसे थाने की ओर घसीटता रहा। थाने के अंदर प्रवेश करते ही उसका स्वागत सिपहियों ने सम्मिलित थप्पड़-मुक्कों से किया। शारीरिक दंड से उसके आँसू निकल आए।

उसे चीख-चीखकर रोते देखकर एक निरीक्षक किस्म के इनसान ने उसकी पिटाई बंद करने के निर्देश के साथ यह हुक्म भी दिया कि पता करो, यह है कौन? उसने सुबक-सुबककर अपना अता-पता बताया। पुलिस उसी पते पर कवि को ले गई, जहाँ रात को दूसरी बार पत्नी ने अपने पति के दर्शन किए। पहली बार वह सही-सलामत लग रहा था, इस बार कुछ पिटित-घायल। उसके चेहरे पर लाल-नीले निशान थे और आँखें कुछ सूज सी गई थीं। पुलिसवालों ने पत्नी से कुछ सवाल किए। मसलन यह सिलबिल्ला इनसान किस दफ्तर में है? इसका पहचान-पत्र कहाँ है? क्या यह ऐसी ही पागलपन की हरकतें करता रहता है? अमन वर्मा का पहचान-पत्र शासन की मोहर के साथ देखकर उनके बाबू होने और इस टूटे-फूटे आदमी से मिलान कर, उन्हें विश्वास हो गया कि यह कोई चोर न होकर थोड़ा पागल टाइप इनसान है, जो महानगर की चिल्ल-पों में खामोशी तलाशने जैसी ऊलजलूल हरकत में व्यस्त है। कोई आधी रात के बाद किसी पार्क के सामने पाया जाए तो उसे सामान्य व्यक्ति समझने की मूर्खता तो कोई शायद ही करे। यों पुलिस को भी लगा कि इधर गैर-कानूनी वारदात रात के अँधेरे से हटकर दिन के उजाले में शिफ्ट हो गई हैं। इन हालात में इस पागल को छोड़ना ही उचित है। चलते-चलते पुलिसियों ने कवि के एक प्यार भरी घौल लगाई और 'रात को बाहर न भटकने की' सलाह के साथ जीप पर बैठकर विदा हो लिये।

तब से कवि इस एकाकी चिंतन में मग्न है कि क्या पता उन दिनों जब सन्नाटे का छंद बुना गया था, महानगर में शोर के बीच मौन क्या संभव रहा होगा? आज तो ऐसी कल्पना भी कठिन है। इधर तो खामोशी का पलभर का अंतराल भी मुश्किल है। फिर भी कवि अपने इरादे के पक्के थे। उन्हें पुलिसियों के अनुभव से अपने निश्चय से विरत नहीं किया। उलटे उसने घर की बालकनी में रात को जागकर खामोशी का खयाल जीने की ठानी। पत्नी ने रात को घर से निकलने पर बैन लगा दिया, तब से यहीं बालकनी में रतजगा मुमकिन था। रात के सन्नाटे में

यहाँ भी मच्छरों की भिनभिन, चौकीदार की लाठी की ठकठक और कुत्तों के भौंक के कोरस ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। 'खामोशी के खयाल' अब भी सबसे चर्चित अनलिखी रचना है। उसके पूर्ववर्ती कवि तो 'सन्नाटे का छंद' बुनकर प्रसिद्ध हुए, हमारे बौद्धिक कवि की तो अलिखित रचना ही कालजयी सिद्ध हो गई।

उसके आलोचक मित्र 'खामोशी के खयाल' पर छपा लेख कवि को भेंट देते शिकायत की, ''और सब तो ठीक है। जब तक यह पाठ्य-पुस्तकों में न छपेगी, इसे देश के भविष्य के नागरिक कैसे पढ़ेंगे? आपको कल के युवा कैसे इस कालजयी रचना के बिना याद करेंगे? आज आपसे प्रार्थना है कि कृपया इसे जल्दी से लिपिबद्ध करिए, जिससे यह पाठ्यक्रम की शोभा बने।'' कवि आलोचक का सम्मान करता था। उसने कई लेख लिखे थे कवि के विषय में। कवि को लगा कि इससे वह मन की बात कर सकता है। वह दरियादिली दिखाकर आलोचक को 'ढाबा-किंग' ले गया। वहाँ दोनों ने कड़क चाय के संवाद के दौरान चर्चा की। 'आपको मेरी 'गटर की गंध' रचना का स्मरण है? कवि ने आलोचक से प्रश्न किया। आलोचक चहका, ''क्यों नहीं! गटर की गंध ने तो काव्य-जगत् में हलचल मचा दी थी।''

''यही तथ्य तो हम आपको याद दिलाना चाहते हैं। अभी तक संसार भर में प्रकाशित रचनाओं ने धूम मचाई है। 'गटर की गंध' में मैंने गटर नाली, मेन-होल किस-किस का व्यक्तिगत अनुभव नहीं किया? तब कहीं जाकर यह रचना लिखी गई। अभी तक मेरी नासिका में वह बास बसी है। 'खामोशी के खयाल' भी भोगे हुए यथार्थ का प्रतिफल है। खामोशी की खोज में हमने क्या-क्या नहीं किया? पुलिस से जूझे, मोहल्ले के चौकीदार से उलझे। इसके वाबजूद खामोशी वास्तव में मिली नहीं, उसकी कल्पना ने मन में रचना रची। इसकी विषय-वस्तु का विस्तार तो मैं आपसे निवेदित कर चुका हूँ। मेरी इकलौती इच्छा है कि यह विश्व की अकेली रचना बने, जो अनलिखी रहकर नाम कमाए। यह आपके सक्रिय सहयोग से ही संभव है।''

आलोचक ने अपने गुरुतर दायित्व को स्वीकार करते मुंडी हिलाई। तबसे वह और उनका खेमा इस अप्रकाशित रचना को उसका स्थान दिलाने में जुट गया। कई निर्गुट साहित्यकार इस अलिखित रचना और रचनाकार को खेमेबाजी के ज्वलंत उदाहरण के बतौर देखते हैं। उनका मानना है कि कोई एक दिन में आठ-दस रचनाएँ उगलता है और कोई अलिखित रचना के कारण चर्चा में है। दोनों ही लेखक प्रतिभा के अभाव के आदर्श नमूने हैं। ऐसी दुर्घटनाएँ हिंदी में ही क्यों होती हैं?

९/५, राणा प्रताप मार्ग
लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ९४१५३४८४३८

गर्भ में बिटिया की पुकार

कविता

● बी.एस. जौहरी

दिल्ली के जाने-माने होम्योपैथी चिकित्सक। मानसिक रूप से कम विकसित छोटे बच्चों के इलाज में उनको महारत हासिल है। वे अनेक सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए हैं।

माँ, मैं सब सुन रही हूँ
मत करो बातें
मुझे तुम दुनिया से रुखसत करने की,
मैं तुम्हारा हूँ भविष्य
मैं यह सब गुन रही हूँ।

माँ, मैं सब सुन रही हूँ
मुझमें ही है राधा-कृष्ण का वह प्यार
सीता-राम की मर्यादा का सौम्य रूप हूँ मैं,
मैं तुम्हारी विष्णु और लक्ष्मी भी हूँ।

माँ, मैं सब सुन रही हूँ
तुम मुझे भविष्य दो,
मैं तुम्हें निराश नहीं करूँगी,
मैं तुम्हारा और पिताजी का हमेशा ध्यान रखूँगी।

माँ, मैं सब सुन रही हूँ
अभी बड़ी छोटी है क्यों न गिरा दें इसको,
नहीं-नहीं माँ, मैं दीदी से सब सीख लूँगी,
पर तुमको कुछ कष्ट नहीं दूँगी।

माँ, मैं सब सुन रही हूँ
तुमको बेटे की थी चाह,
पर मुझको तो पता अब ही चला
नहीं माँ नहीं, मैं बेटे का फर्ज निभाऊँगी।

माँ, मैं सब सुन रही हूँ
माँ, मुझे दाई से बहुत डर लगता है
उनसे कह दो कि न मारें मुझे
मैं भी चौरासी लाख के बाद आई हूँ
मैं ही मीरा-सावित्री और लक्ष्मीबाई हूँ
माँ, मैं सब सुन रही हूँ।

ए-११५, सूरजमल विहार,
दिल्ली-११००९२
दूरभाष : ९३१२२३२६५६

मेरे उत्प्रेरक मास्साब

● प्रेमपाल शर्मा

हर बालक की प्रथम गुरु उसकी माता होती है या फिर पिता। घर के वातावरण में बालक पल-पोसकर विद्यार्जन के लिए विद्यालय में प्रवेश कर शिक्षक (गुरुजी) के शरणागत हो जाता है। गुरु अपने शिष्य को कच्चे घड़े के समान ठोक-पीटकर, बिना कोई हानि पहुँचाए उसके टेढ़ेपन, यानी अवगुणों को दूर कर अज्ञान के अँधेरे से निकालकर ज्ञान के उजाले में ले आते हैं। यह परम सत्य है कि गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता है। पौराणिक ग्रंथों, संत-मुनियों ने एक स्वर से गुरु की महिमा का गान किया है, उसकी महत्ता बतलाई है।

गुरु (शिक्षक) अपने शिष्य के ज्ञानचक्षु खोल देते हैं। उसका संस्कार कर नया जीवन देते हैं, इसलिए गुरु को 'पारस' भी कहा जाता है। सांसारिक ज्ञान ही नहीं, सद्गुरु तो ईश्वर से भी मिला देता है। परंतु गुरु जीवनपर्यंत गुरु ही रहता है। बिना किसी अपेक्षा के ताउम्र विद्यादान करता रहता है। गुरु से ज्ञान प्राप्त शिष्य अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कोई इंजीनियर बनता है, तो कोई न्यायाधीश, कोई वैज्ञानिक तो कोई मंत्री, संतरी और देश का नायक। यह लोक प्रहेलिका वैसे तो 'कुम्हार के चाक' के लिए कही गई है, परंतु गुरु के गुणों को बताने में यह ज्यादा मुखर है—'चलत-चलत बूढ़े भए, चले न एकऊ कोस। उनके जाये ऐसे भए, जो पहुँचे देस-विदेस॥' गुरु के गुण अनंत हैं, उन्हें गिन पाना, लिख पाना असंभव है। संत कबीर ने कहा भी है, 'सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब बनराय। सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुन लिखा न जाय॥'

मेरे शिक्षा-काल में गुरु (मास्साब) तो बहुत से रहे, पर उनमें से बहुत थोड़े से गुरु ही मेरे हृदय में पूज्य स्थान बना पाए। आज भी उनका एक दर्शन पाने की मन में तीव्र अकुलाहट रहती है। उनका कहा एक-एक शब्द मेरे कानों में उसी रूप में आज भी सुनाई देता है। उनका स्मरण करते हुए मैं विह्वल हो जाता हूँ। किसी ने ठीक ही कहा है कि अच्छे गुरु और अच्छे मित्र भाग्य से ही मिलते हैं। मेरी प्राथमिक शिक्षा बेसिक प्राइमरी पाठशाला जरारा में हुई। मेरा गाँव मीरपुर तनिक छोटा और जरारा गाँव विशाल है। दोनों के बीच से बंबा (राजबहा) बहता है, नहीं तो इन्हें जुड़वाँ कह सकते हैं। ये दोनों गाँव बुलंदशहर जनपद में अंतिम छोर पर हैं।

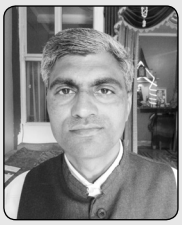

सुपरिचित लेखक-संपादक। बुलंदशहर (उ.प्र.) के मीरपुर-जरारा गाँव में जन्म। देसी चिकित्सा लेखन में विशेष दक्षता। 'जीवनोपयोगी जड़ी-बूटियाँ', 'स्वास्थ्य के रखवाले', 'सचित्र जीवनोपयोगी पेड़-पौधे', 'घर का डॉक्टर', 'स्वस्थ कैसे रहें?' तथा 'शुद्ध अन्न, स्वस्थ तन' कृतियाँ चर्चित। 'साहित्य मंडल' नाथद्वारा द्वारा 'संपादक-रत्न' की मानद उपाधि। संप्रति 'सवेरा न्यूज' (साप्ताहिक) का संपादन एवं आयुर्वेद पर स्वतंत्र लेखन।

उन दिनों जरारा गाँव के मास्साब पं. सत्यदेव शर्मा गाँव की प्राथमिक शाला में ही पहली कक्षा को पढ़ाते थे। वे दोनों गाँवों में घूम-घूमकर पाँच साल के बच्चों के नाम पाठशाला की पहली कक्षा में लिख लिया करते थे। उन दिनों जो अभिभावक अपने बच्चों का नाम पाठशाला में लिखवाते थे, तो उस खुशी में पूरे विद्यालय में गुड़ या बताशे बाँटते थे। हलकी कद-काठी के सत्यदेव शर्मा मास्साब से ही मैंने अक्षर ज्ञान प्राप्त किया। वे हर समय अपनी जीभ निकाले रहते थे और किसी भी गलती पर बच्चे की टूँड़ी (नाभि) पकड़कर उठा देते थे। इससे बच्चे उनसे बहुत डरते थे।

पहली कक्षा में केवल अक्षर-ज्ञान कराया जाता था। मास्साब हमारी पट्टी (तख्ती) पर खड़िया से एक ओर अ, आ, इ, ई तो दूसरी ओर गिनती लिख देते। हम खड़िया के घोल से उन अक्षरों के ऊपर कलम चलाकर लिखना सीखते थे। दिन में कई बार तख्ती पोतकर फिर-फिर लिखने का अभ्यास चलता था। अपनी पट्टी को चिकना बनाने के लिए मैं तवे की कालिख और दूध के झाग लगाकर लेपन करता; कभी-कभी ग्वारपाठा से चिकना करता था। पट्टी को सुखाने के लिए हम धूप में खड़े होकर पट्टी को दाएँ-बाएँ हिलाते हुए गाते थे—'सूख-सूख पट्टी, चंदन गट्टी, कारौ छोटा लाऊँगौ, तोईपे चढ़ाऊँगौ।' जिस दिन गुरुजी तहसील में तनख्वाह लेने जाते थे, शाला में देर से ही आते थे। तब शरारती बच्चे अपनी पट्टी (तख्ती) को सुखाते हुए गाते थे—'तख्ती पे तख्ती, तख्ती पे नौन, पंडितजी मर गए, पढ़ाए कौन?' पंडितजी (गुरुजी) ही हमें सरपत की कलम बनाकर देते थे, इसके लिए वे एक

छोटा चाकू अपने कुरते की जेब में रखते थे। कक्षा एक के लिए कोई पुस्तक उन दिनों नहीं होती थी। पर वर्णमाला और गिनती की एक छोटी पुस्तिका बाजार में मिलती थी। जिसके पिछले कवर पर बंदर और दो बिल्लियों वाली कहानी छपी होती थी। इसकी कीमत दस नए पैसे थी। आज की अपेक्षा उन दिनों की प्राथमिक शिक्षा बेहद कारगर एवं सस्ती थी। उस समय यूनीफॉर्म का भी कोई खर्चा नहीं था। मेरे विद्यालय की अपनी कोई जगह तथा इमारत नहीं थी। जरारा गाँव के लगभग बीचोबीच एक ठाकुर साहब की कच्ची ईंटों की बनी ऊँची सी पुरानी चौपाल थी। उसमें एक लंबा कमरा तथा एक बरामदा तो था ही, पर चबूतरा काफी बड़ा था। पाँचवीं कक्षा बरामदे में तो बाकी कक्षाएँ चबूतरे पर लगती थीं।

हमेशा चौथी कक्षा को पढ़ानेवाले पं. रामहेत शर्मा साक्षात् सांदीपनि गुरु के अवतार थे। वे साइकिल पर खुरियावली गाँव से आते थे। सादा सूती कमीज और पाजामा पहने गौर वर्ण के गुरुजी का ललाट तेज से देदीप्यमान रहता था। अब उनकी कमर हलकी सी झुक गई थी। वे कभी दु:खी नहीं होते थे। अपने शिक्षक जीवन में उन्होंने कभी किसी बालक की पिटाई नहीं की। पूरे विद्यालय में उनके बराबर सम्मान किसी गुरु का नहीं था। यहाँ तक कि उम्र में बड़े मुख्याध्यापकजी भी उनको सम्मान से 'बड़े बाबू' कहा करते थे। किसी बालक को समझाते-बताते मास्साब जब हलकान हो जाते तो बस इतना ही कहते थे, 'तेरे दिमाग में क्या भूसा भरा है?' एक साधु पुरुष के सारे गुण उनमें थे। वे इस ढंग से पढ़ाते थे कि सब दिमाग में अमिट हो बैठ जाता।

जब मैं तीसरी कक्षा में आया तब उस साल की बरसात में कमरे तथा बरामदे की छत गिर गई तो तीसरी कक्षा सत्यदेव शर्मा मास्साब के घेर (जहाँ गाय-भैंस रखी जाती हैं) में, कक्षा चार गाँव के सिरे पर एक ठाकुरजी के घेर पर नीम के पेड़ की छाँव में तथा कक्षा दो पंडितजी के घेर के सामने एक विशाल नीम का पेड़ था, उसकी छाया में लगने लगी। यहाँ पास में ही कुआँ था। प्यास लगने पर कुएँ पर जाते तो कोई-न-कोई पानी पिला देता था। उस समय चुल्लू से पानी पीने में कितना आनंद आता था, हाथ कुहनी तक भीग जाते थे। बारिश होने पर सब बच्चों की छुट्टी कर दी जाती थी। इतने पर भी कोई बालक घर के जरूरी काम से छुट्टी कर लेता, तो गुरुजी दो-चार हट्टे-कट्टे लड़के भेजकर उसे पकड़वाकर मँगवा लेते। मास्साब पढ़ाई के प्रति गंभीर थे, बालकों की उपस्थिति तथा अनुशासन वे बनाए रखते थे।

हम बच्चे अपने घरों से टाट का एक-एक बोरा लेकर जाते, गुरुजी चारपाई पर बैठते थे, हम पंक्तिबद्ध अपने-अपने बोरे बिछा लेते। टाट के फर्श तो हमें छठी कक्षा में नसीब हुए थे। हमेशा चौथी कक्षा को पढ़ानेवाले पं. रामहेत शर्मा साक्षात् सांदीपनि गुरु के अवतार थे। वे साइकिल पर खुरियावली गाँव से आते थे। सादा सूती कमीज और पाजामा पहने गौर वर्ण के गुरुजी का ललाट तेज से देदीप्यमान रहता था। अब उनकी कमर हलकी सी झुक गई थी। वे कभी दु:खी नहीं होते थे। अपने शिक्षक जीवन में उन्होंने कभी किसी बालक की पिटाई नहीं की। पूरे विद्यालय में उनके बराबर सम्मान किसी गुरु का नहीं था। यहाँ तक कि उम्र में बड़े मुख्याध्यापकजी भी उनको सम्मान से 'बड़े बाबू' कहा करते थे। किसी बालक को समझाते-बताते मास्साब जब हलकान हो जाते तो बस इतना ही कहते थे, 'तेरे दिमाग में क्या भूसा भरा है?' एक साधु पुरुष के सारे गुण उनमें थे। वे इस ढंग से पढ़ाते थे कि सब दिमाग में अमिट हो बैठ जाता। मेरा दावा है कि जो विद्यार्थी उनसे नहीं पढ़ सका तो का दुनिया का कोई शिक्षक नहीं पढ़ा सकता। अन्य शिक्षकों की तरह वे किसी से भेदभाव नहीं करते थे। केवल वे ही थे, जो समय-समय पर प्रेरक कहानियाँ सुनाया करते थे। शायद संतकवि सुंदरदासजी ने यह दोहा मेरे इन्हीं गुरु के लिए रचा है—

सद्गुरु सुधा समुद्र है,
सुधामयी हैं नैन।
नख-शिख सुधा स्वरूप
पुनि, सुधा सु बरसत बैन॥

हम जब तक विद्यालय में रहते, कभी फुरसत नहीं होती थी। प्रात: स्कूल में प्रार्थना के बाद ही इमला, फिर पुस्तक पाठ, उसके प्रश्न-उत्तर, बारी-बारी से दूसरे विषय, फिर गणित। हर सप्ताह अलग-अलग विषय का टेस्ट होता था। छुट्टी होने से आधा घंटा पहले हर कक्षा कतार में खड़ी होकर पहली कक्षा में गिनती तो दूसरी कक्षाओं में पहाड़े पढ़े जाते थे। पहले एक या दो नियत छात्र ऊँची आवाज में बोलते, बाद में पूरी कक्षा हाथ उठा-उठाकर फुल वॉल्यूम में दोहराती थी। इससे दूर-दूर हमारे घरवालों को भी पता लग जाता था कि अब छुट्टी होनेवाली है। हर शनिवार को बालसभा जरूर होती थी। सभी कक्षाओं के बालक-बालिकाएँ इकट्ठा बैठते थे। कविता, गीत, चौपाई, हास्य, वाद-विवाद तथा बाद में अंत्याक्षरी होती थी। अंत्याक्षरी के लिए तो कई लड़के-लड़कियों ने रामचरितमानस का गुटका खरीद लिया था और बहुत सारी चौपाई-दोहा कंठस्थ कर लिए थे। मुझे याद है, चौथी कक्षा में पढ़ रहा मेरे गाँव का एक लड़का भूदेव 'रण बीच चौकड़ी भर-भर कर' कविता को तलवार की जगह हाथ में एक लकड़ी लेकर अभिनय करते हुए इस अंदाज में सुनाता था, जैसे वह खुद चेतक हो और हल्दीघाटी के मैदान में अपना पराक्रम दिखा रहा हो। सब बच्चे ही नहीं, अध्यापक भी खूब हँसते थे।

सुरजाबली गाँव के कक्षा दो को पढ़ानेवाले मास्साब रमेशचंद्र सिंह राघव अत्यंत रुआबदार थे। उनसे बच्चे ही नहीं, बच्चों के पिता भी डरते थे। उन दिनों फीस दस पैसा लगती थी। गरीबी का आलम ऐसा था कि ज्यादातर बच्चे समय पर फीस नहीं दे पाते थे। रमेश मास्साब हर तीसरे दिन बच्चों को फीस के लिए दौड़ाते थे।

जब मैं तीसरी कक्षा में आया तब दो-तीन मास्साब लगातार जल्दी-जल्दी बदलते रहे, इस बीच एक मैडम भी पढ़ाने आईं। अंत में मैं राजबीर सिंह मास्साब का शिष्य रहा। वे बनैल गाँव, जहाँ के संघ के सरसंघचालक रज्जू भैया थे, से साइकिल पर आया करते थे। मास्साब

मुझे प्यार से कालू कहते थे। वे भी बच्चों की पिटाई न कर, केवल पढ़ाई पर ध्यान देते थे। उनका पहनावा बड़ा सादा था, रंगीन कमीज और सफेद पायजामा। गरमियों में पसीने से लथपथ हो जाते थे, तो मेरे सहपाठी रवींद्र से एक लोटा पीने का पानी मँगाते थे, क्योंकि उसका घर पास में ही था। इसी दौरान हमारे विद्यालय में एक नए मास्टरजी आए। वे खूब मोटे थे, एकदम गोल-मटोल! नाम था शंकरलाल शर्मा। वे साबतगढ़ गाँव से साइकिल पर ही आते थे। उनकी साइकिल सबसे दुरुस्त हालत में होती थी। पाजामा साइकिल की चैन में न आ जाए, इसलिए उसे टाँगों पर लपेटकर उन पर लोहे की चूड़ियाँ चढ़ा लेते थे। वे काला चश्मा लगाते थे और बड़ी नजाकत से रहते थे। उनके कुरता-पाजामा स्पॉटलैस रहते थे। उनकी आवाज बड़ी सुरीली थी। वे आशुकवि थे, देखते-देखते ही कविता बना देते थे। वे हमारे विद्यालय में बहुत कम समय तक रहे, पर उन दिनों बालसभा की रौनक इतनी बढ़ गई थी कि क्या कहने!

उन्होंने रामायण, महाभारत और अच्छी सीख देनेवाले लोक-प्रसंगों को इतने आसान गीत और कविताओं में रच दिया कि जो बच्चे विद्यालय आने से कतराते थे, वे भी नियमित आने लगे। बालसभा में तो आसपास के घरों के औरत-मर्द भी इकट्ठा हो जाते थे। उन दिनों भादों के महीने में गणेश चतुर्थी मनाई जाती थी। गुरुजी बड़े उत्साह के साथ अपने शिष्यों के घर जाते थे। इस पर्व को हम बच्चे अपनी भाषा में 'चट्टा चौथ' कहते थे। चट्टा एक प्रकार की एक-डेढ़ फीट की दो लकड़ी होती थीं, जिन्हें रंग-बिरंगी रँगकर उस अवसर पर बजाया करते थे। कुछ बच्चे बाजार से बनी-बनाई ही खरीद लेते थे। हमारे घरों में इस अवसर पर माँ-बहनें आँगन लीपकर खूब साफ-सफाई करती थीं, उस दिन ज्यादातर घरवाले अपने-अपने घर पर ही रहते थे, उनके बच्चों के गुरुजन जो आनेवाले होते थे, तो उनके स्वागत और सेवा का अवसर मिलता था। जो मास्साब जिस कक्षा को पढ़ाते थे, उसकी गुरु दक्षिणा वही लेते थे। शिष्य यानी हम साफ-सुथरे थाल में हलदी-चावल से गुरुजी का तिलक कर उनके चरण-स्पर्श कर आशीष लेते, फिर घरवाले गुरुजी को दक्षिणा भेंट करते। जिसकी जैसी सामर्थ्य होती—एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया भी। कम दक्षिणा पर गुरुजी रूठ भी जाते, पर मान-मनुहार करने पर जल्दी मान भी जाते थे। सही मायने में यह 'गुरुपूजा' का पर्व होता था।

इस साल तो शंकरलाल मास्साब ने इस अवसर के लिए इतने गीत, कविता आदि तैयार करवाए थे कि जिस घर में जाते तो छात्रों की अलग-अलग टोलियाँ खड़े होकर अपने-अपने गीत, कविता आदि पूरा जोर लगाकर सुनातीं। शंकरलाल मास्साब ने छंदोबद्ध एक नई रामायण चौपाई-दोहों के साथ इतनी सरल भाषा में रच दी थी। इसकी कुछ पंक्तियाँ अभी तक मेरी स्मृति में हैं। लंका कांड का प्रसंग है—

मेघनाद जूझन चला, मारी सान घुमाय।
लछमन के तन में लगी, गिरा धरन गस खाय॥
लंका से एक वैद बुलाया। लछमन भैया उसे दिखाया॥
देख वैद ने नाड़ी उसकी। हम पर दवा नहीं है इसकी॥
जल्दी से संजीवन लाओ। जरा घोंटकर इसे पिलाओ॥
संजीवन हम कहाँ से लावें। इसका पता आप बतलावें॥
संजीवन पर्वत पर होय। तैसे जले दीये की लोय॥
रात-रात में लाओ उखाड़। प्रात होत लछमन का काल॥

हनुमानजी संजीवन बूटी लाने के लिए उड़ चले—

हनुमान से ऐसा कीना। सूरज पकड़ गाल में दीना॥
हनुमान ने मारी किलकार। आधा पर्वत लिया उखाड़॥
हाथ पे रखकर पर्वत लाए। अवधपुरी के रस्ते आए॥
भरत ने देखा यह क्या आया। उठा धनुष एक बाण चलाया॥
बाण के मारे मैं लँगडाऊँ। अब पर्वत कैसे ले जाऊँ॥

भरतजी सारी व्यथा-कथा सुनकर कातर स्वर में बोले—

हनूमान तू मत कर शंका।
बैठ बाण पहुँचाऊँ गढ़ लंका॥

इसी प्रकार कक्षा चार के दो छात्रों को काले-गोरे के भेदभाव पर सीख देनेवाला एक गीत कंठस्थ कराया था, जो थोड़ा सा मेरी स्मृति में रह गया है—

एक पुरुष की दो थीं नारी,
पहली गोरी दूजी काली।
आया तीजों का त्योहार,
दोनों करन लगीं सिंगार।
गोरी कहे तेरे साथ न झूलूँ,
तेरा रंग है बहुत ही काला।
हे गोरी! तोय शरम न आवे,
काले रंग को बुरा बतावे।
काले हैं तेरे सिर के बाल।
इन्हें सिर से देय उतार।
काली हैं तेरी आँख की पुतली,
इन्हें फोड़कर हो जा अंधी।
काली भैंस बाँध ले द्वार,
जिसका दूध पिए घरबार।
काला हाथी हौदेदार,
इसको रखते इज्जतदार।

मेरी ही कक्षा के दो छात्रों को मास्टरजी ने हरिश्चंद्र-तारामती प्रसंग पर बनाई अपनी एक रचना कंठस्थ कराई थी; इसकी कुछ ही पंक्तियाँ मेरी स्मृति में हैं। काशी में रानी तारामती अपने पुत्र रोहताश्व का मृत शरीर लेकर श्मशान पर आती है, जहाँ राजा हरिश्चंद्र चंडाल की नौकरी कर रहे थे—

लेकर मुरद घाट पर आई,

ना कुछ देने को वह लाई।
पहले टका खोलकर रख दो,
पीछे गती कुमर की कर लो।

राजाजी यह चीर है, ओढ़े खड़ी अगार।
और तो मुझ पर कुछ नहीं, इसमें से लो आधा फार॥

तब राजा ने किया इरादा,
फाड़ चीर रानी का आधा।

घर-घर जाते हुए हर एक के आँगन में ये सब गीत, नाट्य-गीत, कविता आदि पूरे जोश में गाए जाते। जलपान में गुरुजी को मीठा दूध पीने के लिए दिया जाता और सब बच्चों को गुड़ या बताशे बाँटे जाते। तब हमारी खुशी का ठिकाना न था। एकदम साफ-सुथरे या नए कपड़े पहनकर गुरुजी के साथ गाँव-गाँव घूमने में कितना आनंद था, सो कैसे कहूँ! गुरुजी को दक्षिणा भेंट हो जाने के बाद सब मास्साब अपने शिष्य तथा उसके परिवार वालों को आशीर्वाद देते थे। इस बार तो नए मास्साबजी ने आशीर्वाद के वचन भी कविता में रच दिए थे, जिन्हें कक्षा पाँच के दो छात्र खड़े होकर गुरुजी की ओर से गाते थे—

चट्टा चौथ भादों में आई,
सबके मन में खुशी मनाई।
गणेश चौथ का दिन अलबेला,
खुशी रहे पंडितजी का चेला।
उमर बढ़े और विद्या आवे,
अपने बड़ों का नाम कमावे।
बढ़े कुटुम परिवार तुम्हारा,
तुमने रक्खा मान हमारा।

और ये आशीर्वचन होते ही हम सब बच्चे अगले घर की ओर दौड़ पड़ते थे। जिस लड़के का घर अगले क्रम में होता था, वह तैयारी के लिए पहले ही अपने घर चला जाता था। फिर यही सब प्रक्रिया वहाँ दोहराई जाती थी। इस तरह गाँव-गाँव घूमते हुए दो-तीन दिन बड़े आनंद के साथ बीत जाते। हर शनिवार की बालसभा में नए मास्साब अपने नए बनाए गीत या कविता जरूर सुनाया करते थे। अब कहाँ हैं ऐसे रचनात्मक अध्यापक, जैसे हमारे शंकरलाल मास्साब थे। प्राथमिक शाला की ये तीनों विभूतियाँ आज भी मेरे मन-मंदिर में विराजमान हैं।

कक्षा पाँचवीं पास करके मैं इसी गाँव के जूनियर हाई स्कूल में पढ़ने के लिए गया। आठवीं तक के इस स्कूल में सर्वश्री केशवदेव शर्मा, नानक चंद गुप्ता, बाबू खाँ तथा धर्मपाल सिंह मेरे माननीय अध्यापक थे। इनमें आदरणीय धर्मपाल सिंह को मैं अपना आदर्श गुरु मानता हूँ। उनके प्रति मेरा पूज्य भाव आज भी बना हुआ है। वे डी.पी. सिंह नाम से बड़े सुंदर हस्ताक्षर किया करते थे। अपनी पढ़ाई पूरी करके वे सरकारी विद्यालय में नौकरी के इंतजार में थे। जब मैं छठी कक्षा में यहाँ पहुँचा, उसी वर्ष वे यहाँ पढ़ाने आए थे और छठी कक्षा के अध्यापक बनाए गए। जाति से वे धोबी थे, परंतु उनके जैसा सच्चरित्र, परिश्रमी, कर्तव्यपरायण और सदैव अपने शिष्यों के उत्थान की सोचनेवाला कोई दूसरा न था। उनकी हस्तलिपि बड़ी सुंदर थी। वे स्वयं अपने विषय की पूरी तैयारी करके आते थे। कक्षा में एक मिनट का समय भी बरबाद नहीं होने देते थे।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है, डी.पी. सिंह मास्साब जब मेज के पास खड़े होकर पढ़ाते थे तो उनके दोनों गालों में गड्ढे हो जाते थे। उनके पढ़ाते समय कक्षा में नीम शांति बनी रहती थी। उन्होंने मुझे कक्षा आठ तक पढ़ाया, पर मेरे हृदय में उनके प्रति आदर कक्षा छठी से ही उमड़ने लगा था। पढ़ाते समय उनकी दृष्टि मेरे ऊपर ही रहती थी। मेरे जीवन में आए वे मेरे सबसे आदर्श गुरु हैं। मैंने उन्हें कभी निराश नहीं किया, हर कक्षा में अव्वल आता रहा। अब उनके एक बार दर्शन कैसे हों, इसकी हूक मेरे मन में हमेशा उठती है। वे मेरे जीवन में न आते तो मैं पढ़ाई में इतना अच्छा नहीं हो पाता। मैं बाद में जहाँ भी पढ़ने गया, हर कक्षा में अब्बल रहा तो इसका श्रेय उन्हीं को जाता है। अगली कक्षा में जाने पर सुंदर लिखावट वाली मेरी कॉपियाँ वे मुझसे ले लिया करते थे। मेरे बाद में मेरे गाँव के बालक-बालिकाएँ जब वहाँ पढ़ रहे थे, तब डी.पी. सिंह मास्साब इनको मेरी कॉपियाँ दिखाकर मेरे व्यवहार की प्रशंसा करते, उन्हें मेरे जैसा बनने के लिए प्रेरित करते थे। यह सब मेरे छोटे भाई-बहन और मोहल्ले के बालक मुझे बताया करते थे। बाद में मैंने सुना कि किसी सरकारी विद्यालय में उनकी नियुक्ति हो गई। वे छात्र-छात्राएँ बड़े ही भाग्यशाली रहे होंगे, जिन्होंने उनसे शिक्षा प्राप्त की होगी।

ऐसे गुरुओं के बारे में ही तो कहा गया है, 'गुरौ प्रणामो हि शिवाय जायते।' अर्थात् गुरु को किया गया प्रणाम भी कल्याणकारी होता है। वेद-पुराण, ऋषि-मनीषियों ने गुरु की महिमा एक स्वर में ऐसे ही नहीं गाई है। स्कंद पुराण के अंतर्गत 'गुरुगीता' में ठीक ही कहा गया है—'ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्। मन्त्र मूलं गुरुवाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा॥' अर्थात् ध्यान का आदि कारण गुरुमूर्ति है। गुरु के चरण पूजा के मुख्य स्थान हैं। गुरु का वाक्य सब मंत्रों का मूल है और गुरु की कृपा मुक्ति का कारण है। अपने जीवन में आए ऐसे महान् गुरुओं के चरणों में विनयावनत हो बारंबार प्रणाम निवेदित करता हूँ। शिष्य अपने गुरु के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता है। पौराणिक ग्रंथों में कहा गया है—

एकमपि अक्षरमस्तु गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत्।
पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं तद् दत्त्वा ह्यनृणी भवेत्॥

अर्थात् कोई गुरु अपने शिष्य को एक भी अक्षर का ज्ञान देता है तो पूरी पृथ्वी पर ऐसी कोई वस्तु या धन नहीं, जिससे शिष्य अपने गुरु का ऋण उतार सके।

जी-३२६, अध्यापक नगर
नांगलोई, दिल्ली-११००४१
दूरभाष : ९८६८५२५७४१

भारतीय भाषायी जनगणना–२०११

● राजेश्वर उनियाल

सन् २०११ में हुई भाषायी जनगणना का प्रतिवेदन २६ जून, २०१८ को प्रस्तुत किया गया। इसके अनुसार २०११ में भारत की कुल जनसंख्या १,२१,०८,५४,९७७ है। सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार भारत में १६५२ भाषाएँ या मातृभाषाएँ थीं, परंतु सन् १९७१ से गणना में उन्हीं भाषाओं को सम्मिलित किया जाता है, जिनको बोलनेवाले कम-से-कम दस हजार लोग हों। इसके अनुसार जहाँ १९७१ की जनगणना के अनुसार भारत में १०८ भाषाएँ थीं, वह २०११ में बढ़कर १२१ हो गई हैं। हालाँकि सन् २००१ की जनगणना में यह संख्या १२२ थी, परंतु २०११ में इसमें से सिमटे और पेर्सइन दो भाषाएँ कम हो गईं, जबकि माओ के सम्मिलित होने से यह संख्या १२१ हो गई है। इन १२१ भाषाओं में से २२ अष्टम अनुसूची के अंतर्गत वर्णित और ९९ गैर-अनुसूची भाषाएँ हैं। इसी तरह २०११ की जनगणना के अनुसार भारत में कुल १९,५६९ मातृभाषाएँ हैं। इनमें से अष्टम अनुसूची की २२ भाषाओं के अंतर्गत १२३ तथा गैर-अनुसूची की ९९ भाषाओं के अंतर्गत १४७ अर्थात् कुल २७० मातृभाषाएँ ऐसी हैं, जिनको बोलनेवाले दस हजार से अधिक लोग हैं। इसी तरह १३६९ युक्तिसंगत तथा १४७४ मातृभाषाएँ अवर्गीकृत पाई गईं। यह भी गौरतलब बात है कि भारत की कुल जनसंख्या में से ९६.७१ प्रतिशत लोग अष्टम अनुसूची की २२ भाषाओं का ही उपयोग करते हैं अर्थात् केवल ३.२९ प्रतिशत लोग ही गैर-अनुसूची की ९९ भाषाओं का उपयोग करते हैं।

यूनेस्को के अनुसार भाषा सर्वेक्षण में मुख्यत: तीन वर्गीकरण किए जाते हैं। पहले में १०,००० से १,००,०००, दूसरे में १,००,००० से १०,००,००० तथा तीसरे वर्गीकरण में १०,००,००० से अधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जानेवाली भाषा की गणना की जाती है। इसके अनुसार २०११ की जनगणना के अनुसार भारत में वर्तमान में १२१ भाषाओं को बोलनेवाले दस हजार से अधिक लोग हैं, जिनमें से ७ भाषाओं को एक लाख, २९ भाषाओं को बोलनेवाले दस लाख तथा १३ (१२ अनुसूची व १ गैर-अनुसूची, भिलि/भीलोड़ी) भाषाओं को बोलनेवाले एक करोड़ व केवल हिंदी को बोलनेवाले दस करोड़ से

जाने-माने साहित्यकार। 'शैल सागर' (काव्य कृति); 'पंदेरा व भाड़े का रिक्शा' (उपन्यास); 'डरना नहीं पर···' (कहानी-संग्रह); 'तीलू रौतेली' (नाटक) चर्चित। 'उत्तरांचली लोक-साहित्य' व 'हिंदी लोक साहित्य' का प्रबंधन तथा संपादन सहित १२०० से अधिक वैज्ञानिक/राजभाषा/साहित्यिक व लोकप्रिय रचनाएँ प्रकाशित। छोटे-बड़े कई दर्जन पुरस्कार प्राप्त।

अधिक लोग हैं। चूँकि भाषायी गणना में १०,००० या उससे अधिक लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा को गिना जाता है, अत: १०,००० से कमवाली मृतप्राय व १००० से कम को मृतक अर्थात् डेड लैंगुएज माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि चूँकि अब इस भाषा को बोलनेवाले कुछ ही लोग हैं, इसलिए उनके दिवंगत होते ही यह भाषा भी समाप्त हो जाएगी।

जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है तो सन् २०११ की जनगणना के अनुसार भारत में ४३.६३ प्रतिशत अर्थात् ५२,८३,४७,१९३ लोगों की मातृभाषा या पहली भाषा हिंदी है। हिंदी मातृभाषा का विकास दर सन् १९७१-८१ में २७.१२ प्रतिशत, सन् १९८१-९१ तक २७.८४ प्रतिशत, सन् १९९१-२००१ तक २८.०९ प्रतिशत था, जबकि यह सन् २००१-११ में घटकर २५.१९ प्रतिशत रह गया है। इसका मुख्य कारण यह भी है कि सन् २००२ में मैथिली भाषा को हिंदी से अलग कर अष्टम अनुसूची में सम्मिलित कर लिया गया है। २०११ की जनगणना के अनुसार मैथिली भाषियों की संख्या १,३५,८३,४६४ अर्थात् १.१६ प्रतिशत है। पहले यह संख्या हिंदी में सम्मिलित होती थी। मैथिली के साथ ही संथाली के भी अटष्म अनुसूची में वर्णित होने के कारण यहाँ की हिंदी भाषी जनता भी अपनी मातृभाषा एवं प्रथम भाषा इन्हीं भाषाओं को मानने लगी है, इसलिए हिंदी को मातृभाषा माननेवालों की दर में कमी आने लगी है।

अगर इतना ही होता तो कोई बात नहीं थी, परंतु वर्तमान में भारत के संविधान के अनुसार अष्टम अनुसूची में हिंदी, असमिया, संस्कृत, मराठी, गुजराती, तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़, कश्मीरी, उर्दू,

बंगाली, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली, मैथिली, डोगरी, बोडो और संथाली सहित २२ भाषाएँ हैं, जबकि भारत सरकार के गृह-मंत्रालय के पास अंगिका, बंजारा, बाजिका, भोजपुरी, भोटी, भोटिया, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, धातकी, अंग्रेजी, गढ़वाली (पहाड़ी), गोंडी, गुर्जर/गुजरी, हो, कच्चाची, कामतापुरी, कारबी, खासी, कोडवा (कुर्ग), कोक बराक, कुमाऊनी (पहाड़ी), कुरूखा, कुर्माली, लेपचा, लिंबु, मिजो (लुचाई), मगही, मुंदरी, नागपुरी, निकोबारी, पहाड़ी (हिमाचली), पाली, राजस्थानी, संबलपुरी/कोसाली, सौरसेनी (प्राकृत), सिराकायीं, तेनयीदी व तुलु सहित ३८ ऐसी बोली-भाषाएँ हैं, जो अष्टम अनुसूची में वर्णित होने के लिए आवेदित हैं।

हिंदी के साथ ही २०११ की भाषायी जनगणना के अनुसार भारत की १२१ भाषाओं में से अष्टम अनुसूची के अंतर्गत हिंदी ५२.८४ के बाद बँगला ९.७२, मराठी ८.३०, तेलुगु ८.११, तमिल ६.९०, गुजराती ५.५५, उर्दू ५.०८, कन्नड़ ४.३७, ओड़िया ३.७५, मलयालम ३.४८, पंजाबी ३.३१, असमिया १.५३, मैथिली १.३६, संथाली ०.७४, कश्मीरी ०.६८, नेपाली ०.२९, सिंधी ०.२८, डोगरी ०.२६, कोंकणी ०.२३, मणिपुरी ०.१८, बोड़ो ०.१५ व संस्कृत ०.००२५ करोड़ बोलनेवाले लोग हैं, जबकि गैर-अनुसूची की भिल्ली/भिलोदी भाषा को बोलनेवाले १,०४,१३,६३७ व अंग्रेजी को पहली भाषा के रूप में माननेवाले २,२६,४४९ लोग हैं।

गौरतलब है कि इन ३८ में से १६-१७ भाषाएँ पूर्णत: एवं कुछ आंशिक रूप से हिंदी से संबंधित हैं। यदि इन सभी भाषाओं को अष्टम अनुसूची में वर्णित कर दिया गया तो हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि हिंदी की क्या स्थिति रह जाएगी। स्थिति तब और भी अधिक भयावह हो जाएगी, जब ब्रज, अवधी, हरियाणवी व मालवी जैसी बोली-भाषाएँ भी अष्टम अनुसूची में वर्णित होने हेतु आवेदित हो जाएँगी। हिंदी के अंतर्गत ५६ ऐसी बोली-भाषाएँ हैं, जिन्हें बोलनेवाले दस हजार से अधिक लोग हैं।

आज एक ओर हिंदी विश्वभाषा की मान्यता प्राप्त होने हेतु प्रयासरत है। जिस दिन १९३ देशों में से दो-तिहाई अर्थात् १२९ देश हिंदी के पक्ष में मत दे देंगे, उस दिन हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं में आ जाएगी। लेकिन जिस हिंदी की अपने ही घर में यह हालत हो रही हो, उसकी विश्व की मान्यता मिलने पर भी क्या स्थिति रह जाएगी, हम अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

अब हिंदी के दूसरे पहलू पर आइए। सन् २०११ की गणना में भारत में हिंदी को प्रथम भाषा के रूप में स्वीकार करनेवाले ५२,८३,४७,१९३ अर्थात् ४३.६३ प्रतिशत लोगों में से केवल ३२,२२,३०,०९७ अर्थात् २६.६१ प्रतिशत लोगों ने ही हिंदी को मातृभाषा के रूप में दर्जा दिया, जबकि शेष २०,६१,१७,०९६ अर्थात् १७.०२ लोगों ने हिंदी की भोजपुरी, गढ़वाली, कुमाऊँनी या राजस्थानी आदि ५६ से अधिक क्षेत्रीय बोली-भाषाओं को अपनी मातृभाषा के रूप में अंकित किया है। सन् २०११ की जनगणना में इससे निश्चित रूप से हिंदी की गणना कम होती है, जिसे हम भाषा की गणना का परिवर्तन कह सकते हैं। परंतु यूनेस्को इसे परिवर्तन या तकनीकी शोधन न मानकर सीधे-सीधे फरमान जारी कर देता है कि यह भाषा मृतप्राय है, अर्थात् मरनेवाली है और हम उस प्रतिवेदन में अपना विश्लेषण लगाकर कहना शुरू कर देते हैं कि वर्तमान में इतनी भाषाएँ जीवित हैं, इतनी मृतप्राय हैं एवं इतनी मर चुकी हैं।

हिंदी के साथ ही २०११ की भाषायी जनगणना के अनुसार भारत की १२१ भाषाओं में से अष्टम अनुसूची के अंतर्गत हिंदी ५२.८४ के बाद बँगला ९.७२, मराठी ८.३०, तेलुगु ८.११, तमिल ६.९०, गुजराती ५.५५, उर्दू ५.०८, कन्नड़ ४.३७, ओड़िया ३.७५, मलयालम ३.४८, पंजाबी ३.३१, असमिया १.५३, मैथिली १.३६, संथाली ०.७४, कश्मीरी ०.६८, नेपाली ०.२९, सिंधी ०.२८, डोगरी ०.२६, कोंकणी ०.२३, मणिपुरी ०.१८, बोड़ो ०.१५ व संस्कृत ०.००२५ करोड़ बोलनेवाले लोग हैं, जबकि गैर-अनुसूची की भिल्ली/भिलोदी भाषा को बोलनेवाले १,०४,१३,६३७ व अंग्रेजी को पहली भाषा के रूप में माननेवाले २,२६,४४९ लोग हैं।

स्वतंत्रता के बाद १९७१ की जनगणना के समय हिंदी भाषी ३६.९९ प्रतिशत थे, जो कि बढ़कर २०११ में ४३.६३ हो गए हैं। हिंदी के साथ ही पंजाबी, कश्मीरी, मणिपुरी और बोड़ो के प्रतिशत में भी बढ़ोतरी हुई है, जबकि अन्य भाषाओं में थोड़ी कमी आती जा रही है। हालाँकि भारत में संस्कृत भाषी कम हैं, फिर भी इसमें काफी उतार-चढ़ाव देखा गया। उदाहरण के लिए, १९७१ में संस्कृत भाषी २,२१२ थे, जो कि १९९१ में ४९,७३६ व २०११ में घटकर २४,८२१ हो गए हैं।

भाषा की गणना करते समय हम यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान एवं संरक्षण) के आँकड़ों को सर्वाधिक महत्त्व देते हैं। मानव विज्ञान (एथोनोलाग) के २०१७ के सर्वेक्षण के अनुसार भारत में कुल ४६२ भाषाएँ हैं, जिनमें से ४४८ विद्यमान एवं १४ मृतप्राय हो चुकी हैं। इन ४४८ जीवित में से ४२० देशज एवं २८ विदेशी हैं तथा इनमें से ६४ परिष्कृत, १२६ संपन्न, १९० सशक्त, ५५ संकटग्रस्त व १३ मरणासन्न हैं। इसी तरह विश्व में ७०९९ भाषाएँ हैं, इनमें से ५७६ परिष्कृत, १६०१ संपन्न, २४५५ सशक्त, १५४७ संकटग्रस्त व ९२० मरणासन्न हैं। यह बात भी उल्लेखनीय है कि इनमें से १० प्रमुख भाषाएँ ७७.९ प्रतिशत लोगों द्वारा व शेष भाषाएँ केवल २२.१ प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती हैं। यूनेस्को के अनुसार सन् २१०० तक दुनिया से लगभग ६००० भाषाएँ समाप्त हो जाएँगी। इसे वह मृत भाषा का नाम देता है। वस्तुत: हम मृतप्राय का मतलब अंग्रेजी के शब्दकोश के लाइव लैंगुएज एवं डेड लैंगुएज से ले लेते हैं। यूनेस्को मातृभाषा को नेटिव लैंगुएज कहता है। इस गणना में भी प्रथम अर्थात् नेटिव जिसे हम मातृभाषा कहते हैं, वह

गिनी जाती है और द्वितीय उस भाषा को गिना जाता है, जिसे हम दूसरी भाषा या सेकिंड लैंगुएज कहते हैं। जबकि नेटिव लैंगुएज देशी भाषा के लिए प्रयुक्त होता है।

उदाहरण के लिए चीन भी भारत की तरह बहुभाषी प्रदेश है। भारत में अगर २७० मातृभाषाएँ हैं तो चीन में भी २४१ बोली-भाषाएँ हैं। लेकिन वहाँ की कुल जनसंख्या एक अरब तीस हजार (२००५) में से ८७ करोड़, अर्थात् लगभग दो-तिहाई लोगों (६७ प्रतिशत) की भाषा मंदारिन है। हम यह भी कह सकते हैं कि चीन के लगभग ६७ प्रतिशत लोगों की भाषा मंदारिन है तथा शेष तैंतीस प्रतिशत लोगों की अन्य चीनी भाषाएँ हैं। चीन ही क्यों संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, मेक्सिको, कैमरून, ऑस्ट्रेलिया व कोंगो की भी क्रमशः ३११, २७७, २८०, २७५ व २१६ भाषाएँ हैं। इसी प्रकार भारत से अधिक गुयाना, इंडोनेशिया व नाइजेरिया में भी क्रमशः ८२०, ७४२ व ५१६ भाषाएँ प्रचलित हैं। आज विश्व में लगभग ७०९९ भाषाएँ प्रचलन में हैं, जिसमें से ६० प्रतिशत लोग मंदारिन, हिंदी, स्पेनिश, अंग्रेजी, अरबिक, पोर्तुगीज, बंगाली, रशियन, जापानी व जर्मनी सहित तीस मुख्य भाषाओं को व्यवहार में लाते हैं। परंतु इन देशों में कई भाषाएँ प्रचलित होने पर भी यहाँ की जनता मुख्य भाषा को ही अपनाती है। उस भाषा का अपना विशिष्ट स्थान है। रूस, चीन, स्पेन, जर्मन, फ्रांस, अमेरिका, इग्लैंड, जापान व थाईलैंड आदि कई राष्ट्र इसके उदाहरण हैं।

इससे ठीक विपरीत भारत की स्थिति एकदम अलग है। संविधान के अनुसार तो भारत संघ की राजभाषा हिंदी है, परंतु अष्टम अनुसूची में हिंदी के साथ ही २२ भाषाएँ सम्मिलित हैं। इतना ही नहीं तो ये बाईस भाषाएँ भारत के अलग-अलग प्रांतों व क्षेत्रों के ९६.७१ प्रतिशत लोगों की मातृभाषाएँ भी हैं। केवल ३.२९ प्रतिशत लोगों की मातृभाषा इस अष्टम अनुसूची से अलग है। हिंदी प्रदेशों की तरह ही हर प्रदेश की अपनी अलग भाषा है। गणना के समय उस प्रदेश के लोग हिंदी को दूसरी या तीसरी भाषाओं में गिनवाते हैं। कई लोग अपनी मातृभाषा के बाद अन्य भाषा के स्थान पर संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू या पड़ोसी राज्यों की भाषाओं का भी उल्लेख करवा देते हैं। इससे हिंदी जाननेवालों के सही आँकड़ों का उल्लेख नहीं हो पाता है और जो हिंदी कुछ समय पहले तक अहिंदी भाषी राज्यों में दूसरी भाषा का स्थान ले रही थी, वह अब खिसककर तीसरे या चौथे स्थान पर आ रही है। भाषा गणना में केवल मातृभाषा तथा दो अन्य भाषाओं का ही उल्लेख था, इसमें चौथी भाषा का कोई कॉलम ही नहीं था, इसलिए उस व्यक्ति के लिए हिंदी लुप्त या मृत भाषा मानी जाती है।

कुछ लोग यह मानते हैं कि यदि जनगणना में उनकी भाषा बोलनेवाले कम हो गए तो यह भाषा अष्टम अनुसूची से बाहर हो जाएगी, ऐसा नहीं है। भारत में २०११ की जनगणना में संस्कृत को प्रथम भाषा के रूप में माननेवालों की संख्या केवल २४,८२१ थी, तब भी यह भाषा अष्टम अनुसूची में वर्णित है, जबकि अंग्रेजी को पहली भाषा के रूप में माननेवाले २,२६,४४९ व भिल्लि/भिलोदी भाषा, जिसे बोलनेवाले १,०४,१३,६३७ से भी अधिक लोग हैं, अभी तक वह अष्टम अनुसूची में वर्णित नहीं है।

इसी के साथ उदाहरण के लिए प. बंगाल, उड़ीसा, असम, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश (२०११) व कर्नाटक में हिंदी भाषी केवल क्रमशः ६४ लाख, १२ लाख, २१ लाख, ४ लाख, ५२ लाख, ३१२ लाख व २१ लाख ही हैं, जबकि वास्तविक रूप से इन राज्यों में तीस-चालीस प्रतिशत तक लोग हिंदी जाननेवाले हैं। इतना ही नहीं, पंजाब, महाराष्ट्र व गुजरात में भी क्रमशः २६ लाख, १४५ लाख व ४३ लाख लोगों ने प्रथम भाषा हिंदी लिखवाई है, जबकि इन राज्यों के ८०-९० प्रतिशत तक लोग हिंदी जानते हैं।

वस्तुतः यूनेस्को की रिपोर्ट अंग्रेजों या पश्चिमी संस्कृति पर आधारित होती है, जहाँ कोई भी व्यक्ति घर, बाहर व दफ्तर में अधिकतर एक ही भाषा को प्रयोग में लाता है, जबकि भारत में स्थिति एकदम विपरीत है। यहाँ एक व्यक्ति सुबह अपने परिवार के साथ अपनी मातृभाषा में वार्त्तालाप करता है तो दोपहर को कार्यालय में वह अभिजात भाषा हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि को व्यवहार में लाता है, मार्ग में आते-जाते समय वह स्थानीय बोली-भाषा का प्रयोग करता है तो अपने माता-पिता या बुजुर्गों से वह अपनी लोक-भाषा में बात करता है व पूजा-पाठ करते समय संस्कृत, उर्दू या फारसी आदि को अपनाता है। इस प्रकार वह एक दिन में पाँच-छह भाषाओं का प्रयोग करता है, लेकिन वह जनगणना में अधिकतम तीन ही भाषाएँ लिखाएगा। इस प्रकार गणना के अनुसार उसके लिए शेष भाषाएँ मृतपाय हो गई हैं, जबकि ऐसा है नहीं।

इसी तरह यदि बुंदेलखंड की किसी शिक्षित लड़की का विवाह किसी मथुरावासी से हो जाए और वह संस्कृत व अंग्रेजी की भी जानकार है, तो वह लड़की जनगणना में बुंदेली, ब्रज, हिंदी व संस्कृत आदि में से कोई भी तीन भाषाएँ ही लिखवाएगी, जबकि वह चार-पाँच बोली-भाषाओं को जानती है, लेकिन जनगणना के अनुसार उसके लिए अन्य दो-तीन भाषाएँ मृतप्राय ही हुईं।

अतः भाषा के मामले में केवल जनगणना के आधार पर ही कोई निष्कर्ष निकाल देना उपयुक्त नहीं है। भाषायी विशेषज्ञों को चाहिए कि वे भाषाओं के साहित्य, लोक-साहित्य, शिक्षा व बोली-भाषाओं के प्रचलन एवं अप्रचलन के आधार पर विस्तृत अध्ययन कर ही निष्कर्ष निकाला करें, अन्यथा इससे भाषायी भ्रामक स्थिति बनेगी।

(संदर्भ : भारतीय जनगणना-२०११ एवं यूनेस्को प्रतिवेदन)

साअ

उप-निदेशक (राजभाषा),
केंद्रीय मत्स्यिकी शिक्षा संस्थान,
पंच मार्ग, यारी रोड, वरसोवा, मुंबई-४०००६१
दूरभाष : ९८६९११६७८४

आलसी सूरज

मूल : **राजगोपालाचारी**

अनुवाद : **एस. भाग्यम शर्मा**

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी अपने अद्‌भुत और प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण 'राजाजी' के नाम से जाने जाते हैं। वे एक सफल वकील, लेखक, राजनीतिज्ञ और साथ ही दार्शनिक भी थे। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे। इसके अलावा वे प्रसिद्ध महान् स्वतंत्रता सेनानी, समाज-सुधारक, गांधीवादी राजनीतिज्ञ तो थे ही, उनको आधुनिक भारत के इतिहास का 'चाणक्य' भी माना जाता है। १९५४ में उनको 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। 'चक्रवर्ती थारोमगम' उनकी पुस्तक पर उन्हें साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। उन्होंने तमिल भाषा में बच्चों के लिए बहुत सी रचनाएँ तैयार कीं। उनकी लिखी छोटी-छोटी सभी कहानियाँ नैतिक शिक्षा की सीख देती हैं। उनके द्वारा रचित प्रस्तुत इस कहानी में गूढ रहस्य भी छिपा हुआ है।

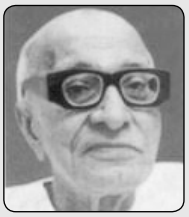

''अरे, बाप रे! बहुत हुआ ये धंधा।'' मक्खी बोली।

''तुमको क्या इतना कष्ट हुआ?'' मंदवेली (एक जगह का नाम) की जमीन को नोचते हुए मुरगे ने पूछा।

''बंदरगाह से मैलापुर तक बोरियों से लदी हुई गाड़ी को चलाकर आओ तो तुम्हें पता चले।'' मक्खी ने जवाब दिया।

''कौन सी बोरियाँ? कौन सी गाड़ी को तुमने खींचा? मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है?'' मुरगे ने कहा।

''तुम्हें कैसे पता चलेगा? जमीन को खोदकर कीड़े-मकोड़े, गिरे हुए चावल आदि को खानेवाले जीव हो तुम। तुम्हें इसके बारे में क्या पता है? मैं आज एक आदमी की पीठ पर बैठी, फिर उसकी गाड़ी को खींच-खींचकर यहाँ लाकर छोड़ा। इस थकावट को तुमसे कहने का क्या फायदा?'' मक्खी बोली।

''तुममें इतनी शक्ति कहाँ से आई? गाड़ी तो बहुत भारी होती है न?'' मुरगे ने पूछा।

''ताकत तो अंदर से काम करने की इच्छा व जोश जिसमें हो, उसमें होती है। रास्ते में खाने के सामान की अनेक दुकानें थीं। दुकानों में टँगे केले खूब पककर खराब हो रहे थे। सोचा, उधर खड़ी हो जाऊँ। बार-बार मेरी इच्छा हुई, पर बेचारा आदमी! वह गाड़ी कैसे खींचेगा? सोचकर, दया करके मैं खानेवाली जगह की किसी दुकान पर नहीं रुकी।'' मक्खी बोलती गई।

''तुम्हारा जीवन धन्य है। मेरी भी इच्छा है कि अच्छा बनकर रहूँ, ऐसा सोचता तो हूँ, पर होता नहीं है। क्योंकि इन कीड़े-मकोड़ों के स्वाद को मैं भूल ही नहीं पाता।'' मुरगा बोला।

''यह अच्छे लोगों का जमाना है नहीं। मनुष्य लोग दवाई डाल-डाल कर हमें मार रहे हैं। हमने क्या किया? ये मनुष्य पता नहीं क्यों इतना गुस्सा होकर, आवेश में आकर हमारे नाम पर युद्ध कर रहे हैं।'' मक्खी बोली।

''कोई बीमारी के कीटाणु को देख-डरकर ऐसा कर रहे हैं वे, कीटाणु तुम्हारे पैरों में व तुम्हारे नाक पर चिपककर मनुष्य के शरीर में व खून में चला जाता है, ऐसा मनुष्य कह रहा है।'' मुरगे ने जवाब दिया।

''उसके लिए हम क्या करें, क्या हम तालाब में जाकर अच्छी तरह नहाकर फिर लोगों पर बैठें क्या? हम स्नान करने को बैठ सकते क्या? स्नान करते ही हम मर जाएँगे।'' मक्खी बोली।

''सच है।'' बड़े दुख से बोला मुरगा। मक्खी बोलने लगी, ''कचरे के बरतन को भी अब ढकना शुरू कर दिया। पर कुछ पुण्यात्मा औरतें कचरे के बरतन को खोल कचरा डालकर ढके बिना ही छोड़ देती हैं। हमारे ऊपर इन कुछ माताओं की तो कुछ दया है।''

मुरगे को नींद आने लगी।

''ठीक है! मुझे सोना है, नहीं तो सुबह जल्दी उठकर सूरज को जगा नहीं सकता। मैं चिल्लाकर बाँग न दूँ तो आलसी सूरज सोता ही रहेगा, जागेगा ही नहीं।'' मुरगे ने कहा।

उस समय चंद्रमा धीरे से पूरब में निकला। मुरगे व मक्खी की बातों को सुनकर मन-ही-मन हँसा। उसने सोचा, 'मेरे लिए तो कोई मुरगा नहीं बोला। मैं अपने आप उठ गया।' परंतु आज उसे ग्रहण डस लेगा, उसे यह पता ही नहीं था।

साअ

बी-४१, सेठी कॉलोनी
जयपुर-३०२००४
दूरभाष : ०९३५१६४६३८५

कोई बात तो है

• श्रीराम परिहार

महाकवि वेदव्यास महाभारत में लिखते हैं—यत्र भारते, तत्र भारते। अर्थात् जो महाभारत में नहीं है, वह भारतवर्ष में नहीं है। जो भारत में है, वह सर्वत्र है। भारतीय राष्ट्रीयता का बोध और उसके सांस्कृतिक चिंतन का पाठ इससे प्राप्त होता है। राष्ट्र क्या है? उसकी संस्कृति क्या है? वस्तुत: ये दोनों मिलकर संपूर्ण विश्व में अपनी पहचान स्थापित करते हैं। अन्यथा छह अरब की दुनिया की भीड़ में गुम हो जाने के सिवाय क्या है? राष्ट्र का निजत्व होता है। गुणधर्म होता है। उसकी पहचान, आकृति, अस्मिता और स्वरूप होता है। भारतीय राष्ट्रीयता के लिए वंदेमातरम् का उद्घोष अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आदि शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की विराट् दृष्टि ने ही तो आनेवाली पीढ़ियों को चमत्कृत कर दिशा दी। स्वतंत्रता संग्राम की ताकत हमारे पूर्वजों से मिली है। इसमें साहित्य की भूमिका अन्यतम रही है। सत्य एक है। विद्वानों और मनीषियों ने उसे अपने-अपने ढंग से अभिव्यक्त किया है।

एकं सद् विप्रा: बहुधा वदन्ति।

भारतीय साहित्य में मनुष्य को श्रेष्ठ माना है। हमारे ऋषि कहते हैं—धरती पर मनुष्य से श्रेष्ठ कोई नहीं है। मनुष्यता की सार्थकता त्याग की प्रवृत्ति में है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का बोध यही मार्ग प्रशस्त करता है। जैसा मेरा आत्मतत्त्व है, वैसा ही सृष्टि के प्रत्येक प्राणी—चींटी से लेकर मनुष्य तक में वह आत्मतत्त्व है। चराचर जगत् का अस्तित्व उसकी 'अस्ति' में स्वीकार करने की भारतीय परंपरा रही है। प्रकृति से मानव ने बहुत कुछ सीखा है। हमारे साहित्य ने प्रकृति के उदात्त रूप की पहचान की है। एक चिड़िया दूसरी चिड़िया के घोंसले का तिनका नहीं लेती है। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते हैं। नदियाँ अपना जल स्वयं नहीं पीती हैं। यह प्रकृति की सहज प्रवृत्ति है। मनुष्य को भी उसी के अनुरूप आचरण करना चाहिए। यह प्रकृति धर्म के साथ ही सृष्टि धर्म भी है। धर्म के दस लक्षण निर्देशित करते हुए कहा गया है—

धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं शौचम् इन्द्रयनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यम् अक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

हमारे मनीषियों ने अपने साहित्य में इन प्रश्नों पर विचार किया कि चिड़िया शाम को पुन: अपने घोंसले में लौटकर क्यों आती है? संतरों में रस भरनेवाला कौन है? नदी के जल में तृप्ति कौन भरता है? तितली के पंखों पर रँगोली कौन मांड गया है? धान की बालियों में दूधिया रस कौन भर गया है? कली को पुष्प किसने बना दिया है? सूरज की किरणों में ताप किसने भरा है? चाँदनी में शीतलता कौन घोल गया है? आशय यह है कि प्रकृति भी मनुष्य की जीवन-साधना की पूरक है। यह जीवन एक साधन है। इसके माध्यम से मनुष्य मोक्ष के द्वार तक पहुँच सकता है। हमारे ऋषियों ने अपने समकाल में इन विषयों पर चिंतन कर अपने सृष्टिहितकारी निष्कर्ष संस्कृति और साहित्य में रूपायित किए हैं। विष्णु पुराण में वर्णन है—

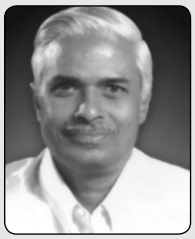

जाने-माने साहित्यकार। आठ ललित निबंध संग्रह, एक नवगीत, एक संत-साहित्य आदि पुस्तकें प्रकाशित तथा पत्रिका 'अक्षत' का संपादन। 'बागीश्वरी पुरस्कार', 'सृजन सम्मान', 'श्रेष्ठ कला आचार्य सम्मान', 'निर्मल पुरस्कार', 'राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान', 'ईसुरी पुरस्कार', 'दुष्यंत कुमार राष्ट्रीय अलंकरण' सहित अनेक सम्मान प्राप्त।

समुद्रस्योत्तरे भागे, हिमाद्रेश्चैव दक्षिणे।
वर्षे तद भारतं नाम, भारतीयत्रसन्तति:॥

समुद्र के उत्तरभाव एवं हिमालय के दक्षिण में बसे भू-भाग एवं संस्कृति क्षेत्र का नाम भारतवर्ष है। उसकी संतति या प्रजा भारतीय है। वेद में भारतभूमि की वंदना की गई है। उसे माता की गरिमा से विभूषित किया गया है। ऋषि प्रार्थना करता है, 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:।' यह सब अपनी पीढ़ी को बताया जाना चाहिए। महाकवि कालीदास 'कुारसंभवम्' के प्रथम स्वर्ग के प्रथम श्लोक में भारत के सिर पर सजे हिमालय को पृथ्वी का मानदंड कहते हुए भारतराष्ट्र की वंदना करते हैं—

अस्त्युश्रस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थित: पृथिव्या इव मानदण्ड:॥

हमारे मनीषियों ने कामना की है कि हम कल्याण मार्ग के पथिक हों, 'स्वस्ति पन्थामनुचरेम।' विचारणी है कि वेदों से लेकर उपनिषदों, पुराणों और महाकवियों को इस भारतवर्ष की कल्याणकारी चिंतन संपदा में जड़-चेतन हितकारी तत्त्वों का अवश्य अनुभव-दर्शन हुआ होगा। तब ही तो वे अपने अनुभवों को शब्द-शब्द अर्थों में अभिव्यक्त कर सकते हैं। महात्मा गांधी ने कहा था—भारत में चाहे अंग्रेज रह जाएँ, पर अंग्रेजियत चली जाए। दुर्भाग्य से अंग्रेजियत रह गई है। १५ फरवरी, १९२० मैकाले ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा की नींव रखी। उसने भारत से ब्रिटेन जाकर ब्रिटेन की संसद् में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि मुझे पूरे भारतवर्ष में एक भी भिखारी नहीं दिखाई दिया। जर्मनी का विद्वान् सॉपेनहावर कहता है—''मुझे अपने जीवन में शांति भारतीय उपनिषदों से प्राप्त हुई है। मृत्यु के बाद भी परमशांति मुझे उपनिषदों से ही प्राप्त होगी। मुझे अगला जीवन भारत में मिले, ताकि मैं उपनिषदों का और गहराई से अध्ययन कर सकूँ।'' आवश्यकता है कि भारतवर्ष के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भारतवर्ष

की सांस्कृतिक विरासत, ग्राम्यजीवन की सहजता, लोकजीवन में व्याप्त वैज्ञानिकता को भी स्थान मिलना चाहिए, अन्यथा हम अपने अतीत को कैसे याद रख पाएँगे ?

स्वतंत्रता के बाद हमने अपने गाँवों को पिछड़ा घोषित कर दिया। उनकी ज्ञान-परंपरा की अवहेलना और तिरष्कार किया, जबकि वास्तविकता यह है कि हमारे गाँवों के पास सदियों से मिट्टी से संबंधित ज्ञान है। वर्षा का पूर्वानुमान करना आता है। कम पानी में फसल लेने की तकनीक का उनके पास अनुभव है। पक्षियों की आवाज से और जीवों तथा पशुओं की क्रियाओं को देखकर भूकंप या प्राकृतिक आपदा का उन्हें आभास हो जाता है। पशुओं की वाणी से उनकी बात समझ लेते हैं। १९४७ के बाद हमारे देश की प्रकृति, आकृति, खगोल, भूगोल सबकी उपेक्षा की जाती रही है। परिणाम में भारत गुम हो गया है। इंडिया आ गया है। विश्व की दौड़ में हम भारत बनकर जाएँ या भीड़ बनकर ? यह अब भी तय कर लें। अभी भी समय है। जब जागो, तब सवेरा।

यजुर्वेद में कहा गया है कि हम राष्ट्र के पुरोहित हैं—वयं राष्ट्रे, जागृताम् पुरोहिता: । हम भोग में भी त्याग का आचरण करते हैं। विश्व के प्राणी सुखी हों, ऐसी उदात्त भावना हमारे पास है। हम प्रकृति के सहचर हैं। प्रकृति से रस ग्रहण कर जीवन को गति प्रदान करते हैं। पश्चिम की दृष्टि मनुष्य का प्रकृति पर आधिपत्य जमाने की है। यह भोग दृष्टि है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का ज्ञान हमें हमारे साहित्य ने करवाया है। राम, कृष्ण, वाल्मीकि, वेदव्यास का व्यक्तित्व हमें साहित्य की देन है। शरीर नश्वर है। कर्म ही जीवन है। आत्मा का विस्तार ही मानुषभाव है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की क्रियात्मक परिणति और प्राप्ति जीवन का परम लक्ष्य है। ज्ञान, इच्छा और क्रिया का समन्वय इस लक्ष्य की प्राप्ति में परम सहायक हैं। यह सब हमारे साहित्य में लिखा गया है। समय-समय पर मनीषियों चिंतकों ने भी भारतवर्ष को अनुकूल दिशा-दर्शन किया है। आदि शंकराचार्य ने बारह वर्ष की उम्र में वेदांत का अध्ययन कर सोलह वर्ष की उम्र में ब्रह्मसूत्र, उपनिषदों और श्रीमद्भगवद् गीता के आधार पर प्रस्थानत्रयी का प्रवर्तन किया। वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना तो की ही, भारत की अखंडता को भी सुदृढ़ किया है।

हमारी परंपरा से विकसित साहित्य ही इस देश का अपना साहित्य कहलाएगा। आयातित ज्ञान के बल पर हम खड़े नहीं हो सकते हैं। ज्ञान का आयात हो, परंतु विवेक के साथ हो। सत्साहित्य की रचना होनी चाहिए। कई बार ऐसी रचनाएँ, जिन्हें साहित्य की संज्ञा दी जाती है; उन्हें अपने शयनकक्ष में भी पढ़ने में शर्म आती है। साहित्यकार चर्चा में रहना चाहते हैं या राष्ट्र को समृद्ध करना चाहते हैं ? यह गंभीरता से विचारणीय है कि वीणापाणि के मंदिर में बाँसुरी बजाएँ या कानफाड़ू डी.जे. बजाकर नग्नता का प्रदर्शन करें। मेरे देश ने अपने लोगों को कपड़े पहनाने में दस हजार वर्षों का समय लगाया है। बॉलीवुड ने मात्र दस सालों में हमारी पीढ़ियों को प्राय: नंगा कर दिया है।

आचार्य नरेंद्र देव कहते हैं—संस्कृति मनुष्य के चित्त की खेती है। हजारीप्रसाद द्ववेदी ने संस्कृति को मनुष्य के चिंतन की उपज कहा है। हमारी दृष्टि में सम्यक् कृति ही संस्कृति है। हमारे कार्यों से अपने हित के साथ ही दूसरे का भी हित हो, यही संस्कृति है। संस्कृत साहित्य और संत साहित्य ने यही तो दिया है। हमारा चिंतन मात्र देह तक सीमित नहीं है। स्थूल जगत् से परे हम यह विचार करते हैं कि मैं कौन हूँ ? हमारा प्रत्यभिज्ञा दर्शन स्वयं की पहचान पर बल देता है। हम आत्मतत्त्व की खोज में लगे रहे हैं। मृत्यु के बाद शरीर को भूख नहीं लगती है। मृत शरीर को जलाने या गाढ़ने से कुछ अंतर नहीं पड़ता है। आखिर हृदय की धड़कन कैसे बंद हो जाती है ? हमारी साँसों का हिसाब कौन रखता है ? इन प्रश्नों के उत्तर हम अनंत काल से खोजते आ रहे हैं।

आज हम पश्चिम विचारकों की दृष्टि से भारतीय संस्कृति को देखने-परखने की कुचेष्टा कर रहे हैं। यह ठीक वैसे ही है, जैसे मीटर से दूध और लीटर से कपड़ा मापा जाए। इस देश की जलवायु, प्रकृति, रीति-रिवाज, परंपरा सब पश्चिम से भिन्न है। दूसरे की संस्कृति से अपनी संस्कृति की पारख-परख कैसे की जा सकती है ? वाल्मीकि के करुणा-काव्य से सृष्टि की महान् रचना रामायण का जन्म होता है। हमारे यहाँ गाँव में मृत्यु होने पर चूल्हा तक नहीं जलता है। बेटी की विदाई में ग्रामवासी आँसू बहाते हैं। यह विराटबोध और आत्मप्रसार ही तो हमारी संपत्ति है।

स्वामी विवेकानंद ने तीस वर्ष की उम्र में अपने ज्ञान से दुनिया को चमत्कृत कर दिया है। उन्होंने बारह सौ वर्षों बाद आदि शंकराचार्य की परंपरा को संवाहित किया है। यह भी स्पष्ट किया है कि मनुष्य ही श्रेष्ठ है। मनुष्य का अस्तित्व मानवता की पराकाष्ठा तक पहुँचने में है। उसका लक्ष्य आत्मतत्त्व को पहचानना है। राष्ट्रदेवता की आराधना करते हुए ही इस लक्ष्य को प्राप्त करना श्रेयष्कर है।

पश्चिम के विज्ञान और पूर्व के ज्ञान के समन्वय पर बल देनेवाला स्वामी विवेकानंद का व्याख्यान भारत को दुनिया में सिरमौर बनाता है। १९१३ में विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर को उनकी अनुपम कृति 'गीतांजलि' पर नोबेल पुरस्कार मिलता है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारतभारती' राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में जनचेतना जाग्रत् करती है। १९१६ में चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी उस शाश्वत वचन को प्रमाणित करती है, जिसमें कहा गया है, 'रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाय पर वचन न जाई।' 'साकेत' का यह कथन भी विचारणीय है, 'संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया, इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।' 'साकेत' एक विमाता को सम्मान दिलानेवाला महाकाव्य है। यह साहित्य समकाल में लिखा गया है, जो हमारी परंपरा से प्रभावित और प्रमाणित है। निराला की अमर कविता 'राम की शक्ति पूजा' भी अपने अंदर रामत्व को जगाने का प्रयास है। 'कामायनी' बीसवीं शताब्दी का ऐसा महाकाव्य है, जो मानव विकास की शाश्वत यात्रा को शब्दायित करता है। दिनकर, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, निर्मल वर्मा, सबने भारतीय परंपरा को आगे बढ़ाया है। इनको साहित्य के सूत्र वैदिक ऋषियों से प्राप्त हुए हैं। राष्ट्र को सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत बनाने में साहित्य का योगदान अतुल्य है।

साअ

आजाद नगर
खंडवा-४५०००१ (म.प्र.)
दूरभाष : ९४२५३४२७४८

गिरगिटी चेहरे

• मंजुश्री

रात का दूसरा पहर खत्म होने को आया है। नीचे गली में वाचमैन के डंडे की खटखट और सड़क के कुत्तों का बीच-बीच में भौंकना सुनाई दे रहा है, पर मैं बिस्तर पर इधर-उधर उलट-पुलट रहा हूँ। नींद कोसों दूर है। कई दिनों से एक अजब सी बेचैनी घेरे हुए है। कहीं कुछ भी अच्छा नहीं लगता। घर में तो बिल्कुल ही मन नहीं लगता, अजीब दमघोंटू माहौल रहता है। एक-दूसरे से नजरें चुराते हुए। न जाने क्या-क्या दिमाग में चलता रहता है। जब घर से बाहर रहता हूँ तो बस थोड़ा अच्छा लगता है। पर करूँ भी तो क्या? सब यार-दोस्त मेरी तरह बेकार तो बैठे नहीं हैं! जाने क्या सोचता रहता हूँ। तीस साल का होने आया, कहीं ढंग की नौकरी नहीं मिल रही है। मन में कहीं समाज के प्रति विद्रोह घर कर गया है। सब बाइस्कोप सा‘‘बस हैंडल घुमाओ और सामने वही चेहरे! उन्हीं चेहरों पर अलग-अलग मौकों पर अलग-अलग मुखौटे लग जाते हैं और मुखौटे लगते ही व्यवहार भी उसी के अनुसार बदल जाते हैं। कमरे के उड़के दरवाजे से देखा कि सब गहरी नींद में सो रहे हैं, बिना खटका किए धीरे से उठकर पानी पिया और दोबारा सोने की कोशिश करने लगा। रात के सन्नाटे में सबके खर्राटे और साँसें कुछ अधिक जोर से सुनाई दे रही हैं। बिस्तर पर लेटे-लेटे झपकी लग गई और जब आँख खुली तो साढ़े पाँच बजे थे। अभी कोई और जागा नहीं है। शायद अम्माँ बाथरूम में हैं, पानी चलने की हल्की आवाज आ रही है।

धीरे से उठकर छत पर आ गया। मार्च का महीना है, गरम नहीं है। अभी सूरज तो नहीं निकला है, पर सुदूर क्षितिज पर हल्की पीली लाल लकीर दिख रही है। आकाश में उड़ते पक्षियों के झुंड की छाया उस हल्की सिंदूरी रोशनी में बहुत सुंदर लग रही है। बस सुबह हुआ ही चाहती है। छत पर बहुत अच्छा लग रहा है। हल्की हवा भी चल रही है। कितनी शांति है सुबह-सुबह, यही समय होता है जब अपने मन की सुनी जा सकती है। अभी थोड़ी ही देर में चारों तरफ हलचल और शोर-शराबा सुनाई देने लगेगा। इतनी सुबह नीचे सड़क पर रज्जू दूधवाला अपनी साइकिल पर दूध के बड़े-बड़े थैले लटकाए घर-घर दूध बाँट रहा है। सामने की छत पर गंगा चाची नहा-धोकर तुलसी की पूजा कर रही हैं, जाप करते-करते उन्होंने थोड़े से चावल छत की मुँड़ेर पर डाल दिए, जिन पर न जाने कहाँ से आठ-दस गौरैया दाना चुगते चहचहाने लगीं। मेरा मन थोड़ा हल्का हुआ। दरअसल आज साढ़े ग्यारह बजे मुझे नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाना है। शायद उसी का तनाव है। पिछले

सुपरिचित लेखिका। ‘जागती आँखों का सपना’ कहानी-संग्रह तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी बंबई से भी कविताओं का प्रसारण। कुछ कहानियाँ मराठी में अनूदित। विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा द्वारा ‘विश्व हिंदी साहित्यरथी सम्मान’ एवं ‘ग्लोबल साहित्यश्री सम्मान’ से विभूषित।

दो-तीन सालों में न जाने कितनी नौकरियाँ कीं और छोड़ीं, कहीं कुछ जम ही नहीं रहा है। इसको लेकर घर में भी काफी टेंशन रहता है। कहीं मन माफिक कुछ मिलता ही नहीं। हाल-फिलहाल एक प्राइवेट फर्म में क्लर्की कर रहा हूँ। सोचा, जब तक और कुछ नहीं, यही सही, कुछ तो अपना खर्च निकलेगा। पिताजी तो कुछ नहीं बोले, पर भैया को लगा कि उनकी नाक कट गई है, उनका भाई एक मामूली क्लर्क! पर मुझे उनका चेहरा देखकर पहली बार एक क्रूर आत्मिक संतोष मिला। उन्हें चोट पहुँचा पाने का सुख। आखिर सब उन्हें ही क्यों प्राप्त हो? बड़े हैं तो क्या हुआ, सब अधिकार उन्हें ही क्यों? और हाँ, अब जब मेरे पास कुछ समय भी है तो मैं लोगों का चेहरा भी पढ़ने लगा हूँ, इसमें मुझे आनंद आने लगा है।

दो-तीन महीने पहले जब मैंने भैया से अपनी नौकरी के लिए कहीं सिफारिश करने के लिए कहा तो फटाक् से जवाब मिला—

‘‘मैं किसी की सिफारिश के पक्ष में नहीं हूँ। अपने गुणों के बलबूते पर ही आदमी को आगे बढ़ना चाहिए।’’ और चेहरे पर अकड़ के साथ गरदन सीधी हो गई।

मैं भी भरा बैठा था। मैंने भी तिलमिलाकर जुमला दाग दिया—

‘‘क्यों, अपने दिन भूल गए क्या? बाबू की सिफारिश पर ही तो तुम्हें यह नौकरी मिली है या अपने गुणों पर?’’

भैया की अकड़ एकदम हवा हो गई और चेहरा गुस्से से एकदम लाल हो गया, जैसे मैंने उनके मुँह पर तमाचा मार दिया हो। अम्माँ बाबू भी गुस्सा गए थे।

‘‘बड़े भाई से इस तरह बात की जाती है?’’

हालाँकि मैं भी अपनी नौकरी से खुश नहीं था और दूसरी नौकरी की तलाश भी जारी है पर उस समय उन्हें चोट पहुँचाकर बहुत अच्छा लगा। ऐसा भी क्या? उनके चेहरे के चढ़ते-उतरते रंग देखते ही बनते

थे। लोग पता नहीं क्यों, अपना समय भूल जाते हैं। स्टेशन पर खड़े सभी लोग बड़ी उतावली से ट्रेन के आने का इंतजार कर रहे होते हैं, पर एक बार खुद सवार होने के बाद चाहते हैं कि अब ट्रेन और किसी स्टेशन पर न रुके, बस भागती चली जाए उनके गंतव्य की ओर। स्टेशनों पर खड़े दूसरे यात्रियों की अब उन्हें क्या परवाह!

शायद मेरे अंदर छिपी तल्खियाँ रंग दिखाने लगी हैं। सोचता हूँ, जब मैं खुश नहीं तो बाकी भी खुश क्यों रहें। उन्हें वह सब क्यों मिले, जो मुझे नहीं मिला। बड़ा अच्छा लगा कि भैया मेरी नौकरी से खुश नहीं हैं और उन्हें मेरी क्लर्की से शर्म आती है। अब मुझे उनका चेहरा पढ़ने में मजा आने लगा है। होंगे अपने ऑफिस में बड़े अफसर! घर में तो मेरे भाई ही हैं, उन्हें मेरी मनोदशा का भान होना चाहिए और मुझे दिलासा देना चाहिए। पर वे तो अब बाबू के लिए भी सतीश न रहकर सतीश बेटा हो गए हैं।

नीचे से खटपट ही आवाज आने लगी है और सूरज भी निकल आया है। सोच रहा हूँ, जरा जल्दी निकल जाऊँ घर से। थोड़ी देर कहीं बाहर खुली हवा में बैठूँगा और वहीं से इंटरव्यू के लिए निकल जाऊँगा। थोड़ा मन स्थिर हो जाएगा। नीचे आकर तुरंत बाथरूम में घुस गया, जबकि मुझे मालूम है कि भैया को ऑफिस के लिए देर हो जाएगी, फिर भी काफी देर तक यों ही बाथरूम में घुसा रहा। भैया जोर-जोर से बाथरूम का दरवाजा भड़भड़ाए जा रहे थे। जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, मेरी तरफ गुस्से और खीझ से देखकर भुनभुनाते हुए बाथरूम में घुस गए। बाथरूम में घुसने का उनका यही समय होता है। बाकी सब लोग उनके काफी पहले या बाद में बाथरूम का प्रयोग करते हैं। अम्माँ अलग पनीली, निरीह आँखों से मुझे देखकर सिर हिला रही हैं बे-वजह सुबह-सुबह रार फैलाने के लिए उलाहना देती सी। मानो मुझसे कोई बड़ा अपराध हो गया हो और वे मेरी तरफ से उसके लिए क्षमाप्रार्थी हों।

भाभी किचन में खटर-पटर कर रही थीं। वैसे अम्माँ सुबह जल्दी उठकर सब काम निपटा लेती हैं, पर भैया के ऑफिस जाने के समय भाभी जरूर किचन में घुसकर व्यस्तता भरी जिम्मेदारी या नकाब पहन लेती हैं, जैसे भैया यह सब जानते न हों। पता नहीं क्यों, आज मुझे कुछ अलग-सा लग रहा है। शायद सुबह-सुबह भैया को खीझते हुए देखकर मजा आ रहा है! मुझे ठाठ से मेज पर बैठकर नाश्ता करते देखकर उनकी झल्लाहट और बढ़ गई। मैं भी तो कम नहीं हूँ, आराम से पेपर देखते हुए नाश्ता कर रहा हूँ। तभी पता नहीं मुझे क्या सूझा कि मैंने तुरंत उनकी प्लेट में रखा आलू का गरम पराँठा उठाकर अपनी प्लेट का ठंडा पराँठा उनकी प्लेट में रखते हुए कहा, ''अरे! आपको देर हो रही है, गरम पराँठा कैसे खा पाएँगे?''

तुरंत भैया की कनपटी फड़कने लगी। एक तो सुबह से वैसे ही लाल-पीले हो रहे थे और अब यह··! चेहरा देखकर लग रहा था कि अभी फर्राटेदार दो-चार अंग्रेजी गालियाँ बकेंगे, पर बोलते-बोलते रुक गए। उनके चेहरे पर तमाम भाव आए-गए और अपनी प्लेट सरकाकर तुरंत उठ खड़े हुए और बिना नाश्ता किए निकल गए। भाभी अलग बड़बड़ाते हुए किचन में बरतन पटकने लगीं। मैं उनके पीछे-पीछे किचन में घुसा और काउंटर पर रखे पूरे भरे गिलास का दूध गटागट पी गया, जो शायद भैया के लिए रखा था। कब बाबू का दूध का पूरा गिलास आधा हुआ और अम्माँ का पूरा गायब, मालूम नहीं। भाभी का गोल आँखोंवाला भौचक चेहरा देखकर असीम आनंद आया।

''आज तो ये बिना नाश्ता किए ही चले गए।''

''तो ऐसा कौन सा पहाड़ टूट पड़ा? कर लेंगे कहीं बाहर।'' बोलकर शाम को वापस आने की कहकर अपना बैग उठाकर मैं बाहर आ गया।

और कोई दिन होता तो शायद मुझे भी बुरा लगता सुबह-सुबह पंगा लेना। सामान्य रूप से मैं भैया के जाने से बाद ही तैयार होता हूँ, पर न जाने क्यों, मुझे आज कुछ विशेष आनंद आ रहा है। लोगों के चेहरों पर चस्पा हुई नाटकीयता देखने का सुख कभी सोचा नहीं था कि दो आँख, दो कान, एक नाक, एक मुँहवाले साधारण से दिखनेवाले चेहरों पर गिरगिट की तरह इतने रंग चढ़ और उतर सकते हैं और वह भी इतनी तेजी से! हो सकता है कि पहले मैंने कभी नोट ही न किया हो, क्योंकि यह कोई अचानक तो हुआ नहीं है। और अब तो जाने-अनजाने मैं हर आने-जाने और मिलनेवाले का चेहरा पढ़ने की कोशिश करने लगा हूँ, पिछले कई दिनों से इसी में लगा हूँ।

हाथ में बैग थामे मैं कुर्ला रेलवे स्टेशन के एक और पाँच नंबर के प्लेटफॉर्म को जोड़नेवाले पुल पर रेलिंग के सहारे खड़े होकर आते-जाते लोगों को देखने लगा। अभी मेरे पास लगभग एक-डेढ़ घंटे का समय है। ऑफिस और स्कूल-कॉलेज जाने का समय है, लोग मक्खियों की तरह भिनभिनाते हुए ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर सीढ़ियाँ चढ़-उतर रहे हैं। दीन-दुनिया से बेखबर बचते-बचाते, कुछ मोबाइल पर नजरें गड़ाए तो कुछ लोकल पकड़ने की जल्दी में, किसी को किसी की परवाह नहीं है। सब यंत्र चालित से अपने में मगन दौड़ते-हाँफते, गिरते-पड़ते, जवान-बूढ़े, औरत-मर्द, काले-गोरे, छोटे-बड़े, लंबे-नाटे, क्या नजारा है! दुनिया का बनता-बिगड़ता रंग-बिरंगा सुंदर कोलाज! लगता है, केवल मुझे छोड़कर सभी किसी-न-किसी काम में व्यस्त हैं, यह भी एक अलग अनुभव है।

अरे यह क्या! यह व्यक्ति घुटने के बल कैसे चलने लगा? अभी तो यह सीधा खड़ा होकर सीढ़ियाँ चढ़ रहा था! देखते-ही-देखते ढीला-ढाला कुरता-पाजामा पहने वह व्यक्ति पुल के एक कोने में ढीले पाजामे में अपने पैर एकदम मोड़कर ऐसे बैठ गया, जैसे उसके दोनों पैर कटे हुए हों। उसने प्लास्टिक के एक थैले से एक फटा कपड़ा निकालकर बिछाया

और टीन का एक टूटा डिब्बा उस पर रखकर खटखटाने लगा। मैंने देखा कि थोड़ी देर पहले के उसके परेशान से चेहरे पर एकाएक याचना भरे सुकून का भाव आ गया। याचना भीख माँगने के लिए और सुकून अपनी निश्चित जगह पा जाने के लिए। पता नहीं औरों ने भी देखा या नहीं, पर थोड़ी देर में ही आते-जाते निर्लिप्त लोगों में से कुछेक लोग उसके डिब्बे में पैसे डालने लगे और अब वह आराम से सुट्टा लगा रहा था। मुझसे रहा न गया, मैं उसके पास पहुँचा।

''अरे भाई! अभी तो आप अच्छे-खासे दोनों पैरों पर सीधे चल रहे थे।'' मुझे देखते ही उसका चेहरा कठोर हो आया—

''धंधे का टैम है, खोटी मत करो। सीधा यहाँ से चलते बनो।'' दबी पर दृढ़ आवाज में उसने मुझे वहाँ से चले जाने का आँख से इशारा किया और फिर देखते-ही-देखते दीन-हीन याचक का मुखौटा दोबारा लगाकर डिब्बा खटखटाने लगा। यह उसका रोज का धंधा है और उसे उसमें किसी तरह की दखलंदाजी पसंद नहीं है। मैं उसकी आँखों और आवाज में छिपी हुई धमकी से सहम गया।

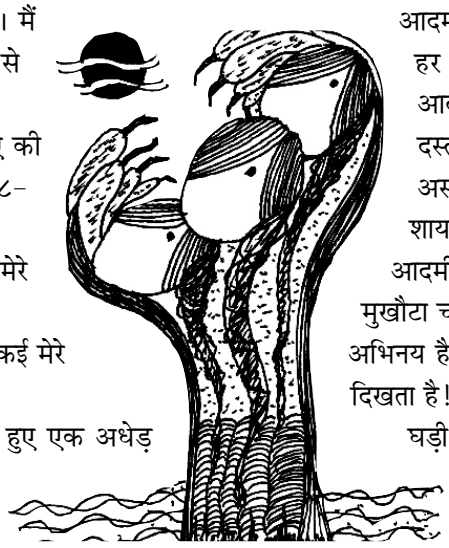

''हलो सर, क्या आपके पास पाँच सौ रुपए की चेंज होगी?'' कंधे पर बैक पैक लादे लगभग १८-१९ साल के एक लड़के ने मुझसे पूछा।

''मुझे कॉलेज के लिए देर हो रही है और मेरे पास चेंज नहीं है, टिकट खरीदना है।''

''नहीं मेरे पास तो नहीं हैं।'' मैंने कहा। वाकई मेरे पास इतने पैसे नहीं थे।

''सर आपके पास!'' तभी वहाँ से गुजरते हुए एक अधेड़ से व्यक्ति से उस लड़के ने पूछा। वह व्यक्ति अपनी ही धुन में कुछ सोचता हुआ चला जा रहा था। होगा यही कोई पचास-पचपन साल का। परिस्थितियों का मारा लग रहा था। कंधे झुके हुए, थका-हारा पसीने से लथपथ, टूटा हुआ-सा। उसका चेहरा देखकर लग रहा था कि कहीं से बहुत मायूस होकर चला आ रहा है, जमाने भर का सताया हुआ।

''हाँ-हाँ, बेटा रुको!'' और वह अपनी जेबें टटोलने लगा।

उसके चेहरे-मोहरे को देखकर न जाने क्यों वह लड़का हिचकिचाकर वहाँ से जाने लगा, पर तब तक उस व्यक्ति ने उसके हाथ से पाँच सौ का नोट लेकर सौ-सौ के पाँच नोट उसको थमा दिए और आगे चल दिया।

सौ-सौ के पाँच नोट देखते ही थोड़ी दूर पर खड़े उसके तीन दोस्त आकर उसके हाथ पर हाथ मारकर हँसते हुए बोले, ''वाह यार! मान गए तुझको। तूने तो बाजी मार ली, नकली नोट चला ही दिया। चल अब तो पार्टी बनती है!'' और जोर-जोर से हँसने लगे।

पर बैक पैकवाले लड़के के चेहरे पर खुशी की जगह पछतावे का भाव आ गया था और वह बेचैन हो गया। शायद वह इस तरह की धोखाधड़ी करने का अभी आदी नहीं हुआ था, उसमें अभी कुछ जमीर बाकी था। या शायद उस अधेड़ आदमी के चेहरे पर पसरी उदासी और निरीहता ने उसे विचलित कर दिया था। वह उस आदमी को पकड़ने के लिए मुड़ा, पर उसके दोस्तों ने उसे रोक लिया।

''पागल हुआ है क्या? पकड़े गए तो मालूम है क्या होगा! चलो भागो यहाँ से, किसी और ने तो नहीं देखा?''

उनके चेहरों की खुशी हवा हो गई थी, उसकी जगह डर छा गया था।

''नहीं तो, देखा तो नहीं है किसी ने, पर यार, उस आदमी···।'' उस लड़के ने कहा, तभी उसकी नजर मुझसे मिली और वे सब तुरंत वहाँ से रफूचक्कर हो गए।

मेरे लिए यह सबकुछ नया तो नहीं, पर रोमांचक अवश्य था। कितने कम समय में कितनी तेजी और चालाकी से चेहरों के बदलते रंग आदमी के भीतर छिपे दोगलेपन को उजागर कर गए। हर कोई एक मुखौटा पहने हुए है, जिसके पीछे छिपे आदमी को पहचानना कितना मुश्किल है। मौका और दस्तूर देखकर आदमी चेहरे पर नकाब ओढ़ लेता है। असलियत तो शायद कभी खुलती ही नहीं। इसीलिए शायद कहा गया है कि दुनिया एक रंगमंच है और आदमी समय तथा जरूरत के मुताबिक दर्शक के सामने मुखौटा चढ़ाकर अभिनय करता रहता है। पर अगर यह सब अभिनय है तो फिर असली चेहरा कहाँ और किसके सामने दिखता है!

घड़ी देखी, दस बजनेवाले हैं। इंटरव्यू की जगह पर पहुँचने में लगभग तीस-पैंतीस मिनट लगेंगे। तुरंत लोकल पकड़ी और दिए गए पते पर पहुँच गया। मीडियम साइज की फाइनेंस कंपनी थी। मुझसे पहले वहाँ छह-सात लोग और बैठे थे। रिशेप्सनिस्ट ने बताया कि साहब एक मीटिंग में व्यस्त हैं, पौने घंटे बाद इंटरव्यू शुरू होगा। धीरे-धीरे और भी लोग आ गए। कुल मिलाकर बारह लोग थे, जिसमें तीन लड़कियाँ भी थीं। कमरे में कुरसियाँ काफी सटी-सटी रखी हुई थीं। सब लोग इंतजार करने लगे। दो-तीन लोग बाहर गैलरी में खड़े हो गए।

मैं फिर सबके चेहरे पढ़ने लगा। लगता है, इस कला में महारत हासिल करना चाहता हूँ। पर क्या करूँ, और कोई काम भी तो नहीं है। सामने बैठी रिशेप्सनिस्ट जिस तरह से फोन पर चिपकी थी, ऑफिस का फोन तो कतई नहीं लग रहा था, बीच-बीच में चेहरे पर आती हँसी और शर्म से लग रहा था कि उसके बॉयफ्रेंड का ही फोन है।

तीनों लड़कियों में से एक तो बार-बार पसीना पोंछ रही थी और नाखून काटे जा रही थी। नर्वस टाइप की शायद उसका पहला इंटरव्यू था। बाकी दोनों कभी घड़ी देखतीं तो कभी सामने कमरे के बंद दरवाजे को। उनके चेहरे पर निहायत बोरियत का भाव था। दो-तीन लड़के कोई

किताब पढ़ रहे थे, पढ़ाकू किस्म के, उनके चेहरों पर अजीब परेशानी और टेंशन दिख रही थी। लगता है, उन्हें नौकरी की सख्त जरूरत है। एक-दूसरे को पछाड़कर आगे पहुँच जाने की होड़? कमरे में भीड़ बढ़ जाने के कारण थोड़ी गरमी बढ़ गई थी, हालाँकि ए.सी. चल रहा था। तभी सूट-बूट पहने, टाई लगाए ब्रीफकेस पकड़े एक आदमी परेशान सा हाँफता हुआ अंदर घुसा। इंटरव्यू के लिए आने में उसे देर हो गई थी। पर अभी इंटरव्यू शुरू नहीं हुआ है, जानकर जो भाव उसके चेहरे पर आया, वह माहौल को हल्का बना गया।

मैं बाकी सबसे अलग एक तरफ बैठा सबके चेहरे देखकर उनके बारे में अंदाजा लगाने में व्यस्त हूँ, मानो बस यही मेरा काम हो। पर वाकई यह बहुत दिलचस्प कला है, दूसरों के भीतर झाँकने का नायाब तरीका! और फिर मैं बोर भी नहीं हो रहा हूँ। तभी रिशेप्सनिस्ट ने इंटरव्यू के लिए लोगों को बुलाना शुरू कर दिया। पहले तीन लोग, जल्दी ही वापस बाहर आ गए। उनके बाद उस नाखून काटनेवाली लड़की की बारी थी। वह बहुत नर्वस थी। उसे लगभग पंद्रह-बीस मिनट लगे, पर जब वह बाहर आई तो उसके चेहरे पर इंटरव्यू निपट जाने के साथ-साथ एक हल्केपन का भाव था और खुश भी नजर आ रही थी। लगता है कि उसका इंटरव्यू काफी अच्छा हुआ है। बाकी दोनों लड़कियाँ बड़े तटस्थ भाव से अपनी-अपनी बारी का इंतजार कर रही थीं। कुछ के चेहरों पर उकताहट और मजबूरी का भाव था। नौकरी पानी है तो ठोकरें खानी ही पड़ेगी जैसा! मैं इन सबके चेहरे पढ़ने में इतना मशगूल था कि अपना नाम बुलाए जाने का पता ही नहीं चला। मेरे पास बैठे लड़के के टहोका मारने पर मैं हड़बड़ाकर उठा और कमरे की तरफ बढ़ गया।

कमरे में सामने मेज के उस तरफ तीन लोग बैठे थे। बीच में बैठा गंजा अधेड़ सा आदमी कंपनी का मैनेजर जैसा लग रहा था। बाकी दो कौन थे, पता नहीं। पर न जाने क्यों, उस अधेड़ से व्यक्ति का चेहरा देखते ही मेरा मन उखड़ गया। अजब काँइयाँ धूर्त-सा। एकबारगी एहसास हुआ कि यहाँ कोई इंटरव्यू नहीं है, महज खानापूरी है। शायद पहले ही किसी को नौकरी दी जा चुकी है। उसकी बगल में बैठे उन दोनों लोगों के चेहरों पर बेहद उबाऊ सा भाव था, जैसे जबरदस्ती वहाँ बैठा दिए गए हों।

मैं तुरंत मुड़ा और कमरे से बाहर आ गया।

''हलो!'' पीछे से आवाज सुनाई दी। पर मैं तब तक बिना कुछ बोले बाहर सड़क पर आ गया और चलते-चलते मैकडॉनल्ड्स के बाहर पड़ी हुई बेंच पर बैठकर पूरा दिन खामखा खराब होने पर भुनभुनाने लगा। मैकडॉनल्ड्स के अंदर काफी भीड़ थी। थोड़ी देर यों ही बैठा रहा, फिर इधर-उधर बाजार में घूमते हुए पार्क में बैठ गया। शाम के छह बजे के आसपास घर की ओर निकल पड़ा। इस समय काफी भीड़ थी। ऑफिस का रश था। बसें खचाखच भरी हुईं। कुछ लोग तो बस के दरवाजे से लटके हुए थे। दो-तीन बसें छोड़ने के बाद किसी तरह अगली बस में घुस पाया। गरम साँसों और पसीने की बदबू से सिर चकराने लगा।

इस अंक के चित्रकार

श्री मार्टिन जॉन

शताधिक कविताएँ, लघुकथाएँ पत्र-पत्रिकाओं, वेब मैगजीन, ब्लॉग, फेसबुक समूहों में प्रकाशित। संकलनों में संकलित। आकाशवाणी से प्रसारित। प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत। रेखाचित्र, कविता पोस्टर बनाने में विशेष रुचि। दर्जनों कविता पोस्टर प्रदर्शित। पत्रिकाओं में रेखाचित्र प्रकाशित। लघुकथा संग्रह 'सब खैरियत है' और कविता-संग्रह 'ग्राउंड जीरो से लाइव' प्रकाशित।

संपर्क : अपर बेनियासोल, पोस्ट-आद्रा,
जिला-पुरुलिया, प. बंगाल-७२३१२१
दूरभाष : ०९८००९४०४७७

सबका यही हाल। थके उकताहट से भरे चेहरे, घर पहुँचने की आतुरता! पर हाँ, तीन-चार लड़कियाँ जरूर इस सबसे अलग जोर-जोर से हँसती हुई आपस में चहक-चहककर बतिया रही थीं। उन्हें इस बात की जरा भी परवाह नहीं थी कि बस में सवार लोग उनकी बातें सुन रहे हैं।

घर पहुँचते-पहुँचते साढ़े सात बज गए थे। भैया ऑफिस से वापस आ गए थे। चाय-पानी के साथ टी.वी. चल रहा था। सबकी आँखें मेरे चेहरे पर लग गईं, किसी खबर की उम्मीद में, पर मैं बैग एक तरफ रखकर बिना कुछ बोले तुरंत बाथरूम में घुस गया और शीशे के सामने खड़े होकर अपने चेहरे पर हाथ फिराने लगा तथा तरह-तरह की मुद्राएँ बना-बनाकर अपना चेहरा देखने लगा। ऐसा लग रहा है कि शीशे में दिखने-वाला व्यक्ति कोई और ही है, मुझे अपना चेहरा ही याद नहीं आ रहा है। तभी मुझे सब कुछ अजीब-सी नजरों से देखते हैं। लगता है, मेरे सिर पर दो सींग उग आए हैं। नहीं-नहीं, यह मेरा वहम है, लोगों के चेहरों पर चढ़े मुखौटे देखते-देखते मेरे चेहरे पर भी मुखौटा लग गया है, जिसे मैं जोर-जोर से खींचकर उतारने की कोशिश कर रहा हूँ, पर पता नहीं किस चिपचिपे पदार्थ से चिपका है कि उतरने का नाम ही नहीं ले रहा है और मेरा दम घुटा जा रहा है।

ए-१० बसेरा, ऑफ दिन-क्वारी रोड,
देवनार, मुंबई-४०००८८
दूरभाष : ९८१९१६२९४९

व्यंग्य

अनुमान-ही-अनुमान

• कोमल वाधवानी 'प्रेरणा'

कॉलोनी में कुछ घर छोड़कर नए किराएदार रहने आए। उनके आने से पहले चमचमाती नेमप्लेट लगी, फिर अगले दिन ट्रक से उनका सामान आया।

नेमप्लेट पर लिखा था—डॉ. सुदीप बनर्जी, डॉ. दीपा जैन। वाह! पति-पत्नी दोनों ही डॉक्टर। वैसे मामला लव मैरिज का लगता है। जरूर तभी जमा होगा, जब साथ-साथ पढ़ते होंगे।

एक दिन-रात मच्छी खानेवाला तो दूसरी आलू से भी परहेज करनेवाली। प्रेम से बँधे हैं। या तो मियाँ मच्छी खाना छोड़ेगा या बीवी मच्छी खाना सीखेगी। डॉक्टर को डॉक्टरनी बीवी चाहिए तो जात-पाँत क्या? अपनी जाति में कोई डॉक्टरनी न मिली होगी, तो क्या करता। अनुमानों के इतिहास के पन्नों को अपने-अपने नजरिए से पलटते पड़ोसियों के लिए यह बहुत ही रोचक विषय था।

नेमप्लेट के साथ अगर दोनों की कुंडलियाँ लगी होतीं तो वह भी पंडित को दिखाने से न चूकते। कारण पड़ोस में ही पंडित द्विवेदीजी जो रहते थे। उन्हें दिखाते तो कौन-से पैसे लगते। मान लो, अगर माँगते भी तो उन्हें समझा-बुझा देते, 'यह कोई हमारा पर्सनल मैटर नहीं। इसमें आपका भी नफा है।' अच्छे लोग होंगे तो नफा। अहंकारी या घमंडी या मुहँचढ़े हुए तो किस काम के?

आसपास के घरों में काम करनेवाली बाइयों ने ट्रक से सामान उतरते देखा तो कुछ देर खड़ी हो गईं और प्रार्थना करने लगीं, 'हे भगवान, नए घर को काम म्हारे को ही मिले! डागदर है···मुँहमाँगे पैसे मिल जाएँगे।' नए काम के लालच में उन्हें धूप का ताप ने भी न सताया।

सामने की लाइन में रहनेवाले बुजुर्ग देशपांडेजी सोचने लगे, काश! उम्रदराज कोई इस नए परिवार में हो तो सवेरे की सैर का आंनद दोगुना हो जाए। दूसरी ओर पड़ोसी बच्चे सोच रहे थे, एक और दोस्त आ जाए तो अपनी क्रिकेट टीम पूरी हो जाए। पास के ही घर में रहनेवाली नन्हीं उन्नति टकटकी लगा उस घर को निहारते हुए कल्पना कर रही थी—मेरे बराबर की कोई हो तो हम घर-घर खेलेंगे।

सारे पड़ोसियों के मन में लड्डू फूट रहे थे। रात-बेरात हम अब परेशान न होंगे। परेशानी में डॉक्टर की सेवाएँ उन्हें निःशुल्क मिला करेंगी।

इधर पंडितजी सोच रहे थे, कब मौका मिले कि वे डॉ. साहब के पास जाएँ और अपनी ज्योतिष विद्या के ज्ञान से उन्हें प्रभावित कर सकें। दूसरी ओर पास के तीन मंजिला बँगलेवाली केसरबेन भी यही सोच रही थीं—वे कब डॉ. दीपा को दिखाने जाएँ और वे तबीयत दिखाकर जब लौटेंगी तो उनसे बड़े प्रेस से 'आवजों' कहकर आएँगी।

सुपरिचित लेखिका। रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा नेत्र रोग से दृष्टिहीनता की शिकार। लघुकथा, कविता, संस्मरण आदि की पाँच पुस्तकें, कुछ साझा संकलन तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में चार सौ से ज्यादा रचनाएँ प्रकाशित। छोटे-बड़े एक दर्जन से अधिक सम्मान प्राप्त। साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा से सम्मानित। संप्रति सतत लेखन में रत।

आखिर पंडितजी का इंतजार खत्म हुआ और बी.पी. बढ़ने पर वे डॉ. बनर्जी के पास पहुँचे। इधर केसरबेन ने दबादबाकर भोजन किया और पेट में दर्द होने पर चलीं डॉ. दीपा के घर की ओर। डॉ. दीपा ने उनका चेकअप किया, उनसे बोली, 'आंटी, आज आपने रोज की अपेक्षा कुछ अधिक तो नहीं खा लिया? इस उम्र में खाने पर कंट्रोल जरूरी है और रात में तो बिल्कुल हल्का भोजन ही लेना चाहिए, जैसे दूध और दलिया।'

'डॉ.जी., कोई गोली-वोली··· ?'

'हाँ आंटीजी, मैं आपका फुल चेकअप किए बगैर कुछ नहीं दे सकती। आजकल रिस्क बहुत है। उसके बाद ही ट्रीटमेंट दे सकूँगी।'

उधर पंडितजी को डॉ. साहब ने यह कहते गुडनाइट किया, 'फ्रीजर में से आइसक्रीम रखी हो तो वह खा लें या ठंडा पानी पी लें। उससे भी बी.पी. में राहत मिलेगी। मैं अपना बैग क्लीनिक में भूल आया हूँ। बिना बी.पी. चेक किए कोई गोली नहीं दे सकता। आजकल साइड इफेक्ट का खतरा बढ़ गया है। सॉरी आप पहली बार आए और मैं पहली बार ही बैग भूल आया।'

उन्नति ने देखा कि उस घर में एक नन्हीं-मुन्नी आई है, जो अधिकतर दादी की गोद में होती है, घर-घर कैसे खेलेगी भला!

बच्चों के क्रिकेट के लिए कोई दोस्त उस घर में नहीं था। धत् तेरे की! क्रिकेट टीम अधूरी रह गए गई!

उधर देशपांडे साहब को पता चला कि डॉक्टर बनर्जी के तो पिता ही नहीं हैं। कोई बात नहीं, सुबह की सैर अकेले ही सही।

अनुमानों के इतिहास के पन्नों पर डॉ. दंपती ने मानो घड़ों पानी डाल दिया था।

नम्र निवेदन

''मेरा एक काम करेंगे?'' अपनी आवाज को रोज की अपेक्षा और भी धीमा करते हुए मैंने नरमाई से पूछा।

सरकारी दफ्तर में जब अर्जी दी जाती है, तब लिखना पड़ता है,

'महोदय, सविनय निवेदन है कि···।'

पति को तो ऐसा नहीं कह सकते! इस कारण याद रखना पड़ता है कि उनसे कोई काम पड़ ही जाए तो किस लहजे में बात करनी चाहिए। एक बार ईश्वर से भी हम अकड़कर बात करने का साहस कर लेते हैं, पर पति परमेश्वर के पद की ऊँचाइयों को भला आज तक कोई नाप सका है!

पूर्व में घटी ऐसी ही घटना को मैं भूल नहीं पाती। एक बार मिल से लौटने पर उन्हें कोई काम याद दिला दिया तो सुनना पड़ा था, 'घर में पाँव रखते ही तुम्हें मुझसे करवाने के काम याद आ जाते हैं। बारह घंटे की सख्त ड्यूटी से लौटा हूँ, ऑर्डर देने शुरू कर दिए। तुम्हारी तरह दोपहर में नींद नहीं निकालता। फोन पर गप्पें नहीं मारता। दलालों की खरी-खोटी और मजदूरों की बढ़ती अकड़ का सामना करता हूँ दिनभर।'

किंतु आज···आज तो जनाब नरम और दबी आवाज सुनकर गरम नहीं हुए, बल्कि शहद पगे शब्दों में प्रेमभाव से बोले, ''हाँ-हाँ, कहो न! तुम्हारा हुकुम भला कोई टाल सकता है!''

पिछले घटनाक्रम ने मुझे सिखा दिया था कि काम पड़ने पर किस तरह बातचीत करनी चाहिए, ''गरमी बहुत है। आपके लिए ठंडा बनाना है, पर किचन के सिंक में एक छिपकली आकर बैठ गई है। नल खोलते ही उछलकर मेरे ऊपर आकर ऐसे गिरती है कि मैं डर जाती हूँ। बहुत देर उसका लिजलिजा स्पर्श मुझे डराए रहता है। बचपन में छिपकली शरीर पर गिरने के बाद माँ नहाने के लिए कहती थी। नहाने के बाद उसके लिजलिजे स्पर्श का असर खत्म हो जाता था।''

पुरानी बात सुनकर मेरा हाथ खींचकर वे किचन में आए और बोले, ''जोर-जोर से बात की जाए तो छिपकली अपने आप चली जाती है।''

मैं अविश्वास से इनकी बात सुनती रही। सोचा, अगर उनकी बात में दम है तो मैं अपना रेडियो यहीं रखकर चलाया करूँगी, सिरदर्द ही खत्म।

इन्होंने फिर कहा, ''तुम्हें डरने की जरूरत नहीं। यह कभी काटती नहीं है। बेफिक्र होकर तुम अपना काम करो।''

''काटती हो या न काटती हो, मुझे इससे क्या? उसकी उछलकूद और मेरे ऊपर झपटना मुझसे बर्दाश्त नहीं होता।''

पर इसका हल इन्होंने नहीं बताया और टी.वी. देखने चले गए। मैंने अपना दिमाग दौड़ाया। बातों-बातों में पूछा, ''नागपंचमी कब आएगी?''

''सब त्योहार अगस्त में आते हैं। क्या कुछ खास है, नागपंचमी पर, जो दो-तीन महीने पहले ही तुम्हें याद आ रही है?''

''सपेरे उस दिन साँप को लेकर आते हैं। हम कुछ दूर से ही सही, उसका स्पर्श और दर्शन करना अच्छा मानते हैं। जब नागदेवता इतने पूज्य हैं तो क्यों न एक नाग हम भी अपने घर में रख लें?''

''दिमाग खराब हो गया है क्या?'' वे लगभग चिल्लाकर बोले।

''नहीं-नहीं! एक अलग तरह के प्राणी को घर में रखने का मजा ही अलग रहेगा। डर किस बात का? काटेगा थोड़े ही न! सपेरे तो पकड़ते ही उनका जहर निकाल लेते हैं, फिर···।''

मेरे तर्क को सुनकर ये उठकर फिर से किचन की ओर चल दिए और भुनभुनाते हुए बोले, ''इससे तो छिपकली भगाना आसान है!''

'शिवनंदन', ५९५, वैशाली नगर (सेठीनगर)
उज्जैन-४५६०१० (म.प्र.)
दूरभाष : ९४२४०१४४७७

दोहे

गीले दोहे

● शरद नारायण खरे

बरसो जी भर नीर तुम, पर इतना हो ध्यान।
अति वर्षा होती बुरी, इसका हो संज्ञान॥

सूखे पर पाई विजय, तुम सचमुच बलवान।
वर्षा रानी तुम बहुत, रखती हो निज शान॥

भरे कुएँ, तालाब सब नदियों में आवेग।
वर्षा रानी ने दिया, हर्ष-खुशी का नेग॥

कहीं बहुत, कहीं अल्प है, कहीं-कहीं विकराल।
वर्षा तू बनना नहीं, किसी मनुज का काल॥

बंबइया का था भला, बतलाओ क्या दोष।
जो दिखलाया वेग से, वर्षा तुमने रोष॥

कहीं गिर रही झोंपड़ी, कहीं गिरे दीवाल।
कहीं मर रहा है पिता, और कहीं पर लाल॥

वर्षा रानी कर दया, करुणा का रख भाव।
बन उदार, संवेदना का धारण कर ताव॥

दे आवश्यक नीर तू, पा सबसे सम्मान।
पर रख पूरा संतुलन, तभी रहेगी आन॥

वर्षा तेरा आगमन, देता है नित हर्ष।
पर व्यापकता नीर की, ला देती संघर्ष॥

वर्षा तू तो देव है, कोमल और उदार।
इसीलिए जग कर रहा, तेरी जय-जयकार॥

विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय जे.एम.सी. महिला महाविद्यालय
मंडला-४८१६६१ (म.प्र.)
दूरभाष : ९४२५४८४३८२

कॉलेज की क्यूरी

• सुशीला गुप्ता

दरवाजे की घंटी कर्र से बज उठी।

पुनीता रसोई में समोसे तल रही थी। वह भागी-भागी गई और उसने दरवाजा खोला।

''कितनी देर लगा दी मम्मी तुमने। गई थीं पोस्ट-ऑफिस और···''

मिसेज वर्मा ने इशारे से उसे चुप रहने का संकेत किया। उनके साथ ही एक सज्जन ने बैठक में प्रवेश किया।

पुनीता ने अपनी माँ के आदेश का पालन किया। उपाध्यायजी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''तू तीन साल की थी तो तुझे मैंने गोद में खिलाया था, बेटी। तेरी किलकारी की गूँज हमेशा मेरे कानों में खनकती रही थी।''

''तो फिर इतने वर्षों तक आप कहाँ रहे, अंकल?''

''बस यही मत पूछ बेटी। आज से अठारह साल पहले नाइजीरिया में एक 'असाइनमेंट' मिल गया था। वेतन काफी अच्छा था, इसलिए वहाँ का लोभ छोड़ नहीं सका था। वहाँ बीच-बीच में कई बार मन उखड़ा तो हिंदुस्तान लौटने का विचार करता, पर बात आई-गई हो जाती। असाइनमेंट पूरा हो जाने पर तुम्हारी आंटी ने बहुत जिद की, लेकिन नौकरी अच्छी थी तो वहाँ ही चिपका रहा। पिछले साल तेरी आंटी नहीं रहीं तो सबकुछ छोड़-छाड़ लौट ही आया।''

''आजकल आप कहाँ हैं?''

''मैंने लखनऊ के नजदीक लखीमपुर में कुछ जमीन ले ली है। वहीं अकेले रहता हूँ, खेती-बाड़ी करता हूँ।''

''नाइजीरिया में इतने वर्षों तक रहने के बाद खेती-बाड़ी रास आती है आपको?''

''खूब आती है, बेटी। चलेगी मेरे यहाँ? अच्छा लगेगा तुझे।''

''बेटा, उपाध्यायजी अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ काम से आए हैं। पोस्ट ऑफिस के पास अचानक मिले तो मैं उन्हें घर ले आई।'' मिसेज वर्मा ने बताया।

''बिटिया तो पढ़ती होगी। कौन-सी क्लास में है?''

''बी.एससी. की परीक्षा दी है, अंकल। अगले साल एम.एससी. फिजिक्स में प्रवेश लूँगी।''

''एम.एससी. तो क्या करेगी। विवाह की उम्र हो गई है। कोई अच्छा लड़का मिले तो इसके हाथ पीले कर दूँ। ससुराल में रहकर एम.एससी. करे, पी-एच.डी. करे, ससुरालवाले चाहेंगे तो इसे आगे पढ़ाएँगे।''

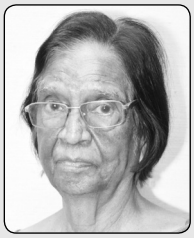

सुपरिचित लेखिका। लगभग ३० लिखित, संपादित एवं अनूदित पुस्तकें एवं 'हिंदी-अंग्रेजी क्रिया-कोश', १० परी-कथाओं का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद प्रकाशित। 'हिंदुस्तानी प्रचार सभा' की पूर्व विशेष कार्य अधिकारी और 'हिंदुस्तानी जबान' की पूर्व संपादक।

पुनीता रसोई से गरम-गरम समोसे ले आई। ''आप समोसे खाइए, अंकल। मैं आपके लिए चाय बना लाती हूँ।''

''भाई वाह! क्या समोसे हैं! तुमने बनाए हैं?''

''जी, यकीन नहीं होता!''

''अरे भाई, यकीन तो करना ही पड़ेगा।'' कहते हुए उपाध्यायजी खिलखिलाकर हँस पड़े।

''केतन आजकल कहाँ है? अब तो वह भी बड़ा हो गया होगा!'' मिसेज वर्मा ने पूछा।

''बिल्कुल। पूरा पाँच फीट आठ इंच का है मेरा केतन। उसे मैं अपने साथ नाइजीरिया नहीं ले गया, मिसेज वर्मा। वह अपने मामा के यहाँ रहकर पढ़ाई करता रहा। बिटिया की तरह उसकी भी फिजिक्स में रुचि है। पी-एच.डी. करने के बाद उसे विदेश जाने के कई अवसर मिले, लेकिन उसे भारत नहीं छोड़ना था। आजकल मुंबई के एक डिग्री कॉलेज में फिजिक्स का एसोसिएट प्रोफेसर है।···क्यों बेटी! मेरी बहू बनेगी? पर तू किसी मास्टर से विवाह क्यों करेगी! तू तो किसी डॉक्टर या इंजीनियर का सपना देख रही होगी।'' पुनीता के हाथ से चाय का प्याला लेते हुए उन्होंने चुटकी ली।

मिसेज वर्मा बोलीं, ''डॉक्टर या इंजीनियर ढूँढ़ने की हैसियत नहीं है भाई साहब! बिना बाप की बेटी है, अपनी औकात ही कितनी है।''

''औकात की बात क्यों करती हैं आप? आप पुनीता की माँ ही नहीं, पिता भी हैं। और पुनीता को अपनाकर कोई भी युवक अपने आपको खुशनसीब समझेगा, यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूँ। दूर क्यों जाएँ, मेरा केतन ही एक बार इसे देख ले तो खुद ही 'प्रपोज' करेगा। और मालूम है आपको? केतन है तो साइंस का प्रोफेसर, लेकिन उसे हिंदी साहित्य में विशेष रुचि है। उसे कहानी और कविता लिखने का खास शौक है। उसके दो कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। क्या नाम है पुस्तकों का, 'पत्थर की सराव' और···''

''कागज के पुतमे।'' पुनीता ने छूटते ही कहा।

उपाध्यायजी ने उसकी ओर दृष्टि उठाई तो वह लज्जित हो अंदर चली गई।

''अरे वाह! तो बेटी उसे पुस्तकों के माध्यम से जानती है। फिर क्या बात है। कल ही उसे पुणे बुला लेते हैं।''

तीन दिन के बाद केतन पुणे आ गया। वह पुनीता से मिला, उसके साथ बातचीत की, विचारों का आदान-प्रदान किया। पुनीता तो उसकी फैन थी ही, उसे भी पुनीता भा गई; लेकिन पुनीता को डर था कि कहीं विवाह के बाद उसकी पढ़ाई न छूट जाए। उसने सकुचाते हुए केतन के सामने अपनी शर्त रखी, ''मैं पढ़ाई नहीं छोड़ना चाहती।''

केतन ने मंजूरी में सिर हिलाते हुए कहा, ''जो हुकुम मेरी आका।'' उसके विनोदी स्वभाव ने पुनीता का दिल जीत लिया। दोनों ने विवाह की स्वीकृति दे दी। सबकुछ इतने अप्रत्याशित ढंग से हो गया कि सभी पुनीता के भाग्य की सराहना करने लगे। एक सप्ताह के अंदर ही अत्यंत सादगीपूर्ण ढंग से विवाह हो गया और पुनीता केतन के साथ मुंबई चली गई।

पुनीता मुंबई जाने से पहले लखीमपुर अपने ससुर के साथ जाना चाहती थी, लेकिन केतन इतनी लंबी छुट्टी नहीं ले पाया। लाचार हो उसे केतन के साथ मुंबई ही जाना पड़ा।

नई-नई शादी, मुंबई का माहौल—पुनीता वहाँ पहुँचकर व्यस्तता में खो गई। केतन बोरीवली में रहता था, उसका फ्लैट नया था। एक बैचलर के घर का अच्छा-खासा नमूना था। पुनीता ने उसे अपने अनुराग के रंग से सजाया। दो प्राणियों की गृहस्थी में वह इतना रम गई कि उसे पता ही नहीं चलता था कि समय कैसे भागा जा रहा है।

प्रत्येक रविवार और छुट्टी के लिए कार्यक्रम पहले से ही तय हो जाता। कभी नेशनल पार्क तो कभी आरे मिल्क कॉलोनी। कभी सांताक्रूज एअरपोर्ट तो कभी सहार एअरपोर्ट। कभी एलीफैंटा तो कभी उरण। नरीमन पॉइंट जाकर नारियल पानी पीना और चौपाटी जाकर भेल-पुरी खाना उसे बेहद पसंद था। समुद्र की लहरें देख उसका मन तरंगित हो उठता तो मरीन ड्राइव पर गाड़ियों का काफिला उसे जीने की नई उमंग देता। मुंबई के जीवन में उसे इतनी तल्लीनता प्रदान की कि उसे आभास ही नहीं था कि पीछे मुड़कर देखे और सोचे, अतीत के सपनों और वर्तमान की वास्तविकता में कहीं भी मिलान है कि नहीं।

गरमी की छुट्टियाँ हुईं तो दोनों ने तय किया कि वे लखीमपुर जाएँगे और फिर कुछ दिनों के लिए पुणे। पुनीता लखीमपुर पहुँची तो उपाध्यायजी का पितृवत् वात्सल्य पाकर धन्य हो उठी। खेतों की हरियाली के बीच मानो उसका बचपन लौट आया। उसका भोला मन ग्रामीण परिवेश में चहक उठा। बेटे-बहू के कौतुकपूर्ण क्रियाकलाप को देख उपाध्यायजी फूले नहीं समाए। पुनीता उनकी बहू नहीं, बेटी थी।

फिर पुणे जाकर माँ के साथ दोनों का रहना—मानो स्वर्ग का साम्राज्य। मिसेज वर्मा के हाथ से बने गुलाबजामुन केतन बड़े चाव से खाता तो पुनीता उसे रोकती, ''इतना मत खाओ, नुकसान करेगा।'' वह कहता, ''माँ के हाथ की बनी कोई मिठाई नुकसान नहीं करती।''

छुट्टियाँ खत्म हुईं। दोनों मुंबई लौटे। केतन का कॉलेज खुला तो वह अपनी दिनचर्या में पूर्ववत् लौटा। पुनीता चाहती थी कि वह अपनी पढ़ाई जारी रखे, लेकिन घर-गृहस्थी का मोह उसे इतना सुकून दे रहा था कि उसने मन की इच्छा मन में ही दबा दी।

''पुनीता! तुम्हारा परीक्षा-फल निकला है।''

बी-एससी. की परीक्षा में पुनीता को प्रथम श्रेणी मिली थी।

''अब मुँह तो मीठा कराओ।''

दोनों ने खुशियाँ मनाईं। आस-पड़ोस में मिठाई बाँटी गई। ढेर सारी शुभकामनाएँ पाकर पुनीता के लिए खुशी से गद्‌गद हो उठना स्वाभाविक था। उपाध्यायजी और मिसेज वर्मा ने दिल खोलकर बिटिया के लिए आशीर्वाद की झड़ी लगा दी।

एक दिन शाम को केतन जब कॉलेज से लौटा तो उसके हाथ में एक लिफाफा था। उसने कहा, ''बूझो तो क्या है।''

पुनीता ने कहा, ''क्या है?''

''तुम्हारे सपनों की गठरी।''

''पहेलियाँ मत बुझाओ, केतन।''

''मैं तुम्हारे लिए इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस से एम.एससी. का प्रवेश-फॉर्म लाया हूँ, इसे भर दो। तुम्हें एम.एससी. में प्रवेश लेना है।

पुनीता विस्मय-विमुग्ध थी। क्या केतन की यह इच्छा थी कि वह एम.एससी. करे? वह तो सोच नहीं पा रही थी कि उसका मनोवांछित सपना इतनी जल्दी पूरा होगा। उसने अपनी सहेलियों को विवाह के बाद घर-गृहस्थी और बाल-बच्चों में रमते देखा था। मन-ही-मन वह यह जरूर सोच रही थी कि केतन को अपना वादा याद भी होगा या नहीं।

लेकिन केतन को अपना वादा बखूबी याद था। ''लीजिए मल्लिका, गुलाम के वादे की पहली किश्त। फॉर्म भरो और एम.एससी. करने के लिए कमर कस लो।''

उसे विश्वास नहीं हुआ कि केतन वचन का इतना पक्का है, अब उसे एम.एससी. करना ही होगा।

''मैं अपनी पढ़ाई जारी तो रखना चाहती थी केतन, परंतु...'' आगे वह बोल नहीं सकी।

''परंतु क्या पुनीता?''

''तुम दिल से कह रहे हो? तुम्हें तकलीफ नहीं होगी?''

''तकलीफ कैसी?''

''मैं पढ़ाई-लिखाई में व्यस्त रहूँगी तो तुम्हारी देखभाल कौन करेगा?''

''धत पगली! क्या मैं बच्चा हूँ या बीमार हूँ, जो मेरी देखभाल की जरूरत है।...और फिर तुम्हारा सपना मेरा सपना नहीं है?''

पुनीता ने माँ को यह खुशखबरी दी और नई चुनौती स्वीकार की। गृहस्थी की गाड़ी का पहिया तो चलता रहा, साथ-ही-साथ वह प्रतिदिन

लोकल ट्रेन से बोरीवली और चर्चगेट की दूरी नापती रही। अकसर वह देर से घर लौटती और केतन आतुरता से उसकी प्रतीक्षा करता हुआ मिलता। उसने सदैव उसका हौसला बढ़ाया और उसका साथ दिया।

देखते-देखते दो साल निकल गए। फाइनल की परीक्षा प्रारंभ होनेवाली थी। पुनीता ने रात-दिन एक कर दिया। केतन उसके लिए नोट्स तैयार करता, पुस्तकों में निशान लगाकर रखता। वह देवता के वरदान की भाँति सबकुछ हृदयंगम करती। बहुत अधिक परिश्रम वह झेल नहीं सकी। परीक्षा प्रारंभ होने के ठीक एक सप्ताह पहले वह बीमार पड़ गई। बुखार से उसका शरीर तप रहा था।

''अब क्या होगा, केतन?'' घबराहट के मारे उसका बुरा हाल था।

''घबराओ नहीं, पुनीता, मैं छुट्टी ले लेता हूँ।''

''तुम छुट्टी लेकर क्या करोगे? उससे मेरा बुखार तो नहीं उतर जाएगा न? मैं इस वर्ष परीक्षा नहीं दूँगी।''

''नहीं पुनीता, तुम इसी वर्ष परीक्षा दोगी।''

''लेकिन मैं पढ़ूँगी कैसे?''

''तुम मेरी आँखों से नहीं पढ़ सकती, पुनीता?''

''तुम्हारी आँखों से? मजाक कर रहे हो?''

''नहीं पुनीता, मैं पढ़ूँगा और तुम लेटे-लेटे सुनोगी। तुम्हें बिस्तर से उठने नहीं दूँगा। तुम देखो तो सही! अरे, तुम्हारा बुखार क्या चीज, इससे भी बड़ी कोई दुर्घटना मेरे साथ घट जाए...''

''बस...बस, अपशकुन की बातें नहीं करते।'' उसने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया तो केतन को उसकी हथेली खूब गरम लगी।

''देखो, तुम्हारा बुख़ार बढ़ गया है। तुम आराम करो, मैं डॉक्टर के यहाँ से दवा लेकर आता हूँ।''

पुनीता लेट गई। उससे बैठा भी नहीं जा रहा था। केतन के प्रति कृतज्ञतावश उसकी आँखें नम हो आईं। वह अब आगे क्या बोले। क्या कहे! कृतज्ञता का शब्द उगलना उसे ओछापन लगा।

केतन पढ़ता, वह सुनती; केतन समझाता, वह समझती; केतन बोलता, वह गुनती...और उसकी परीक्षा की तैयारी होती रही। केतन थोड़ी देर के लिए उसके बिस्तर के पास से हटता तो जल्दी-जल्दी वह चाय बना लाती। चाय के घूँट भरता केतन उसे मीठी झिड़की देता, ''किसने तुम्हें उठने के लिए कहा था, बोलो?''

वह मंद-मंद मुसकान बिखेर देती। उसके मुसकान में भी केतन को उसके बुखार की गरमी दिखाई देती। ''मेम साहब! अब आप मुसकराना बंद भी करेंगी।'' केतन उसके लिए खिचड़ी बनाता, उसे खाना पड़ता। ''नहीं खाओगी तो खाक पढ़ोगी!''

पड़ोस की स्त्रियाँ मजाक उड़ातीं, 'पत्नी की सेवा के लिए पति महोदय ने छुट्टी ली है। पति हो तो ऐसा।' परंतु इन दोनों ने कब किसी की परवाह की!

परीक्षा-फल निकला तो पुनीता को परीक्षा में अप्रत्याशित अंक मिले।

''यह तुम्हारे परिश्रम का फल है, पुनीता!''

''यह तुम्हारे सहयोग और तुम्हारी दुआओं का असर है, केतन।''

''अभी तुम्हें रुकना नहीं है। अब पी-एच.डी. के लिए तैयार हो जाओ।''

रविवार के दिन उन्होंने पिक्चर देखने का कार्यक्रम बनाया। मॉर्निंग शो में पिक्चर देखकर वे घर लौटे। पिक्चर के हीरो के प्रति पुनीता को हमदर्दी थी। 'बेचारा' कहती हुई मन-ही-मन वह हँस पड़ी।

''क्या बात है?''

''पिक्चर के हीरो की बात सोच रही थी।''

''क्यों? वह बहुत बुरा लगा?''

''नहीं, वह जरूरत से ज्यादा अच्छा लगा। जो अपने घर का ही चिराग नहीं जला सकता, वह दूसरों को रोशनी क्या देगा!''

''तुम्हारे घर का चिराग...''

''उसे कभी बुझने न दूँगी।''

''इतने में सामने से तेजी से आती हुई टैक्सी से केतन टकराया और दूर जा उछला। एक क्षण के लिए तो पुनीता समझ ही न सकी कि क्या हो गया? क्या हो रहा है? फिर वह चिल्लाई—'बचाओ! दौड़ो!' भीड़ इकट्ठा हो गई। केतन बेहोश पड़ा था। उसके सिर से लगातार खून बह रहा था—उसे देख वह संज्ञाशून्य हो गई। एक युवक सामने की दुकान से बर्फ का टुकड़ा ले आया। 'हिम्मत रखिए मैडम, साहब के सिर से बहुत खून बह रहा है। उन्हें अभी अस्पताल ले चलिए। चलिए, चलिए, सोचने का समय नहीं है।' उसे हिम्मत होनी चाहिए...कहीं केतन को कुछ हो गया तो...उसने देखा, कुछ लोग टैक्सीवाले को पकड़कर पीट रहे थे।

पुनीता ने लगभग चीखते हुए कहा, ''अरे, कोई टैक्सी तो बुलाओ...'' भीड़ में से एक आदमी ने आगे बढ़कर टैक्सी रोकी और बेहोश केतन को कुछ लोगों ने आहिस्ता से टैक्सी में लिटाया। वह उसके सिर को गोद में लेकर बैठी और अस्पताल ले गई।

लखीमपुर से उपाध्यायजी और पुणे से मिसेज वर्मा ऐसी हृदय-विदारक सूचना पाकर मुंबई पहुँचे और अविलंब उन्होंने अस्पताल की ओर रुख किया। केतन की हालत देखकर वे अपन धीरज खो बैठे, पर हृदय पर पत्थर रखकर उन्होंने पुनीता को सँभालने की भरसक कोशिश की...''मेरे मन कुछ और है, कर्ता के कुछ और।''

मुसीबत में ईश्वर की ही याद आती है।...डॉक्टर ने बताया, सिर में गहरी चोट लगी है, खून बहुत ज्यादा बह गया है। तुरंत खून चढ़ाने का बंदोबस्त किया गया। ऑपरेशन थियेटर से बाहर निकलने के बाद डॉक्टर ने कहा, ''मिसेज उपाध्याय, मरीज की हालत नाजुक है, कुछ भी हो सकता है। आई.सी.यू. में केवल आप जा सकती हैं। बाकी के लोग बाहर ही प्रतीक्षा करें।'' केतन को होश आया तो पलकों में कुछ हरकत हुई। उसने धीरे से आँखें खोलीं।

''नर्स! नर्स! देखिए केतन को होश आ गया।'' जल्दी से डॉक्टर आए। उन्होंने तुरंत इंजेक्शन लगाया।

केतन की आँखें फिर मुँदने लगीं।...''आँखें खोलो केतन। बोलो, कुछ तो बोलो केतन! तुम तो कदम-कदम पर मुझे राय देते रहे कि पुनीता, ऐसे करो, वैसे करो, यह करो, वह करो। अब इतनी बड़ी मुसीबत में तुम आँखें बंद किए रहोगे तो कैसे काम चलेगा।'' पुनीता

का हृदय रो रहा था।

पुनीता की आँखों से आँसू बहते रहे, पर केतन ने फिर आँखें नहीं खोलीं। डॉक्टर ने नब्ज देखी, ''आई एम सॉरी मिसेज उपाध्याय।''

शवयात्रा निकली तो उसमें बहुत से लोग सम्मिलित हुए। पुनीता भी सबके साथ चली और सबकुछ अपनी आँखों देखती रही। उपाध्यायजी ने भारी मन से बेटे को मुखाग्नि दी। मुखाग्नि तो बेटा देता है पिता को, पर यह नियति का कैसा खेल कि पिता को अपने जवान बेटे को आग की लपटों को सौंपना पड़ा।

पुनीता अपने उजड़े बसेरे में अपने माँ और ससुर के साथ लौटी। मिसेज वर्मा ने उसे बहुत समझाया, पुणे लौट चल बेटी। इस माया-नगरी में अब तेरा क्या काम है।···लेकिन उसे लौटना नहीं था, वह नहीं लौटी। लाचार होकर उसकी माँ पुणे लौट गई और उपाध्यायजी लखीमपुर।

पुनीता अकेली रह गई। राह चलते आदतन वह जब अपना हाथ बढ़ाती तो वह शून्य में ही लटका रह जाता। उसका हाथ थामनेवाला तो अदृश्य में विलीन हो गया था। रास्ते की भीड़-भाड़ में उसके पैर निरुद्देश्य रास्ता नापते—सोचती, क्या ही अच्छा हो, यह रास्ता कभी खत्म न हो। जो पैर चलते, उनमें गंतव्य की ललक शेष नहीं थी। उसका गंतव्य तो भयावह रूप धारण कर उसे डरा रहा था।···एक केतन के न रहने से उसके जीवन में इतना अंतर आ गया था। केतन उसे जहाँ छोड़ गए, वह वहाँ रहना भी चाहे तो कैसे रहे? मुंबई में अकेले रहना क्या उसके लिए संभव था? कौन जुटाएगा रोजी-रोटी का साधन? यहाँ कौन किसकी खबर लेता है! वह सोचती रही···केतन का सपना उसे पूरा करना है···पी-एच.डी. की दिशा में वह कदम बढ़ाएगी।···छोटी-मोटी नौकरी ढूँढ़ने का प्रयत्न करेगी।

भविष्य-निधि रकम के लिए आवेदन-पत्र लेकर पुनीता केतन के कॉलेज में गई तो प्रिंसिपल साहब ने उसे अपने कक्ष में बुलाया। उनके सामने वह गुमसुम बैठी रही, उससे एक शब्द भी बोला नहीं गया।

वे अपने कक्ष से बाहर निकले, उन्होंने कहा, ''जाइएगा नहीं, मैं अभी आया।'' दस मिनट तक पुनीता वहीं बैठी रही। प्रिंसिपल साहब आए तो उनके हाथ में एक पत्र था। आहिस्ता-आहिस्ता वे बोले, ''आपकी जो क्षति हुई है मिसेज उपाध्याय, उसे तो कोई भर नहीं सकेगा, परंतु हमारी ओर से यह उपहार कुबूल कीजिए।''

पुनीता ने उनकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

उन्होंने पत्र खोलकर पुनीता के सामने रख दिया। वह आश्वर्य से देखती रह गई। वह पुनीता का नियुक्ति-पत्र था। ''केतन के न रहने पर जो स्थान रिक्त हुआ है, उसी स्थान पर फिलहाल आपकी नियुक्ति की जाती है।···यह अस्थायी नियुक्ति है मिसेज उपाध्याय। रिक्त पद के लिए अखबारों में विज्ञापन दिया जाएगा, तब आपको सलेक्शन कमेटी के सामने साक्षात्कार के लिए प्रस्तुत होना पड़ेगा।''

''मैं···मैं कैसे···''

''आपकी वेदना समझता हूँ, बेटी। पर आपका साहस हमारे कॉलेज के लिए वरदान साबित होगा।···केतन ने जो काम छोड़ा है, उसे पूरा करने के लिए आपसे बेहतर व्यक्ति हमें कहाँ मिलेगा।''

तो क्या इसीलिए केतन ने उसे प्यार से, पुचकारकर एम.एससी. करवा दिया था? उन्हें जाने की इतनी जल्दी थी, क्या इसीलिए वे उससे पी-एच.डी. करवाने की योजना में लगे थे?

पुनीता का गला भर आया। वह प्रिंसिपल साहब को ठीक से धन्यवाद भी न दे सकी। प्रिंसिपल साहब ने उसे बता दिया कि केतन आखिरी दिन युनिवर्सल ग्रेविटेशन पढ़ा रहे थे।

अगले दिन पुनीता कक्षा में पढ़ाने गई। केतन ने जहाँ पढ़ाना समाप्त किया था, ठीक वहीं से वह कक्षा में पढ़ा रही थी।···कोई व्यवधान नहीं। समय का थोड़ा व्यवधान अवश्य था, लेकिन ऐसा लगा, प्रोफेसर छुट्टी पर थे···पाठ में कोई व्यवधान नहीं। न्यूटन की नवीन स्थापनाओं और निष्कर्षों को वह इतनी स्पष्टता से समझा रही थी कि विद्यार्थी दंग थे। पूरी कक्षा ऐसी निस्तब्ध थी कि सूई भी गिरे तो उसकी आवाज सुनाई दे। केवल पुनीता की स्पष्ट खनकती हुई आवाज विद्यार्थियों के कानों में मानो अमृत घोल रही थी। पुनीता ने आश्चर्य से देखा, विद्यार्थियों की आँखें नम थीं···तो क्या इन्हें केतन की याद आ गई थी?

घंटी बजी तो पुनीता तेजी से कक्षा से बाहर निकली। नहीं, वह अब आँसू नहीं बहाएगी, वह आँसू पी गई।

प्रिंसिपल साहब ने उसे बधाई दी। मिसेज उपाध्याय! मैंने आपका पूरा लैक्चर सुना। आपको मालूम है, आपने जिस तरह अपने पति के अधूरे पाठ को आगे पढ़ाना शुरू किया, उसी तरह मैडम क्यूरी ने भी किया था।''

''जी?''

''हाँ, मैडम क्यूरी के पति पियरे क्यूरी की आकस्मिक मृत्यु हो गई थी तो उन्होंने इंस्टीट्यूट में अपने पति का अधूरा पाठ पढ़ाने का काम किया था, बिना व्यवधान के।''

पुनीता सकपका गई।

उसके हिस्से तब दो काम थे। केतन के स्थान पर जाकर कॉलेज में पढ़ाना और पी-एच.डी. की पढ़ाई करना।

दो-तीन साल तक वह सलेक्शन कमेटी के सम्मुख साक्षात्कार के लिए अपने आपको प्रस्तुत करती रही और अस्थायी नियुक्ति पर कॉलेज में पढ़ाती रही—विद्यार्थी उसे 'कॉलेज की क्यूरी' ही कहते। पी-एच.डी. पूरा करने के बाद उसकी नियुक्ति कॉलेज में स्थायी रूप से हो गई और वह अवकाश प्राप्ति तक कॉलेज की क्यूरी बनी रही।

डिग्निटी लाइफ स्टाइल टाउनशिप
कॉटेज नं. ७४, कर्जत, माथेरन मेन रोड
नेरल, रायगढ़ डिस्ट्रिक्ट-४१०१०१ (महाराष्ट्र)
दूरभाष : ०९८७०७६३८७८

ईश्वर सत्य को देखता है

मूल : **लियो टालस्टॉय**

अनुवाद : **बी.एम. नंदवाना**

व्लादिमीर कस्बे में इवान दमित्रिच एक्सिओनोव नामक एक युवा व्यापारी रहता था। उसकी खुद की दो दुकानें तथा एक मकान था।

एक्सिओनोव एक खूबसूरत, घने-घुँघराले बालोंवाला, गाने-बजाने का शौकीन मस्तमौला इनसान था। कुछ वर्षों पहले तक उसे शराब पीने की लत थी और जब अधिक पी लेता था तो उत्पात मचाता था; परंतु शादी के बाद उसने शराब छोड़ दी थी—कुछ खास अवसरों को छोड़कर।

एक बार गरमियों में एक्सिओनोव निजनी के मेले में जा रहा था, जब उसने परिवार से विदा लेनी चाही तो उसकी पत्नी ने उससे कहा, ''इवान दमित्रिच, मेले के लिए आज मत निकलो, मैंने तुम्हारे बारे में एक बुरा सपना देखा है।''

एक्सिओनोव ने हँसकर कहा, ''तुम्हें कहीं इस बात का डर तो नहीं है कि मेले में जाकर मुझे शराब पीने का भूत सवार हो जाएगा।''

पत्नी ने जवाब दिया, ''मुझे नहीं मालूम कि मुझे किस बात का डर लग रहा है; मैं बस इतना जानती हूँ कि मैंने एक बुरा सपना देखा है। मैंने सपने में देखा कि तुम शहर से वापस आए हो, और जब तुमने अपनी टोपी उतारी, तो मैं देखती हूँ कि तुम्हारे बाल काफी सफेद हो गए हैं।''

एक्सिओनोव हँसा, ''अरे! यह तो शुभ संकेत है, देखना, मैं अपना सारा सामान बेचकर अच्छा मुनाफा कमाऊँगा और तुम्हारे लिए मेले से एक अच्छा सा तोहफा लेकर आऊँगा।'' अंततः परिवार से विदा ले वह रवाना हो गया।

जब उसने आधा सफर तय किया, उसे एक व्यापारी मिला, जिसे वह पहले से जानता था, दोनों रात्रि-विश्राम के लिए एक ही सराय में ठहर गए। उन्होंने साथ-साथ चाय पी और फिर आस-पास के कमरों में सोने के लिए चले गए।

एक्सिओनोव की आदत देर रात को सोने की नहीं थी। सवेरे जल्दी ही सफर करने की इच्छा से उसने गाड़ीवान को पौ फटने से पहले ही उठा दिया और घोड़ों को गाड़ी में जोतने के लिए कह दिया था।

फिर वह सराय-मालिक (जो पीछे की तरफ की एक कॉटेज में रहता था।) के पास गया और बिल का भुगतान किया और अपनी आगे की यात्रा शुरू की।

करीब बीस-पच्चीस मील जाने के बाद वह घोड़ों को दाना-पानी देने के लिए ठहरा। कुछ समय के लिए सराय के गलियारे में सुस्ताया और फिर बाहर निकलकर पोर्च में दाखिल हो गया। समोवार (चाय की केतली) को गरम करने के लिए कहकर वह अपना गिटार निकाल उसे बजाने में मस्त हो गया।

अचानक एक तीन घंटोंवाली बग्गी घंटियाँ टनटनाती वहाँ आई और उससे एक अधिकारी नीचे उतरा, उसके साथ दो सिपाही थे। वह एक्सिओनोव के पास आया और उससे पूछताछ करने लगा कि वह कौन है, कहाँ से आया है। एक्सिओनोव ने उसे विस्तार से बताया और कहा, ''क्या तुम मेरे साथ चाय पीना पसंद करोगे?'' परंतु वह अधिकारी सवाल-जवाब करता रहा और उससे पूछा, पिछली रात तुमने कहाँ बिताई थी? क्या तुम अकेले थे या साथी-व्यापारी के साथ? क्या आज सुबह तुमने उस व्यापारी को देखा था? तुमने सवेरा होने से पहले ही सराय क्यों छोड़ दी?

एक्सिओनोव को आश्चर्य हुआ कि ये सारे सवाल उससे क्यों पूछे जा रहे हैं। खैर, उसने जो कुछ हुआ था, उसका पूरा विवरण दिया और कहा, ''क्यों, तुम मुझ से इस तरह की पूछताछ कर रहे हो, क्या मैं कोई चोर-उचक्का हूँ या कोई डकैत? मैं अपने व्यापार के सिलसिले में यात्रा पर हूँ, मुझ पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है।''

तब उस अधिकारी ने सिपाहियों को बुलाते हुए कहा, ''मैं इस जिले का पुलिस-अधिकारी हूँ, हम तुमसे इसलिए पूछताछ कर रहे हैं कि जिस व्यापारी के साथ तुमने पिछली रात बिताई थी, उसकी गला काटकर हत्या कर दी गई है, हमें तुम्हारी तलाशी लेनी पड़ेगी।''

वे मकान के अंदर घुसे, सिपाहियों और पुलिस-अधिकारी ने एक्सिओनोव के सामान को खोला और तलाशी लेने लगे, अचानक उस अधिकारी ने चिल्लाते हुए एक बैग में से चाकू निकाला, ''यह चाकू किसका है?''

एक्सिओनोव ने नजर डाली और खून से सने उसके बैग से निकले चाकू को देखकर वह भयभीत हो गया।

''इस चाकू पर खून, यह कैसे हुआ?''

एक्सिओनोव ने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन वह एक शब्द भी मुश्किल से बोल पाया। केवल हकलाया, ''मैं नहीं जानता, यह मेरा नहीं है।'' फिर पुलिस-अधिकारी ने कहा, ''आज सुबह व्यापारी अपने बिस्तर पर मृत पाया गया, उसका गला कटा हुआ था। यह घृणित कृत्य

तुमने ही किया है। कमरा अंदर से बंद था और वहाँ कोई और नहीं था। खून से सना यह चाकू यहाँ तुम्हारे बैग में है और तुम्हारा चेहरा तथा तुम्हारे हाव-भाव सबकुछ बता रहे हैं! अब तुम मुझे बताओ, तुमने उसे कैसे मारा और उसका कितना धन चुराया?''

एक्सिओनोव ने कसम खाई कि उसने कत्ल नहीं किया था कि उसने उस व्यापारी को, चाय पीने के बाद, देखा तक नहीं था; कि उसके पास खुद के आठ हजार रूबल के अलावा कोई धन-राशि नहीं थी, और कि वह चाकू उसका नहीं, परंतु उसकी आवाज खंडित थी और चेहरा सफेद-झक्क, वह भय के मारे इस कदर काँप रहा था, जैसे वह अपराध उसी ने किया था।

पुलिस-ऑफिसर ने सिपाहियों को एक्सिओनोव को बाँधने और बग्गी में बिठाने का आदेश दिया। जैसे ही उन्होंने उसके पाँव बाँधे और उसे बग्गी में ला पटका, एक्सिओनोव ने क्रॉस का चिह्न बनाया और रो पड़ा। उसके आठ हजार रूबल और सामान उससे ले लिये, उसे पास के कस्बे में बंदी बनाकर भेज दिया गया।

व्लादिमीर कस्बे में उसके चरित्र के बारे में छान-बीन की गई। उस कस्बे के व्यापारियों और दूसरे रहवासियों ने बताया कि कुछ वर्षों पहले वह शराब पिया करता था और अपना समय बरबाद किया करता था, लेकिन वह एक अच्छा व्यक्ति है। फिर मुकदमा चला, उस पर आरोप था कि उसने रयाजान कस्बे के एक व्यापारी का कत्ल किया था और उसके बीस हजार रूबल लूट लिये थे।

उसकी पत्नी विषाद में थी, नहीं जानती थी, किस पर विश्वास करे। उसके बच्चे बहुत छोटे थे; एक तो दूध-पीता बच्चा था। उन सबको साथ लेकर वह उस कस्बे में गई, जहाँ उसके पति को बंदी बनाकर रखा गया था। पहले तो उसे अपने पति से मिलने की अनुमति नहीं मिली; परंतु बाद में, बहुत अनुनय-विनय करने पर अधिकारियों के आदेश पर उसे बंदी के पास लाया गया। जब उसने अपने पति को कैदी के कपड़ों में जंजीरों में बँधे चोर-उचक्कों और अपराधियों के साथ जेल में देखा, वह बेहोश होकर गिर पड़ी और लंबे समय तक होश में नहीं आई। फिर उसने अपने बच्चों को अपने पास खींच लिया और उसके पास बैठ गई। उसने उसे घर-परिवार की बातें बताईं और उसके साथ जो बीती उसके बारे में पूछा। उसने उसे सबकुछ बताया और पत्नी ने पूछा, ''अब हम क्या कर सकते हैं?''

''हम जार को याबिका दे सकते हैं कि एक निर्दोष व्यक्ति को सजा नहीं मिलनी चाहिए।''

उसकी पत्नी ने उसे बताया कि वह पहले ही जार को याचिका दे चुकी है, लेकिन उसे स्वीकार नहीं किया गया है। एक्सिओनोव ने जवाब नहीं दिया, बस मायूसी के साथ नीचे की ओर देखता रहा।

तब उसकी पत्नी ने कहा, 'वह ऐसे' ही नहीं था कि मैंने तुम्हारे सफेद बाल हो जाने का सपना देखा था। तुम्हें याद है, तुम्हें उस दिन रवाना नहीं होना चाहिए था। ''उसके बालों पर अपनी उँगलियाँ घुमाते हुए उसने कहा, ''मेरे प्यारे वेन्या, तुम अपनी पत्नी को सच-सच बताओ; क्या वह तुम तो नहीं थे, जिसने वह सब किया?''

''अच्छा तो तुम भी मुझ पर संदेह करती हो!'' एक्सिओनोव ने कहा। अपने हाथों से अपना मुँह छिपाते हुए वह रो पड़ा। उसी समय एक सिपाही यह कहने के लिए आया कि पत्नी और बच्चों को अब चले जाना चाहिए। एक्सिओनोव ने अपने परिवार को आखिरी बार अलविदा कहा और वे चले गए। एक्सिओनोव को पत्नी से हुई बातचीत याद आई। वह बहुत दु:खी हुआ कि उसकी पत्नी भी उस पर शक कर रही थी, उसने स्वयं से कहा, 'ऐसा लगता है कि केवल भगवान् ही सत्य को जान सकता है; केवल वही है, जिसके सामने हमें अपील करनी चाहिए और केवल उसी से दया की आशा है।'

एक्सिओनोव ने फिर कोई अपील दायर नहीं की; कहीं कोई आशा न बाँधकर वह केवल भगवान् से प्रार्थना करता रहा। एक्सिओनोव को कोड़े से मारने की सजा दी गई और उसे खदानों पर भेज दिया गया। उसे कोड़े मारे गए और जब कोड़ों के घाव भर गए तो उसे दूसरे अपराधियों के साथ साइबेरिया ले जाया गया।

छब्बीस साल तक एक्सिओनोव साइबेरिया में एक अपराधी के रूप में रहा। उसके बाल बर्फ जैसे सफेद हो गए, उसकी दाढ़ी बढ़कर लंबी, विरल और सफेद हो गई। उसकी सारी हँसी-खुशी जाती रही; उसके कंधे झुक गए; वह धीरे-धीरे चलता, और कम बोलता, वह अकसर प्रार्थना करता दिखाई देता था।

कैदखाने में एक्सिओनोव जूते बनाना सीख गया था, कुछ कमा भी लेता था, उस थोड़ी-सी कमाई से उसने 'द लाइव्ज ऑफ द सेंट्स' खरीदी। जब भी जेल में पर्याप्त रोशनी रहती, वह उस पुस्तक को पढ़ता और रविवार को जेल के चर्च में पाठ पढ़ता; चर्च की गायन-मंडली के साथ वह भी गाता, उसकी आवाज अब भी अच्छी थी।

जेल के अधिकारी उसकी विनम्रता के कारण उसे पसंद करते थे, उसके साथी-कैदी भी उसका आदर करते थे, वे उसे 'दादा' अथवा 'संत' कहते थे। जब भी उन्हें जेल अधिकारियों को किसी भी प्रकार की फरियाद करनी होती, वे एक्सिओनोव को अपना प्रवक्ता बनाते और जब कैदियों में आपस में झगड़ा होता, निपटारे के लिए वे उसके पास आते थे।

एक्सिओनोव को अपने घर-परिवार की कोई सूचना नहीं थी, उसे यह भी मालूम नहीं था कि उसकी पत्नी और बच्चे जिंदा भी हैं या नहीं। एक दिन कैदियों की एक नई टोली कैदखाने में आई। शाम के समय पुराने कैदी नए कैदियों के इर्द-गिर्द जमा हुए और पूछने लगे कि वे किस कस्बे अथवा शहर से आए हैं और उन्हें सजा किन-किन कारणों से मिली है। साथी-कैदियों के साथ एक्सिओनोव भी उन नवागंतुकों के पास बैठ गया और खिन्न मन से उनकी बातें सुनने लगा।

उन नए अपराधियों में से एक ऊँचे कद का, साठ साल का मजबूत काठीवाला आदमी, जिसकी सफेद दाढ़ी करीने से छँटी हुई थी, दूसरे कैदियों को बता रहा था कि उसे क्यों गिरफ्तार किया गया था।

''अच्छा, दोस्तो,'' उसने कहा, ''मैंने बस बर्फगाड़ी से बँधे एक घोड़े को खोल लिया था और मुझे पकड़कर मेरे ऊपर चोरी का इलजाम लगा दिया। बात यह थी कि मैंने जल्दी घर पहुँचने के लिए घोड़ा लिया

था और फिर उसे छोड़ दिया था, इसके अलावा गाड़ी का चालक मेरा मित्र था। मैंने उनसे कहा, 'मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है।' उन्होंने कहा, 'तुमने उसे चुराया है।' पर मैंने उसे कैसे या कहाँ से चुराया था, वे नहीं बता पाए। एक बार जब वास्तव में मैंने कुछ गलत काम किया था, उस समय न्याय की दृष्टि से मुझे बहुत पहले यहाँ आ जाना चाहिए था। परंतु उस समय मैं नहीं पकड़ा गया। अब मुझे बिना किसी कारण के यहाँ भेज दिया गया···आह, लेकिन यह सब झूठे-सच्चे किस्से हैं! हाँ, मैं पहले भी साइबेरिया आ चुका हूँ, परंतु मैं ज्यादा समय नहीं रुका था।''

''तुम कहाँ से हो?'' किसी ने पूछा।

''व्लादिमीर से, मेरा परिवार उसी कस्बे से है। मेरा नाम माकर है, और वे मुझे सेम्योनिच कहकर भी बुलाते हैं।''

एक्सिओनोव ने अपना सिर उठाया और कहा, ''मुझे बताओ, सेम्योनिच, क्या तुम व्लादिमीर कस्बे के एक्सिओनोव व्यापारियों के बारे में कुछ जानते हो?''

''उन्हें जानते हो? अरे! अच्छी तरह से जानता हूँ, एक्सिओनोव परिवार काफी संपन्न है; हालाँकि उनके पिता साइबेरिया में हैं, हमारी तरह ही एक गुनाहगार! दादा, तुम अपने बारे में बताओ, तुम यहाँ कैसे आए?''

''एक्सिओनोव अपने दुर्भाग्य की चर्चा नहीं करना चाहता था, उसने बस आह भरी और कहा, ''अपने कुकर्मों की वजह से मैं छब्बीस वर्षों से जेल में हूँ।''

''कौन से कुकर्म माकर?'' सेम्योनिच ने पूछा।

एक्सिओनोव ने केवल इतना कहा, ''शायद मेरी किस्मत में यही लिखा था।'' वह इसके अलावा कुछ नहीं कहना चाहता था, परंतु उसके साथियों ने नवागंतुकों को बता दिया कि एक्सिओनोव किस वजह से साइबेरिया लाया गया था; कैसे किसी ने एक व्यापारी की हत्या की और एक्सिओनोव के सामान में चाकू रख दिया और एक्सिओनोव को अन्यायपूर्वक अपराधी ठहरा दिया गया था।

जब माकर सेम्योनिच ने यह सुना, उसने हक्सिओनोव को ध्यान से देखा, अपने घुटनों पर धौल जमाया और चिल्ला उठा, ''ओह, यह आश्चर्यजनक है! वास्तव में चकित कर देनेवाला! पर तुम कितने बूढ़े हो गए हो, दादा!''

वहाँ इकट्ठे कैदियों ने उससे पूछा, वह इतना आचर्यचकित क्यों, उसने एक्सिओनोव को पहले कहाँ देखा था; परंतु माकर सेम्योनिच ने जवाब नहीं दिया। उसने केवल इतना कहा, ''यह आश्चर्यजनक है कि हम यहाँ मिले, साथियो!''

इन शब्दों ने एक्सिओनोव को अचंभित कर दिया, क्या यह आदमी जानता है कि व्यापारी की हत्या किसने की थी; अत: उसने कहा, ''सेम्योनिच, क्या तुमने उस घटना के बारे में सुना है या तुमने मुझे पहले कहीं देखा है?''

''यह संसार अफवाहों का भंडार है। परंतु यह बहुत पुरानी बात है, जिसे मैं भूल चुका हूँ।''

''शायद तुमने सुना हो उस व्यापारी की हत्या किसने की थी?'' एक्सिओनोव ने पूछा।

माकर सेम्योनिच हँसा और जवाब दिया, ''हत्यारा वही होना चाहिए, जिसके बेग में चाकू पाया गया! अगर किसी और ने वहाँ चाकू छिपाया, जैसे कि कहावत है, 'जब तक पकड़ा नहीं जाए, वह चोर नहीं है' कोई कैसे तुम्हारे बेग में चाकू रख सकता था, जब कि वह तुम्हारे सिर के नीचे था, कोई ऐसा करता तो निश्चित रूप से तुम नींद से जाग जाते।''

जब एक्सिओनोव ने इन शब्दों को सुना, उसे लगा कि निसंदेह यही वह आदमी है, जिसने उस व्यापारी की हत्या की थी। वह वहाँ से उठकर चला गया। पूरी रात एक्सिओनोव ने जागते हुए बिताई। उसे बहुत ही दु:ख हुआ और तरह-तरह के चित्र उसके मस्तिष्क में उभरे। उसकी पत्नी का वह चित्र सामने आया, जब वह घर से मेले में जाने के लिए निकला था; उसने उसे देखा जैसे कि वह उसके सामने खड़ी थी; उसका चेहरा और उसकी आँखें, उसकी मुसकराहट उसके सामने उभरीं; उसने उसे बोलते हुए सुना। फिर उसने अपने बच्चों को देखा, बिल्कुल छोटे, जैसे वे उस समय थे; एक छोटा-सा झबला पहने हुए, दूसरा अपनी माँ की छाती से चिपका हुआ। फिर उसने अपने आप को याद किया, जैसा वह वर्षों पहले हुआ करता था, हँसता-मुसकराता मस्त-मौला युवक। उसे याद आया, कैसे वह सराय के अहाते में गिटार बजा रहा था, जहाँ उसे गिरफ्तार किया गया था। उसके मस्तिष्क में वह स्थान कौंधा, जहाँ उस पर कोड़े बरसाए गए थे, और याद आया वह जल्लाद, आस-पास खड़े लोग और जंजीरें, अपराधी, जेल में बीते समस्त छब्बीस वर्ष, और अपना असामयिक बुढ़ापा।

इन विचारों ने उसे इतना शोकसंतप्त कर दिया था कि वह स्वयं को मारने के लिए तैयार हो गया था।

यह सब उस बदमाश की करतूत है! एक्सिओनोव ने सोचा, वह माकर सेम्योनिच पर इतना अधिक क्रोधित था कि उसके भीतर माकर से बदला लेने की तीव्र इच्छा जाग्रत् हुई। रातभर वह प्रार्थनाओं को दोहराता रहा, लेकिन उसे शांति नहीं मिली। अगले दिन वह माकर सेम्योनिच से दूर-दूर ही रहा, उसकी ओर देखा तक नहीं।

इस तरह एक पखवाड़ा निकल गया। एक्सिओनोव रात को सो नहीं पाता था, वह इतना दु:खी और बैचेन था कि उसको सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करे।

एक रात जब वह जेल में चहल-कदमी कर रहा था, उसने नोटिस किया कि जिन तख्तों पर कैदी सोते थे, उनमें से एक तख्त के नीचे से मिट्टी बाहर आ रही थी। वह देखने के लिए झुका कि अचानक माकर

सेम्योनिचे उस तख्ते के नीचे से रेंगता हुआ बाहर आया और भयभीत नजरों से एक्सिओनोव को देखा। एक्सिओनोव ने बिना उसे देखे वहाँ से जाने की कोशिश की, लेकिन माकर ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे बताया कि उसने दीवार के नीचे एक गड्ढा खोदा था, और मिट्टी को वहाँ से हटाने के लिए वह उसे अपने ऊँचे-बूटों में भर लेता था, और जब कैदियों को काम के लिए ले जाया जाता था, वह हर रोज उसे सड़क के किनारे खाली कर देता था।

''बूढ़े आदमी, बस तुम चुप रहना, चाहो तो तुम भी भाग जाना, अगर तुमने यह भेद खोला, तो वे मेरी चमड़ी उधेड़-उधेड़कर मुझे मार डालेंगे, लेकिन उससे पहले मैं तुम्हें अवश्य खत्म कर दूँगा।''

एक्सिओनोव ने जैसे ही अपने दुश्मन को देखा, वह क्रोध के मारे काँपने लगा। उसने यह कहते हुए अपना हाथ छुड़ा लिया, ''मेरा भागने का कोई इरादा नहीं है, तुम्हें मुझे मारने की आवश्यकता नहीं है; तुमने मुझे वर्षों पहले मार दिया था! जहाँ तक तुम्हारा भेद खोलने की बात है, मैं भेद खोल सकता हूँ और नहीं भी, जैसा भगवान् का आदेश होगा।''

अगले दिन, जब कैदी काम पर ले जाए जा रहे थे, रक्षक-दल के सिपाहियों ने नोटिस किया कि उन कैदियों में से किसी एक ने अपने बूटों में से मिट्टी सड़क पर गिराई थी। कैदखाने में खोजबीन की गई तो सुरंग मिल गई। जेलर आया और सभी कैदियों से पूछ-ताछ की, यह जानने के लिए कि सुरंग किसने खोदी थी। उन सभी ने किसी भी प्रकार की जानकारी होने से इनकार किया, जिन्हें मालूम था वे भी प्रकट नहीं कर रहे थे। वे जानते थे कि माकर सेम्योनिच को कोड़े मार-मारकर अधमरा कर दिया जाएगा। आखिकार जेल नियंत्रक एक्सिओनोव की तरफ मुड़ा, जिसे वह एक अच्छा व्यक्ति समझता था, और कहा, ''तुम एक सच्चे बुजुर्ग इनसान हो; ईश्वर को साक्षी मानकर मुझे बताओ, गड्ढा किसने खोदा है?''

माकर सेम्योनिच जेलर की ओर ताकते हुए, कनखियों से एक्सिओनोव को देखते हुए इस तरह से खड़ा था मानो उसे कोई मतलब नहीं हो। एक्सिओनोव के होंठ और हाथ काँप रहे थे, काफी समय तक वह एक शब्द भी नहीं बोल पाया। उसने सोचा, 'मैं उस व्यक्ति के कृत्य पर परदा क्यों डालूँ, जिसने मेरा जीवन बरबाद किया है? जो कुछ मुझे भुगतना पड़ा है, उसका मूल्य उसे चुकाने दो। लेकिन अगर मैं बताता हूँ, तो शायद कोड़े मार-मारकर वे उसे खत्म ही डालेंगे; हो सकता है कि मेरा उस पर संदेह गलत हो, आखिरकार इससे मेरा कौन सा भला होनेवाला है?''

''अच्छा बुजुर्ग व्यक्ति,'' जेलर ने दोहराया, ''मुझे सच-सच बताओ; दीवार के नीचे खुदाई कौन कर रहा था?'' एक्सिओनोव ने एक उचटती नजर माकर सेम्योनिच पर डाली और कहा, ''मैं नहीं बता सकता हूँ, मेरे हाकिम। भगवान् की यह मर्जी नहीं है कि मैं बताऊँ! आप जैसा चाहें वैसा मेरे साथ करें; मैं आपके हाथों में हूँ।''

हालाँकि जेलर ने पूरी कोशिश की, एक्सिओनोव ने आगे कुछ नहीं कहा, इसलिए उस मामले को छोड़ देना पड़ा।

उस रात, जब एक्सिओनोव अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था और उसे झपकी आई ही थी कि कोई चुपके से आया और उसके बिस्तर पर बैठ गया। उसने अँधेरे में ध्यान से देखा तो माकर को पहचान लिया।

''तुम मुझसे अब और क्या चाहते हो?'' एक्सिओनोव ने पूछा, ''तुम यहाँ क्यों आए हो?''

माकर सेम्योनिच कुछ नहीं बोला, एक्सिओनोव उठकर बैठ गया और कहा, ''तुम क्या चाहते हो? चले जाओ, नहीं तो मैं गार्ड को बुलाऊँगा!''

माकर सेम्योनिच एक्सिओनोव के करीब आया और झुककर दबी जबान में कहा, ''इवान दमित्रिच, मुझे माफ कर दो!''

''किसलिए?'' एक्सिओनोव ने पूछा

''वह मैं ही था, जिसने उस व्यापारी की हत्या की थी और चाकू तुम्हारे सामान के बीच में छिपा दिया था। मैं तुम्हें भी मार डालना चाहता था, लेकिन बाहर कुछ शोर-गुल सुनाई दिया, इसलिए मैंने चाकू तुम्हारे थैले में छिपा दिया और खिड़की से कूदकर भाग गया।''

एक्सिओनोव चुप था, उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। माकर सेम्योनिच उसके बिस्तर से नीचे खिसक गया और घुटनों के बल जमीन पर बैठ गया, ''इवान दमित्रिच,'' उसने कहा, ''मुझे माफ कर दो! ईश्वर के लिए मुझे माफ कर दो। मैं अपने गुनाह कबूल करूँगा कि मैंने ही उस व्यापारी की हत्या की थी, तुम छोड़ दिए जाओगे और घर जा सकोगे।''

''तुम्हारे लिए यह कहना बहुत सरल है'', एक्सिओनोव ने कहा, ''लेकिन तुम्हारे कारण मैंने इन छब्बीस वर्षों में असहनीय दु:ख भोगा है। अब मैं कहाँ जा सकता हूँ? मेरी पत्नी मर चुकी है, मेरे बच्चे मुझे भूल चुके हैं, मुझे कहीं नहीं जाना है।'' माकर सेम्योनिच खड़ा नहीं हुआ, बस अपना सिर फर्श पर पटकने लगा।

''इवान दमित्रिच मुझे माफ कर दो!'' वह चिल्लाया, ''जब वे मुझ पर कोड़े बरसा रहे थे, उसे सहन करना इतना मुश्किल नहीं था, जितना अब तुम्हें देखकर, फिर भी तुमने मुझ पर दया दिखाई और भेद नहीं खोला। क्राइस्ट के खातिर मुझे माफ कर दो, मुझ कमीने को!'' और वह सुबक-सुबककर रोने लगा।

जब एक्सिओनोव को उसके सुबकने की आवाज आई, वह भी रोने लगा।

''ईश्वर तुम्हें क्षमा करेगा!'' उसने कहा, ''हो सकता है, मैं तुमसे सौ गुणा अधिक बुरा होऊँ।'' इन शब्दों के साथ उसका हृदय हल्का हो गया, और उसकी घर जाने की चाहत खत्म हो गई। जेल से छूटने की इच्छा भी शेष नहीं थी, उसे बस अपने अंतिम समय का इंतजार था।

एक्सिओनोव ने जो कुछ कहा था। बावजूद उसके माकर सेम्योनिच ने अपना गुनाह कबूल कर लिया, लेकिन जब उसकी रिहाई के आदेश आए, उससे पहले एक्सिओनोव की मृत्यु हो चुकी थी।

१५२, टैगोर नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-४
उदयपुर-३१३००२
दूरभाष : ९९८३२२४३८३

सेवड़ाफुली की काँवरें

• श्रीकांत उपाध्याय

सावन लगते ही शिवभक्तों की पदयात्राएँ आरंभ हो जाती हैं। काँवरियों के कंधों पर काँवर चढ़ जाती है।

झूम रहा है सावन। लहरा रहे हैं धानी आँचल। लोचनों में तरंगित है हरापन। रिमझिम-रिमझिम बरस रहे हैं धाराधर। नदी-नाले-पुष्कर-जलाशय पुलकित हैं। महीतल के किसी भी अक्षांश-देशांतर के मिलन-बिंदु पर खड़ा अवधी-भोजपुरी क्षेत्र का मानुष गा उठता है—'कइसे खेलइ जइबू सावन मा कजरिया, बदरिया घिरि आई ननदी।'

यद्यपि भारत की सभी नदियाँ देवनदियाँ हैं। सभी जल तीर्थजल है। सभी शिवधाम कैलास हैं। सभी शिवलिंग ज्योतिर्लिंग और सभी ज्योतिर्लिंग शिव के साक्षात् विग्रह हैं।

तथापि देवापगा (आपगा = नदी) गंगा की महिमा अतुल्य है तथा श्रावण मास में झारखंड के देवघर स्थित वैद्यनाथ (शिव) को जल चढ़ाने का माहात्म्य अनन्य। प्राणिमात्र की वेदना के सभी प्रारूपों को हरनेवाला परम वैद्य—वैद्यनाथ!

शिवभक्त सावन के महीने में श्रद्धाभिभूत होकर शिवलिंगों का जलाभिषेक करते हैं। ये वही परम देवता हैं, जो विश्वमांगल्य के लिए सर्वनाशी हलाहल को नेत्र निमीलित कर गटागट पी जाते हैं और नीलकंठ की संज्ञा धारण करते हैं। भारतीय करुणा उस करुणाकर के अनुग्रह का विस्मरण कैसे कर सकती है? धार्मिक एवं आध्यात्मिक आस्था प्रतिवर्ष श्रावण मास में सदाशिव का जलाभिषेक कर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है। स्वामी की काया पर विषज्वाला का प्रभाव कुछ तो कम हो! सपने में भी अकृतज्ञ नहीं है भारतीयता।

श्रावण मास में यों तो भारत के सभी शिवधामों में जलाभिषेक-पर्व अपने-अपने स्थानीय रंग में मनाया जाता है, किंतु वैद्यनाथ धाम का जलाभिषेक-पर्व धार्मिक विश्वपर्व में रूपांतरित हो गया है।

गेरुए वस्त्रधारी काँवरिए हरिद्वार, वाराणसी आदि गंगातीर्थों से जलपात्रों में जल भरते हैं और अपने-अपने अंचलों में स्थापित शिवलिंगों को जल चढ़ाने के उपलक्ष्य में पदयात्राएँ करते हैं। भारत के सभी १२ ज्योतिर्लिंगों में केवल काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग गंगा पर अवस्थित है। शेष ११ ज्योतिर्लिंग भागीरथी से दूर, बहुत दूर स्थित हैं। वैद्यनाथ धाम बिहार के सुल्तानगंज की गंगा से लगभग १२८ किलोमीटर दूरी पर विराजमान है।

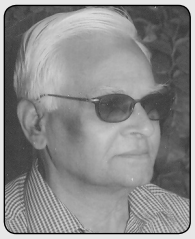

सुपरिचित साहित्यकार। रहीम, कबीर, सूर पर पुस्तकें प्रकाशित। 'दस डिग्री चैनल' अंडमान के संस्मरण। बिहारी और भाषा पर पुस्तकें शीघ्र प्रकाश्य। संप्रति राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला पुणे से रीडर के पद से सेवानिवृत्त होकर लेखन में रत।

वैद्यनाथ धाम की तीर्थयात्रा के काँवरिए सुल्तानगंज की जाह्नवी नदी से जल-कलश भरते हैं और काँवर को अपने स्कंध पर धारण कर देवघर की यात्रा पर 'हर-हर महादेव' का महोच्चार कर पैदल निकल पड़ते हैं। शिवभक्तों और काँवरियों का यह आनंद-मार्ग है। देवयान है यह, जो उनको उस महेश्वर के द्वार पर ले जाकर उतार देता है, जिसके भाल पर चंद्रमा सुशोभित है। उस चंद्रशेखर की कृपा से श्यामल मन उज्ज्वल नीलमणि क्यों नहीं होगा? अपने शीर्ष पर जो गांगेय प्रवाह धारण करता है, उसके अनुग्रह से प्रतिकूल ग्रह-नक्षत्र क्यों नहीं अनुकूल होंगे? जिसका देह कैलास भस्मस्नात है, उसकी अनुकंपा से सकल दुःस्वप्न, निखिल दुश्चिंताएँ क्यों नहीं भस्म होंगी?

मार्ग में उल्लास-पर्व लेकर चल रहा यह जन-अरण्य मानो गंगा की एक धारा है, जो स्वयं जलाभिषेक की आकांक्षा से देवघर की ओर मुड़ गई है। शिवभक्तों ने वैद्यनाथ धाम को कैलास-मानसरोवर के रूप में कल्पित कर लिया है। आरोहण मार्ग के इन मुहूर्तों में उनके जीवन के सारे अभाव महाभाव में परावर्तित हो गए हैं। काँवरियों की निगूढ़ नाभि के प्रतिध्वनित करते हुए उठ रहे हैं—'बोल बम आशुतोष, मुझे समस्त अभिशापों से रिक्त करो।'

ओम नमः शिवाय!

पैदल ही अइबो हम दुआरी, हे भोलेनाथ! (हे सदाशिव! हम तुम्हारे द्वार पैदल ही आ रहे हैं।)

अवधी क्षेत्र का एक काँवरिया रामचंद्र साकेती का लिखा गीत गाता जा रहा है—

मेरा देवता मगन है मेरी वंदना से पहले।
मुझे भीख मिल गई है मेरी याचना से पहले॥

मृत्युंजय श्लोक सुनते ही प्राणों के सुग्गे पुलकित हो उठे हैं—
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।
(मैं चंद्रशेखर की शरण लेता हूँ, यमराज मेरा क्या करेगा?)

थकानें परास्त। तृष्णाएँ पराहत। बुभुक्षाएँ लुंठित। वज्रदेही हो गए हैं काँवरिए। इस देवमार्ग में न कोई स्पर्धा, न कहीं होड़। न कोई किसी से आगे निकलना चाहता है, न कोई किसी को पीछे छोड़कर बढ़ जाना चाहता है। इस महीतल पर हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं। विराट् है मेरा कुटुंब।

स्थान-स्थान पर सरकारी व्यवस्थाएँ, स्वयंसेवी संस्थाएँ तथा मठों-पीठों के सौजन्य से अन्नक्षेत्र, उपाहार-गृह, विश्राम-शिविर आदि हैं।

किसी किशोर काँवरिया के लोचन-पथ में किसी किशोरी की कटि-तिर्यकता इंद्रधनुष-सी प्रकट हुई और उसी मुहूर्त में जीवन की सकल शाप-मूर्च्छाएँ प्रकंपित हुईं और धराशायी हो गईं। तिर्यकताएँ बड़े-बड़े भवार्णव (भवसागर) पार करा देती हैं।

बिहार की राजधानी पटना, जो काँवर-शिल्प तथा काँवर-व्यापार का प्रमुख केंद्र है। यहाँ मोटे तौर पर दो प्रकार की काँवर बनती हैं—साधारण और विशेष। साधारण काँवर का मूल्य ढाई-तीन सौ से ढाई-तीन हजार रुपए तक होता है। विशेष काँवर का उच्चतम मूल्य पैंतीस-चालीस हजार को भी उत्तीर्ण कर सकता है। छोटा आदमी बनाम बड़ा आदमी, निम्नवर्ग बनाम उच्चवर्ग, सर्वजीता बनाम सर्वहारा, तेजस्वी वर्ग—वैषम्य कहाँ नहीं है? धर्म और अध्यात्म के निलय में नीलांजन सरीसृप (सर्प) निवास करते हैं।

मामूली काँवरें पटना के आस-पास अधर-उधर के बाँस की फट्टियों से ही बनाई जाती हैं। ऐसी काँवरों में लोच नहीं होती। उनकी मजबूती की भी कोई गारंटी नहीं होती है। संदिग्ध होती हैं बाँस की वे फट्टियाँ। उनसे बनी काँवरें अधिक भार नहीं वहन कर सकतीं। वे कहीं भी दगा दे सकती हैं। इसलिए उनकी सजावट के सामान, पीतल की घंटियों को छोड़कर बाकी प्लास्टिक के बने होते हैं, जो कोलकाता से खरीदे जाते हैं।

विशेष काँवर की हैसियत बड़ी होती है। यही वह काँवर है, जो 'पटनिया काँवर' के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी साज-सज्जा में मूल्यवान् उपकरण लगाए जाते हैं। पटनिया शिल्प अनुगृहीत है उत्तर प्रदेश के उन मुरादाबादी मुसलिम कलाकारों का, जो पीतल के पात्रों को अपनी कलाएँ समर्पित करते हैं। पीतल के कलश मानो सागर-मंथन से निकले अमृत-कलश के वंशज हों। पीतल के शिवलिंग-ज्योतिर्लिंगों के नवीन संस्करण, पीतल की शिवमूर्तियाँ—समाधिस्थ महेश्वर, पीतल का त्रिशूल—तीनों प्रकार के शूलों को विदीर्ण करनेवाला होता है, पीतल की घंटियाँ, जिनकी घनघनाहट सुनकर अभिशाप प्रकंपित हो उठते हैं तथा पीतल के साँप और बिच्छू—सर्वभूतों को आत्मवत् देखो।

अद्‌भुत हैं इन काँवरों में लगी बाँस की फट्टियाँ। ये इतना सारा भार कैसे वहन कर लेती हैं! इतनी लचकदार, इतनी बलिष्ठ! ये यहाँ-वहाँ के बाँस की फट्टियाँ नहीं, बल्कि सेवड़ाफुली की फट्टियाँ हैं ये।

सेवड़ाफुली है कहाँ? सेवड़ाफुली पश्चिम बंगाल के हुगली जिले स्थित में एक जगह है। गंगा तट पर बसा एक खेतिहर गाँव, जो हावड़ा स्टेशन से लगभग ४० किलोमीटर उत्तर-पश्चिम तथा लोकल ट्रेन से ३० से ३५ मिनट की दूरी पर है।

सावन आने से पहले ही पटना के काँवर-व्यापारी सेवड़ाफुली पहुँच जाते हैं और बाँस की फट्टियों का ऑर्डर प्रस्तुत करते हैं। ऑर्डर लेते ही वहाँ के फट्टी निर्माता उत्तर बंगाल के बाँस विशेषों को कटवाकर घर लाते हैं और अपने पोखरों के पानी में सिराते हैं। इन्हीं किन्हीं मुहूर्तों में बंगाल का जादू बाउल गीत गुनगुनाता हुआ बाँसों के अंतःकरण में प्रवेश करता है। जलवायु से बड़ा जादू और क्या है? ४० किलोमीटर के अंतराल पर स्थित तारकेश्वर धाम के नाथ की अनुकंपा का प्रभाव भी तो है सिराए गए बाँसों पर। निश्चित अवधि के बाद बाँस पोखर से बाहर लाए जाते हैं, तदुपरांत बाँसों को खंड-खंड करके फट्टियाँ निकाली जाती हैं। फट्टी निर्माता निराशा के क्षणों में भी अपने शिल्प में कोई शिथिलता नहीं दिखाना। धर्मादेश है पटनिया ऑर्डर।

और फिर पटना के शिल्पकारों के सम्मुख उपस्थित होती हैं सेवड़ाफुली की बाँस-फट्टियाँ। शिल्पकार का शिल्प फट्टियों को काँवरों में रूपांतरित करता है। काँवरों पर मुरादाबादी उपकरण अलंकृत होते हैं। मखमली धागे काँवरों पर कलात्मक शैली में बाँधे जाते हैं।

इस प्रकार बाँस की फट्टियों को अंतिम रूप देनेवाला पटनिया शिल्प सारा श्रेय प्राप्त करता है।

जब काँवरें काँवरियों के स्कंधों पर आरोहण करती हैं और लहराती हुई मार्ग पर निकलती हैं तो ऐसा लगता है, मानो अपार पारावार में भागीरथी विहार कर रही हों।

बड़े जीवट की हैं ये फट्टियाँ। कितनी जुझारू हैं ये। ये रास्ते में किसी को धोखा नहीं देतीं एवं बीच भँवर में छोड़कर चली नहीं आतीं। हर कामार्थी को उसके ध्रुव तक पहुँचाती हैं। कहती नहीं, करके दिखाती हैं।

संदिग्ध नहीं, अविश्वसनीय नहीं, बड़ी प्रामाणिक हैं सेवड़ाफुली की फट्टियाँ!

सा.अ.
२०/३ शिंदे नगर, बावधन
एन.डी.ए. रोड, पुणे-४११०२१
दूरभाष : ०२०-२२९५२२३८

सरहद को प्रणाम-यात्रा

• प्रमोद कुमार

अपने बचपन में गाँव में फौजियों व उनको मिलनेवाले सम्मान को देखकर तथा उनसे सेना की जाँबाजी के किस्से-कहानियों को सुनकर बड़ा मन हुआ करता था कि बड़े होकर हम भी फौजी बनेंगे और देश की सरहद पर तैनात होकर दुश्मनों से भारतमाता की रक्षा करेंगे। फौज में तो भरती नहीं हो पाए, पर गाँव से दिल्ली आकर संघ की शाखा में जरूर भरती हो गए। फौजी के रूप में तो नहीं, पर आज संघ शाखा के माध्यम से सरहद पर जाने का बचपन का वह सपना पूरा हो रहा है। हुआ यों कि हमारे जिला कार्यवाह श्रीमान मेवारामजी ने बताया कि आपका नाम देश की सीमाओं पर राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु जनजागरण करनेवाले संगठन फिंस FINS (Forum for Integrated National Security) द्वारा आयोजित 'सरहद को प्रणाम' कार्यक्रम में जानेवाले जिले से चुने गए आठ कार्यकर्ताओं में शामिल किया गया है, क्या आप जाना चाहेंगे? जाने का दिन था रविवार, १८ नवंबर, २०१२। सुनकर पहले तो एकबारगी विश्वास ही नहीं हुआ, पर संघ की सूचनाएँ या योजनाएँ कभी अविश्वसनीय नहीं होतीं, इतनी समझ तो मुझे भी थी। बस यह खबर सुनकर मन गद्‌गद हो गया। मैंने जाने के लिए तुरंत हामी भर दी। जबकि अभी परिवार में बात करनी बाकी थी। पर विश्वास था कि अनुमति मिल जाएगी और मिल भी गई।

मेरे अलावा जिले से टोली प्रमुख के नाते वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमान सुमितजी, जो सायं जिला कार्यवाह थे, रविजी, अनिलजी, कमलजी, नवीनजी, राजकुमारजी और नागेंद्रजी अपने जिला कंझावला की ओर से गौरवान्वित करनेवाली इस 'सरहद को प्रणाम-यात्रा' के लिए चुने गए थे। दस दिन बाद ही यानी १८ नवंबर को हमें प्रस्थान करना था, पर इंतजार के ये दस दिन दस साल के जितने लंबे मालूम पड़ते थे। मन तो बस जैसे जैसलमेर में ही पहुँच चुका था। वैसे अनदेखा था, पर भारत-पाकिस्तान के बीच हुए १९७१ के युद्ध पर बनी फिल्म 'बार्डर' में दिखाए गए दृश्यों के सहारे ही मन जैसलमेर में विचरण करने लगा था। लेकिन तन के जाए बिना बात कहाँ बननेवाली थी और तन के जाने का दिन १० दिन बाद तय था। जैसे-तैसे इंतजार की मुश्किल घड़ियाँ समाप्त हुईं और हम सब आ पहुँचे दिल्ली सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन। जैसलमेर के लिए जैसलमेर एक्सप्रेस से इसके अपने नियत समय (सायं ५:५२) से थोड़ा विलंब से यह रोमांचक यात्रा शुरू हुई। हम तो अति उत्साह में समय से दो घंटा पूर्व ही स्टेशन पहुँच गए। जिला कार्यवाह श्रीमान मेवारामजी, जिला सह कार्यवाह राजिंद्र सिंहजी, प्रौढ़ जिला कार्यवाह श्रीमान अजितजी अपनी कार से हमें सराय रोहिल्ला

सामाजिक संस्था 'सवेरा' के राष्ट्रीय अध्यक्ष। संस्था के माध्यम से गत ११ वर्षों से एच.आई.वी./एड्स जागरूकता कार्यक्रम का संचालन, महिला पंचायत के माध्यम से घरेलू झगड़ों का निपटारा करवाना और समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर, मुफ्त कानूनी सहायता शिविर, आधार कार्ड शिविर आदि के आयोजनकर्ता। इसके साथ-साथ हिंदी साप्ताहिक समाचार-पत्र 'सवेरा न्यूज' के प्रबंध संपादक।

स्टेशन तक विदा करने आए। जैसे फौजियों को सरहद पर तैनाती के लिए जाते समय विदा किया जाता है, वैसे ही हमें सरहद को प्रणाम-यात्रा पर जाने के लिए विदा किया जा रहा था। हमें भी कुछ ऐसा ही अहसास हो रहा था।

रेलगाड़ी पहले मंद-मंद-मंथर गति से अपने गंतव्य की ओर बढ़ी। दया बस्ती, पटेल नगर और कीर्ति नगर के बाद गाड़ी दिल्ली कैंट स्टेशन पहुँची तो एक बार फिर फौजी नजारा देखते ही मन में देशभक्ति की हिलोरें उठने लगीं। दिल्ली और गुरुग्राम पार करने तक तो हम शाखाओं में गाए जानेवाले 'रक्त शिराओं में राणा का रह-रह आज हिलोरें लेता', 'चंदन है इस देश की माटी', 'हमको अपने भारत की माटी से अनुपम प्यार है' गीत आदि गाते रहे। हमारे साथ अन्य सहयात्री भी हमारे स्वर में स्वर मिलाने लगे। जल्दी ही आस-पास के सहयात्रियों से घनिष्टता हो गई।

रेवाड़ी पहुँचकर हम सबने अपना-अपना टिफिन खोला। अहा! मात्रशक्ति के हाथों प्यार से बने भोजन रूपी प्रसाद की खुशबू पूरे डिब्बे में फैल गई। भोजन मंत्र के बाद सबने भोजन किया, फिर यात्रा के पूर्वानुमानों, जैसे कैसा होगा जैसलमेर और बार्डर फिल्म के दृश्यों की चर्चा रेल की बढ़ती गति के साथ-साथ बढ़ती चली गई। समय तो वैसे शयन का हो चला था, पर सभी की आँखों से नींद उतनी ही दूर थी, जितना दूर जैसलमेर। खैर, आखिर में तो नींद आनी ही थी, सो आई, पर कब आई, पता नहीं। अगली सुबह जब नींद खुली तो हम रंगलों राजस्थान की वादियों से गुजर रहे थे। नित्यकर्म से निवृत्त होकर सभी ने प्रार्थना की और फिर अल्पाहार लिया। मेरा मन तो यही सोच-सोचकर रोमांचित हो रहा था कि बॉर्डर (सीमा) का माहौल कैसा होगा, उस पार पाकिस्तान कैसा दिखता होगा आदि-आदि। 'विजय की ओर बढ़ते जा रहे' जैसे गीतों को गाते-गुनगुनाते हम धीरे-धीरे अपने गंतव्य की ओर बढ़ते जा रहे थे। आखिरकार जैसे ही सहयात्रियों ने बताया कि अब गाड़ी जैसलमेर पहुँचने वाली है, आप अपना सामान ठीक कर लो, वैसे ही मनमयूर जैसे नृत्य करने लगा। सभी बड़े खुश थे। जैसे ही रेलगाड़ी

प्लेटफॉर्म पर पहुँची, वैसे ही 'भारतमाता की जय' के नारों से स्टेशन का वातावरण गूँज उठा। हमें लेने के लिए फिंस के कार्यकर्ता आए हुए थे। वे भी हमारे साथ भारतमाता के जयघोष में शामिल हो गए। प्लेटफॉर्म से निकलकर हम बस से अपने आधार कैंप के लिए रवाना हुए। बस में भी गीतों की स्वर लहरी जारी रही।

खूब मस्ती करते हुए हम रात्रि ८ बजे के आस-पास अपने आधार कैंप पहुँच गए। आधार कैंप पर देश के अलग-अलग स्थानों से ८-१० की टोली में आए दस दलों को वहाँ ठहराने की जूनियर हाई स्कूल के प्रांगण में उचित व्यवस्था की गई थी। रात्रि भोजन के बाद राजस्थानी लोक गायन का भी इंतजाम था, जिसकी धुन पर सभी कार्यकर्ता काफी देर तक नाचते रहे।

अगले दिन मंगलवार, २० नवंबर को सुबह के अल्पाहार के बाद सभी दलों से दो-दो कार्यकर्ता लेकर नए सिरे से टोलियाँ बनाई गईं। हरेक टोली को एक स्थानीय कार्यकर्ता गाइड के तौर पर दिया गया। दोपहर रामगढ़ में भोजन के उपरांत सभी टोलियाँ अलग-अलग सीमावर्ती गाँवों में व भारत-पाक बॉर्डर पर जाकर वहाँ के हालातों को जानने-समझने और राष्ट्रीय सुरक्षा का जनजागरण करने के लिए खुली जीपों में सवार होकर चल दी। सभी को रक्षा सूत्र दिए गए, जिनको हमें ग्रामीणों एवं सैनिकों की कलाई पर बाँधना था और सीमा से भारतमाता की पवित्र रज लेकर आनी थी। हमारे दल ने तनोट माता के दर्शन और सीमा दर्शन हेतु प्रस्थान किया। हमारा दल भी स्थानीय कार्यकर्ता प्रेम सिंह भाटीजी के मार्गदर्शन में अपने गंतव्य की ओर बढ़ चला। हाथों में तिरंगा लिये, दूर-दूर तक रेत के पहाड़ों के बीच बनी पक्की सड़क पर सरपट दौड़ती खुली जीप पर सवार हमारा दल थोड़ी देर बाद ही तनोट माता के मंदिर पहुँच गया। वहाँ स्थित प्रसाद की दुकानों से सबने प्रसाद लिया और माता के दर्शन के लिए अंदर प्रवेश किया। प्रवेश द्वारा पर ही विजय स्तंभ बना हुआ था। यह विजय स्तंभ १९७१ के भारत-पाक युद्ध में विजय का प्रतीक है। तनोट माता के बारे में भी प्रसिद्ध है कि युद्ध के दौरान पाक सेना ने जो गोले हमारे सेना और ग्रामीणों पर दागे थे, माता के प्रताप से उनमें से एक भी गोला नहीं फटा। वे सभी गोले आज भी मंदिर में रखे हुए हैं। जिनको हमने भी देखा। इसी कारण इस मंदिर की आस-पास ही नहीं वरन् दूर-दूर तक बहुत मान्यता है और सेना में भी तनोट माता का बहुत पूज्य भाव है। इसका अंदाजा इस बात से भी लगता है कि मंदिर में पूजा-आरती से लेकर संचालन की सारी व्यवस्था सीमा सुरक्षा बल (BSF) के द्वारा की जाती है। बाकायदा वहाँ इस काम के लिए सैनिकों की ड्यूटी लगती है। हमने मंदिर में ड्यूटी पर तैनात सैनिकों से बात की तो पता चला कि सैनिकों के मन में भी तनोट माता के प्रति गहरी आस्था है। वे वहाँ अपनी ड्यूटी लगना सौभाग्य मानते हैं। युद्ध के समय तो मंदिर बहुत छोटा था, जैसा कि बॉर्डर फिल्म में दिखाया गया है, पर युद्ध में मिली जीत के बाद सीमा सुरक्षा बल ने मंदिर को भव्य रूप दिया। आज मंदिर के आस-पास बड़ी संख्या में प्रसाद आदि की दुकानें हैं और बाहर से आनेवाले भक्तों के लिए होटल भी बने हुए हैं। माता के दर्शन के बाद हम आगे (१६ कि.मी.) बी.पी. ६०९ पोस्ट पर पहुँचे। वहाँ के सैनिकों और बी.एस.एफ. के जवानों से मिले।

वहाँ से सीमा की माटी एकत्र की और बबलियान पोस्ट पर तैनात बी.एस.एफ. के जवानों से वहाँ का हालचाल जाना तथा उन्हें रक्षा सूत्र बाँधे। चूँकि 'सरहद को प्रणाम' कार्यक्रम के आयोजकों ने सीमा तक जाने की पहले ही अनुमति ले रखी थी अन्यथा सामान्यत: वहाँ जाना प्रतिबंधित है। वहाँ जाकर देखा कि सीमा पर सुरक्षा की दृष्टि से कँटीले तारों से बार्डर पर दीवार बनाई हुई है। जिस पोस्ट पर हम थे, वहाँ पर गेट भी बना हुआ था और हमारी चौकी से थोड़ी दूर पर ही पाकिस्तान की चौकी भी बनी हुई थी। पर वहाँ कोई नजर नहीं आ रहा था। हमारे सैनिकों ने बताया कि पाक सैनिकों से अकसर उनका टकराव होता रहता है, क्योंकि पाक सैनिक घुसपैठ कराने की फिराक में लगे रहते हैं। लेकिन हमारे सैनिक उन्हें मुँहतोड़ जबाव देते हैं और उनके सभी नापाक मंसूबों को नाकाम करते रहते हैं। सीमा से हम अपने अब तक के जीवनकाल की सबसे सुखद अनुभूति लेकर हमारी जीप में वापस तनोट मंदिर पहुँचे और वहाँ से अब हमें खींया गाँव जाना है, जो यहाँ से करीब १०५ कि.मी. दूर है। हम शाम ५ बजे चले थे और प्रात: ७:३० बजे के करीब हम खींया गाँव पहुँच गए। हमारा पड़ाव एक विद्यालय में हुआ।

अलग-अलग दलों में हमें भोजन के लिए ले जाया गया। यहाँ हमारे मेजबान श्री हरिसिंह प्रजापति रहे। उनके घर एवं उस गाँव की भोजन व्यवस्था एवं उनका आतिथ्य देखकर हम भावविभोर हो गए। प्रात: शौचालय के लिए खुला मैदान और उस व्यवस्था का नया अनुभव प्राप्त हुआ। प्रात: उसी विद्यालय में नाश्ता करके हम अपने दल निर्देशक (गाइड) श्री प्रेम सिंह भाटीजी के मार्गदर्शन में गाँव-भ्रमण पर चल पड़े। खींया लगभग ४०० घरोंवाला और करीब २००० की आबादी वाला विकासशील गाँव है। सामान्य गाँवों की तरह तो नहीं, परंतु ग्रामीण बहुत स्नेही और कर्मठ हैं। यहाँ के लोग प्राय: अफीम का सेवन करते हैं और अतिथियों का स्वागत भी अफीम से ठीक उसी प्रकार करते हैं, जिस प्रकार हम दिल्ली में चाय से करते हैं। चूँकि यह आतिथ्य का अहम हिस्सा था, इसलिए न चाहते हुए भी गेहूँ के दाने के बराबर हमारे दल के सभी साथियों को अफीम खिलाई गई। डर था कि कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। पर मन में एक प्रश्न पैदा हुआ कि आखिर यह परंपरा क्यों पड़ी? पूछने पर कुछ संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। बस पीढ़ियों से परंपरा चली आ रही है। यह भी पता चला कि कृषि एवं पशुपालन ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय है। यहाँ विद्यालय की संख्या तीन है, जिनमें एक उच्च, एक बालिका और एक प्राथमिक विद्यालय है।

अस्पताल की सुविधा के साथ एक पशु चिकित्सालय भी है। यहाँ पर जल का अभाव है, जो दूर इंदिरा नहर से पाइपों या टैंकरों द्वारा लाया जाता है। बिजली की व्यवस्था बहुत उत्तम है। कुछ ब्राह्मण (पालीवाल)

परिवार करीब दो-तीन सौ वर्ष पूर्व यहाँ से पलायन कर चुके हैं, किंतु उनके घर अब भी वैसे ही सुरक्षित हैं। कृषि वर्षाधारित है, अत: मौसमी बेरोजगारी बहुतायत में है। ग्रामीणों में धर्म के प्रति आस्था है। यहाँ दो मंदिर हैं और गाँववालों में बालिकाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता है।

उच्च शिक्षा के लिए छात्र जैसलमेर जाते हैं। यहाँ सरकारी योजनाओं के नाम पर सिर्फ दिखावा है। गाँव की जैसलमेर से दूरी ५६ कि.मी. है और गाँव तक पक्की सड़क जाती है। खाना बनाने/पकाने में ईंधन के रूप में ज्यादातर लकड़ी और उपलों की आगवाले चूल्हों का प्रचलन है। कुछ गैस उपभोक्ता भी हैं। यहाँ डीजल, पेट्रोल जैसलमेर से लाकर कुछ महँगे दामों पर बेचा जाता है। ग्रामीण अपने देश और भूमि को बेहद चाहते हैं। विपरीत हालात के बावजूद वे अपनी इस मातृभूमि को छोड़ना नहीं चाहते हैं।

गाँव के कई सारे ग्रामीणों को हमने रक्षा-सूत्र बाँधे और पत्रक दिए। इसके बाद हम यहाँ से चलकर दोपहर १२ बजे वाहन द्वारा खींवसर गाँव पहुँचे। हमने देखा कि यहाँ भी अफीम का दौर चल रहा था। मेजबान द्वारा हमारे भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई थी। स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन ने हमें गाँववालों का आभारी बना दिया। खींवसर गाँव में हम ग्रामीणों की प्रेम एवं स्नेह की गंगा में आकंठ डूब गए। भोजन में वहाँ का स्थानीय प्रसिद्ध पकवान दाल-बाटी-चूरमा, जो देशी घी में डुबोकर परोसा गया था, के लाजबाव स्वाद का आनंद लिया। वहाँ के व्यक्ति भी भले हैं। घोटुआ मिठाई का स्वाद भी चखा। भोजनोपरांत सीमाजन कल्याण समिति के संगठन मंत्री भीख सिंह भाटी और लक्ष्मी नारायण भालाजी से बातें हुईं। गाँव में लोग घोड़ा भी रखते हैं।

यहाँ पर बंजर धरती, वनस्पति के नाम पर चारों तरफ कँटीली झाड़ियाँ और कठोर चट्टानें ही दिखाई दे रही थीं। खींवसर गाँव में घरों की संख्या २०० से ज्यादा है और कृषि एवं पशुपालन वहाँ का मुख्य व्यवसाय है। कृषि यहाँ वर्षाधारित है। ज्वार, चना एवं बाजरा ये मुख्य फसलें हैं तथा अफीम का चलन भी यहाँ खूब है। यहाँ प्राथमिक अस्पताल एवं विद्यालय उपलब्ध हैं। लड़कों के साथ-साथ लड़कियाँ भी स्कूल जाती हैं, जो एक नई एवं सराहनीय बात है। गाँव में कच्ची सड़कें हैं। कुछ घरों में टी.वी. भी दिखाई दिए। सरपंच तेजा रामजी ने विकास के लिए काफी कुछ प्रयास किए हैं। हमारी पदयात्रा के दौरान राह में कमलेशजी का परिवार मिला, जो अपना जीवनयापन खेतों और वृक्षों के नीचे करता है। वहाँ बेरी के बेर खाने को दिए और फिर चाय भी पिलाई। उन्होंने हमें धन्य कर दिया अपने स्नेहाशीष और प्रेम से।

यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि गरीब व्यक्ति भी अतिथि-सत्कार में कोई कमी नहीं करता है तथा यही परंपरा, जो शहरों में लुप्त हो चुकी है, इन भोलेभाले ग्रामीणों ने बरकरार रखी है। धीरे-धीरे हर ग्रामीण बच्चे-बूढ़ों सभी से मिलते-जुलते और रक्षा-सूत्र बाँधते हम लोग वहाँ से पैदल ही १० कि.मी. दूर गोगादेव गाँव की ओर चल पड़े।

थकान से चूर, फिर भी संचलन अंदाज में नारों का उद्घोष करते हुए हमने शाम को छह बजे गोगादेव गाँव में प्रवेश किया। यहाँ गाँव से बाहर खेलते बच्चों से मिले, अपने विषय में बताया और कुछ युवक भी मिले। फिर हमने गेमर सिंह भाटी का आतिथ्य स्वीकार करते हुए एक कक्ष (हॉल) में अपना पड़ाव डाला। चाय पीकर हम सब तरोताजा हुए और स्वयं का कुछ परिचय आदि कराया। हम प्रेम सिंहजी के निर्देशन में प्रात: से चल ही रहे थे, जो सुल्ताना गाँव के हैं। ७:३० बजे हमने भोजन का लुत्फ उठाया और फिर वहाँ के वातावरण एवं माहौल को समझने के लिए निकल पड़े।

गोगादेव गाँव में भी पानी की समान समस्या है, किंतु हर घर में भूमिगत पानी टैंक बनाया गया है। अब हमें समझ आ रहा था कि मरु प्रदेश में पानी की क्या कीमत है। वैसे पानी का मूल्य इनसे ज्यादा कोई और नहीं समझ सकता।

गाँव के मंडल महामंत्री (भाजपा) श्री गेमर सिंहजी ने हमें बताया कि यहाँ की जनसंख्या एक हजार से अधिक है। गाँव में बिजली की व्यवस्था है और लगभग सभी घरों में टी.वी. है। दो-तीन घर मुसलिमों के हैं, जो गाने-बजाने का काम करते हैं। यहाँ हमें पहली बार शौचालय देखने को मिला, अन्यथा सब लोग खुले में ही शौच करते हैं। शिक्षा का अलख यहाँ जगा हुआ है, बालिकाएँ भी विद्यालय जाती हैं। रात्रि को हम सब आपस में हँसी-ठिठोली करते और मेल-मिलाप करते बहुत अच्छा महसूस कर रहे थे। हमने अपने-अपने फोन तथा कैमरे चार्ज किए और कल सुबह के लिए योजनाओं पर विचार किया।

प्रात: ५ बजे ही दल ने रात्रि को अलविदा कह दिया और नित्य क्रिया से निवृत्त होकर चाय से दिन का प्रारंभ किया। गेमर सिंहजी ने सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, रात्रि में सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन के बाद शयन के लिए आरामदायक बिस्तरों की व्यवस्था की गई थी। सुबह दलिया और छाछ का नाश्ता कराया। अब हमने गाँव में भ्रमण शुरू किया। गाँव के विद्यालय में गए। गाँव से युवकों का पलायन जारी है, जो जयपुर, मुंबई आदि शहरों में काम की तलाश में जाते हैं।

बिजली की व्यवस्था ठीक है। यहाँ मौसमी कृषि है तथा पशुपालन में गाय, भेड़-बकरियाँ पालते हैं। यहाँ सब लोगों से मिलने-जुलने के बाद अब हमें ९ कि.मी. आगे देवा गाँव जाना है। प्रेम सिंहजी एक कुशल निर्देशक और मार्गदर्शक के रूप में सदैव हमारे साथ हैं। राजस्थान का जैसलमेर स्वर्ण नगरी के रूप में क्यों विख्यात है, यह यहाँ आकर पता चल रहा है। घरों में बड़े-बड़े पत्थरों के बने किलेनुमा मकान और हर घर में एक बड़ा सा आँगन तथा घर में प्रवेश करने के लिए मुख्य द्वार के ऊपर कोई छत या बाधा नहीं है, जो यहाँ के राजपूतों की शान को दरशाता था। हमारी टोली के हर सदस्य के लिए राजस्थान दर्शन और सरहद को प्रणाम करने का यह अनुभव अविस्मरणीय है। तेज धूप, नुकीले-कँकरीले रास्ते और रेत से भरे मैदानों को रौंदते, जयघोष करते हम अपने पथ पर निरंतर देवा गाँव की ओर बढ़ते जा रहे हैं। आगे-आगे ध्वजवाहक तथा पीछे-पीछे हम। प्रेमजी हमें पानी की सुविधा दे रहे हैं। हम स्वयंसेवकों की हुँकार और उद्घोषों से पूरा देवा गाँव गूँज उठा। यहाँ भी हमने अपने संघ का और इस कार्यक्रम का अलख जगाया।

गाँव शांत है और आपसी सौहार्द कायम है। गाँव में उच्च विद्यालय, चिकित्सालय एवं मुख्य सड़क भी है। हमें वहाँ के देवगढ़ किले को भी जानने का मौका मिला, जो तीन सौ वर्ष पुराना है। किले के बारे में कुछ विशेष बातें प्रचलित हैं, यथा घोड़ों की टापों की आवाज रात्रि में सुनाई देती है आदि। इस मौके पर गाँव में कुछ साथियों ने ऊँट की सवारी भी की। यहाँ के एक मंदिर में हम सबने विश्राम किया और श्री मोहनलाल चांडकजी ने हमें भूख से निजात दिलाई।

यहाँ के स्वयंसेवक मोहनलालजी ने बताया कि गाँव में ५०० के करीब घर हैं और यहाँ के लोग काफी खुशहाल हैं। दो कुएँ हैं और ट्यूबवेल भी हैं, जो फसलों की सिंचाई का आधार हैं। हमने कुछ कृषकों से भी मुलाकात की, जो प्याज की रोपाई कर रहे थे।

मौसम तो यहाँ के सभी गाँवों में एक जैसा ही है—शुष्क-गरम। जैसलमेर से ३८ कि.मी. दूर स्थित छोटा सा गाँव, जो बिना हरियाली और जल के अभाव के बावजूद अति सुंदर है। भोजन आदि तो हो ही गया, अत: अब हमने बस पकड़ी और बरमसर गाँव आ पहुँचे। शाम को ४ बजे गाँव में सबसे परिचय और फिर चाय का दौर चला। बरमसर गाँव मुख्य सड़क पर स्थित है, जो जैसलमेर से १६ कि.मी. दूर है। पेयजल अन्य गाँवों की तरह समान है, हर घर में पानी की टंकी है और बिजली की उत्तम व्यवस्था भी। हमने यहाँ का अच्छा अनुभव लिया। मेरे साथी राहुलजी और कुछ लोगों ने वहाँ की आशा दीदी सरोजजी से बातें कीं, जो बीकानेर से हैं और दो वर्षों से यहाँ महिला कल्याण के कार्य में लगी हैं। उन्होंने इस बात का खंडन किया कि यहाँ बाल विवाह होते हैं और बालिका-हत्या या भ्रूण-हत्याएँ होती हैं।

विद्यालय में अच्छी शिक्षा व्यवस्था है, लेकिन शिक्षा में ग्रामीणों की खास रुचि नहीं है। यहाँ २०० वर्ष पुराना माता का मंदिर भी है, जो बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ के लोगों में धर्म के प्रति आस्था है और व्रत-त्योहार तथा कर्मकांडों में बहुत विश्वास करते हैं। गाँव के युवक पास ही १६ कि.मी. दूर जैसलमेर में मजदूरी करते हैं, जिसमें पत्थरों को तोड़ने का काम प्रमुख है। अधिकांश ग्रामीण नशे की गिरफ्त में हैं। सरोज दीदी ने हमें बताया कि मनोरंजन के लिए शराब की दुकान है, जो सर्वसाधारण बात है। यहाँ के लोग नशा तो करते हैं, लेकिन छुप-छुपकर नहीं। साफ दिलवाले और सच्चे ग्रामीण अपना संदेश हमें पहुँचा रहे थे कि हालात कैसे भी हो जाएँ, वे यह माटी, यह देश छोड़कर कहीं नहीं जाएँगे। इस राष्ट्रप्रेम, मातृभूमि के प्रति स्नेह को देखकर मैं तो नतमस्तक हो गया।

राहुल, रवि और तुषार पास के ही मंदिर होते हुए पवन-चक्की देखने गए। जैसलमेर में पवन चक्की बहुतायत में दिखीं। वहाँ से आकर हमने शाम को ६ बजे नखत सिंहजी के घर पर भोजन किया। राजस्थानी भोजन की खास बात है—घी का भरपूर प्रयोग और रोटी एवं दाल में मसाले। अब हमारा 'सरहद को प्रणाम' कार्यक्रम समापन की ओर बढ़ चला। सो भोजन करके हमने बस पकड़ी और जैसलमेर स्थित आदर्श विद्या मंदिर में आ गए। यहाँ अन्य सभी दल, जो आधार कैंप से अलग-अलग दिशाओं में गए थे, वे सभी यहाँ आकर मिल गए। यहाँ रात्रि विश्राम के बाद अगले दिन सभी ने स्नान आदि के बाद अल्पाहार किया और फिर वहाँ का प्रसिद्ध किला, जैन मंदिर और बाबड़ी (झील) देखने गए। भ्रमण के बाद सभी को सायं ४ बजे तक वापस विद्यालय आना था, जहाँ से हमें सायं काल ६ बजे दिल्ली के लिए रेलगाड़ी पकड़नी थी। सभी खूब घूमे-फिरे, खरीदारी आदि की और तय समय पर वापस विद्यालय पहुँच गए। जहाँ हमें चाय-नाश्ते के बाद सफर के लिए भोजन के पैकेट दिए गए। कार्यकर्ता वाहनों से रेलवे स्टेशन तक हमें विदा करने आए। रेलवे स्टेशन पर विदा होते समय का माहौल जहाँ देशभक्ति के गीतों और दाल-बाटी-चूरमा, हम भारत के सूरमा जैसे जयघोषों से उल्लासपूर्ण था, वहीं इन पाँच दिनों में मिले अविस्मरणीय स्नेह और आतिथ्य करनेवाले साथियों से बिछड़ने की वेदना हृदय को बेचैन कर रही थी। सभी की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी।

हम प्रेम सिंह भाटीजी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं, जो प्रतिपल एक प्रहरीस्वरूप हमारी सेवा में तत्पर रहे। राजस्थान, जैसलमेरवासियों का हम कैसे शुक्रिया अदा करें, हमारे पास शब्द नहीं हैं। एक तरह से कहें कि हम इन सरहदवासी भाई-बहनों के स्नेह, सत्कार और आतिथ्य के सागर में संपूर्णत: डूब चुके थे। इस मरु प्रदेश की सीमांत गाँवों में जीवन जीने के हालात और परिस्थितियाँ कितनी भी कठोर सही, जीवन में भले ही कितनी ही जद्दोजहद है, पर इस मरूभूमि के सपूतों को कोई शिकायत नहीं, इन्हें अपनी भारत-भू पर गर्व है। कितने ही कष्ट सहकर ये अपनी मातृभूमि को छोड़कर सुविधाओं से लैस स्थानों पर जाना नहीं चाहते हैं। प्रणम्य है इनकी राष्ट्रभक्ति और वंदनीय है देश के प्रति इनका जज्बा।

हमारी इस यात्रा का मकसद कोई पिकनिक मनाने का नहीं था, अपितु सीमा पर तैनात सैनिकों, जो सालो-साल अपने परिजनों और प्रियजनों से दूर रहकर दिन-रात सरहद की सुरक्षा कर रहे हैं, जिसकी बदौलत हम अपने घरों, गाँवों और शहरों में सुरक्षित जीवन जी रहे हैं, उनसे मिलकर अपनेपन का एहसास कराना, उनके जज्बे को नमन करना तथा स्थानीय ग्रामीणों के जीवन-यापन को जानना-समझना कि कैसे वे पड़ोसी देश पाकिस्तान की नापाक हरकतों के बीच कठिन परिस्थितियों में रह रहे हैं। उन्हें यह अहसास कराने कि पूरा देश उनके साथ है, उनके जज्बे को नमन करता है अपितु हमें स्वयं को यह अहसास कराना कि हम जिस मजे से अपने घरों में रह रहे हैं, उसके पीछे सीमा पर खड़े सैनिक और सीमावर्ती ग्रामीणों की कठोर तपस्या भी एक संबल है। हमें इन तपस्वियों को याद रखना है, जरूरत के समय तन-मन-धन से उनके साथ खड़े रहना है। हमें खुशी है कि इस अद्भुत, अतुलनीय और अविस्मरणीय यात्रा के बाद में अपने भारतीय होने पर और ज्यादा गर्व की अनुभूति होने लगी और दुबारा एक बार फिर जाने की इच्छा जाग्रत् हो चुकी है।

सा.अ.

एफ-१८, प्रेमनगर-१, किराड़ी
दिल्ली-११००८६
दूरभाष : ८१७८३२५७३५

थोड़ा लिखा, थोड़ा पढ़ाया

● नवनीत गांधी

बैठकर बेकार

बैठकर बेकार बीते दस साल
नजरें उनकी जो हैं संग-सखा, रिश्तेदार
कभी भरकर असीम हैरत
कभी चुल्लू-भर तंज
पूछती वही सवाल
रहते कभी जो गोल; कभी सीधा जिनका आकार,
'हैं ? कैसे जी रही तुम बरसों से बैठकर बेकार ?'

फर्राटे से निकलते
हमारे भी शब्द, करते पलटकर वार
खूब अच्छा खा रहे, बतिया रहे
थोड़ा लिख रहे, थोड़ा पढ़ और पढ़ा रहे
न अधिक पाया, न खोया
न छीना न छुपाने का ढो रहे भार
हम तो बढ़िया रहे, बैठकर बेकार।

आराम से उठना
फिर तीन किलोमीटर की प्रतिदिन सैर
पार्क के बेंच पर बैठ आसमान को तकना
पंछियों की मीठी बोलियों को सुनना
उनकी उड़ान में ढूँढ़ना अपनी तुष्टि
लौट आना झोली में लिये
उनके हौसलों से सबक दो-चार
मन शीतल है; शांत है बैठकर बेकार।

दोस्त अभी तक हैं जुटे हुए
झुँझला रहे; लेकिन मगन हैं
इकट्ठा कर रहे धन, संपत्ति और मुकाम
एक मकान के बाद दूजा मकान
चारों ओर समेटने की ऐसी चीख-पुकार
कि सुनाई नहीं दे रही उन्हें
मिड-लाइफ की बज रहीं जो घंटियाँ जोरदार
और हम मुसकरा रहे हैं देख यह चित्रहार,
बैठकर बेकार।

नहीं, समझौता नहीं किया
न ही मन को मारने के लिए अब भी हैं तैयार
थोड़ा लिखा; थोड़ा पढ़ाया
थाड़ा चाहा, उतना ही कमाया
न आय-कर वसूने वालों
और न ही चोर-डाकुओं को हम से अपेक्षा;
न ही हमारा इंतजार
हम तो चिंता-मुक्त हैं, बैठकर बेकार।

कोई कर रहा गुलामी,
कोई सेवा, कोई मजदूरी
कोई मर रहा अपने लिए,
कोई जी रहा कि है परिवार
किसी पर अपना, किसी पर
जात-धर्म के हित का जुनून सवार
कइयों की है यह जिद्द
हे ईश्वर!
कि सोने के रथ पर करना है तुझको सवार
बदले में देंगे सूची
जिस पर होंगी ख्वाहिशें हजार
अपना तो ऐसा कोई न कारोबार;
बस, यों ही बैठे हैं बेकार।

सभी हैं जुटे; हैं व्यस्त
लेकिन सच बतलाना ईश्वर,
तुम भी तो हो रहे हो न बोर
कहाँ किसी के पास समय कि तुम्हें समझ पाएँ
करके गप-शप इक-दूजे से,
आ जाएगा हम दोनों को करार
बस इसी वास्ते मुझे भी बैठा रहने दे बेकार।

सुपरिचित लेखिका। पत्र-पत्रिकाओं में २५० से अधिक लेख एवं ७ पुस्तकें प्रकाशित। संप्रति इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, कुवैत में अध्यापन में रत।

एक पल ही तो

एक पल में दहकता-डराता सूरज डूबे,
एक पल में धीमे से प्यारी सी पौ फूटे।

एक पल में दिल दीवाना हो झूमे-गाए,
एक पल में सब खत्म,
दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाए।

एक पल अपना सा लगे पड़ाव सुहाना,
एक पल में तहस-नहस होए आशियाना।

एक पल ही हँसी की गूँजे खनक,
एक पल अपना कोई न दिखे दूर तलक।

जाता हुआ पल जब सब बिखरने में,
एक पल क्यों न लगाता तकदीर सँवरने में ?

एक पल जो है इतना-इतना बलवान,
फिर लंबी सोच में काहे मग्न है इनसान ?

इतना हिसाब-किताब काहे करता अपनी बही,
अगले पल का भी जब तुझे कुछ पता नहीं।

बी-१०३, प्रणय लीला सी.एच.एस.
परिमल नगर, गोरेगाँव वेस्ट
मुंबई-४०००६२

बाल-कविता

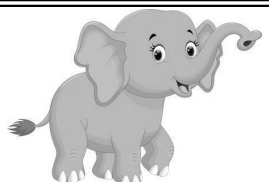

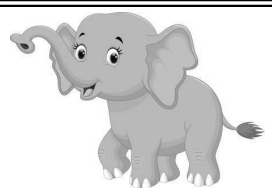

मोटा हाथी, मोटा हाथी

● शिवानंद सिंह 'सहयोगी'

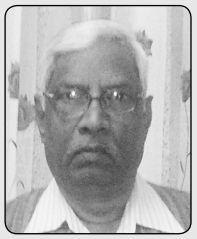

सुपरिचित कवि। गीत, नवगीत, कविता, गजल, दोहे, दुमदार दोहे, कहानी, लघुकथा, कुंडलिया, समीक्षा आदि विधाओं पर लगभग अठारह पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। मित्र, प्रेरणा श्री, काव्य कौस्तुभ, काव्यभूषण, दोहा श्री, साहित्य महोपाध्याय, शब्द रत्न, साहित्य रत्नाकर, साहित्य गौरव सम्मान से सम्मानित।

घुघुआमाना

पापा-पापा
आज नहीं मैं खाऊँगा
घर का खाना।

आलू का जो बना पराठा
मिरचा माहुर बहुत जियादा
बाहर मोटा टोपीवाला
बैठा कोई लाल पियादा
चाचा-चाचा
आज नहीं मैं जाऊँगा हाथीखाना।

नानी-नानी
प्यास लगी है पानी लाओ
टाफी चाहे नहीं खिलाओ
मुझे छोड़कर कहीं न जाओ
नाना-नाना
आज नहीं मैं खेलूँगा
घुघुआमाना।

मामी-मामी मुझे बताओ
मेरी माई कहाँ गई है
बिना बताए बिना कहे कुछ
बुढ़िया दाई कहाँ गई है?
चाची-चाची
आज नहीं मैं गाऊँगा
कोई गाना।

बकरी भागो

बकरी भागो आया शेर
जंगल बिल्कुल खाली-खाली
टूट गई है मोटी जाली
करो नहीं अब कोई देर।

देखो भालू भाग रहा है
शेर कुलाँचें मार रहा है
हिरनी को कर देगा ढेर।

हाथी सिर पर धूल चढ़ाता
छोटा हाथी है चिल्लाता
कौआ को है तनिक न फेर।

बिल से निकला काला अजगर
लंबाई है कुल दो गजभर
रहा नेवला नागिन घेर।

देखो-देखो दौड़ा घोड़ा
घुड़सवार है मारा कोड़ा
भैंस रही है पड़िया हेर।

मोटा हाथी

मोटा हाथी, मोटा हाथी
चला नहाने, मोटा हाथी।

मोटा हाथी सूँड़ डुबाया,
हाथीवाला है मुसकाया,
माँग रहा है लोटा हाथी,
मोटा हाथी, मोटा हाथी।

मोटा हाथी लादा हौदा,
हाथीवाला रोपा पौदा,
पीछे-पीछे छोटा हाथी,
मोटा हाथी, मोटा हाथी।

मोटा हाथी घर को भूला ,
बरगद पर है डाला झूला,
लगा रहा है झोटा हाथी,
मोटा हाथी, मोटा हाथी।

मोटा हाथी हुआ बिकाऊ,
नहीं रहा वह माल टिकाऊ,
बिका गया अब कोटा हाथी,
मोटा हाथी, मोटा हाथी।

अक्खो मक्खो

अक्खो मक्खो, अक्खो मक्खो
गुड़िया-गुड़िया दीप जलाओ
लाल मिरच का डब्बा लाओ
चुनमुन-चुनमुन शीश नवाओ
गरम छनौटा पास न रक्खो
अक्खो मक्खो, अक्खो मक्खो।

नजर लगी है नजर उतारो
नई सोच को डंडा मारो
चुनमुन-चुनमुन जीभ दिखाओ
लौंग मीठ है टुकड़ा चक्खो
अक्खो मक्खो, अक्खो मक्खो।

देखो आई बिसकुट वाली
जग्गन दौड़ा लेकर बाली
चुनमुन-चुनमुन आदत डालो
अक्कट-बक्कट कभी न चक्खो
अक्खो मक्खो, अक्खो मक्खो।

चों-चों-चों-पों-पों-पों

चरखा बोला चों-चों-चों
उड़ा पपीहा पों-पों-पों
चों-चों-चों-पों-पों-पों

भागा-भागा बगुला आया
मैनी को भी पास बुलाया
बया उड़ी है सों-सों-सों
चों-चों-चों-पों-पों-पों

गदहा बोला हेंको-हेंको
खरहा बोला कुरसी फेंको
कौआ बोला कों-कों-कों
चों-चों-चों-पों-पों-पों

चूहा अपना मारा पंजा
बिल्ली का सिर पूरा गंजा
बंदर बोला खों-खों-खों
चों-चों-चों-पों-पों-पों

गीदड़ बोला हूआँ-हूआँ
चिमनी ने है फेंका धूआँ
मेंढक बोला टों-टों-टों
चों-चों-चों-पों-पों-पों

अधुर नेवला दौड़ा आया
ताका-झाँका पूँछ हिलाया
साँप फुँकारा फों-फों-फों
चों-चों-चों-पों-पों-पों

गौरैया ने बीन बजाई
गूँज उठी पिक की शहनाई
कुतिया बोली भों-भों-भों
चों-चों-चों-पों-पों-पों

'शिवाभा', ए-२३३ गंगानगर
मेरठ-२५०००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९४१२२१२२५५

वर्ग पहेली (१६८)

अगस्त २००५ अंक से हमने '**वर्ग पहेली**' प्रारंभ की, जिसे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं ज्ञान-विज्ञान की अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री विजय खंडूरी** तैयार कर रहे हैं। हमें विश्वास है, यह पाठकों को रुचिकर लगेगी; इससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ेगा और पूर्व की भाँति वे इसमें भाग लेकर अपना ज्ञान परखेंगे तथा पुरस्कार में रोचक पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे। भाग लेनेवालों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना होगा—

१. प्रविष्टियाँ छपे कूपन पर ही स्वीकार्य होंगी।
२. कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।
३. प्रविष्टियाँ ३१ सितंबर, २०१९ तक हमें मिल जानी चाहिए।
४. पूर्णतया शुद्ध उत्तरवाले पत्रों में से ड्रॉ द्वारा दो विजेताओं का चयन करके उन्हें दो सौ रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप भेजी जाएँगी।
५. पुरस्कार विजेताओं के नाम-पते नवंबर २०१९ अंक में छापे जाएँगे।
६. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम तथा सर्वमान्य होगा।
७. अपने उत्तर '**वर्ग पहेली', साहित्य अमृत, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२** के पते पर भेजें।

वर्ग पहेली (१६६) का शुद्ध हल

१ब	हा	२दु	३री	■	४अ	५चा	न	६क
रा	■	७रु	त	८बा	■	ह	■	च
९म	ही	प	■	१०ल	ज्जि	त	११हो	ना
द	■	यो	■	क	■	■	१२ट	र
■	१३सं	ग	म	■	१४स	१५र	ल	■
१६मे	घ	■	■	१७चा	■	घु	■	१८क
११ह	र्ष	२०का	र	क	■	२१नं	दो	ई
न	■	य	■	२२र	२३स	द	■	बा
२४त	जु	र	बा	■	२५जा	न	व	र

★ पुरस्कार विजेता ★

१. **सुश्री शुभा सिन्हा**
दिल्ली पब्लिक स्कूल
दामनजोड़ी, जिला-कोरापुट-७६३००८
(ओड़िशा)
दूरभाष : ८२६९७८४७९४

२. **श्री अमरदेव आंगिरस**
आंगिरस भवन, निकट फलोद्यान
दाड़ला घाट, सोलन-१७११०२
(हि.प्र.)
दूरभाष : ९४१८१६५५७३

पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई।

वर्ग-पहेली १६६ के अन्य शुद्ध उत्तरदाता हैं—सर्वश्री पी.के राधामणी (कोझीकोड), रेणु मिश्र (जयपुर), गिरधारी लाल अग्रवाल (पुसद), विनीता सहल (मुंबई), बद्रीलाल व्यास (राजगढ़), रचना वार्ष्णेय (पुणे), सुनीता वर्मा (भिलाई), रामेश्वर कुलमित्र (कबीरधाम), अपर्णा गर्ग (ग्वालियर), मोहन जगदाले (उज्जैन), सतीश जोशी (रतलाम), वाई.के. श्रीवास्तव (जबलपुर), मोहन उपाध्याय (अजमेर), सरला लोढा (उदयपुर), विजयपाल सेहलंगिया, ब्रह्मानंद खिच्ची, खुशी खिच्ची (महेंद्रगढ़), फकीरचंद ढुल (कैथल), माणिक तुलसीराम गौड़, मधुरानी (बेंगलुरु), नीरजा शर्मा (अहमदाबाद), स्मृति वर्मा (रायपुर), जगदीश राम गर्ग, सुशील बुडाकोटी (मानसा), रुक्मणी संगल (पटियाला), संतोष शर्मा (गाजियाबाद), खुशी चतुर्वेदी (लखनऊ), सरला चौधरी (बरेली), खुशी सिंघल (पिलखुआ), कविता जैन, सुभाष शर्मा, कुसुम गोयनका, बी.डी. बजाज, निर्मला गुजराती, दिनकर सहल, रत्ना वार्ष्णेय (दिल्ली)।

बाएँ से दाएँ—

१. उर्दू फारसी का कवि सम्मेलन (४)
४. आग बुझाने की मशीन (४)
७. कष्टकारी, जो कष्ट पहुँचाता हो (५)
८. टपकाव (३)
१०. खामोशी, चुप होने की अवस्था (४)
१२. निकट संबंधी, जिससे मुसलिम कन्या का ब्याह जायज न हो (४)
१३. दूध, क्षीर (२)
१४. दंड (२)
१६. प्रकट, खुला (४)
१९. रास्ता दिखाना, अनुदेश (४)
२१. बजाना (३)
२२. गुमराह करना, बहकाना (५)
२४. एकाग्रचित्तता (४)
२५. लोकाचार (४)

ऊपर से नीचे—

१. दोषी, कसूरवार (४)
२. श्रीकृष्ण (४)
४. कृपा करने योग्य (४)
५. मीन, मत्स्य (३)
६. अनवरत, निरंतर, मुसलसल (४)
९. किसी भले आदमी या रईस का लड़का (५)
११. वश में करने की किया, सम्मोहन (५)
१४. सहनशीलता, क्षमाशीलता (४)
१५. दुख या कष्ट में होनेवाली बेचैनी (४)
१७. माता का दादा (४)
१८. जो सदा बहुत बड़े-बड़े दान करता रहता हो (४)
२०. यूनानी, तीव्र वेग (३)
२३. शर्म, हया (२)

वर्ग पहेली (१६७) का हल अगले अंक में।

वर्ग पहेली (१६८)

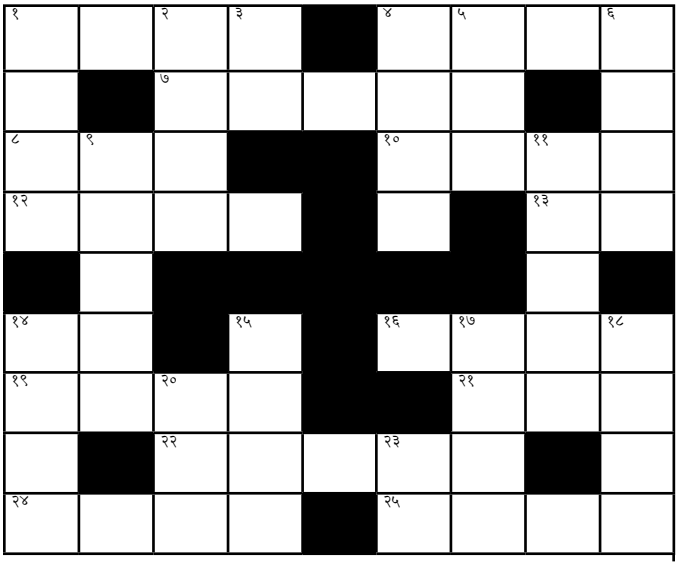

प्रेषक का नाम : .....

पता : .....

.....

.....

दूरभाष : .....

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

'साहित्य अमृत' का जुलाई अंक ने हरीतिम और नीला कलेवर लिये आवरण बरसात के पानी, बचपन, नाव और बहाव की याद ताजा कर गया। संपादकीय में लोकसभा चुनाव संबंधित समीक्षित विचारों स्वद्य एक बड़ा स्पष्ट चित्र खिंचा मिला। डॉ. अब्दुल कलाम के संकटमोचक तीन व्यक्ति ने सामाजिक सद्भाव की अच्छी प्रेरणा दी। कुँअर बेचैन की 'बहन से बात करोगे' ने तो सचमुच दिल को छू लिया। मृत्यु कहीं आँसुओं की भाषा सुनती है क्या? सोमा बंद्योपाध्याय की कहानी 'इति कवि कथा' ने काफी उत्प्रेरित और प्रभावित किया। रविकिरण सचदेव की 'विषधर', प्रशांत कुमार सिन्हा की 'अधूरी ख्वाहिशें' कहानियाँ अच्छी लगीं। गोपाल चतुर्वेदी का 'बिन पावर सब सून' में कुरसी का करिश्मा और कलंक के कालिख में डूबे लोग भी नजर आए। राजनीतिक दलों के उसूलों के ड्राईक्लीनर में नेताओं के सिद्धांतों को घुलते देखा, अच्छा लगा। कविताएँ भी भाईं।

—नंद किशोर तिवारी, वाराणसी (उ.प्र.)

'साहित्य अमृत' का अगस्त अंक 'शौर्य विशेषांक' के रूप में पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। इसे हम एक ऐतिहासिक विशेषांक के रूप में देख रहे हैं। ऐसा विशेषांक हमें पहली बार पढ़ने को मिला। संपादकीय में शौर्य गाथा, हमारे परमवीर चक्र विजेता, भारतीय नौसेना : शौर्य का अप्रतिम स्वरूप, हमारे अशोक चक्र विजेता, दक्षिण भारत की शौर्य गाथाएँ, सिख गुरुओं की शौर्य गाथाएँ खूब पसंद आईं तथा बेहद ज्ञानवर्धक लगीं। इस विशेषांक की जितनी भी तारीफ करें, वह कम ही है।

—बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

'साहित्य अमृत' का अगस्त अंक 'शौर्य विशेषांक' शौर्य गाथाओं की विविधताओं से मदमाता तन-मन में जोश-खरोश और देशभक्ति का तूफान जगा गया। देश-समाज और मानव मात्र के प्रति सेवा और संपन्नता के लिए हमारे सैनिक और समाजसेवी जिस शौर्य भरे उन्माद से अपने कर्तव्य पर डटे अकथनीय परिश्रम करते हैं, वह अनुकरणीय और वंदनीय है। संपादकजी द्वारा 'शौर्य' शब्द की परिभाषा का विभिन्न कोणों से विस्तृत परिचय पाठकों को बहुमूल्य जानकारी देकर ज्ञानचक्षु खोलने में अहम भूमिका निभाता है। इस प्रशंसनीय और संचनीय अंक की विशेषता है कि विलुप्त हुए हमारे वीर सेनानियों का विवरण उनके राष्ट्रीय सम्मानों, अशोक चक्र विजेता और परमवीर चक्र विजेता से हमें अवगत कराने का पुण्यमयी कार्य किया है। जल-थल-नभ में कार्यरत हमारी वीर सेना के बहादुर नायक जिस तरह अपनी जान की बाजी लगाकर देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं, हमारी श्रद्धा के पात्र हैं। विजयदत्त श्रीधर का आलेख '२२७६ वर्षों बाद दोहराई गई शौर्यगाथा' का वर्णन कर योद्धा चंद्रगुप्त मौर्य और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा दुश्मन की विशाल फौज को अपने सैनिकों के शौर्यबल से आत्म-समर्पण करने को विवश किया और विश्व का भूगोल बदल दिया, सराहनीय जानकारी है। कारगिल युद्ध भी हमारे वीर सैनिकों की बहादुरी के लिए सदैव स्मरण किया जाएगा।

आहवे तु द्रतं शूरं न शोचेत कथचन।
अशोच्यो हि हत: शूर: स्वर्गलोके महीयते॥

—रजनी सिंह, डिबाई (उ.प्र.)

'साहित्य अमृत' का अगस्त अंक समय पर प्राप्त हुआ। 'बहादुर सेनापति' कहानी ने अत्यधिक प्रभवित किया। सन् १९४६ में सुभाषचंद्र बोस नाम था एक जुझारू जननायक का। 'खून दो और आजादी ले लो' का नारा उस समय जनता की आवाज बन गया था। मैं उस समय नौवीं कक्षा का छात्र था। 'लाल किले से आई आवाज सहगल, ढिल्लों, शाहनवाज' की जनध्वनि सड़कों पर गूँज रही थी। विष्णुजी की कहानी तत्कालीन समाज में एक नए जागरण की प्रतीक थी। लोक साहित्य में शौर्य लेखिका विद्या विंदु सिंह ने तत्सम कुलवधुओं के स्वप्न को उद्घाटित किया है। आज भी लोककंठों में उस वीर सुभाष की गाथाएँ बसी हुई हैं—सुभाष बाबू तोहार आजादी सपनवा हरि मोर पूरा करि है

तोहरे साधे खुनवा बहई है, अंग्रेजों को मार भगइ है।
तोहरा पिछवा पिछवा चलि हैं, देसवा आजाद करई हैं।

वीर हकीकत राय के बलिदान को आज बहत्तर वर्ष बाद आपकी पत्रिका में देख रहा हूँ। जिन सपूतों ने आत्माहुति देकर स्वतंत्रता आंदोलन को निरंतरता दी, बेशक कुछ स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने उन्हें भुला दिया है, आपने इस अंक में उनको पूरा सम्मान दिया है। अशोक अंजुम की कविता 'मैं सैनिक हूँ' ने विभोर कर दिया।

'शौर्य विशेषांक' दस्तावेजी ऐतिहासिक अंक है। इसमें साहित्य का सुख भी है, प्रामाणिक शौर्य गाथाएँ भी हैं और विस्मरित शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि भी है। यह अंक वास्तव में संग्रहणीय है। संपादक मंडल को मेरी पाठकीय बधाई।

—बी.डी. बजाज, दिल्ली

'साहित्य अमृत' का 'शौर्य विशेषांक' एक अनूठी सौगात है। छात्रों-शोधार्थियों के लिए ही नहीं, सामान्य पाठक के लिए भी यह एक दस्तावेज साबित हो रहा है। अकसर सरकारी, अर्ध-सरकारी संस्थान, पत्रिकाएँ भी योजना बनाती हैं तो ऐसा परिणाम प्राय: सामने नहीं आता, जैसा 'साहित्य अमृत' ने कर दिखाया है, बधाई। अपनी परंपरा में सामान्य अंक पठनीय रहते हैं, मगर 'साहित्य अमृत' के विशेषांक खासतौर पर उपयोगी, संग्रहणीय सिद्ध होते हैं। पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ। यहाँ मात्र संकलन नहीं, प्रस्तुतीकरण का भी अपना महत्त्व है, अंक की रूपरेखा बता रही है कि संपादकीय विभाग ने श्रमसाध्य कार्य किया है। आवरण पृष्ठ से लेकर पत्रिका में हर जगह चित्र-सचित्र दर्शाती सामग्री पाठक को बाँध रही है। दूसरी भारतीय भाषाओं को भी यहाँ से प्रेरित होकर इस स्तर के उपयोगी अंक निकालने चाहिए।

—फूलचंद मानव, जीरकपुर (पंजाब)

'साहित्य अमृत' का अगस्त अंक 'शौर्य विशेषांक' आद्योपांत पढ़ा। सारगर्भित संपादकीय—शौर्य एक बहुरंगी अवधारणा, ब्रिगेडियर सावंत

का रोमांचक विवरण—शौर्य परंपरा, 'शौर्य के स्वर' में संपादक मंडल द्वारा प्रस्तुत काव्य मंजूषा, अक्षुण्ण शौर्य की गाथाएँ, पुस्तक अंश पढ़कर मस्तक गर्व से ऊँचा उठ गया। एक जगह सभी वर्गों के लिए चाहे वह सामान्य जनता हो, प्रबुद्ध नागरिक हों, सैनिक परिवार से हो या चलचित्र समूह से हो, युवा, वृद्ध, महिला, दलित-वंचित सभी के लिए उसके त्याग और शौर्य की वीरगाथा का इतना सुंदर विश्लेषणात्मक व भावनात्मक संग्रह शायद ही देखने को मिले। साहित्य की सभी विधाओं को समेटे हमारे शौर्य इतिहास १८५७, १९४७, १९६५, १९७२ और कारगिल पर इतनी सजीव सामग्री देने लिए समस्त संपादकवृंद को हृदय से बधाई। आज हमारे किशोरों और नौजवानों को ऐसे ही साहित्य की जरूरत है।

—श्रीधर द्विवेदी, नई दिल्ली

'साहित्य अमृत' के अगस्त अंक में शहीदों और सैनिकों की एकजुटता, जीवटता, सहनशीलता, शूरवीरता के किस्से, कहानियाँ, कविताएँ रोचक, ज्ञानवर्धक, मार्मिक लगीं। हिंदुस्तानी होने पर गर्व की अनुभूति हुई। अंग्रेजों के जुल्मों की जकड़नवाली जंजीरों से जूझकर मुक्ति दिलानेवाले असंख्य शहीद हों या कि रक्षा के लिए सरहदों पर दुश्मनों से लड़ने-भिड़नेवाले शूरवीर सैनिक, सभी हमारी आन-बान-शान-स्वाभिमान के प्रतीक हैं। शहीदों की बहादुरी, बलिदानों पर आधारित देशभक्तिपूर्ण फिल्मी गीतों और फिल्मों को अंक में शामिल करना उल्लेखनीय, सराहनीय, अभिनंदनीय है। वीररस की कविताएँ जहाँ शरीर में उमंग, तरंग, सिरहन पैदा करती हैं, वहीं कई रचनाएँ तड़पाती, झकझोरती हैं। चिंतन-मंथन करने पर मजबूर करती हैं। २३६ पृष्ठोंवाला भारी-भरकम सुपाठ्य, संग्रहणीय विशेषांक हर देशप्रेमी के पास अनिवार्य रूप से होना आवश्यक है। इस अविस्मरणीय अंक के लिए संपूर्ण संपादकीय मंडल को बधाई, साधुवाद और शुभकामनाएँ।

—अशोक वाधवाणी, गांधी नगर (महाराष्ट्र)

'साहित्य अमृत' का अगस्त अंक पढ़ने का मौका मिला। यह अंक भारत के वीर योद्धाओं की शौर्य गाथाओं से भरा पड़ा है। प्रत्येक गाथा शरीर में जोश भरती है तथा प्रेरणा प्रदान करती है। इस अंक से हम उन शूरवीरों की गाथाओं से भी परिचित हुए, जिनके बारे में हमें जानकारी नहीं थी। भारत ही वह देश है, जहाँ वीर योद्धाओं की शौर्य गाथाओं का वर्णन होता है, अन्य देशों में नहीं। इस प्रकार का अंक प्रकाशित करने के लिए आपको धन्यवाद!

—ब्रजमोहन जैन, दिल्ली

'साहित्य अमृत' का 'शौर्य विशेषांक' वाकई हिंदी साहित्य का शौर्य विशेषांक है। भारतीय सैनिकों के अमर त्याग, अदम्य वीरता और महान् बलिदान को उद्घाटित करते हुए प्राय: सभी रचनाकारों ने अपने आलेख और कविताओं के माध्यम से शब्दबद्ध किया है, वह अपूर्व है। देश की आजादी से लेकर सन् १९६५, १९७१, कारगिल युद्ध और एयर स्ट्राइक की वीरोचित गाथाएँ पहली बार किसी पत्रिका के माध्यम से प्रबुद्ध पाठकों तक पहुँची हैं। निश्चय ही ये गाथाएँ देश के सभी बच्चों, युवाओं को प्रखर प्रेरणा तो प्रदान करेंगी ही, उनमें राष्ट्र के लिए समर्पण आत्मत्याग-बलिदान का उज्ज्वल ऐतिहासिक बोध कराने में भी सक्षम हैं। एक-एक शब्द में चेतना की लौ है। ये ऊर्जापूर्ण लेख जाँबाज सैनिकों के अद्भुत देशप्रेम की मिसाल पेश करते हैं। मेजर रणजीत सिंह ने भारत-पाक युद्ध के दौरान लाहौर पर गोले बरसाए थे। उनके शब्दों में, सैनिक, सच्चा सैनिक, युद्ध का तपा सैनिक सचमुच ही स्थितप्रज्ञ योगी होता है। मातृवेदी पर अपने को न्योछावर करनेवाले उन वीर सपूतों को शत-शत नमन!

'बहादुर सेनापति' प्रतिस्मृति स्वरूप विष्णु प्रभाकर की अभिव्यक्ति और 'सिख गुरुओं की शौर्य-परंपरा' लेख इतिहास के वे गवाक्ष खोलते हैं, जिससे सिख गुरुओं सहित गुरु गोविंद सिंह के दो अमर सुपुत्रों की वीरोचित गाथाएँ पढ़कर रोंगटे खड़े हो गए। ऐसा अद्भुत बलिदान पूरे विश्व के इतिहास में दुर्लभ है। अन्य रचनाएँ भी राष्ट्रप्रेम से परिपूर्ण-प्रेरक हैं। सारत: आयोजित अंक भारतीय वीरों की ऊर्जस्वित शौर्यगाथा का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। आशा है यह अंक देश-विदेश के सभी पुस्तकालयों, शोध-अध्ययन केंद्रों और राष्ट्रीय-गैर राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों में भी अपनी उपादेयता से समादृत होगा। संपादक मंडल को इस विशिष्ट सामग्री के लिए साधुवाद!

—डॉ. राहुल, दिल्ली

'साहित्य अमृत' का अगस्त का बृहरांक 'शौर्य विशेषांक' पढ़कर धन्य हो गया। विविधतापूर्ण कलेवर से संपन्न किसी पत्रिका का ऐसा अंक अभी तक मेरे देखने में नहीं आया। यह अपने आप में अद्भुत कार्य हुआ है। गीत, कविता, आलेख, एकांकी, लोक-साहित्य—क्या नहीं है इस अंक में। इसके पठन-पाठन से हमारी युवा पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त होगा। देशभक्ति और देशानुराग का जज्बा निश्चित रूप से उनमें विकसित होगा। वैसे तो मैंने अभी तक 'साहित्य अमृत' के सभी विशेषांक पढ़े हैं, सब एक से बढ़कर एक रहे हैं, परंतु शौर्य जैसे विषय पर यह विशेषांक तो कमाल का है। आद्योपांत पढ़कर अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। संपादकीय टीम के श्रम को बारंबार प्रणाम करता हूँ।

—आनंद शर्मा, दिल्ली

'साहित्य अमृत' का 'शौर्य विशेषांक' मिला। संपादकीय लेख बेहद जानकारी से भरा व प्रेरणादायक है। एक ही अंक में इतनी सारी महत्त्वपूर्ण जानकारी पढ़कर विस्मित हूँ। हमारे अद्वितीय जाँबाज परमवीर चक्र विजेताओं तथा अशोक चक्र विजेताओं की संपूर्ण जानकारी इसमें है। तीनों सेनाओं की तासीर और उनके शौर्य-पराक्रम को दिखानेवाले लेख संग्रहणीय बन गए हैं। सिनेमा में भी शौर्य आपने ढूँढ़ निकाला है, वहीं लोक-साहित्य में भी। देश के अलग-अलग भागों से शौर्य-पराक्रम की गाथाओं का परिचय प्राप्त हुआ। सिक्ख गुरुओं की शौर्य-परंपरा तो बेमिसाल रही है। विजय दत्त श्रीधरजी ने अपने आलेख में २२७६ वर्षों के बाद भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण की गाथा दोहराई, पढ़कर सीना गर्व से फूल गया। आलेखों के साथ-साथ गीत-कविताओं के चयन में भी आपने कमाल कर दिया है। आपका श्रम धन्य है। आपके माध्यम से समस्त देशवासियों को बधाई देता हूँ।

—डॉ. रामप्रकाश राय, गोरखपुर (उ.प्र.)

'अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष' मनाया गया

९ अगस्त को नई दिल्ली की साहित्य अकादेमी में 'अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष' के अवसर पर 'अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव' का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि प्रख्यात ओड़िया कवि डॉ. सीताकांत महापात्र तथा विशिष्ट अतिथि प्रख्यात कवि और लोक कथाकार श्री हलधर नाग थे। बीज वक्तव्य भाषाविद् डॉ. उदय नारायण सिंह ने दिया और कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने की। स्वागत भाषण अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवास राव ने दिया। कार्यक्रम का प्रथम सत्र 'भारत की आदिवासी भाषाएँ : विशिष्टता, मुद्दे, वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियाँ' विषय पर केंद्रित था। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मिमि केविचुसा इजुङ ने की और सर्वश्री शांता नाइक (बंजारा), महादेव टोप्पो (कुडुख), सत्य नारायण मुंडा (मुंडारी), पूर्णचंद्र हेंब्रम (संताली), चंद्रमोहन हेब्रू (हो) ने आलेख पाठ किए। दूसरा सत्र कहानी-पाठ पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री केशरी लाल वर्मा ने की और सर्वश्री प्रदीप कन्हर (कुई), के. सानी एलेक्जेंडर (माओ), बीरबल सिंह (मुंडारी), शोभानाथ बेसरा (संताली) ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। अंतिम सत्र कविता-पाठ की अध्यक्षता श्री बादल हेंब्रम ने की और कालिङ बोराङ (आदि), अंगम जतुंग चिरु (चिरु), पद्मिनी नाइक (हो), किशोर कोरा (कोरा), कलाचंद्र महाली (महाली), अशोक कुमार पुजाहारी (संबलपुरी-कोशाली), गागरिन शबर (शबर) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। ☐

'साहित्य मंच' कार्यक्रम आयोजित

७ अगस्त को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी द्वारा 'साहित्य मंच' कार्यक्रम में पाँच पंजाबी रचनाकारों ने रचना-पाठ किया। श्रीमती अरकमल कौर ने अपनी पंजाबी गजलें प्रस्तुत कीं। सर्वश्री श्री बलजिंदर नसराली व गुरदीप कौर ने एक-एक कहानी प्रस्तुत की। सर्वश्री जसविंदर बिंद्रा एवं ममता ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं, जो विभिन्न विषयों पर केंद्रित थीं। संचालन पंजाबी भाषा परामर्श मंडल के सदस्य श्री रवि रविंदर ने किया। धन्यवाद साहित्य अकादेमी के संपादक श्री अनुपम तिवारी ने किया। ☐

श्री राम बहादुर राय को '२२वाँ हिंदी रत्न सम्मान'

१ अगस्त को हिंदी भवन, नई दिल्ली में आयोजित 'हिंदी रत्न सम्मान' समारोह में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडनजी की जयंती पर उनके अनुयायी तथा प्रसिद्ध पत्रकार भीमसेन विद्यालंकारजी की स्मृति में हिंदी भवन द्वारा दिया जानेवाला '२२वाँ हिंदी रत्न सम्मान' इस वर्ष निष्पक्ष तथा निर्भीक लेखन के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय को दिया गया। श्री राय को यह सम्मान हिंदी भवन के अध्यक्ष श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, हिंदी भवन के मंत्री डॉ. गोविंद व्यास तथा श्री हिंदी भवन न्यास समिति के सदस्यों ने सम्मान प्रदान किया। सर्वश्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, गोविंद व्यास ने रामबहादुर रायजी के संघर्ष और उनके लेखन व पुस्तकों में टी.एन. चतुर्वेदी की चर्चा की। अध्यक्षता माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता तथा जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने की। श्री राम बहादुर रायजी का परिचय कादंबिनी पत्रिका के मुख्य कॉपी संपादक श्री संत समीर ने दिया तथा संचालन श्री अभिनव चतुर्वेदी द्वारा किया गया। ☐

नारी चेतना कार्यक्रम आयोजित

२ अगस्त को साहित्य अकादेमी ने अपने महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम 'नारी चेतना' के अंतर्गत अंग्रेजी की चार प्रख्यात रचनाकारों ने रचना-पाठ किया। डॉ. संगीता गोयल ने अपने उपन्यास शी—ए वूमेन फ्रॉम इंडिया के कुछ अंश प्रस्तुत किए। डॉ. उद्दीपना गोस्वामी ने अपनी कविता 'तेजिमोला' प्रस्तुत की। डॉ. मौलिश्री ने अपने उपन्यास 'अरित्रिका' के कुछ अंश प्रस्तुत किए। प्रख्यात लेखिका सुश्री नबीना दास ने अपनी कुछ कविताएँ प्रस्तुत कीं। संचालन इंडियन लिटरेचर के संपादक श्री ए.जे. थॉमस द्वारा किया गया। ☐

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला संपन्न

२८ जुलाई को कोलकाता में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित आचार्य विष्णुकांत शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'भारतीय ज्ञान परंपरा का वैशिष्ट्य' विषय पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने व्याख्यान किया। समारोह के अध्यक्ष 'राष्ट्रधर्म' के संपादक डॉ. ओम प्रकाश पांडेय थे। डॉ. तारा दूगड़ ने आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के समग्र व्यक्तित्व को रूपायित करती हुई डॉ. देवेंद्र दीपक की कविता का पाठ किया। अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया श्री नंदलाल लढ़ा एवं प्रो. राम प्रवेश रजक ने। प्रो. रजनीश शुक्ल का शॉल ओढ़ाकर विशेष रूप से स्वागत किया श्री अरुण कुमार चूड़ीवाल ने। सर्वश्री महावीर बजाज एवं बंशीधर शर्मा भी मंच पर विराजमान थे। स्वागत भाषण पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने दिया। संचालन श्री योगेशराज उपाध्याय ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ऋषिकेश राय ने किया। डॉ. प्रकाश नारायण त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता का विस्तृत परिचय दिया। ☐

भव्य संवर्द्धना समारोह संपन्न

२७ जुलाई को कोलकाता में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं कोलकाता/हावड़ा महानगर की लगभग १०० प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा आयोजित सार्वजनिक संवर्द्धना समारोह में पं. बंगाल के राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी का सम्मान किया गया। श्री योगेश राज उपाध्याय के स्वास्तिवाचन के साथ श्रीमती सुधा जैन ने तिलक लगाकर, मंत्री श्री महावीर बजाज ने माल्यार्पण कर, श्री सज्जनकुमार तुल्स्सयान ने शॉल ओढ़ाकर, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने माँ सरस्वती की भव्य प्रतिमा तथा श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने स्नेहोपहार प्रदान कर राज्यपाल श्री त्रिपाठी का सम्मान किया। इस अवसर पर श्री त्रिपाठी ने कहा कि जीवन का

क्रम चलता रहता है, लोग मिलते रहेंगे, बिछुड़ते रहेंगे, मन में यादें छोड़ जाएँगे, किंतु उनके जीवन काल में यह सम्मान समारोह ऐतिहासिक है। समारोह के अध्यक्ष डॉ. ओमप्रकाश पांडेय ने कहा कि राजनीति को धर्म के साथ जोड़ने पर वह महालक्ष्मी बन जाती है। प्रधान अतिथि एवं इंडियन म्यूजिक के निदेशक श्री राजेश पुरोहित ने राज्यपाल त्रिपाठी की सहृदयता की प्रशंसा की।सर्वश्री सज्जनकुमार तुल्स्यान, सरदारमल काँकरिया, गिरिधर राय, सुशील ओझा, योगेंद्र शुक्ल सुमन एवं दुर्गा व्यास ने अपने वक्तव्यों में राज्यपाल के कार्यों की सराहना की। स्वागत भाषण दिया पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने, धन्यवाद ज्ञापन किया साहित्यमंत्री श्रीबंशीधर शर्मा ने तथा संचालन डॉ. तारा दूगड़ ने किया। □

'पावस राग एवं सम्मान समारोह' संपन्न

२२ जुलाई को मुरादाबाद की साहित्यिक संस्था 'अक्षरा' की ओर से सुप्रसिद्ध नवगीतकार श्री माहेश्वर तिवारीजी के ८१वें जन्मदिवस को 'पावस राग एवं सम्मान समारोह' के रूप में उनके निवास पर मनाया गया। इस अवसर पर नवगीतकार श्री योगेंद्र दत्त शर्मा एवं श्री जगदीश पंकज को मानपत्र, प्रतीक-चिह्न, अंगवस्त्र, श्रीफल तथा सम्मान राशि भेंट कर 'माहेश्वर तिवारी नवगीत सृजन सम्मान' से सम्मानित किया गया। श्री माहेश्वर तिवारी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर केंद्रित सुप्रसिद्ध समीक्षक व आलोचक श्री ओम निश्चल द्वारा लिखित आलेख का वाचन किया। संचालन श्री योगेंद्र वर्मा 'व्योम' ने किया व अध्यक्षता व्यंग्यकार श्री मक्खन मुरादाबादी ने की। मुख्य अतिथि डॉ. अजय 'अनुपम' थे। □

प्रो. शरद नारायण खरे को वाग्देवी सम्मान

विगत दिनों नई दिल्ली के द्वारका क्षेत्र में 'युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच' के तत्त्वावधान में सुपरिचित साहित्यकार प्रो. शरद नारायण खरे के सम्मान में भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। वरिष्ठ कवयित्री डॉ. इंदिरा शर्मा ने अध्यक्षता की। प्रो. शरद नारायण खरे को उनके बहुमूल्य साहित्यिक अवदान के लिए शॉल, मोतीमाला, आकर्षक स्मृति-चिह्न के साथ 'राष्ट्रीय वाग्देवी सम्मान' प्रदान किया गया। श्री ओमप्रकाश शुक्ल ने संचालन किया। □

उपन्यास 'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज था' विमोचित

श्रीमध्य भारत हिंदी साहित्य समिति के सभागार में आयोजित समारोह में शिवना प्रकाशन द्वारा आयोजित साहित्य समारोह में कथाकार श्री पंकज सुबीर के उपन्यास 'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज था' का विमोचन किया गया। नाट्य आलोचक डॉ. प्रज्ञा विशेष रूप से उपस्थित थीं। संचालन श्री संजय पटेल ने किया। इस अवसर पर वामा साहित्य मंच, इंदौर की ओर से पंकज सुबीर को शॉल, श्रीफल तथा सम्मान-पत्र देकर सम्मानित किया गया। □

परिसंवाद संपन्न

१९ जुलाई को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात कश्मीरी कथाकार और नाटककार श्री हरिकृष्ण कौल पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री के. श्रीनिवास राव, अजीज आजिनी, औतार कृष्ण रहबर, मुश्ताक मुंतजिर, गौरीशंकर रैणा, राजेश भट्ट, रोशन लाल 'रोशन', आर.के. भट्ट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्हें स्मरण किया। संचालन श्री अनुपम तिवारी ने किया।□

श्री कैलाश मड़बैया को 'पद्माकर पुरस्कार'

३१ जुलाई को सागर में मध्यकालीन विख्यात कवि पद्माकर के नाम पर स्थापित 'पद्माकर राष्ट्रीय पुरस्कार' पहली बार सुप्रसिद्ध कवि श्री कैलाश मड़बैया को भव्य 'बुंदेल वैभव' समारोह में नगरनिगम महापौर तथा विद्वज्जनों द्वारा भेंट किया गया। □

कवि दिवस मनाया गया

विगत दिनों डॉ. जगदीश गुप्त गीतांजलि संस्थान, लखनऊ के तत्त्वावधान में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त एवं डॉ. जगदीश गुप्त के जन्मदिवस पर 'कवि दिवस' का आयोजन किया गया। जिसमें देश के भिन्न-भिन्न स्थानों से आमंत्रित विद्वान्-मनीषियों ने रचना-पाठ किया व उन्हें स्मृति-चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर किया गया। इस अवसर पर साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा के प्रधानमंत्री श्री श्याम प्रकाश देवपुरा को उनके साहित्यिक अवदान पर अतिथि वृंदों द्वारा स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। □

कथाकार श्री बलराम को 'शताब्दी सम्मान'

इंदौर में हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के सभापति प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित की अध्यक्षता में संपन्न हुए समारोह में पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कथाकार श्री बलराम को मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति का 'शताब्दी सम्मान' प्रदान किया। एक लाख रुपए की निधि के साथ अभिनंदन-पत्र दिया गया। ५० हजार रुपए की निधि का दूसरा सम्मान वरिष्ठ कथाकर-उपन्यासकार श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री को दिया गया। पहले दिन हुए समारोह में डॉ. शिवनारायण की पुस्तक 'कथा कहे बलराम' का विमोचन हिंदी भवन, भोपाल के अध्यक्ष श्री कैलाशचंद्र पंत के साथ समिति के प्रधानमंत्री प्रो. सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी ने किया। समारोह में सर्वश्री हरिदेव जोशी, ओम थानवी, सत्येंद्र शर्मा, संजय द्विवेदी, जवाहर चौधरी, सरोज कुमार पद्मा सिंह, अरविंद ओझा आदि ने भाग लिया। संचालन सर्वश्री हरेराम वाजपेयी, संजय पटेल और 'वीणा' के संपादक राकेश शर्मा ने किया। □

साहित्य गोष्ठी संपन्न

१२ अगस्त को हैदराबाद में हिंदी लेखक संघ हैदराबाद (५३६वीं मासिक साहित्य गोष्ठी) एवं अंजुमने कलमकाराने दक्कन हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में उर्दू के सुप्रसिद्ध शायद जनाब नाशाद कानपुरी के गजल-संग्रह 'सुरूर-ए-सरमदी' के श्री एस.एम. निगम द्वारा लिप्यंतरित एवं संपादित देवनागरी संस्करण का विमोचन समारोह एवं कवि सम्मेलन-मुशायरे का आयोजन अमरावती ऑडिटोरियम में भव्यता के साथ संपन्न हुआ। वरिष्ठ साहित्यकार श्री नेहपाल सिंह वर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की और 'सुरूर-ए-सरमदी' का विमोचन किया। प्रथम सत्र का संचालन

श्री असलम फरशोरी ने किया, सर्वश्री गजेंद्र कुमार पाठक, करण सिंह ऊटवाल, गोविंद अक्षय, असलम फरशोरी ने विमोचित पुस्तक 'सुरूर-ए-सरमदी' पर अपने समीक्षात्मक विचार प्रस्तुत किए। ☐

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम संपन्न

१० अगस्त को दिल्ली के हिंदी भवन में पूर्व महापौर श्री महेश चंद्र शर्मा पर अनेक विद्वानों द्वारा लिखी व आचार्य अनमोल द्वारा संपादित पुस्तक 'हिंदी के पुरोधा : श्री महेश चंद्र शर्मा' का विमोचन सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. कमल किशोर गोयनका की अध्यक्षता में पूर्व संस्कृति मंत्री एवं सांसद डॉ. महेश शर्मा व डॉ. विजय कुमार मलहोत्रा व डॉ. गोविंद व्यास के करकमलों से हुआ। संचालन श्री शंभुनाथ पांडे ने किया। संपादक आचार्य अनमोल का सम्मान डॉ. महेश शर्मा ने किया। कार्यक्रम में सर्वश्री विनोद बब्बर, रामशरण गौड़, बी.एल. गौड़, कृष्ण मित्र, मालती, डी.पी. सिंह, विजेंद्र गोयल, ओ.पी. पारिख, चंद्रभान, नरेश शांडिल्य, अनिल जोशी, जगदीश भारद्वाज, राजेश गुप्ता, सतीश ढुल्ल, मनोज विजयवर्गीय, राकेश शर्मा आदि उपस्थित थे। ☐

श्रावणी तीज मेले में कवि सम्मेलन संपन्न

९ अगस्त को कोटा में श्रावणी तीज मेला आयोजन समिति द्वारा ५२वें मेले में कवि सम्मेलन का आयोजन साहित्य समिति के तत्त्वावधान में किया गया। विधायक श्री संदीप शर्मा मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता व्यंग्यकार डॉ. ओंकारनाथ चतुर्वेदी ने की, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेश गावल विराजमान रहे। संचालन श्री रघुराज सिंह कर्मयोगी ने किया। कवि श्री रतन लाल वर्मा की सरस्वती वंदना के साथ प्रारंभ हुए कवि सम्मेलन में सर्वश्री फरीद अहमद, रघुराज सिंह, चाँद शेरी, महेश पंचौली, गौरस प्रचंड एवं रतन लाल वर्मा, रघुराज सिंह कर्मयोगी, सुरेंद्र सिंह गौड़, गौरी शंकर सोनगरा, राजीव भारती, विश्वामित्र दधीच, शकूर अनवर ने कविता पाठ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री राजाराम कर्मयोगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ☐

'कितने अभिमन्यु' उपन्यास लोकार्पित

३ अगस्त को अलीगढ़ में 'सार्थक संवाद' के तत्त्वावधान में श्री योगेंद्र शर्मा के नए उपन्यास 'कितने अभिमन्यु' का लोकार्पण श्री अजयदीप सिंह ने किया, मुख्य अतिथि प्रो. अजय बिसारिया थे। विषय-प्रवर्तन प्रो. राजीव लोचन नाथ शुक्ल ने किया। सर्वश्री मुरारी लाल, यादराम शर्मा, शंभू दयाल रावत, सुनीला शर्मा, वतन शहजादा और द्विजेंद्र शर्मा ने अपनी काव्यात्मक शुभकामनाएँ दीं। ☐

परिसंवाद आयोजित

१५ अगस्त को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी द्वारा ७३वें स्वतंत्रता दिवस पर 'भारत : स्वतंत्रता और उसके बाद' विषयक परिसंवाद आयोजित किया गया। जिसमें सर्वश्री वेदप्रताप वैदिक, शोवना नारायण, ज्ञानेश्वर मुले, के. सच्चिदानंदन, प्रताप सोमवंशी, संजय कुमार, सईद अंसारी, सुधीर चंद्र, मृदुला गर्ग, पुरुषोत्तम अग्रवाल और नंदू राम ने वक्तव्य दिए। साहित्य अकादेमी के सचिव अतिथियों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम के अंत में सभी सम्मानित वक्ताओं के प्रति आभार प्रकट किया। संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक श्री अनुपम तिवारी ने किया। ☐

तुलसी जयंती मनाई गई

७ अगस्त को कानपुर में गोस्वामी तुलसीदास की जयंती पर मानस संगम की ओर से तुलसी अपवन मोतीझील में आयोजित समारोह में वक्ताओं ने तुलसीदास के जीवन पर प्रकाश डाला। साथ ही रामचरित मानस की जीवन में उपयोगिता भी बताई। कार्यक्रम की शुरुआत श्री विजय कुमार मेहरोत्रा की श्रीरामकथा से हुई। इसके बाद श्री शंकर रघुवंशी ने भजन प्रस्तुत किए। डॉ. गिरिराज किशोर, आयकर आयुक्त श्री अंशु शुक्ला पांडे व एस.आई.टी की जाँच करनेवाले श्री सुभाष चंद्र अग्रवाल ने समाज-सेविका डॉ. रजनी सिंह को 'मानस संगम साहित्य सम्मान' के साथ ताम्र पत्र दिया। इसके बाद १३ बच्चों को मानस अंत्याक्षरी का पुरस्कार दिया गया। बच्चों को अंगवस्त्र, साहित्य, प्रमाण पत्र और नकद राशि दी गई। यह पुरस्कार स्व. डॉ. गीता मिश्रा की स्मृति में दिया गया।

इसके बाद काव्यपाठ में सर्वश्री कवि वाहिद अली वाहिद, अनिल दीक्षित, कमलेश द्विवेदी ने भी काव्य पाठ किया। वहीं मानस परिषद् की ओर से गोस्वामी तुलसीदास की जयंती पर श्रीराधाकृष्ण मंदिर प्रांगण शारदा नगर में समारोह हुआ। मानस मंच केंद्रीय समिति की ओर से बिठूर के छप्पर घाट में आयोजन हुआ। ☐

राष्ट्रीय परिसंवाद संपन्न

२३ जुलाई को नई दिल्ली में केंद्रीय हिंदी निदेशालय (भारत सरकार) द्वारा आयोजित परिसंवाद के दूसरे दिन भारतीय भाषाओं पर पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह ने अपने विचार रखे। केंद्रीय मंत्री व प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने 'भारतीय भाषा कोश' का विधिवत् लोकार्पण किया। सर्वश्री अवनीश कुमार, राहुलदेव, कन्हैया लाल भट्ट, राकेश कुमार शर्मा, दिनेश चंद दीक्षित, किरण झा, जगदीप यादव, चंद्रकला, प्रभाशंकर प्रेमी आदि ने भी विचार प्रकट किए। ☐

'कुछ मीठे कुछ तीखे स्वर' कृति लोकार्पित

२७ जुलाई को केंद्रीय सेवा अधिकारी संस्थान, नई दिल्ली में डॉ. राधेश्याम मिश्र के कविता-संग्रह 'कुछ मीठे कुछ तीखे स्वर' का लोकार्पण किया गया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. श्याम सिंह शशि थे। विशिष्ट अतिथिगण सर्वश्री सुरेश ऋतुपर्ण, ब्रजेंद्र त्रिपाठी, लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, रमा पांडेय, विनोद खेतान आदि ने पुस्तक के बारे में अपने विचार प्रकट किए तथा रचनाकार डॉ. मिश्र ने अपनी कविताओं का पाठ किया। बाद में कवि गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। संचालन श्रीमती ममता किरण ने किया। ☐

संगोष्ठी संपन्न

विगत दिनों रामस्वरूप चतुर्वेदीजी की स्मृति में हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विषय था 'रामस्वरूप चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'। विद्वत्-त्रयी में प्रो. मानस मुकुल दास, प्रो. प्रणय कृष्ण का वक्तव्य चतुर्वेदीजी की आलोचना

पर केंद्रित था तो प्रो. हेरंब चतुर्वेदी ने उनके व्यक्तित्व के विविध पक्षों पर बात की। अध्यक्षता इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. मानस मुकुल दास ने की। डॉ. रचना आनंद गौड़ ने न्यास द्वारा आयोजित पूर्व आयोजनों की आख्या प्रस्तुत की। संचालन डॉ. कुमार वीरेंद्र ने किया और धन्यवाद ज्ञापन चतुर्वेदीजी के पुत्र श्री विनय स्वरूप द्वारा किया गया। □

प्रो. रामदरश मिश्र ९५ वर्ष के हुए

१५ अगस्त को हिंदी के जाने-माने साहित्यकार श्री रामदरश मिश्र के जन्मदिवस पर उनके सुपुत्र शशांक मिश्र के आवास पर उनका जन्मदिन मनाया गया। इस अवसर पर पत्नी श्रीमती सरस्वतीजी के साथ उनका गजल-संग्रह 'बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे' (संपादक ओम निश्चल), कहानी-संग्रह 'हद से हद तक' एवं कविता समग्र के चार खंड (संपादक डॉ. स्मिता मिश्र) का लोकार्पण किया गया। इस साल रामदरश मिश्र के व्यक्तित्व और कृतित्व पर 'रामदरश मिश्र के लघु उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधी संबंधों का विश्लेषण', 'रामदरश मिश्र के काव्य का अनुभूति पक्ष', 'रामदरश मिश्र के काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष', 'रामदरश मिश्र का कथेतर सर्जनात्मक गद्य साहित्य' पुस्तकों का लोकार्पण सर्वश्री ओम निश्चल, अल्का सिन्हा, वेदमित्र शुक्ल, नरेश शांडिल्य, श्री हरिशंकर राढी, उपेंद्र मिश्र, अंजलि उपाध्याय, स्मिता मिश्र ने मिलकर किया। श्री हरिशंकर राढी के यात्रा-वृत्तांत 'दर्शन, दृष्टि और पाँव' तथा डॉ. अंजलि के प्रथम कविता-संग्रह 'मौसम बोलते हैं' का लोकार्पण भी रामदरश मिश्र दंपती के करकमलों से हुआ।

सुपरिचित कथाकार कवयित्री अलका सिन्हा ने रामदरश मिश्र के साहित्य पर किए गए अनुशीलनों को ध्यान में रखते हुए उनके सर्जनात्मक अवदान को रेखांकित करते हुए उन्हें भारतीय जननीवन का कवि एवं कथाकार बताया। डॉ. स्मिता मिश्र ने रचनावली एवं कविता-समग्र के संपादन के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि उन्होंने पापा की लेखन प्रक्रिया को बचपन से ही बहुत करीब से देखा है, यही कारण है कि साहित्य से उसकी संपृक्ति बनी हुई है। लेखक श्री हरिशंकर राढी ने उनके नए संग्रह 'दूर घर नहीं हुआ' पर आलेख पाठ करते हुए रामदरश मिश्र की गजलों के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया।

अंत में डॉ. ओम निश्चल ने रामदरश मिश्र के व्यक्तित्व के समग्र आयामों को उद्घाटित किया। दिल्ली के आसपास से पधारे बहुत से साहित्यकारों-कवियों ने उनके सुदीर्घ जीवन के लिए शुभकामनाएँ दीं। □

'आना मेरे घर' कृति लोकार्पित

१८ अगस्त को बिलासपुर (छ.ग.) के होटल सेंट्रल पॉइंट के सभागार में कलेक्टर बिलासपुर डॉ. संजय अलंग के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. विनय कुमार पाठक (पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग) की अध्यक्षता तथा श्री नंदकिशोर तिवारी (संपादक छत्तीसगढ़ी पत्रिका लोकाक्षर), वरिष्ठ कथाकार डॉ. परदेशीराम वर्मा, श्री विक्रम सिंह (राजभाषा अधिकारी, दक्षिण-मध्य-पूर्व रेलवे, बिलासपुर), श्री प्रभात कुमार (राजभाषा अधिकारी एस.ई.सी.एल. बिलासपुर) के विशिष्ट आतिथ्यि में प्रभात प्रकाशन, दिल्ली समूह द्वारा प्रकाशित सुप्रसिद्ध कथाकार श्रीमती तुलसी देवी तिवारी के इकतीसवें कहानी-संग्रह 'आना मेरे घर' का विमोचन किया गया। 'संदर्भ' साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष श्री कृष्णकुमार भट्ट 'पथिक', महासचिव डॉ. राजेश कुमार 'मानस' और उपाध्यक्ष डॉ. बुधराम यादव ने लेखिका का शॉल-श्रीफल से सम्मान किया। अपनी लेखन प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए श्रीमती तुलसी तिवारी ने अपनी बात रखी। इस अवसर पर सर्वश्री रेखा पालेश्वर, अनिता सिंह, विक्रम सिंह, प्रभात कुमार, परदेशीराम वर्मा, नंदकिशोर तिवारी, संजय अलंग, विनय कुमार पाठक ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन श्री हरबंश शुक्ला ने तथा डॉ. बुधादव ने आभार व्यक्त किया। □

श्री अनुज कुमार सिन्हा की चार पुस्तकें लोकार्पित

१७ अगस्त को राँची विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट सभागार में वरिष्ठ पत्रकार श्री अनुज कुमार सिन्हा की चार पुस्तकों 'महात्मा गांधी की झारखंड यात्रा', 'असली झारखंड', 'झारखंड के आदिवासी : पहचान का संकट', 'ब्यूरोक्रेट्स और झारखंड' का लोकार्पण मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्रीजी ने कहा कि महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती पर स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए पूरा देश आंदोलन से जुड़ चुका है। स्वच्छ भारत की ओर हम अग्रसर हैं। समारोह में राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश ने कहा कि टाना भगतों पर शोध होना चाहिए। देश में महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती नए तरीके से मनाने की तैयारी चल रही है, दुनिया में इस बात को लेकर शोध चल रहा है कि मानव संस्कृति का भविष्य कैसा रहेगा। पद्मश्री अशोक भगत और पुस्तकों के लेखक श्री अनुज कुमार सिन्हा ने भी अपने विचार रखे।□

'शिक्षा : विकल्प एवं आयाम' कृति लोकार्पित

१७ अगस्त को भारतरत्न सी. सुब्रह्मण्यम सभागार, पूसा परिसर, नई दिल्ली में ज्ञानोत्सव-२०७६, शिक्षा में भारतीयता : राष्ट्रीय सम्मेलन संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत के सान्निध्य में संपन्न हुआ। डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि सिर्फ पेट भरने के लिए शिक्षा जरूरी नहीं है। शिक्षा इसलिए भी जरूरी है, जिससे हम बेहतर नागरिक बन सकें। शिक्षा हमारी संस्कृति एवं भारतीयता का बोध करानेवाली होनी चाहिए। इस अवसर पर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'शिक्षा : विकल्प एवं आयाम' का लोकार्पण किया गया। श्रीमती अनीता शर्मा एवं श्री सीतानाथ को 'पं. मदनमोहन मालवीय शिक्षाविद् सम्मान' से सम्मानित किया गया। □

'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' कृति लोकार्पित

१८ अगस्त को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (एनेक्स) में दैनिक जागरण के एसोशिएट एडिटर श्री अनंत विजय की वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' का लोकार्पण मुख्य अतिथि एवं केंद्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने किया। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. नरेंद्र कोहली थे। विषय प्रवर्तन रंगकर्मी एवं फिल्म प्रमाणन बोर्ड की सदस्य श्रीमती वाणी त्रिपाठी टिक्कू ने किया। □